धनुष तकली पर कातते हुए

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

७४

(१६ अप्रैल – १० अक्तूबर, १९४१)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

भूमिका

इस खण्डमें १६ अप्रैलसे १० अक्तूबर, १९४१ तक की सामग्री दी गई है। इस दौरान व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा, जो अक्तूबर १९४० में विनोबा भावेके सत्याग्रहसे आरम्भ हुई थी, पूर्ववत् बिना किसी उद्वेग-कोलाहलके चलती रही। ब्रिटिश सरकारने भारतीय लोकमतकी कोई परवाह किये बिना जिस युद्धमें इस देशको घसीट लिया था उसका विरोध करने के अधिकारपर कांग्रेस आग्रह करती रही। उधर ब्रिटिश सरकार भी इस विरोधके स्वरको दबाने के लिए हर सम्भव उपाय करती रही। सभी महत्त्वपूर्ण कांग्रेसी नेता जेल भेजे जा चुके थे और इस युद्ध-विरोधी व्यक्तिगत सविनय अवज्ञाकी प्रगतिके समाचार तथा गांधीजी के तत्सम्बन्धी वक्तव्योंके प्रकाशनको रोकने की पूरी व्यवस्था-सरकारने कर रखी थी। साथ ही युद्धको राष्ट्रीय समर्थनकी छवि देने के उद्देश्यसे २१ जूनको उसने वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्के विस्तार और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा परिषद्के गठनकी घोषणा की। किन्तु गांधीजी की दृष्टिमें सरकारके इस कार्यसे कांग्रेसकी स्थितिमें कोई अन्तर नहीं पड़ता था और न उससे उसकी कोई माँग ही पूरी होती थी (पृ० १९८)। ब्रिटेनके इरादोंमें भारतीय नेताओंकी शंका ज्यों-की-त्यों कायम रही, और शीघ्र ही उस शंकाकी पुष्टि भी हो गई। ९ सितम्बरको कामन्स सभामें चर्चिलके वक्तव्यसे ज्ञात हुआ कि उन्होंने राष्ट्रपति रूजवेल्टके साथ मिलकर स्वतन्त्रता और लोकतन्त्रकी दुहाई देते हुए जो अटलाण्टिक घोषणा-पत्र जारी किया था उसकी परिधिमें भारत-जैसे देश शामिल नहीं थे। किन्तु गांधीजी इसपर कोई टिप्पणी करने को तैयार न थे, क्योंकि ". . . मेरा मौन मेरे मुँहसे निकले किन्हीं भी शब्दोंसे कहीं अधिक मुखर है" (पृ० ३५०)।

यद्यपि सविनय अवज्ञाका बाह्य प्रभाव बहुत कम हुआ था और भारत-मन्त्री एमरीका तो यह दावा भी था कि आन्दोलन निष्फल हो गया है (पृ० १७), किन्तु गांधीजी उसकी प्रगतिसे पूर्णतः सन्तुष्ट थे (पृ० ३२९)। जैसा कि उन्होंने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' को दिये गये वक्तव्यमें कहा, उन्होंने इस आन्दोलनसे "अचानक कोई चमत्कार घटित हो जाने की" आशा नहीं की थी और न उनकी यही धारणा थी कि उसका "युद्ध-प्रयत्नोंपर कोई खास असर" पड़ेगा। इसकी परिकल्पना संसार जिन "भयावह और विकट परिस्थितियोंका सामना" कर रहा था उनके बीच "अहिंसाकी शक्तिमें अदम्य आस्थाकी एक मौन घोषणा" और "एक स्वतन्त्र राष्ट्रके नामपर" चलाये जानेवाले युद्धके विरुद्ध "एक नैतिक और इस दृष्टिसे एक शानदार रोष-प्रदर्शन" के रूपमें की गई थी। इन मन्तव्योंको ध्यानमें रखते हुए "आन्दोलनको मर्यादित और बिलकुल अनपकारी बनाये रखने के लिए असाधारण सावधानी बरती जा रही" थी (पृ० ३-४)। एक कांग्रेसी कार्यकर्त्ताको उन्होंने बताया कि उनका

आग्रह संख्यापर नहीं, बल्कि गुणवत्तापर था और वे भावी सत्याग्रहीसे अपने पास कार्य-विवरण पुस्तिका रखने की आशा करते थे, जिसमें रचनात्मक कार्यक्रमको क्रियान्वित करने की दृष्टिसे प्रति-दिनके कार्योंको लिपिबद्ध करना अपेक्षित था। "दैनन्दिनीको देख जाने के बाद ही" वे किसीको सत्याग्रहमें शरीक होने की अनुमति देने को तैयार थे (पृ० ६८-६९)। और अन्य प्रेस वक्तव्यमें गांधीजी ने स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि ". . . जेलोंको भरने की जल्दी मचाने की कोई जरूरत नहीं है।" आन्दोलनकी उपयोगिता तो यह थी कि "मर्यादित सविनय अवज्ञाके माध्यमसे लोग अनुशासन, कष्ट-सहन और आत्म-बलिदानकी आवश्यकताको ठीक तरहसे समझें", क्योंकि "सत्याग्रहका हर सच्चा उदाहरण जनमानसको व्यापक रूपसे प्रभावित करता है।" इसीलिए उन्होंने "सविनय अवज्ञाकी नींव" रचनात्मक कार्य-विषयक शर्तपर जोर देते हुए कहा कि "जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, कांग्रेसियोंको मेरी ओरसे अधिक सख्तीकी अपेक्षा रखनी चाहिए" (पृ० १६६)।

सत्याग्रहके संचालनमें गांधीजी की इस जागरूकताका मुख्य कारण उनकी यह चिन्ता थी कि "आज जब अंग्रेज जिन्दगी और मौतके भयंकर युद्धमें लगे हुए हैं, उन्हें कमसे-कम परेशानीमें डाला जाये" (पृ० १६६), और इसलिए "जबतक युद्ध चल रहा" था "तबतक आन्दोलनमें तेजी" आने देने के लिए वे बिलकुल तैयार नहीं थे। किन्तु यह बात नहीं थी कि इस नीतिका अनुसरण वे कोई इस आशासे कर रहे थे कि बदलेमें "ब्रिटिश सरकार उदारता बरतेगी" और "वाणीकी स्वतन्त्रताके अधिकारको स्वीकार कर" लेगी। उनकी दृष्टिमें यह नीति "अहिंसाका तर्कसंगत परिणाम ... और इस लिहाजसे एक राजनीतिक आवश्यकता" थी (पृ० ३२९)। तथापि एमरीकी बातोंसे उन्हें गहरी व्यथा हुई, क्योंकि उनमें "हृदयहीनता" और "भारतकी . . . परिस्थिति . . . की तिरस्कारपूर्ण अवहेलना" झलकती थी तथा अत्यन्त विकट स्थितिमें भी कांग्रेस द्वारा अपनाये गये सायास "संयम . . . की कद्र करने की शालीनता" का सर्वथा अभाव प्रकट होता था (पृ० १५-१६)। उन्होंने एगथा हैरिसनसे शिकायत की कि "भारत-मन्त्री जब भी बोलते हैं तो ऐसी बात कहते हैं जिससे लोगोंमें चिढ़ पैदा होती है" (पृ० १४५); और "ब्रिटेन आज जिस संकटसे गुजर रहा है उसमें भी श्री एमरीको इतना होश नहीं आया है कि वे कमसे-कम ठोस सचाईको स्वीकार कर लेते" (पृ० २०)। किन्तु साथी मानवोंके रूपमें अंग्रेजोंके प्रति गांधीजी की सहानुभूति पूर्ववत् कायम थी, और उन्होंने मीराबहनको लिखा: "युद्धके समाचार सनसनीखेज चल रहे हैं। इंग्लैण्डमें हो रही विनाश-लीलाके समाचार हृदय-विदारक हैं। संसदके दोनों भवन, [वेस्ट मिन्स्टर] ऐबी, कैथीड्रल तो अनश्वर प्रतीत होते थे।" यह तो वे देख रहे थे कि "इतना सब होने के बावजूद अंग्रेजोंका दर्प अखण्डित है," किन्तु उनके मनमें यह प्रश्न अवश्य उठने लगा था कि "क्या यह अभी भी बहादुरी ही कहलायेगी" (पृ० ८७)। एक अन्य पत्र-लेखिकाको उत्तर देते हुए गांधीजी ने अंग्रेजोंके सद्गुणोंको तो स्वीकार किया, किन्तु उनकी "मदान्धता, तानाशाही और बेशर्मीसे झूठ बोलने की आदत" का जिक्र

करते हुए कहा कि "ये सब बताते हैं कि इनकी सभ्यताके मूलमें . . . स्वार्थ तथा . . . भोग-लोलुपता है" (पृ० ८८)।

रूसके सम्बन्धमें भी गांधीजी के मनमें कुछ ऐसा ही अन्तर्द्वन्द्व चल रहा प्रतीत होता है। सोवियत संघपर हिटलरके आक्रमणसे उत्पन्न नवीन स्थितिपर कोई भी टिप्पणी करने से उन्होंने इनकार कर दिया, जिसका कारण स्पष्ट करते हुए एक पत्रमें लिखा, "जबतक मैं हृदयसे कुछ न कर सकुं [सकूँ] तबतक मौन रखना हि [ही] मेरे स्वभावके अनुकूल है।" अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें वे जवाहरलाल नेहरूके मार्ग-दर्शनपर निर्भर थे और मानते थे कि "जो उनकी नीति" थी "वह कांग्रेसकी नीति थी।" किन्तु उनके जेलमें रहते इस मामलेमें उनकी बुद्धि नही चलती थी। वे लेनिनके प्रशंसक थे, लेकिन "लेनिनका रूस आज नहिं [नही] रहा" (पृ० १८६), और रूसने जो-कुछ हासिल किया था उसके महत्त्वको यद्यपि वे स्वीकार करते थे, तथापि "अब जो चल रहा" था उसे वे नही समझ पा रहे थे (पृ० ३७७)। एक अन्य पत्र-लेखकको इस सम्बन्धमें अपनी स्थिति समझाते हुए उन्होंने लिखा, "उसने [रूसने] एक समय जर्मनीका सहारा लिया, अब इंग्लांड [इग्लैण्ड]का।" लेकिन इस विनाश-लीलाके बीच भी वे हताश नही थे, क्योकि उन्हे विश्वास था कि "इसीमें से अहिंसाका जन्म होगा, अगर कोई सच्चे अहिंसक होंगे तो। मेरा विश्वास है कि हम [ऐसे अहिंसक] है", हालाँकि इस शक्तिकी अवर्णनीयताको ध्यानमें रखते हुए उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि "अहिंसाका जन्म कैसे होगा, सो तो मैं नही कह सकता" (पृ० ३७४)। "भारत और विश्वके भाग्यको दिशा देनेवाली कोई ईश्वरीय शक्ति है, इस बातमें" अपनी पूर्ण श्रद्धाका इजहार करते हुए उन्होंने एक मुलाकातीको बताया कि "यही वह जीवन्त श्रद्धा है जो आजकी संकटकी घड़ीमें मुझे सम्बल प्रदान करती है" (पृ० ३३०)। ऐसी श्रद्धाका त्याग वे भला कैसे कर सकते थे? और उसका त्याग करने को कहनेवाले मित्रोंसे उन्होंने पूछा: "संसारके और स्वयं मेरे जीवनके इस महत्त्वपूर्ण क्षणमें क्या मित्र लोग मुझसे अपना वह विश्वास छोड़ देने को कहेंगे . . ." (पृ० ४)?

इस खण्डसे सम्बन्धित अवधिके दौरान भारतीय राजनीतिमें एक और चीज भी सामने आई, जो गांधीजी की आस्थाकी कड़ी कसौटी करनेवाली थी। मार्च, अप्रैल और मईमें ढाका, अहमदाबाद, बम्बई और बिहारमें साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। गांधीजी ने एगथा हैरिसनके नाम अपने पत्रमें लिखा कि "इस बारके दंगों और पहलेके दंगोंके बीच कोई साम्य नही" था, बल्कि ये तो उन्हें "गृह-युद्धका पूर्वाभ्यास" (पृ० १४५) या जैसा कि उन्होंने अपने एक प्रेस वक्तव्यमें कहा, "छोटा-मोटा गृहयुद्ध" (पृ० १२५) प्रतीत हो रहे थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि ये "दंगे केवल कांग्रेसको दबाने के लिए थे" (पृ० ३५६), यद्यपि "एक मुस्लिम परिवारकी, जिसमें तीन सालकी एक बच्ची भी शामिल थी, अकारण ही नृशंस हत्या किये जाने के सरकारी विवरणको पढ़कर" अपने मनमें उठनेवाले "शर्म और दुःख" के भावका भी उन्होंने स्पष्ट बयान किया (पृ० ११९)। आगजनी, लूट-पाट, निर्दोष

व्यक्तियोंकी हत्या, और प्राणोंके भयसे हजारों लोगोंका अपना घर-बार छोड़कर भागना — इस सबसे गांधीजी का हृदय व्यथित हो उठा और उन्होंने क्षोभपूर्वक लिखा, "इन स्थानोंपर हम लोग बर्बर और कायर सिद्ध हुए हैं" (पृ० ३०)। वे मानते थे कि "अपने सम्मानकी रक्षा करना मनुष्यका सहज अधिकार और अनिवार्य कर्त्तव्य है। यदि कोई अहिंसक रीतिसे उसकी रक्षा करना जानता हो तो उस तरह रक्षा करे, अन्यथा हिंसक रीतिसे" (पृ० ३३१); किन्तु "किसीको भी कायर नहीं बनना है" (पृ० ११३)। जहाँतक कांग्रेसजनोंका सम्बन्ध था, उनके लिए तो अहिंसाका अविचल आचरण गांधीजी का अटल विधान था। इन दंगोंमें उन्हें एक सक्रिय शक्तिके रूपमें कांग्रेसकी अहिंसाका बिखराव दिखाई दिया, और उन्होंने कांग्रेसियोंको "अपनी अहिंसाके तत्त्वोंपर विचार" करने की सलाह देते हुए कहा कि "निःशंक होकर प्राण या सम्पत्ति गँवाने की कला हमें अंग्रेजोंसे सीखनी चाहिए। . . . पारस्परिक धैर्य और सहिष्णुताका पाठ हम तबतक नहीं सीख सकेंगे जबतक हममें से कुछ लोग पूर्णतया निर्दोष होते हुए भी अपने प्राणोंकी आहुति देकर भारतीय जनताके मानसको नहीं हिला देंगे" (पृ० ३१-३३)।

जो लोग हिंसक प्रतिरोधके पक्षमें थे उन्हें गांधीजी ने "कांग्रेससे निकल" कर "जैसा ठीक समझें वैसा आचरण" करने "और दूसरोंका वैसा ही मार्ग-दर्शन" करने का परामर्श दिया। लेकिन "यदि अधिकांश कांग्रेसी ऐसा मानते हैं" कि दंगोंमें "हिंसक प्रतिरोध करना . . . कांग्रेसके सिद्धान्तके विपरीत नहीं" है तो उस स्थितिमें गांधीजी का कहना था कि "उन्हे सुस्पष्ट शब्दोंमें" अपनी इस मान्यताकी "घोषणा करनी चाहिए और उसके अनुरूप लोगोंका मार्ग-दर्शन करना चाहिए" (पृ० ८१)। कांग्रेस संसदीय दलके नेता भूलाभाई देसाईका विचार कुछ इसी प्रकारका था। निदान गांधीजी ने उन्हे भी लिखा: "तुम्हें उसका [अपने विचारका] एलान करके उसके अनुसार लोकमत तैयार करना चाहिए। यह समय आचरणका है। हम सबका मूल्य हमारे आचरणसे आँका जायेगा।" और इसी प्रकार भूलाभाईके पुत्र धीरूभाईको भी उन्होंने लिखा, "यह अवसर सच्चा काम दिखाने का है, जिसमें अधकचरे लोग भार-रूप सिद्ध होंगे" (पृ० १४७-४८)।

बम्बईके प्रमुख कांग्रेसी कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशीको दंगोंमें अहिंसाके कारगर होने में सन्देह था और गांधीजी की सलाह मानकर वे कांग्रेससे निकल गये। अपनी इस सलाहका औचित्य सिद्ध करते हुए गांधीजी ने कहा कि जब विचार और कार्यमें विरोध हो तो कांग्रेसी बने रहना भार-रूप हो जाता है; क्योंकि "अहिंसात्मक कार्यका स्रोत अहिंसात्मक विचार होता है। यदि व्यक्तिमें अहिंसात्मक विचारका अभाव है तो अहिंसात्मक कार्यका अपने-आपमें कोई महत्त्व नहीं रह जाता" (पृ० १२६)। मुंशीकी "व्यथा" से गांधीजी को सहानुभूति थी, लेकिन उन्होंने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा कि "यह तुम्हें आगे ही ले जायेगी।" किन्तु मुंशीने अधीरतावश बनारसकी एक सार्वजनिक सभामें यह घोषणा कर दी थी कि "भारतकी राष्ट्रीयता और एकताकी रक्षाके लिए किसी विदेशी ताकतकी मदद स्वीकार करने में मैं कोई हेठी

नही मानता।" इस सम्बन्धमें गांधीजी ने उन्हे समझाते हुए लिखा कि "पाकिस्तान-सम्बन्धी लड़ाई दो भाइयोंके बीचकी लड़ाई है। उस लड़ाईमें एक भाई दूसरेसे हार जाये, यह समझमें आता है, लेकिन किसी तीसरेकी मदद लेकर जो जीतेगा वह खुद गुलाम बनेगा और दूसरेको भी गुलाम बनायेगा" (पृ० ३४८)।

साम्प्रदायिकताकी इस फैलती ज्वालाको देखकर गांधीजी इतने उद्विग्न हो उठे कि उनके मनमें इस एक ही चीजका खयाल रह गया था (पृ० ९१)। उन्होंने पाकिस्तानके हिमायती और विरोधी दोनों पक्षोंसे एक-दूसरेके विचारके प्रति सहिष्णुतासे काम लेने और इस बातपर सहमत होने का आग्रह किया कि "हम अपने सारे मतभेदोंको बातचीत तथा शान्तिपूर्ण प्रयत्नोसे, जिनमें पंच-फैसला भी शामिल है, निबटायेंगे" (पृ० ४१)। उनका कहना था कि हर हालतमें हमें "जंगलियोंकी तरह व्यवहार" करने (पृ० ११७) और "गुण्डागर्दीका सहारा" लेने (पृ० २१३) से तो बचना ही चाहिए। गांधीजी को पूरा विश्वास था कि अन्ततः सत्य और अहिंसाकी विजय होगी (पृ० १०९), हम धीरे-धीरे "सही स्थितिपर पहुँच जायेंगे" (पृ० ११३), और "सारे प्रश्नोंका अन्तिम निबटारा लोग अपने-आप कर लेंगे और हम सब बीचमें लटकते ही रह जायेंगे" (पृ० ३५६)। इस प्रक्रियाके मार्गमें बाधा एक तीसरे पक्ष, अर्थात् ब्रिटिश सरकारकी उपस्थिति थी। गांधीजी को ऐसी आशंका थी कि सरकार लोगोंको एक-दूसरेको तबाह करने देगी और हस्तक्षेप तभी करेगी जब स्वयं उसकी सत्ताको खतरा उत्पन्न होगा (पृ० ३१)। उन्हें इस समस्या का यही समाधान दिखाई देता था कि "अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायें", फिर तो "कांग्रेस, लीग तथा अन्य सभी दल इसी बातमें अपना हित देखेंगे कि वे आपसमें मिल जायें और मिलकर भारत सरकारको गठित करने का एक स्वदेशी फार्मूला ढूंढ़ निकालें। सम्भव है कि इस सरकारकी रचना शास्त्रीय ढगकी न हो, किसी पश्चिमी नमूनेपर न हो, किन्तु वह टिकाऊ अवश्य होगी" (पृ० १७)। गांधीजी को इस समस्याके समाधानकी आवश्यकता इतनी तीव्रतासे महसूस हो रही थी कि उनके मनमें दंगा-ग्रस्त क्षेत्रोंका दौरा करने का भी विचार आया। उन्होने वल्लभभाई पटेलको लिखा कि "हमें सुलहका रास्ता ढूंढना चाहिए", लेकिन यह तलाश तभी सफल हो सकती थी जब ईश्वर सहायक हो। उसीकी सत्तामें अगाध आस्थाके कारण न उन्हें कोई घबराहट थी और न चिन्ता। वे "घटनाओंको घटित होते" देखते रहते थे और "कर्त्तव्यरत रहने की कोशिश" करते थे (पृ० ४४)।

इन राष्ट्रीय प्रश्नोंसे जूझते हुए गांधीजी को जिन अन्य चीजोकी ओर दिन-प्रति-दिन ध्यान देना पड़ता था उनमें आश्रमकी भी कुछ समस्याएँ थी। इन समस्याओने उनके धैर्यकी अच्छी कसौटी की। बंगालसे आये एक सेवकका पारिवारिक जीवन कदाचित् सुखी नही था, और गांधीजी को लगा कि "सम्भवतः वे मानसिक सन्यास ले लेंगे और परिवारसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेंगे।" निदान उन्होने उन्हे ढाका जाकर शान्तिकी स्थापनामे सन्नद्ध हो जाने का परामर्श दिया (पृ० २१)। किन्तु यह प्रयोग "अनर्थकारी" सिद्ध हुआ, क्योंकि वह सेवक "सेवा करना नही, प्रत्युत ख्याति"

प्राप्त करना चाहता था। अतः गांधीजी ने उसे "परिवारका भार वहन करके देशकी सेवा" करने की सलाह दी (पृ० ३३ और ४६) और लिखा कि "अब तुम धरती पर उतर आओ और जो अन्य लोग करते हैं — ईमानदारीसे कौड़ी कमाने के लिए मजदूरी करने और उसमें निर्वाह करने का काम — वही करो" (पृ० १४०)। एक अन्य सेवककी समस्या भी ऐसी ही कठिन थी। गांधीजी की दृष्टिमें वह "पत्र लिखने के रोग" से ग्रस्त था (पृ० २२) और "जितनी स्वतन्त्रता . . . अपने लिए" चाहता था "उतनी दूसरेके सम्बन्धमें सहन करने" को तैयार नहीं था (पृ० १७४)। उसके एक "भयंकर पत्र" के उत्तरमें गांधीजी ने लिखा कि यह तो "अव्यवस्थाकी हद हो गई" (पृ० ६३)। उसके एक अन्य "दुःखद" पत्रके उत्तरमें गांधीजी ने उसे सलाह दी, "शायद तुम्हारे [यहाँसे] चले जाने में ही तुम्हारा कल्याण है। . . . मैंने तो पाण्डिचेरी, अथवा रमण आश्रमका सुझाव दिया है" (पृ० १४०)। उसे गांधीजी का अन्तिम परामर्श यह था: "सभी प्रकारसे विचार करना बिलकुल छोड़कर जब काम और केवल काम ही करोगे तभी शान्त होगे" (पृ० २०७)।

ये समस्याएँ इतनी अधिक और विकट थीं कि गांधीजी को किशोरलाल मशरूवालासे स्वीकार करना पड़ा, "आश्रमको लेकर मुझे इतने आघात सहने पड़े हैं कि अब कुछ भी नया आरम्भ करने का उत्साह मुझमें नहीं रह गया है" (पृ० ६१)। किन्तु गांधीजी मीराबहनके संस्था तोड़ने के सुझावसे भी सहमत नहीं थे। उन्होंने कहा, आश्रमका "विकास अपने-आप सहज रूपसे हुआ है और विनाश या पुनर्निर्माण भी उसी तरह होना होगा।" उन्होंने अनेक बार घर बाँधे, लेकिन हर जगह उन्हें हार कर हटना पड़ा। किन्तु "सब यथासमय हुआ।" इसलिए इस प्रसंगमें भी गांधीजी ने सब-कुछ ईश्वरपर ही छोड़ दिया: "भगवान ही जाने अब वह मुझे कहाँ पटकेगा। नहीं, मेरी रक्षा इसीमें है कि मैं प्रार्थना और प्रतीक्षा करूँ। 'प्रभु, तू ही मुझे रास्ता बता'।" गांधीजी के वैष्णव मानसके अनुसार, व्यक्ति संसारको अपनेसे अलग नहीं कर सकता, इसलिए मनुष्यको संसारके दोषोंको सहन करते हुए अपना कर्त्तव्य करते जाना चाहिए (पृ० ६०)। एक अन्य सेवकको उन्होंने लिखा: "संस्थामें रहने के नालायक कोई हो नहिं [नहीं] सकता। जगत हि [ही] तो संस्था है। जगतके बाहर कौन रह सकता है? कुटुम्ब भी संस्था है। वह पेटा [छोटी] संस्था है और कुटुम्ब और जगतके बीचमें हमारे जैसी संस्थाएँ हैं।" तो फिर मनुष्यको तो उन्हीं अपूर्ण संस्थाओंमें मिल-जुलकर रहते हुए अपनी भूमिका निभाना और अपना विकास करना है (पृ० १७२)।

मनुष्य एक-के-बाद-एक अपूर्णताको लाँघते हुए ही प्रगति करता है। इसलिए गांधीजी ने एक अन्य सेवकको समझाया कि "आश्रममें हम सब अपूर्ण हैं, तो भी अच्छे होने का प्रयत्न करते हैं" (पृ० ४३१)। यदि मनुष्य मात्र इतना करे कि उसे जो मार्ग दिखाई दे उसका ईमानदारीसे अनुसरण करे तो "क्रमशः सत्यतक अवश्य" पहुँच जायेगा (पृ० ५४)। मर्यादित अहिंसापर भी "ईमानदारीसे आचरण किया जाता है तो उसका स्वयमेव विस्तार हो जाता है" (पृ० २५८)। वैसे "अहिंसाका

पालन तो सत्यके पालनसे भी कठिन दिखाई देता है। कारण, असत्यके परिणाम हिंसाके परिणामोंसे अधिक सूक्ष्म है और दिखाई नही देते" (पृ० १२६)। गांधीजी का विश्वास था कि "वाणी और लेखनीसे विचारका असर ज्यादा है। अगर मैं शुद्ध विचार करता हूँगा तो मेरा दृढ़ निश्चय है कि विचार अपना असर डाल हि [ही] रहे हैं" (पृ० १३०)। मनपर विकारोंके आक्रमणके प्रतिरोधका एकमात्र साधन है रामनाम; और "जब मन रामनामसे या उसके कामसे खाली है तो शैतान कब्जा लेता है", क्योंकि कुदरतको खालीपनसे नफरत है (पृ० ३४०)।

कबीरकी 'सहज समाधि भली' वाली परम्पराको चरितार्थ करते हुए गांधीजी ने धर्मको जीवनके सहज-स्वाभाविक अंगके रूपमें देखा। इसीलिए स्तुति-प्रशंसा उन्हें रुचती नही थी। एक पत्र-लेखकको उन्होंने लिखा, "मैं जो-कुछ भी करता हूँ वह मेरे लिए सहज और स्वाभाविक होता है . . . जो चीज स्वाभाविक है उसे करने के लिए प्रशंसाकी कोई आवश्यकता नही होती" (पृ० १४६)। शायद इसी कारण वे अपने किसी प्रकारके स्मारकके भी विरुद्ध थे: "मेरे द्वारा किये गये किसी कार्यकी स्मृतिको चिरस्थायी बनाने में मुझसे सहयोगकी अपेक्षा मत कीजिए" (पृ० १८७)।

किन्तु दिवंगत महापुरुषोको तथ्यमूलक श्रद्धांजलि अर्पित करना कुछ और बात थी। ७ अगस्तको रवीन्द्रनाथ ठाकुरके निधनके बाद अमृतकौरके नाम एक पत्रमें उन्होंने लिखा: "कविवरकी मृत्युसे जो स्थान रिक्त हो गया है उसे कभी भरा नही जा सकता। उनमें साधुता और प्रतिभाका अनूठा संगम था" (पृ० २५०)।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओं, व्यक्तियों, पुस्तकोंके प्रकाशकों तथा पत्र-पत्रिकाओंके आभारी हैं :

संस्थाएँ : साबरमती आश्रम संरक्षक तथा स्मारक न्यास और संग्रहालय, नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद; राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय, राष्ट्रीय संग्रहालय और नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली; विश्वभारती पुस्तकालय, शान्तिनिकेतन तथा बम्बई, मैसूर, उड़ीसा और तमिलनाडुकी सरकारें।

व्यक्ति : राजकुमारी अमृतकौर; श्री अमृतलाल चटर्जी; श्री आनन्द तो० हिंगोरानी; श्री ए० के० सेन, कलकत्ता; सुश्री एफ० मेरी बार; श्री एल० कृष्णस्वामी भारती; सुश्री एस० अम्बुजम्माल; श्री क० मा० मुंशी; श्री कान्ति गांधी, बम्बई; श्री के० लिंगराजू; श्री गुलाम रसूल कुरैशी, अहमदाबाद; सुश्री गोमतीबहन मशरूवाला, बारडोली; श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता; श्री चकैया; श्री जगन्नाथ; श्री टी० एस० चोकलिंगम; डॉ० नाथूभाई पटेल; श्री नानाभाई इ० मशरूवाला; श्री नारणदास गांधी; श्री नारायण देसाई, वाराणसी; श्री पृथ्वीसिंह, लालरू, पंजाब; श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली; सुश्री प्रेमाबहन कंटक, सासवड; श्री बनारसीलाल बजाज, बनारस; श्री भगवानजी पु० पंड्या; सुश्री मंजुला म० मेहता; सुश्री मनुबहन सु० मशरूवाला, बम्बई; सुश्री मीराबहन, आस्ट्रिया, गाडेन; श्री मुन्नालाल गं० शाह; सुश्री रत्नमणि चटर्जी; सर रॉबर्ट ई० हॉलैंड; सुश्री रामेश्वरी नेहरू; सुश्री लीलावती आसर, बम्बई; श्री वल्लभराम वैद्य; श्री वालजी गो० देसाई, पूना; सुश्री विजयाबहन म० पंचोली, सनोसरा; श्री शान्तिकुमार न० मोरारजी; सुश्री शारदा फूलचन्द शाह; सुश्री शारदाबहन गो० चोखावाला, सूरत; श्री शिवानन्द; श्री सी० ए० तुलपुले और श्री हरिभाऊ उपाध्याय, अजमेर।

पुस्तकें : 'एन एथीस्ट विद गांधी', '(ए) डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस', 'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद', 'पिल्ग्रिमेज टु फ्रीडम', 'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस', 'बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने', 'बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने', 'बापुनी प्रसादी', 'बापू : कंवर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पॉण्डेंस विद महात्मा गांधी', 'बापू : मैंने क्या देखा, क्या समझा?', 'बापूकी छायामें', 'बापूकी छायामें मेरे जीवनके

सोलह वर्ष', 'बिल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया : एस० श्रीनिवास अय्यंगार', 'मध्यप्रदेश और गांधीजी', 'महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी', जिल्द ६ और '(द) हिस्ट्री ऑफ द इंडियन नेशनल कांग्रेस', जिल्द २।

पत्र-पत्रिकाएँ : 'खादी-जगत्', 'गुजरात समाचार', 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'बॉम्बे क्रॉनिकल', 'सर्वोदय' और 'हिन्दू'।

अनुसन्धान और सन्दर्भ-सम्बन्धी सुविधाओंके लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पुस्तकालय, इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स पुस्तकालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालयका अनुसन्धान और सन्दर्भ विभाग और श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली हमारे धन्यवादके पात्र हैं। प्रलेखोकी फोटो-नकल तैयार करने में मदद देने के लिए हम सूचना और प्रसारण मंत्रालयके फोटो-विभाग, नई दिल्लीके आभारी हैं।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमें गांधीजी के स्वाक्षरोंमें मिली है, उसे अविकल रूपमें दिया गया है। किन्तु दूसरों द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमें हिज्जों की स्पष्ट भूलें सुधार दी गई हैं।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करते समय उसे यथासम्भव मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनाने का भी पूरा ध्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमें प्राप्त हो सके हैं, उनका हमने मूलसे मिलान और सशोधन करने के बाद उपयोग किया है। नामोको सामान्य उच्चारणोंके अनुसार ही लिखने की नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोंके उच्चारणमें संशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गांधीजी ने अपने गुजराती लेखोमें लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमें दिये गये अंश सम्पादकीय हैं। गांधीजी ने किसी लेख, भाषण आदिका जो अंश मूल रूपमें उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमें छापा गया है। लेकिन यदि ऐसा कोई अंश उन्होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइपमें छापा गया है। भाषणोंकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांधीजी के कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमें छापे गये हैं। भाषणों और भेंटकी रिपोर्टोंके उन अंशोमें जो गांधीजी के नही हैं, कुछ परिवर्तन किया गया है और कही-कही कुछ छोड़ भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि दायें कोनेमें ऊपर दे दी गई है, लेकिन जिन लेखों, टिप्पणियों आदिके अन्तमें लेखन-तिथि दी गई है उनमें उसे यथावत् रहने दिया गया है। जहाँ वह उपलब्ध नही है, वहाँ अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोमें दी गई है और आवश्यक होने पर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोंमें केवल मास या वर्षका उल्लेख है, उन्हें प्रसंगानुसार मास तथा वर्षके अन्तमें रखा गया है। शीर्षकके अन्तमें साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशन की है। गांधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ़ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नही हुआ है, वहाँ प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये हैं।

साधन-सूत्रोंमें 'एस० एन०' संकेत साबरमती संग्रहालय, अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्लीमें उप-

लब्ध कागज-पत्रोंका, 'एम० एम० यू०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालयकी मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिट द्वारा तैयार कराई गई रीलोंका, 'एस० जी०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, सेवाग्राममें उपलब्ध सामग्रीकी फोटो-नकलोंका, और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी) द्वारा संगृहीत दस्तावेजोंका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देने के लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट दिये गये हैं। अन्तमें साधन-सूत्रोंकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई हैं।

विषय-सूची

१. पुर्जा : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम
१६ अप्रैल, १९४१

तुम्हें हिन्दीमें लिखने की आवश्यकता नही। तुम मुझे गलत समझे हो।[1] मैं तुम्हारे दोषोंको अनदेखा नहीं कर सकता, किन्तु उनके कारण तुम्हारे प्रति मेरा आदर कम नही हो सकता।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३५०) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

२. पत्र : इन्दुमती ना० गुणाजीको

सेवाग्राम, वर्धा
१७ अप्रैल, १९४१

चि० इन्दू,

तेरा खत मिला। संयम स्वाभाविक होने के लिये मनका साथ मिलना चाहिये। मनका साथ शुद्ध ज्ञान के सिवा नहिं मिलता है। अगर मुझे शुद्ध ज्ञान है कि शराब पीने से मुझे हानि होगी तो मैं शराब को नहिं छूगा। भले वह कैसे भी मीठा हो। तेरे बारेमें सच बात यह है कि तू संयम को संयम सो टका नहिं मानती है। तेरे पास दो धर्म है। हकीकतमें एक ही है। लेकिन यह तो मेरे मनमें। इस दुविधामें तो ईश्वर हि तुझे सन्मति दे सकता है। प्रयत्न कर। तेरा भला हि होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९४४) से। सौजन्य : इन्दुमती तेंडुलकर

1. देखिए खण्ड ७३, पृ० ४७८।

३. तार : हैदराबादके निजामको[1]

[१८ अप्रैल, १९४१ या उसके पूर्व][2]

परम महामान्य निजाम
हैदराबाद
आपके शोकमें मैं अपनी सादर संवेदना भेजता हूँ।

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। बॉम्बे क्रॉनिकल, २१-४-१९४१ से भी

४. पत्र : मनुबहन और सुरेन्द्र मशरूवालाको

सेवाग्राम, वर्धा
१८ अप्रैल, १९४१

चि० मनुड़ी[3],

तू खूब कष्ट भोग रही है।[4] यही होता है। ऑपरेशन कराना पड़े तब भी घबराने की कोई बात नहीं है। उसमें कोई खतरा नही होगा। बां को पत्र लिखती रहना। बीमारीमें तो पत्र लिखना ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

चि० सुरेन्द्र,

मनुड़ी अगर लिखने में आलस करे तो तू लिखना। मै राह देख रहा था कि आज तेरा कार्ड मिला।

बापूके आशीर्वाद

श्री मनुबहन मशरूवाला
"बाल किरण"
साउथ एवेन्यू
सान्ताक्रूज, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २६७९) से। सौजन्य : मनुबहन सु० मशरूवाला

१ और २. निजामकी माताके देहान्तपर भेजा गया यह तार निजामको १८ अप्रैल, १९४१ को मिला था।
३. हरिलाल गांधीकी पुत्री
४. मनुबहनके पेटमें रसौली हो गई थी।

५. वक्तव्य : 'टाइम्स ऑफ इंडिया' को[1]

सेवाग्राम, वर्धा
१९ अप्रैल, १९४१

मैंने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के उस अग्रलेखके अग्रिम सार-संक्षेप को बहुत ध्यान-पूर्वक सुना है जो आज सुबह बम्बईमें प्रकाशित हुआ होगा। मैं मानता हूँ, लेखका स्वर मैत्रीपूर्ण है और यदि मैं इसका उत्साहवर्धक उत्तर दे पाता तो मुझे खुशी होती, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता।

इस संघर्षके आरम्भमें[2] मैंने जो-कुछ कहा था उसपर मैं अब भी कायम हूँ। संघर्ष आरम्भ करते समय अचानक कोई चमत्कार घटित हो जाने की भ्रान्त धारणा मेरे मनमें नहीं थी। संसारको आज जिन भयावह और विकट परिस्थितियोंका सामना करना पड़ रहा है वैसी परिस्थितियोंके बीच भी अहिंसाकी शक्तिमें अदम्य आस्थाकी एक मौन घोषणाके रूपमें इस संघर्षकी परिकल्पना की गई थी और आज भी इसका वही स्वरूप है।

इस छोटे-से ग्रहपर समस्त विनाशकारी तत्त्व सम्मिलित रूपसे जिन सुविचारित और परिकल्पनीय शक्तियोंको जन्म दे सकते हैं, उनके मुकाबले मुझे निगूढ़ दैवी सत्ताकी अपरिकल्पनीय शक्तिकी प्रभावकारिता पर ज्यादा विश्वास है। यह अपरिकल्पनीय शक्ति किसी-न-किसी प्रकार मनुष्यके माध्यमसे ही अपना काम करेगी। कैसे और कब, यह मैं नहीं कह सकता। वह माध्यम कांग्रेस होगी या नहीं, यह भी मैं नहीं कह सकता। मैं यह विश्वास लेकर चल रहा हूँ कि कांग्रेसमें चाहे कितनी ही कमियाँ क्यों न हों, एक संस्थाके रूपमें चाहे उसके अन्दर आस्थाकी कितनी भी कमी क्यों न हो, फिर भी आज यही एकमात्र संस्था है जो निश्चित रूपसे शान्तिपूर्ण उपायोंके पक्षमें है।

यह है मेरी स्थिति। इसलिए जहाँतक मेरा सवाल है, पीछे हटने की कोई सम्भावना नहीं है। एक व्यक्ति सविनय अवज्ञा करे या अनेक, इसका कोई महत्त्व नहीं। सविनय अवज्ञाको तो सब कठिनाइयोंके बावजूद जारी रहना होगा। वैसे कांग्रेसजन निश्चय ही इसका परित्याग एकाधिक तरीकोंसे कर सकते हैं। वैसी दशामें सविनय अवज्ञा आन्दोलन संगठनकी ओरसे चलाया जानेवाला आन्दोलन

१. टाइम्स ऑफ इंडिया ने अपने अग्रलेखमें गांधीजी से अपील की थी कि वे सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस ले लें। इस अपीलपर गांधीजी का उत्तर जानने के लिए उक्त पत्रके विशेष संवाददाताने गांधीजी से भेंट की थी और उन्होंने उसे यह वक्तव्य दिया था।

२. अक्तूबर १९४० में; देखिए खण्ड ७३।

नहीं रह जायेगा और मैं स्वीकार करता हूँ कि तब वह किसी भी रूपमें प्रभावकारी नहीं रह जायेगा। किन्तु यदि इसपर भी मुझमें इतनी आस्था बनी रहे कि मैं अहिंसाकी शक्तिका अकेला साक्षी बना रह सकूँ तो इतनेसे भी मैं सन्तोष मानूँगा।

मैं इस बातसे दृढ़तापूर्वक इनकार करता हूँ कि यह आन्दोलन अपनी संकल्पनाकी दृष्टिसे या कार्य-रूपमें साम्प्रदायिक या मुसलमान-विरोधी, या अंग्रेज-विरोधी है। जो देखना चाहें उन्हें इस बातके पर्याप्त प्रमाण मिल जायेंगे कि आन्दोलनको मर्यादित और बिलकुल अनपकारी बनाये रखनेके लिए असाधारण सावधानी बरती जा रही है।

अनेक सरकारी व्यक्तियोंने स्वीकार किया है कि उनकी संकल्पनाके अनुसार यह आन्दोलन सर्वथा अप्रभावकारी है। अग्रलेखके लेखकने भी अपने दृष्टिकोणसे लगभग यही बात कही है और दोनों ही सही हैं। आन्दोलनका उद्देश्य युद्ध-प्रयत्नोंपर कोई खास असर डालनेका नहीं था। यह आन्दोलन तो एक स्वतन्त्र राष्ट्रके नामपर इस युद्धको चलानेके विरुद्ध किया जानेवाला एक नैतिक और इस दृष्टिसे एक शानदार रोष-प्रदर्शन है। यह आन्दोलन एक राजनीतिक संगठनकी ३५ करोड़ जनताको विशुद्ध अहिंसात्मक प्रयत्नों द्वारा स्वतन्त्र कराने, और इस प्रकार विश्वके भविष्यको प्रभावित करनेकी उत्कट इच्छाका प्रतीक है। यह दावा ऊँचा भले ही हो, लेकिन है।

यदि मेरा वश चला तो कांग्रेस उस स्वतन्त्रताको ठुकरा देगी जिसके लिए एक भी ऐसे न्यायसंगत हितकी बलि देनी पड़े, जो करोड़ों मूक जनताके हितसे संगत हो, फिर वह हित चाहे हिन्दुओंका हो, मुसलमानोंका हो या किसी और का हो। मैं यह बात मानने से भी इनकार करता हूँ कि यदि सात प्रान्तोंमें कांग्रेस सरकार बनी रहती तो पाकिस्तानकी माँग उतनी उग्र न होती जितनी आज है। किन्तु जो पदत्याग किया गया वह मुस्लिम हितों या अन्य वर्गोंके हितोंसे-संघर्ष बचानेकी खातिर नहीं किया गया था, बल्कि उसका एक कहीं अधिक बड़ा नैतिक आधार था। पदत्यागका मूल आधार भारतको ऐसे युद्ध-प्रयत्नोंसे अलग करना था जिनमें शरीक होनेके लिए उसे कभी निमन्त्रित नहीं किया गया था। बातको कमसे-कम शब्दोंमें और रूखी राजनीतिक भाषामें कहा जाये तो पदत्यागका यही आधार था। जैसा कि आप जानते हैं, मेरा अपना आधार कहीं अधिक अमूर्त, कहीं अधिक नैतिक और कहीं अधिक सार्वभौम है, और फिर भी वह बिलकुल वास्तविक और व्यावहारिक है।

मैं यह कहनेका साहस करता हूँ कि जब युद्ध समाप्त हो जायेगा और हम स्थायी या अस्थायी शान्तिका उपभोग करने लगेंगे तब इतिहासमें यही लिखा जायेगा कि कांग्रेसका संघर्ष अपने समग्र रूपमें एक परम नैतिक संघर्ष था, जिसमें मानवकी गरिमापर कभी आँच नहीं आई।

एक मित्रतापूर्ण अपीलके इस अत्यन्त असन्तोषजनक प्रतीत होनेवाले उत्तरको समाप्त करते हुए अन्तमें मैं एक निवेदन करना चाहता हूँ। संसारके और स्वयं मेरे जीवनके इस सबसे महत्त्वपूर्ण क्षणमें क्या मित्र लोग मुझसे अपना वह विश्वास छोड़ देनेको कहेंगे जो पिछले पचास वर्षोंसे मुझे सम्बल प्रदान करता आ रहा है? और इस जगह मैं एक बात और जोड़ दूँ, भले ही वह कितनी ही नागवार

क्यों न लगे : मुझे पक्का विश्वास है कि कांग्रेस अपना संघर्ष स्थगित करे या न करे, किन्तु यदि ब्रिटेन भारतके प्रति सचाई बरते तो सभी समस्याओंका सन्तोष-जनक समाधान निकल सकता है। किन्तु दुर्भाग्यवश ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंने गलत रास्ता चुना है और भारतकी आजादीके मार्गमें काल्पनिक बाधाएँ खड़ी कर दी हैं। किन्तु यह एक ऐसा विषय है जिसपर अधिक कहने की मेरी कोई इच्छा नहीं है।

[अंग्रेजीसे]
टाइम्स ऑफ इंडिया, २०-४-१९४१

६. पत्र : दुनीचन्दको

सेवाग्राम, वर्धा
१९ अप्रैल, १९४१

प्रिय लाला दुनीचन्दजी,

मैं १६ तारीखको शामको यहाँ पहुँची थी किन्तु गांधीजी के सम्मुख आपके प्रश्न कल ही पेश कर पाई।

१. बार-बार याद दिलाये जाने के बावजूद गिरफ्तारीके लिए आगे न आनेवाले विधान-सभा-सदस्योंके प्रश्नपर कुछ समय और प्रतीक्षा कर लेना बेहतर होगा, क्योंकि मियाँ इफ्तिखारुद्दीनकी[1] अवधिसे पूर्व रिहाई विचाराधीन है।

२. यही बात अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके उन सदस्योंपर भी लागू होती है जिनकी तिथि पहले ही ३० तारीखतक बढ़ाई जा चुकी है।

३. गांधीजी इस बातके लिए राजी हैं कि अखिल भारतीय चरखा संघ द्वारा नियुक्त परीक्षक प्रमाणित खादीकी कताई और बुनाईकी जाँच करें। किन्तु वे आपसे सहमत हैं कि जो लोग आर्थिक अथवा किसी अन्य उचित कारणसे नियुक्त परीक्षकोंके सामने प्रस्तुत होने में असमर्थ हों और जिन्हें जिला कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष या मन्त्रीसे प्रामाणिकताका आवश्यक प्रमाणपत्र मिल सकता हो उन्हें अ० भा० चरखा संघकी परीक्षासे बरी कर दिया जाये।

४. स्थानीय निकायोंके सदस्योंके त्यागपत्र देने के विषयपर मियाँ इफ्तिखारुद्दीन-की रिहाईतक प्रतीक्षा करना ही बेहतर होगा।

५. सत्याग्रहसे इनकार करनेवाले सभी स्तरोंके कांग्रेसजनोंके विषयमें भी यही बात लागू होगी।

६. प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य भविष्यमें सत्याग्रह करनेवालोंमें शामिल हैं।

७. सभी स्तरोंकी कार्य-समितियोंके सदस्योंको सत्याग्रह करना है।

१. पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

८. गांधीजी को ऐसी आशंका है कि जो लोग धोखा देने पर उतारू हैं उनके द्वारा इस आन्दोलनके प्रति वफादारीका दिया हुआ कोई भी वचन बिलकुल बेकार होगा।

आपकी २१२ सत्याग्रहियोंकी सूची आ गई है। मैं देखती हूँ कि ये सब नाम स्थानीय अध्यक्ष या मन्त्री द्वारा स्वीकार कर लिये गये हैं, और आपने मुझे बताया था कि आपने इस बातकी तसल्ली कर ली है कि ये पदाधिकारी विश्वसनीय व्यक्ति हैं। हर हालतमें, स्थानीय पदाधिकारियोंको प्रत्येक व्यक्तिसे प्रश्नावलीके जो उत्तर प्राप्त हुए हैं, हम चाहेंगे कि वे हमें भेज दिये जायें। और उनकी परीक्षा भी क्यों न ली जाये? अखिल भारतीय चरखा संघ कितनी जल्दी इसकी व्यवस्था कर सकेगा?

लाहौरमें न्याय परामर्शदाता वकील संघ जो संशोधन करवा रहा है, उसको लेकर कुछ शिकायतें उठी हैं। गांधीजी के मतमें ऐसी समितिका विचार अपने-आपमें तो बिलकुल सही है। किन्तु उसके कार्यमें सत्याग्रहियोंकी ओरसे कोई दिलचस्पी, उकसावा या हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए और उसे स्वतन्त्र रूपसे कार्य करने देना चाहिए। इस विषयमें आप सत्याग्रहियोंको कड़े आदेश जारी कर दीजिए।

मेरा खयाल है कि मेरा कार्यक्रम जितना मेरे लिए उतना ही आपके लिए भी थकानेवाला सिद्ध हुआ होगा। आशा है, अब आपको विश्राम मिल गया होगा और आप स्वस्थ होंगे।

साभिवादन,

हृदयसे आपकी,
अमृतकौर

[पुनश्च :]

मैं यह पत्र लिख चुकी थी, उसके बाद आपका इसी १५ तारीखका व्याख्या-पत्र (कवरिंग लेटर) मिला।

लाला दुनीचन्दजी, लाहौरवाले, बार-ऐट-लॉ
मार्फत : अध्यक्ष, पंजाब कांग्रेस कमेटी
मोजंग रोड
लाहौर

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९९७)से। सौजन्य : जगन्नाथ

७. पत्र : संभाजीको

सेवाग्राम, वर्धा
१९ अप्रैल, १९४१

भाई संभाजी,

मैं इकरारनामा पढ़ गया। अवश्य वह सख्त है। मैं इस बारेमें तलाश कर रहा हूँ। मेरा अभिप्राय यह होगा कि एक तटस्थ पंचकी नियुक्ति हो और जो शर्तें कबूल करे वह ही कायम की जाये। यों तो प्रत्येक मालिकको अपनी शर्तपर ही काम पर रखनेका अधिकार है और हरएक कामगारको उसे नामंजूर करने का हक है। यह तो खुशीका सौदा है। लेकिन क्योंकि मैं प्रेसके अधिकारियोंको पहचानता हूँ, मैंने पंचकी सूचना की है।

मो० क० गांधीके वंदेमातरम्

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

८. पत्र : ख्वाजाको

सेवाग्राम
२० अप्रैल, १९४१

प्रिय ख्वाजा,

तुम्हारा लम्बा पत्र बड़ा ही मर्मस्पर्शी था। दिल्लीमे भेजा गया तुम्हारा पुर्जा भी मुझे मिला था। मुझे खुशी है कि तुम बा से मिल लिये।

तुम्हें मेरी इस बातपर यकीन करना मुश्किल न होगा कि मैं आज भी [हिन्दू-मुस्लिम] एकतामें वैसा ही अटल विश्वास रखता हूँ जैसा तुमने १९१९ में देखा था। तथ्यों और तारीखोंके मामलोंमें मैं तुम्हारी भूले सुधार दूं। हिन्दी सम्मेलनकी अध्यक्षता मैंने १९१८[1] में की थी—और इसके पीछे मेरा उद्देश्य हिन्दीको वर्जनशील नहीं, बल्कि ग्रहणशील बनानेका था। मेरे अध्यक्षता करने पर तब कोई आलोचना नहीं हुई थी। मैंने हिन्दीकी जो परिभाषा की थी उसको लेकर मुसलमान दोस्तोंमें उत्साह था। जब मैंने अध्यक्षता की थी उस समय हिन्दीकी यह परिभाषा केवल मेरी ही परिभाषा थी। फिर, मेरी परिभाषाको सम्मेलनने भी स्वीकार कर

१. साधन-सूत्र में “१९१७” लिखा है। देखिए खण्ड १४, पृ० २७७-८१।

लिया। हिन्दीके आधारको मैंने जब इतना व्यापक बना दिया कि हिन्दीके मंचसे उर्दू लिपिको मान्यता दे दी गई, तब मेरी आलोचना की भी कैसे जा सकती थी? सबसे पहले विरोधकी आवाज तब उठी जब मैंने पर्यायके रूपमें हिन्दुस्तानीके लिए 'हिन्दी' शब्दका प्रयोग करने का प्रयास किया। यह प्रयास भी एक सही दिशामें किया गया प्रयास था। किन्तु इस समयतक मेरे ऊपरसे भरोसा उठ चुका था और मेरा हर कार्य शककी निगाहसे देखा जाने लगा था। ऐसी अजीब स्थिति क्यों पैदा हुई, इसमें जाने की जरूरत मुझे नहीं है। लेकिन उपर्युक्त बयानसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मैंने जो-कुछ भी किया है, वह हिन्दी-उर्दू विवादका कारण नहीं बन सकता। लेकिन विवाद खड़ा हो जाने पर मैं उससे बेदाग बचकर नहीं निकल सकता था। मैं जिस तरह उर्दू अंजुमनको[1] साम्प्रदायिक संस्था नहीं कहूँगा उसी तरह सम्मेलनको[2] साम्प्रदायिक संस्था नहीं कहूँगा। भाषाके दोनों ही रूप मौजूद हैं और दोनों रूपोंके समर्थक भी मौजूद हैं। इन दोनों रूपोंमें प्रतिद्वन्द्विताकी जरूरत ही नहीं है। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण भावना, जिसका भाषाओंसे कोई सरोकार नहीं है, राष्ट्रीय जीवनके हर क्षेत्रमें व्याप्त है। जब यह समाप्त हो जायेगी — समाप्त तो यह कभी-न-कभी अवश्य होगी और होनी भी चाहिए — तब भाषाएँ तो जो हैं वही रहेंगी, लेकिन वे झगड़ेका कारण नहीं बनेंगी। फिलहाल तो ये दोनों रूप हमारे समान उद्देश्यको सहायता ही पहुँचा रहे हैं। अन्तमें अतिवादी रूप, जिनके पीछे कोई सजीव वास्तविकता नहीं है, समाप्त हो जायेंगे या फिर वे अतीतकी भ्रष्ट भाषा-शैलियोंके रूपमें ही विद्यमान रह जायेंगे। जैसा भी हो, हम कुछ लोग तो अपना दिमाग ठंडा रखें और केवल सही कदम ही उठायें, फिर इसकी चाहे कुछ भी कीमत क्यों न देनी पड़े।

कोशके बारेमें तुम्हारी योजना अच्छी है। उसके और दूसरे मुद्दोंके बारेमें मैं डॉ० ताराचन्द[3] और सुन्दरलालजीसे विचार-विमर्श कर रहा हूँ।

तुम्हें व समस्त परिवारको मेरा प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. अंजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दू

२. अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

३. इलाहाबाद विश्वविद्यालयके

९. पत्र : पुरातन बुचको

सेवाग्राम, वर्धा
२० अप्रैल, १९४१

चि० पुरातन,

तेरा पत्र मिला। तू जो खबर दे रहा है वह सच नहीं जान पड़ती। लेकिन यदि सच हो तब भी हमें तो तैयार ही रहना चाहिए। तुम दोनों[1] सन्नद्ध हो गये होंगे। जो लिखना हो, सो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१७९)से

१०. पत्र : मीराबहनको

सेवाग्राम, वर्धा
२१ अप्रैल, १९४१

चि० मीरा,

सुन्दर वर्णनसे भरा तुम्हारा पत्र मिला।[2] मुझे खुशी है कि तुम्हें इतनी शान्ति और हरनन्दभाईका सत्संग प्राप्त है। दुर्गाबहन[3] अब अच्छी है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४७८)से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८७३ से भी

१. पुरातन बुच और उनकी पत्नी आनन्दी

२. बापूज़ लेटर्स टु मीरा में इसके बारेमें मीराबहनने लिखा है: “मैं बीस एकड़के एक फलोंके शानदार बागके बीच बनी मिट्टीकी एक कुटियामें ठहरी हुई थी। बागमें बहुत सारे चटकीले रंगोंवाले मोर थे, जिनमें से कुछ सूत कातते समय कभी-कभी मेरे सामने आकर नाचने लगते थे।”

३. महादेव देसाईकी पत्नी

११. पत्र : शचीन्द्रनाथ मित्रको

२१ अप्रैल, १९४१

प्रिय शचीन्द्र बाबू,

आपका पत्र मिला। मैंने जो आपको दिया, वह तो न्यूनतम था।[1] किन्तु सत्याग्रहीको तो गुहार पड़ने पर धरतीके एक छोरसे दूसरे छोरतक जाना होता है। जहाँतक आपके एक सेवा-दल संयोजित करने का सवाल है, उसके लिए आप कृपया बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीवालोंसे मिलें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री शचीन्द्रनाथ मित्र
५/२, काँटापुकुर लेन
बागबाजार, कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१८६)से

१२. पत्र : डॉ० अमुतुको

सेवाग्राम, वर्धा
२१ अप्रैल, १९४१

प्रिय डॉ० अमुतु,

मुझे आश्चर्य है। आप भला ट्रेनसे क्यों गये? आप यह कैसे कह सकते हैं कि आपने दिल्ली तक पदयात्रा की? आप वाइसरायको कोई पत्र न लिखें। आपको वापस तमिलनाडु लौट जाना चाहिए तथा प्रायश्चित्त-स्वरूप चुपचाप रचनात्मक कार्य करना चाहिए। आप अयोग्य सत्याग्रही सिद्ध हुए हैं।

आपका,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: अ० भा० कां० कमेटी फाइल, १९४०-४१। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. अनुमानतः यहाँ अभिप्राय सत्याग्रहियोंके पथ-प्रदर्शनके लिए दिये गये गांधीजी के निर्देशोंसे है। देखिए खण्ड ७३, पृ० ४१४-१५।

१३. पत्र : पुरातन बुचको

२१ अप्रैल, १९४१

चि० पुरातन,

वसुमतीबहनने[1] तेरा सन्देश मुझे दिया है। तुझे अथवा आनन्दीको मैं कैसे भूल सकता हूँ? लेकिन आनन्दी तो, लगता है, मुझे बिलकुल भूल गई है।

और अहमदाबादमें यह क्या हो गया?[2] पठानोंने तेरा किया-कराया काम नष्ट कर दिया क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८०)से

१४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२१ अप्रैल, १९४१

चि० नरहरि,

साथके पत्रोंको ठिकानेपर पहुँचवा देना। अहमदाबादके दंगेके बारेमें तुमसे कुछ जानने की आशा रखता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२१)से

१. वसुमती पंडित
२. तात्पर्य १८ अप्रैलको भड़क उठे साम्प्रदायिक दंगेसे है।

१५. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

सेवाग्राम
२१ अप्रैल, १९४१

चि० रुक्मिणी[1],

तेरा पत्र अभी मिला। इन्दुबहन मेरे पास ही बैठी है। यह उन्हें[2] जानती थी। उनका जहाज तो डूब गया था, लेकिन वे दो-तीन दिन एक डोंगीमें रहे और अन्तमें स्कॉटलैंड पहुँचे। वहाँसे उन्होंने दूसरा स्टीमर पकड़ा। उनके दक्षिण आफ्रिका पहुँच जाने की खबर कुमारी हैरिसनको[3] मिली थी। उसके बाद इन्दुबहनको कुछ मालूम नहीं है। हमें आशा करनी चाहिए कि वे सही-सलामत पहुँच जायेंगे। तुम सब निश्चिन्त रहना।

बा अभी दिल्लीमें ही है।

दोनोंको[4]

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०१२९)से। सौजन्य : बनारसीलाल बजाज

१६. पत्र : अरुणचन्द्र गुहको

सेवाग्राम
२३ अप्रैल, १९४१

प्रिय गुह[5],

आपका १८ तारीखका पत्र मिला। मैं जो कर सकता हूँ, करूँगा। किन्तु कपड़ों या भोजनके रूपमें सहायता देने की बात मुझे कभी खास नहीं जँची है। समस्या तो यह है कि ढाका[6], अहमदाबाद और बम्बई इन तीन जगहोंपर कांग्रेसजनोंके क्रियाशील होते हुए भी दंगे क्यों होते हैं? कांग्रेसका अधिकतम प्रभाव अहमदाबादमें है, बम्बई दूसरे नम्बरपर आता है। आपके सामने तो कुछ अड़चन है। हजारों लोग

१. मगनलाल गांधीकी पुत्री
२. रुक्मिणी बजाजके श्वसुर, रामेश्वरलाल बजाज
३. एगथा हैरिसन
४. रुक्मिणी बजाज और उनके पति बनारसीलाल बजाज
५. बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मन्त्री
६. १८ मार्चको ढाकामें साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे थे।

भला इतने असहाय क्यों हो गये कि अपने घरोंकी रक्षा नहीं कर पाये? यह तो वे हिंसात्मक या अहिंसात्मक किसी भी उपायसे कर सकते थे। कांग्रेसजनोंको मात्र सहायता-कार्यसे ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। वह कार्य तो सामाजिक कार्यकर्त्ताओंका है, जिन्होंने इस क्षेत्रमें विशेष योग्यता प्राप्त कर ली है, जैसे कि मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी। कांग्रेसजनोंको इस घोर बुराईके कारणों और निवारणके उपायोंका पता लगाना है। आप तो कुर्सीपर बैठकर बातें बनानेवाले नहीं, बल्कि अनुभवी कार्यकर्त्ता हैं। मैं चाहता हूँ कि आप इस काममें अपना दिमाग लगायें। ऐसे कार्योंमें हमें सरकारसे सहायताकी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। जहाँ आसानीसे भयभीत हो जानेवाले लोग होंगे, वहाँ उन्हें डरानेवाले लोग भी अवश्य उठ खड़े होंगे।

हृदयसे आपका,

श्री अ० गुह
बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी
३२, अपर सर्कुलर रोड
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। फाइल संख्या ३००१ एस, पुलिस कमिश्नर्स ऑफिस, बम्बईसे भी

१७. पुर्जा : अमृतलाल चटर्जीको[1]

सेवाग्राम
२३ अप्रैल, १९४१

केवल लेखा-परीक्षा ही नहीं हो रही है, बल्कि सुव्यवस्थित रूपसे हिसाब-किताब रखना भी चालू होगा।

चाहे जैसा दाम देकर कोई भी चीज नहीं मँगानी है। जो वास्तवमें बीमार हों उन्हें छोड़कर बाकी लोगोंके लिए सन्तरे बिलकुल बन्द कर दिये जायें। पपीतेके बजाय हम लोग प्रचुर मात्रामें नीबूका इस्तेमाल करेंगे। आजकी तरह लगभग प्रतिदिन सबको आम दिये जायेंगे, और जब आम दिये जायें तब केले आदि दूसरे फल न दिये जायें।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १४६२)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. सेवाग्राम आश्रममें भोजन-वितरणका कार्य अमृतलाल चटर्जीकी देखरेखमें होता था।

१८. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२३ अप्रैल, १९४१

चि० मुन्नालाल,

यदि गम्भीरतासे विचार करें, तो परीक्षा देने, ज्ञान प्राप्त करने और पारंगत होने, इन तीनों बातोंका उद्देश्य एक ही है। मनुष्य परीक्षा देता है तो पारंगत होनेके लिए, यानी पूरा ज्ञान प्राप्त करनेके लिए। कंचन[1] कभी-कभी बेचैन जरूर हो जाती है, लेकिन चिन्ताकी कोई बात नहीं है। फिर, मैं तो नजर रखता ही हूँ। क्या तुम उसे कड़े पत्र लिखते हो? उसे लिखो कि तुम्हारे सब पत्र मुझे दिखाये। इससे तुम्हारी कलम अपने-आप संयममें रहेगी और मेरे लिए तुम्हारा मार्गदर्शन करना सरल हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मुन्नालालजी
चरखा संघ, खादी वस्त्रालय
मूल, जिला चाँदा

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५०३) से। सी० डब्ल्यू० ७१३५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१९. सलाह : सिन्धके कांग्रेस शिष्टमण्डलको

वर्धागंज
२४ अप्रैल, १९४१

मौलाना साहब सिन्धमें सविनय अवज्ञा आन्दोलन नहीं चाहते, यह स्वयंमें एक निर्णायक तथ्य है। इसके अलावा, मेरा स्पष्ट मत है कि गुण-दोषके आधार पर भी वहाँ यह आन्दोलन नहीं होना चाहिए। सिन्धके प्रत्येक कांग्रेसीका यह कर्त्तव्य है कि वह गाँवोंमें जाकर बैठ जाये और वहीं रचनात्मक कार्यक्रममें जुट जाये।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २६-४-१९४१

१. मुन्नालाल गं० शाहकी पत्नी

२०. पुर्जा : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम
२४ अप्रैल, १९४१

जिन लोगोंके नामोंके आगे काटेका चिह्न लगा दिया है उनको छोड़कर बाकी लोगोंको नीवूसे ही काम चलाना चाहिए।[1]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३८६)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

२१. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

२४ अप्रैल, १९४१

भाई अमृतलाल,

वसुमतिबहनको पपीता इ० जो फल उन्हें चाहिये देना।

बापू

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यु० १४६३)से। सौजन्य : ए० के० सेन

२२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धा
२५ अप्रैल, १९४१

कॉमन्स सभामें हुई भारत-सम्बन्धी बहसकी लम्बी रिपोर्ट पढ़कर मुझे दु:ख हुआ। देखा गया है कि संकट पड़ने पर लोगोंके दिल पसीज जाते हैं और वे तथ्योंके प्रति सचेत हो जाते हैं, किन्तु ऐसा प्रकट होता है कि ब्रिटेनके संकटने श्री एमरीके दिलको जरा भी नहीं छुआ है और उनकी हृदयहीनतामें कोई कमी नहीं

१. अमृतलाल चटर्जीने गांधीजीको उन लोगोंके नामोंकी सूची दी थी जिन्हें फलोंकी जरूरत थी। गांधीजीने अमृतलाल चटर्जीके पत्रके पीछे ही यह पुर्जा लिखा था और चिमनलाल, रामदास, डॉ० दास, तथा अमृतकौरके नामोंके आगे काटेका चिह्न भी बना दिया था।

आई है।[1] श्री एमरीके इस निष्ठुर रवैयेसे मेरा यह विचार और भी दृढ़ हो गया है कि भारी कठिनाइयोंके बावजूद कांग्रेसको अपनी अहिंसाकी नीतिका पालन करते रहना चाहिए।

भारतकी वर्तमान परिस्थिति और सुस्पष्ट तथ्योंकी तिरस्कारपूर्ण अवहेलना करके श्री एमरीने ब्रिटेनका कोई हित नहीं किया है। वे बड़े सहज भावसे कहते हैं कि ब्रिटिश शासनसे भारतमें शान्ति स्थापित हुई है। ढाका और अहमदाबादमें क्या हो रहा है, क्या उन्हें इसका पता नही है? इन दोनों स्थानोंपर शान्ति बनाये रखनेका उत्तरदायित्व किसका था? मुझे उम्मीद है कि वे पलटकर यह जवाब नहीं देंगे कि कमसे-कम बंगालमें स्वायत्त शासन है। उनको पता है कि वह स्वायत्त शासन कैसा मजाक है। उन्हें मालूम है कि इन कठपुतली-जैसे मन्त्रियोंको, चाहे वे कांग्रेसका बिल्ला लगायें या लीग या किसी भी दूसरे दलका, ऐसी आपात स्थितियोंसे निपटने के लिए कितने कम अधिकार प्राप्त हैं।

मै एक बहुत प्रासंगिक सवाल पूछता हूँ: क्या कारण है कि ब्रिटिश शासनके इतने लम्बे दौरके फलस्वरूप लोग इतने शक्तिहीन बन गये हैं कि वे कुछ सौ गुण्डों का सामना नहीं कर सकते? यह हमसे अधिक अंग्रेजोंके लिए शमनाक चीज है कि हजारों लोग भयभीत होकर इस कारण अपने घरोंसे भाग खड़े हों कि कुछ-एक सौ गुण्डोंके लिए अग्निकाण्ड, हत्याकाण्ड और लूटपाटकी वारदातोंके लिए अनुकूल वातावरण बन गया है। किसी भी सरकारका — जिसे सरकार कहा जा सके — प्रथम कर्त्तव्य अपनी प्रजाको आत्मरक्षाकी कला सिखाना होना चाहिए। लेकिन विदेशी ब्रिटिश सरकारको भारतीय नागरिकोंके मूलभूत कल्याणकी कोई चिन्ता नही थी और इसलिए उसने जनताको शस्त्रास्त्रके उपयोगसे वंचित कर दिया।

श्री एमरीने भारतीय सेनाओंकी जो प्रशंसा की है उसका भारतके जन-मानसपर कोई असर पड़नेवाला नहीं है, क्योंकि फिलहाल कांग्रेसकी अहिंसा-नीतिकी बात छोड़ भी दें तो मेरा यह दावा है कि यदि भारतको आत्मरक्षाके साधन प्राप्त होते और उसका प्रशिक्षण मिला होता तथा यदि वह युद्धमें स्वेच्छासे ग्रेट ब्रिटेनका सहयोगी बना होता तो यूरोपकी सारी विध्वंसक शक्तियाँ मिलकर भी ब्रिटेनका बाल बाँका नहीं कर पातीं।

श्री एमरीने बार-बार यह कहकर भारतीयोंकी बुद्धिका अपमान किया है कि भारतके विभिन्न राजनीतिक दलोंके आपसमें समझौता करने-भर की देर है कि ब्रिटेन उनकी सर्वसम्मत इच्छाको मान्यता दे देगा। मैंने बारम्बार यह सिद्ध कर दिया है कि दलोंको आपसमें एकता न करने देना ही ब्रिटेनकी परम्परागत नीति रही है। "फूट डालकर शासन करना" ब्रिटेनका नासमझी-भरा सिद्धान्त रहा है जिसपर

१. भारत मन्त्री एल० एस० एमरीने कॉमन्स सभामें २२ अप्रैल, १९४१ को उस घोषणाकी अवधि एक वर्ष और बढ़ाने का एक प्रस्ताव पेश किया था जिसके अन्तर्गत भारतीय प्रान्तोंके गवर्नरोंको प्रान्तीय विधान-मण्डलोंके सदस्योंके अधिकार दे दिये गये थे। इस अवसरपर भाषण देते हुए श्री एमरीने कांग्रेस और उसके नेतृत्वपर कई कटु आक्षेप किये थे।

उसे गर्व है। भारतके जन-सामान्यमें फूट डालने के लिए ब्रिटिश राजनयिक जिम्मेदार हैं और ये भेद तबतक मिट नहीं सकेंगे जबतक अंग्रेज तलवारके बलपर भारतको दासताके बन्धनमें जकड़े रखेंगे।

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि दुर्भाग्यवश कांग्रेस और मुस्लिम लीगके बीच ऐसी खाई है जो पट नहीं सकती। ब्रिटेनके राजनयिक यह क्यों नहीं स्वीकार कर लेते कि आखिर यह एक घरेलू झगड़ा है? वे भारत छोड़कर चले जायें तो मैं वादा करता हूँ कि कांग्रेस, लीग तथा अन्य सब दल इसी बातमें अपना हित देखेंगे कि वे आपसमें मिल जायें और मिलकर भारत सरकारको गठित करनेका एक स्वदेशी फार्मूला ढूँढ़ निकालें। सम्भव है कि इस सरकारकी रचना शास्त्रीय ढंगकी न हो, किसी पश्चिमी नमूने पर न हो, किन्तु वह टिकाऊ अवश्य होगी। यह भी सम्भव है कि उस सुखद स्थितितक पहुँचने से पहले हमें आपसमें ही संघर्ष करना पड़े। लेकिन यदि हम आपसमें तय कर लें कि हम किसी बाहरी शक्तिको सहायताके लिए नहीं बुलायेंगे, तो लड़ाई-झगड़ेकी वह स्थिति शायद दस-पन्द्रह दिनतक चलेगी और इस सारी अवधिमें यहाँ उतने लोग भी नहीं मरेंगे जितने कि आज यूरोपमें एक दिनकी लड़ाईमें मारे जाते हैं। इतने कम जन-संहारका सीधा-सादा कारण यह होगा कि ब्रिटिश शासनकी कृपासे हमारे देशके लोग बिलकुल निहत्थे हैं।

सचाईकी घोर उपेक्षा करते हुए श्री एमरीने अपने अनभिज्ञ श्रोताओंको इस भ्रममें डाल दिया है कि कांग्रेस या तो "सब-कुछ या कुछ नहीं" चाहती है। उन्हें याद दिला दूं कि ब्रिटिश जनताकी भावनाओंको तुष्ट करने के लिए कांग्रेस इतना झुक गई कि उसने पूना-प्रस्ताव[1] पारित कर डाला और जब बम्बईमें पूना-प्रस्ताव ही रद्द[2] कर दिया गया, तब मैंने दृढ़तापूर्वक यह कहा था कि चूँकि फिलहाल ब्रिटिश सरकार भारतको आजादी देने की स्थितिमें नहीं है और न उसकी घोषणा कर सकती है, इसलिए हम पूर्ण वाक्-स्वातन्त्र्य और लेखन-स्वातन्त्र्यसे ही सन्तोष कर लेंगे। क्या यह बात "सब-कुछ या कुछ नहीं" की माँग थी? कांग्रेस इस समय स्वयं अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिए संघर्ष कर रही है, फिर भी ब्रिटिश सरकारको परेशानीमें न डालने की अपनी इच्छाके कारण वह जान-बूझकर संयमसे काम ले रही है। परन्तु श्री एमरी अपनी वर्तमान मनःस्थितिमें उसकी कद्र करने की शालीनता दिखायेंगे — ऐसी आशा करना व्यर्थ है। उस तरहकी शालीनता न होने के कारण उन्होंने उलटे कांग्रेसके उसी संयमको उसकी कमजोरी बताते हुए दावा किया है कि कांग्रेसका सविनय अवज्ञा आन्दोलन निष्फल हो गया है।

१. वर्धामें २१ जून, १९४० को कांग्रेस कार्य-समितिने इस प्रस्तावकी सिफारिश की थी और पूनामें २८ जुलाई, १९४० को अ० भा० कां० कमेटीने इसे पारित किया था। प्रस्तावके पाठके लिए देखिए पृ० १२५-२६।

२. देखिए खण्ड ७३, पृ० १-३ और ५-१४।

भारतकी सम्पन्नताके बारेमें उनका वक्तव्य पढ़कर मैं स्तम्भित रह गया। मैं अपने अनुभवके आधारपर कहता हूँ कि भारतकी सम्पन्नता अब एक कहानी बन कर रह गई है। भारतके करोड़ों लोग दिन-ब-दिन कंगाल होते जा रहे हैं। उनके पास तन ढँकने को कपड़ा नहीं है और खाने को पर्याप्त भोजन नहीं है। चूँकि भारतका शासन एक आदमीके हाथोंमें है, इसलिए वह करोड़ों रुपयेका बजट दिखा सकता है। किन्तु मैं यह कहने का दुस्साहस करता हूँ कि वह बजट न केवल भारतकी भूखी जनताकी सम्पन्नताका कोई प्रमाण नहीं है, बल्कि उलटे इस बातका पक्का प्रमाण है कि भारत अंग्रेजोंके पैरों तले पिसा जा रहा है।[1] किसानोंके कष्टोंसे परिचित प्रत्येक भारतवासीका यह कर्त्तव्य है कि वह इस निरंकुश शासनके खिलाफ विद्रोह कर दे। मानव-जातिका सौभाग्य है कि भारतका विद्रोह शान्तिमय विद्रोह है और मैं आशा करता हूँ कि केवल शान्तिपूर्ण प्रयत्नोंके द्वारा ही भारत अपने सहज भविष्यको प्राप्त कर लेगा।

लेकिन मैं श्री एमरीके वक्तव्यकी और अधिक चीर-फाड़ नहीं करूँगा। उनके भाषणका यह अति संक्षिप्त विश्लेषण करने में भी मुझे दुःख हुआ है। किन्तु उनका यह भाषण इतने आश्चर्यजनक रूपसे भ्रामक है कि मुझे लगा कि यदि मैं उनके दुर्भाग्यपूर्ण वक्तव्यकी कुछ ज्वलन्त विसंगतियोंको स्पष्ट नहीं करता तो मैं अपने कर्त्तव्यसे च्युत होऊँगा। श्री एमरीको आज भारतकी ४० करोड़ जनताके भाग्य-नियन्ताके रूपमें जो निर्विवाद अधिकार प्राप्त है, बेहतर होता कि वे केवल उतनेसे ही सन्तोष मान लेते।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २७-४-१९४१

२३. फ्रैंक मोरेसके प्रश्नोंके उत्तर[2]

[२५ अप्रैल, १९४१][3]

१. इसके उत्तरमें मैं अपना पहलेका कथन ही दुहराऊँगा कि ब्रिटिश राजनयिकों और पत्रकारोंने सारे भारतीय प्रश्नको अवास्तविकताकी चादरसे ढक दिया है। 'टाइम्स [ऑफ इंडिया]' की आलोचनाकी वास्तविकता तो यह है कि राष्ट्रवादी भारत किन्हीं कारणोंसे युद्ध-प्रयत्नोंमें सहयोग देने के विरुद्ध है।[4] किन्तु यह समझ लेने के बाद कि सारा-का-सारा भारत एक कारागार है, जहाँ

१. इसके बादके दो वाक्योंको सेन्सरने काट दिया था।

२ और ३. प्रश्न लन्दनके **न्यूज क्रॉनिकल**की ओरसे पूछे गये थे। महादेव देसाईने २५ अप्रैल, १९४१ को फ्रैंक मोरेसको लिखे अपने पत्रमें कहा था: "गांधीजी ने प्रश्न १, २, ३ और ५ के ये उत्तर दिये हैं। प्रश्न ४ के उत्तरमें वे कुछ नहीं कहना चाहते।"

४. देखिए पृ० ३-५।

जेलर लोग बन्दियोंसे जो चाहे करवा सकते हैं, इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नही है कि सरकार जितना चाहे धन उगाह सकती है और चाहे जितने रंगरूट भर्ती कर सकती है। यह बात मैं पहले भी सिद्ध कर चुका हूँ कि आजका खिताबधारी वर्ग, जिसमें देशी रियासतोके राजा-नवाब भी शामिल हैं, वस्तुतः अंग्रेजोंकी ही सृष्टि है।

२. यदि बम्बई सम्मेलनके प्रस्तावोंको[1] सरकार ज्यों-का-त्यों मान लेती है, तो हालांकि ये प्रस्ताव सम्भवतः कांग्रेसको स्वीकार्य नही होंगे, फिर भी मैं यह स्वीकार करूँगा कि इन्हें मान लेना कुछ हदतक इस बातका सबूत है कि सरकार सत्ता छोड़ने की इच्छा रखती है।

३. मुझे तानाशाह बताना हास्यास्पद है, यदि किसी और कारणसे नहीं तो इसी कारणसे कि मैं जो निर्देश देता हूँ उसके पीछे दण्डकी शक्ति नहीं है। यदि कुछ है तो कांग्रेसजनोंके स्वेच्छापूर्वक दिये हुए स्नेहमय समर्थनकी शक्ति ही है। मैंने अपना मत किसीपर भी नही थोपा है। अहिंसात्मक विचारोंको दूसरोंपर थोपने की बात अपने-आपमें ही एक विरोधाभास है। यह सच है कि मैं अपनी तथाकथित नीतिको बदलने में असमर्थ हूँ, क्योंकि मेरी नीति तो मेरा धर्म है।[2]

मैं श्री एमरीके इस धृष्टतापूर्ण कथनसे आश्चर्यचकित रह गया हूँ कि कांग्रेसकी इच्छा या तो "सब-कुछ या कुछ नहीं" लेने की है, और उसने "इस विषयपर चर्चा करने से भी इनकार कर दिया है"। वे जानते हैं कि कांग्रेस इस हदतक झुक गई थी कि उसने सरकारके सामने पूना-प्रस्ताव रखा था और उन्हें यह भी जानना चाहिए कि जब बम्बईमें पूना-प्रस्ताव वापस ले लिया गया तब कांग्रेस यह समझ गई थी कि इस समय सरकारसे यह आशा नही की जा सकती कि वह कांग्रेसकी माँगको स्वीकार करेगी और इसीलिए कांग्रेस-प्रस्तावमें वाणीकी स्वतन्त्रताकी माँग रखी गई, जिसे सरकार द्वारा स्पष्ट रूपसे ठुकरा दिया गया है।

इसी तरह कांग्रेसको एक ऐसी सर्वसत्तावादी संस्था कहना भी गलत है जिसकी इच्छा सारी सत्ता प्राप्त करने की है। सर्वसत्तावादका मूल लक्षण यह है कि उसके पीछे हिंसात्मक दण्ड-शक्ति होती है। श्री एमरी जानते हैं कि कांग्रेसने अहिंसाका व्रत लिया है, और मैं उन्हें चुनौती देता हूँ कि वे एक भी ऐसा उदाहरण दें जिसमें अपने विरोधियोंपर अपना मत थोपने के लिए कांग्रेसने अधिकृत रूपसे हिंसाका प्रयोग किया हो।

'उपरोक्त दो कथनोंके समान ही श्री एमरीका यह दावा भी गलत है कि "इस समय मुख्य संवैधानिक कार्यका जिम्मा अनिवार्यतः हमारी अपेक्षा भारतीयोंके हाथोंमें कही अधिक है", क्योंकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि अंग्रेजोंकी 'फूट

१. देखिए खण्ड ७३, परिशिष्ट १३।
२. अनुमानतः इसके आगेका अंश ही प्रश्न ५का उत्तर है।

'डालकर राज्य करने' की परम्परागत नीतिको असफल बनाने के प्रायः असम्भव कार्यको पूरा करने के अलावा भारतीयोंके हाथमें कुछ भी नहीं है। जरा कल्पना कीजिए कि कोई हिटलर इंग्लैंडपर काबिज होता और उसने उसी प्रकार सफलता-पूर्वक अंग्रेजोंमें फूट डाली होती जैसी कि अंग्रेजोंने भारतीयोंमें डाली है और फिर उनकी खिल्ली उड़ाते हुए वह कहता कि 'तुम आपसमें समझौता कर लो तो मैं उसका अनुमोदन कर दूँगा।' मैं दावेके साथ कहता हूँ कि चाहे कितने ही कोमल शब्दोंके आवरणमें इसे छुपाया जाये, फिर भी तथ्य यही है कि भारतमें भी हिटलरशाही ही है। और चूँकि उन्होंने सचाईकी अवहेलना करना ही चाहा है, इसलिए जब उन्होंने जान-बूझकर अपने अनभिज्ञ श्रोताओंको यह कह-कर बहकावेमें डालने की कोशिश की कि व्यक्तिगत सविनय अवज्ञाका उद्देश्य अंग्रेजोंको विषम स्थितिमें डालना था और यही हुआ भी है, तब मुझे उसपर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। जो-कुछ लिखा गया है वही अब भी सही है, और वह यह है कि कांग्रेसका इरादा सरकारको अपने सविनय अवज्ञा आन्दोलन द्वारा विषम स्थितिमें डालने का नहीं था। और श्री एमरीने अपने भाषणमें ही मान लिया है कि कोई विषम स्थिति नहीं बनी है, क्योंकि उन्होंने बड़े उत्साहसे घोषणा की है कि कांग्रेसके इस कदमसे भारतके किसी भी भागमें युद्ध-प्रयत्नों-पर कोई असर नहीं पड़ा है और "युद्ध-सम्बन्धी सभी कार्योंके लिए या कष्ट-निवारणके वास्ते भारतके प्रत्येक वर्गसे खूब उदारतापूर्वक धनराशि मिल रही है।" कांग्रेसकी अनुकरणीय नरमीकी प्रशंसा करने के बजाय उन्होंने शालीनता छोड़कर एक पचास साल पुराने संगठनपर वह सब करने का आरोप लगाया है जो करने का न कभी उसका उद्देश्य रहा है और न कभी उसने वस्तुतः किया है। यह सोचकर मेरा मन दुःखसे भर उठता है कि ब्रिटेन आज जिस संकटसे गुजर रहा है उसमें भी श्री एमरीको इतना होश नहीं आया है कि वे कमसे-कम ठोस सचाईको तो स्वीकार कर लेते।

[अंग्रेजीसे]

महात्मा, जिल्द ६, पृ० ४८ और ४९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

२४. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

सेवाग्राम, वर्धा
२५ अप्रैल, १९४१

प्रिय सतीश बाबू,

मैं जान-बूझकर आपको अंग्रेजीमें पत्र लिख रहा हूँ। मेरी सलाहपर अमृतबाबू बंगाल वापस जा रहे हैं।[1] उनको अपने परिवारपर जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिए। इस कारण सम्भवत: वे मानसिक संन्यास ले लेंगे और परिवारसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेंगे। उनके दो लड़के[2] फिलहाल यहीं रहेंगे। दो लड़कियोंको[3] वे अपने साथ ले जायेंगे। मेरे विचारमें लड़कियोंका उचित स्थान अपनी मांके पास है, जिसके साथ उनके मनका अमृतबाबूकी अपेक्षा अधिक मेल है। मैं चाहता हूँ कि आप इस परिवारको अपना परामर्श दें और उनका मार्ग-दर्शन करें। जबतक वे लोग आपके मार्गदर्शनको स्वीकार करते रहेंगे तबतक जो रुपये मैं भेजता हूँ, भेजता रहूँगा। मैं चाहता हूँ कि दोनों बहनें देश-सेवाका कुछ कार्य करें और अपनी आजीविका कमायें। किन्तु आप जैसा ठीक समझें। अमृतबाबू सेवा-कार्यके विषयमें बड़े महत्त्वाकांक्षी हैं। कुछ और करने के बजाय वे दंगाइयोंको[4] शान्त करने के प्रयासमें मर जाना पसन्द करेंगे। आप उनका मार्गदर्शन कीजिएगा।

आभाके पास साड़ी नहीं है। उसे कुछ सादे वस्त्र दिलवा दीजिएगा और बिल मुझे भेज दीजिएगा।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३००) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. देखिए खण्ड ७३, पृ० ४६८।
२. शैलेन्द्रनाथ और धीरेन्द्रनाथ
३. वीणा और आभा
४. ढाकामें

२५. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

२५ अप्रैल, १९४१

प्रिय कुमारप्पा,

यह क्या बात है? परिश्रमसे तुम्हें बीमार क्यों पड़ जाना चाहिए? तुम्हें तो उपाय मालूम है। जब अत्यधिक परिश्रम करना पड़े तो आंशिक या पूरा उपवास करो। आंशिक उपवासका मतलब है रसीले फलोंपर ही निर्वाह करना। और जब बुखार हो तो उपवास अनिवार्य है। मैं चाहता हूँ कि तुम शीघ्र ही कुन्नूर चले जाओ।[1]

मुझे खुशी है कि तुम कोडम्बक्कम जा सके।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५२)से

२६. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२७ अप्रैल, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारे बहुत लम्बे पत्र मिले। अच्छा किया, पत्र लिखे। लेकिन तुम्हें इस पत्र लिखनेके रोगसे छुट्टी पानी चाहिए। सेवाग्रामका मोह तुमसे छूट गया है, यह मैं बिलकुल नहीं मानता। वैसे यह तो मैं अपना ही मत व्यक्त कर रहा हूँ। कहीं भी रहो, तुम्हें कंचनको साथ रखना ही चाहिए। बादमें भले अलग हो जाओ। तय यह हुआ था कि बुखार आने पर तुम मूल छोड़ दोगे। इसलिए वापस लौट आओ।

[पुनश्च :]

कमजोरीके बावजूद इतना लिख डाला। आज मेरे उपवासका[2] तीसरा दिन है, शामको तोड़ूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५०२)से। सी० डब्ल्यू० ७१३४ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. कुमारप्पा वायु-परिवर्तनके लिए कुन्नूर जानेवाले थे।

२. सम्भवतः गांधीजी ने उक्त उपवास दंगोंके सिलसिलेमें किया था।

२७. तार : मुल्कराजको[1]

२८ अप्रैल, १९४१

लाला मुल्कराज
मन्त्री, जलियाँवाला बाग स्मारक कोष
अमृतसर

आपकी कार्रवाईका समर्थन किया जाता है। जबतक सभी पक्ष आपसमें मिलकर आपके सामने कोई ऐसा नक्शा पेश नहीं करते जिसमें यह स्पष्ट रूपसे दिखाया गया हो कि वे बागके किन-किन भागोंका उपयोग करेंगे, और आपको इस बातका इत्मीनान नहीं करा देते कि वे अपने वचनका पालन करेंगे तबतक आपको उन्हें अनुमति-पत्र नहीं देना चाहिए।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८. पत्र : नानाभाई इ० मशरूवालाको

२८ अप्रैल, १९४१

भाई नानाभाई[2],

तुमने तीन बीसी पूरी कर ली। अब मैं यह आशा तो करता ही हूँ कि तुम नीरोग हो जाओगे और सेवा करने के लिए दो और बीसी भी पूरी करोगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६९४)से। सी० डब्ल्यू० ४३३९ से भी; सौजन्य : नानाभाई इ० मशरूवाला

१. यह तार मुल्कराजके २२ अप्रैल, १९४१ के पत्रके जवाबमें भेजा गया था जिसमें उन्होंने अमृतसरकी विभिन्न यूनियनोंके लिए मई-दिवस मनाने की खातिर जलियाँवाला बागकी जमीनके आरक्षणके बारेमें लिखा था।

२. किशोरलाल मशरूवालाके भाई और सुशीला गांधीके पिता

२९. पत्र : श्रीमन्नारायणको

सेवाग्राम
२८ अप्रैल, १९४१

भाई श्रीमन्,

तुमारी सूचना अच्छी है। आज राजेंद्रबाबू आते हैं। देखुंगा क्या शक्य है। जानते होंगे की मदालसा[1] खूब आगे बढ़ रही है। काफी चलती है। आशा तो है कि बिलकुल अच्छी हो जायगी।

बापुके आशीर्वाद

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३००

३०. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

[३० अप्रैल, १९४१][2]

चि० काका,

तुम यह क्यों नहीं देखते कि बागी होने के बावजूद [विपक्षीकी] कमेटीमें काम करना, पत्र-व्यवहारमें उसकी भाषाका अनुसरण करना, यह तुम्हारे अहिंसक बागी होने की निशानी है?

बापूके आशीर्वाद

श्री काकासाहब
४०-ए, रिज रोड
मलाबार हिल, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९४०)से

१. श्रीमन्नारायणकी पत्नी
२. डाककी मुहरपर से

३१. पत्र : उर्मिला म० मेहताको

[३० अप्रैल, १९४१][1]

चि० उर्मि[2],

तेरी कतरनें मुझे मिली थीं। लेकिन चूंकि उनमें कुछ नहीं था इसलिए [उत्तरमें] मैंने कुछ नहीं लिखा। तू आजकल क्या पढ रही है? तेरे बिना बहुत सूना-सूना लगता है। तुम सब लोग मई महीनेमें जल्दसे-जल्द आना। तू क्या पढती है? क्या खाती है? अपना वजन लिखना। घूमने जाती है या नहीं?

लिखनेमें स्याहीका उपयोग कर। तू कैसे पढती है? यहाँ खूब गर्मी पड़ती है।

बापूके आशीर्वाद

श्री उर्मिलाबहन
मार्फत श्री म० प्रा० मेहता
मकान ऊपरकी मंजिल, ७१ दरियागंज
दिल्ली

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०११६) से। सौजन्य: मंजुला म० मेहता

३२. पत्र : 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के सम्पादकको

१ मई, १९४१

प्रिय महोदय,

आपने लिखा है:[3]

> श्री एमरी बखूबी यह प्रत्युत्तर दे सकते हैं कि श्री गांधीने उनपर जिन "असंगतियों" का आरोप लगाया है वे स्वयं उनके वक्तव्यमें[4] भी मौजूद हैं। और अहिंसाके परम पुजारीके मुंहसे निकला यह आरोप तो निश्चय ही बड़ा

१. डाककी मुहरपर से
२. मगनलाल प्रा० मेहता व मंजुला म० मेहताकी पुत्री
३. प्रस्तुत अंश २८-४-१९४१ के टाइम्स ऑफ इंडिया में 'करेन्ट टॉपिक्स' (सामयिक चर्चा) स्तम्भके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।
४. देखिए पृ० १५-१८।

विचित्र लगता है कि भारतीय जनताको "बिलकुल निहत्था" बनाये रखने की ब्रिटेनकी तथाकथित नीतिके फलस्वरूप भारत "शक्तिहीन" हो गया है।

१९०८[1] में जब मैंने पहली बार अहिंसा-सिद्धान्तके जीवन-रक्षक तथा जीवन-दायी सत्यका प्रतिपादन किया था, तभी मैंने कहा था कि अंग्रेजोंने भारतीय जनताका जो निःशस्त्रीकरण किया है वह भारतमें ब्रिटिश राज्यके इतिहासका सबसे कलंकित पृष्ठ है। और १९१८[2] में जब मैं ब्रिटिश सेनाके लिए इतने ज्यादा उत्साहसे रंगरूट इकट्ठे कर रहा था कि खुद सख्त बीमार पड़ गया और मुझे काफी बदनामी भी उठानी पड़ी, तब भी मैंने यही कहा था। उस समय इस कथनको ठीक माना गया था। किन्तु समय बदल गया है और एक अकाट्य तथ्यका निरूपण करने के लिए मुझपर असंगतिका आरोप लगाया जा रहा है। मेरा कहना है कि अहिंसा किसी-पर लादी नहीं जा सकती। वह तो व्यक्तिके हृदयसे ही प्रस्फुटित हो सकती है। ब्रिटिश सरकारका वह कदम ब्रिटिश शासनकी सुरक्षाको ध्यानमें रखकर उठाया गया था, लोगोंको अहिंसक बनाने के उद्देश्यसे नहीं। अब तो लोग इतने शक्तिहीन हो गये हैं कि कुछ शरारत भी नहीं कर सकते। और शक्तिहीन व्यक्तियोंसे अच्छा काम कभी हो नहीं सकता। ब्रिटिश सत्ताका एक अकेला प्रतिनिधि, उदाहरणार्थ, एक हजारकी आबादीवाले एक गाँवको दयनीय दासतामें रख सकता है तो यह कोई गर्व या श्रेयकी बात नहीं है। बेशक, मेरी अहिंसा यह स्वीकार करती है कि जो लोग अहिंसक नहीं हो सकते या नही होना चाहते वे शस्त्र रख सकते हैं और उनका कारगर उपयोग कर सकते हैं। मैं हजारों बार कह चुका हूँ और फिर कहता हूँ कि अहिंसा निर्बलके लिए नहीं, बल्कि सबसे सबलके लिए है। वह हिंसासे कहीं प्रबलतर शक्ति है, हालाँकि गुण और प्रभावकी दृष्टिसे उससे मूलतः भिन्न है।

आपका,

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

महात्मा, जिल्द ६, पृ० ४८ और ४९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१. स्पष्ट ही '१९०९' होना चाहिए था। यहाँ आशय **हिन्द स्वराज्य** से है; देखिए खण्ड १०।

२. देखिए खण्ड १४, पृ० ४२४।

३३. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

१ मई, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। परीक्षा तुम्हें देनी चाहिए और खादीके शास्त्रका सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहिए — उत्पादन और बिक्री दोनोंका। यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद तो तुम कहीं व्यवस्थित हो ही जाओगे।

तबीयत ठीक रखने के लिए जो उपाय करने पड़ें, करने ही चाहिए। लेकिन सब-कुछ यहाँसे मँगाना, यह बहुत दिन चलेगा नहीं। तुम्हींको शर्म आयेगी। मैंने तो मान ही लिया है कि तुम शर्तके मुताबिक यहाँ जरूर आ जाओगे। अभी भी सलाह दे रहा हूँ। फिर भी, अगर तुम्हें रहना हो तो रहो और खूब उन्नति करो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५००)से। सी० डब्ल्यू० ७१३६ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

३४. पत्र : प्रभावतीको

२ मई, १९४१

चि० प्रभा,

तेरा पत्र मिला। जयप्रकाशके[1] लिए क्या किया जा सकता है, कुछ समझमें नहीं आता। सहन करने के सिवाय चारा नहीं है। तू समय-समयपर खबर लेती रहना। मुझे कुछ सूझेगा तो मैं लिखूंगा। अपना काम तो तू करती ही रहना। अन्य चिन्ता मत करना। राजेन्द्र बाबूने मेरे साथ बात की है। उसके सम्बन्धमें तुझे वे लिखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६५)से

१. प्रभावतीके पति जयप्रकाश नारायण उन दिनों देवली नजरबन्दी शिविरमें कैद थे।

३५. प्रस्तावना

सेवाग्राम, वर्धा
३ मई, १९४१

यह संग्रह मैंने पढ़ा नहीं है। लेकिन मेरे लिये इतना पर्याप्त है कि उसमें दीनबन्धुके गुणोंकी कथा है और उसमें[से जो] द्रव्य उत्पन्न होगा सब-का-सब दीनबन्धु स्मारक [कोष]में जायेगा।

मो० क० गांधी

दीनबन्धुको श्रद्धांजलियाँ। जी० एन० ११६९४ भी

३६. तार: तेजबहादुर सप्रूको[1]

[३ मई, १९४१][2]

सहमत हूँ।

गांधी

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ५-५-१९४१

१ और २. यह तार तेज बहादुर सप्रूके २ मईके तारके उत्तरमें भेजा गया था, जिसमें कहा गया था: "श्री जिन्नाने मुझसे पूछे बिना ही उनके नाम मेरा ६ फरवरीका पत्र और अपना १० फरवरी, १९४१ का उत्तर समाचारपत्रोंमें छपने को दे दिया है। अतः मैं २५ जनवरीसे लेकर १० मार्च, १९४१ तक आपके और अपने बीच हुए पत्र-व्यवहारको प्रकाशित करने के लिए आपकी अनुमति चाहता हूँ। कृपया तार दें।" अपने ४ मईके वक्तव्यमें तेजबहादुर सप्रूने यह स्पष्टीकरण किया था: "परसों अखबारोंमें मैसूरमें दिये हुए श्री जिन्नाके वक्तव्य तथा उनके और मेरे बीच हुए उनके द्वारा प्रकाशित पत्र-व्यवहारको पढ़ने के उपरान्त मैंने उसी शाम महात्मा गांधीको तार भेजा। . . . कल शाम महात्माजीका उत्तर मिला. . .। उनकी सहमतिसे मैं उनके और अपने बीच हुए पत्र-व्यवहारको समाचार-पत्रोंमें प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ। श्री जिन्नाने अपने वक्तव्यमें कहा है कि वे 'श्री गांधी या किसी अन्य हिन्दू नेताके साथ दिल खोलकर बातचीत करने के लिए तैयार हैं।' यदि उन्होंने मेरे नाम अपने पत्रमें लिखे हुए निम्नलिखित वाक्यकी ओर लोगोंका ध्यान आकृष्ट किया होता तो वे शायद ज्यादा सही होते: 'मैं हिन्दू जातिके प्रतिनिधिके रूपमें श्री गांधी या किसी भी दूसरे हिन्दू नेतासे मिलने को और हिन्दू-मुस्लिम समस्याके समाधानमें अपना योगदान देने के लिए हमेशा तत्पर और राजी रहा हूँ।' उन्होंने अपने वक्तव्यमें 'हिन्दू जातिके प्रतिनिधिके रूपमें', इन शब्दोंको छोड़ दिया है किन्तु मेरे नाम उनके पत्रमें ये मौजूद हैं। इन शब्दोंसे सिद्ध होता है कि वे गांधीजी से इस प्रत्यापित रूपमें ही मिलना चाहते थे और गांधीजी के पत्रसे प्रकट हो जायेगा कि गांधीजी इस शर्तको मानने की स्थिति में नहीं थे। इस मामलेका यहीं अन्त हो गया और श्री जिन्नाके साथ इस मामलेको आगे बढ़ाने में कोई लाभ नहीं था . . .।" तेजबहादुर सप्रूके नाम गांधीजी के पत्रोंके लिए देखिए खण्ड ७३।

३७. पत्र : मार्गरेट जोन्सको

सेवाग्राम, वर्धा
३ मई, १९४१

प्रिय कमला,

हाँ, मुझे तुम्हारे सब पत्र मिल गये थे।[1] मुझे इससे पूर्व ही लिखना चाहिए था, किन्तु ऐसा नहीं कर पाया। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम सफलतापूर्वक अपना काम कर रही हो और सादा जीवन बिता रही हो। पत्र लिखती रहना।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]
बापू — कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरस्पोंडेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९१

३८. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
३ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुमने एसोशिएटेड प्रेसको जो आडम्बरपूर्ण वक्तव्य[2] दिया है उसे पढ़कर मुझे दुःख हुआ। मैंने तो तुम्हें चुपचाप और सतीश बाबूके निर्देशनमें काम करने को कहा था। तुम्हें मैंने न किसी मिशनपर भेजा है, और न तुम्हें किसी प्रकारका अधिकार दिया है। तुम जानते हो कि पारिवारिक कारणसे तुम्हें वहाँ भेजा गया है।[3] अतः तुमने जान-बूझकर झूठ बोला है। तुम किसी प्रकारसे अपने वक्तव्यका संशोधन कर

१. गांधीजी ने मार्गरेट जोन्ससे कहा था कि वे प्रसूति-विज्ञानके अपने प्रशिक्षणके दौरान हर पखवाड़े उन्हें अपनी दैनिक जीवनचर्याका विवरण लिखकर भेजती रहें; देखिए खण्ड ७३, "पत्र: एफ० मेरी बारको", पृ० ४५२।

२. अमृतलाल चटर्जीके अनुसार १ मईका यह वक्तव्य "उनके ढाकाके मिशनके बारेमें था, जहाँ हिन्दू-मुस्लिम दंगा शुरू हो गया था।"

३. देखिए "पत्र: सतीशचन्द्र दासगुप्तको", पृ० २१।

डालो, नहीं तो मुझे तुम्हारे साथ पूरी तरह सम्बन्ध-विच्छेद करना पड़ेगा। मुझे खेद है। मैंने तो तुमसे बेहतर बातोंकी आशा की थी।

साथमें शैलेनका पत्र है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०१)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

३९. साम्प्रदायिक दंगे

सेवाग्राम
४ मई, १९४१

देशके अनेक महत्त्वपूर्ण स्थानोंमें जो हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे हैं उनसे सभी समझदार लोगोंको अवश्य दुःख हुआ होगा। तथापि मेरा दुःख कुछ विशेष प्रकारका है। ऐसा जान पड़ता है कि इन अन्धकारमय दिनोंमें कांग्रेसका प्रभाव लगभग नहींके बराबर ही रहा है।

इन स्थानोंपर हम लोग बर्बर और कायर सिद्ध हुए हैं। आगजनी, लूट-पाट और निर्दोष व्यक्तियोंकी, जिनमें बच्चे भी शामिल हैं, हत्याओंका लगभग सभी जगह दौर-दौरा रहा है। प्राणोंके भयसे हजारों लोग अपने घरोंसे भाग गये हैं।

कांग्रेसका प्रभाव उसके रजिस्टरोंमें दर्ज सदस्योंकी संख्यासे नहीं, बल्कि लोगोंको अपने सिद्धांतोसे अनुप्राणित करने की उसकी क्षमतासे ही आँका जा सकता है। यह स्पष्ट हो गया है कि दंगों या ऐसी ही परिस्थितियोंमें कांग्रेसका प्रभाव नगण्य रहता है। दंगाग्रस्त क्षेत्रोंमें कांग्रेस इक्के-दुक्के व्यक्तियोंको छोड़कर मुसलमानों या हिन्दुओंपर बहुत कम असर दिखा पाई है। अभीतक हमें जो विवरण प्राप्त हुए हैं उनसे यह प्रतीत होता है कि ढाका और अहमदाबादमें मतान्ध मुसलमानोंने हिन्दुओंकी सम्पत्ति लूटने और जलाने में अपनी ओरसे कोई कोर-कसर उठा नहीं रखी और यह भी कि ऐसा उन्होंने पूर्व योजना बनाकर किया है। हजारोंकी संख्यामें हिन्दू, बजाय इसके कि शरारती तत्त्वोंका डटकर मुकाबला करें, दंगाग्रस्त क्षेत्रोंसे भाग खड़े हुए। जहाँ वे भागे नहीं वहाँ वे भी हमलावरों-जितने ही बर्बर बन गये। ये सभी कांग्रेसकी अहिंसा-नीतिसे अछूते थे। तथापि ये ही लोग हैं जो कांग्रेसकी सभाओंमें अधिकांशतः उपस्थित होते हैं।

यदि ऐसे मौकोंपर कांग्रेसका जन-साधारणपर कोई नियन्त्रण नहीं रहता तो एक वास्तविक शक्तिके रूपमें कांग्रेसकी अहिंसाका कोई विशेष महत्त्व नहीं है। यदि अंग्रेज अचानक चले जाते हैं तो सरकारकी बागडोर कांग्रेस नहीं सँभाल सकेगी। जी-जानसे प्रयास किये बिना वे यहाँसे चले जायेंगे, ऐसा सम्भव नहीं लगता, लेकिन अंग्रेजोंकी शूरवीरतासे कांग्रेस लोग बहादुर नहीं बन सकते और न उनमें सरकार सँभालने की योग्यता आ सकती है।

इस समय ब्रिटिश सरकार व्यस्त है। वे किस प्रकार चालीस करोड़ जनता-पर अपना दबदबा कायम रखते हैं, यह एक चमत्कार ही है। वे अपने अद्‌भुत आत्म-विश्वास और विध्वंसक शस्त्रोंके कुशल उपयोगके बलपर ही भारतको गुलाम बनाये रख सके हैं। लेकिन उनसे आम दिनों-जैसी भी शान्ति बनाये रखने की अपेक्षा नही की जा सकती। वे किसी-न-किसी प्रकार अपना नियन्त्रण बनाये रखेंगे, किन्तु वे हमें एक-दूसरेकी हत्या करने से नहीं रोकेंगे और केवल तभी हस्तक्षेप करेंगे जब उनका शासन खतरेमें होगा।

कांग्रेसजनोंका रास्ता तो स्पष्ट है। उन्हें अपनी अहिंसाके तत्त्वोंपर विचार करना चाहिए। यदि उसमें विभिन्न सम्प्रदायोंके बीचमें तथा इसी प्रकारके अन्य सम्बन्धोंमें सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता नहीं है तो वह स्वतन्त्रता-प्राप्तिके लिए भी उपयोगी नहीं हो सकती। मेरी भविष्यवाणी तो यह है कि यदि कांग्रेसने शूर-वीरोंकी व्यापक अहिंसाको नहीं अपनाया तो वास्तविक सत्ता-हस्तान्तरणका समय आने पर उस कार्यको सम्पन्न करने का गौरव तथा उत्तरदायित्व कांग्रेसको नही मिल सकेगा। सत्ता उनके हाथोंमें आयेगी, जो हिंसाका कारगर उपयोग कर सकेंगे।

आज यूरोपमें दो शक्तियाँ, जिनमें समान मात्रामें विनाशकी क्षमता और शौर्य है, एक-दूसरेके आमने-सामने खड़ी हैं। दोनोंका उद्देश्य अपना आधिपत्य स्थापित करना है। बहुत चाहने पर भी मैं इन दोनों शक्तियोंमें कोई गुणात्मक भेद नही कर पाता। मात्रा-भेदमें मुझे कोई दिलचस्पी नही है। मेरे लिए तो अंग्रेजोंकी दासता ही काफी बुरी है। मैंने स्वतन्त्रता और अहिंसाका वरण किया है। मुझे दासताके पाशमें जकड़ने-वाले ब्रिटिश साम्राज्यवादके साथ ही नाजीवाद और फासिस्टवादके विरुद्ध भी संघर्ष करना होगा। लेकिन क्या इस साम्राज्यवाद तकसे, जिसकी हम नस-नस पहचानते हैं, लड़ने के लिए कांग्रेसके पास सचमुच अहिंसाकी शक्ति है? अभीतक तो थोड़ा-थोड़ा करके सत्ता हथियाने का प्रश्न था। लेकिन प्रत्येक भारतीय राजनीतिज्ञ यह जानता है कि अंग्रेजोंने अपनी ओरसे वास्तविक सत्ता छोड़ने की कभी जरा भी कोशिश नही की। और अब हमें श्री एमरीसे खरा-खरा उत्तर मिल गया है कि हमें अंग्रेजोंसे ऐसी कोई चीज शान्तिपूर्वक प्राप्त करने की आशा नहीं रखनी चाहिए। इसके लिए हमें हिंसात्मक अथवा अहिंसात्मक ढंगसे संघर्ष करना ही होगा, फिर चाहे यह संघर्ष कांग्रेस करे, या लीग अथवा हिन्दू महासभा। मुझे पूरा विश्वास है कि ये दोनों साम्प्रदायिक संस्थाएँ कभी भी जनताके लिए आजादी प्राप्त नहीं कर सकतीं — उस जनताके लिए जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी, यहूदी सभी शामिल हैं। कांग्रेस ही एकमात्र संस्था है जिसने शुरूसे ही राष्ट्रीय एकताके लिए परिश्रम किया है। लेकिन यदि कांग्रेस अपने दायित्वके प्रति सच्ची साबित नहीं होती तो वह सारा परिश्रम व्यर्थ जायेगा। यदि कांग्रेसी लोग अनेक नेताओंके इस समय जेलमें होते हुए भी अपना मत-परिवर्तन करते हैं या खुलेआम कांग्रेससे अलग हो जाते हैं तो मुझे यह बुरा नहीं लगेगा। मैं तो सिर्फ पाँच ऐसे सच्चे व्यक्तियोंको लेकर कांग्रेसका पुर्नानिर्माण कर सकता हूँ जिसके साथ न कोई हिन्दू है और न मुसलमान अथवा

अन्य कोई। धर्म एक व्यक्तिगत चीज है। उसका राजनीतिक क्षेत्रमें कोई दखल नहीं होना चाहिए।

तो फिर कांग्रेसीको क्या करना चाहिए? उसे किसी भी पक्षकी तरफदारी करने से दृढ़तापूर्वक इनकार कर देना चाहिए और अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर किन्तु हिंसाका उपयोग किये बिना आपद्ग्रस्त व्यक्तिकी रक्षा करनी चाहिए, जिस तरह कि अहमदाबादमें तीन स्त्रियोंने किया था। निःसन्देह इस प्रकारकी कितनी ही छिटपुट घटनाएँ हुई होंगी, जिनके बारेमें मुझे मालूम नहीं है। कायर लोग कभी भी शान्ति की स्थापना या आजादी हासिल नहीं कर सकते। इसलिए कांग्रेसीको आम लोगोंको यह बताना होगा कि वे खतरेसे भागें नही और यदि वे उसका [अहिंसाका] मार्ग नही अपना सकते तो वे अपनी सामर्थ्यानुसार अपनी रक्षा करें। जरूरी तो दिलकी बहादुरीकी है। यह एक ऐसी चीज है जिसे कोई किसीको दे नही सकता और इसीलिए जिसे कोई छीन भी नही सकता। उसे अपने पड़ोसियोंके दिलोंमें यह बात अच्छी तरह बैठा देनी चाहिए कि हिंसा भी अच्छी और बुरी दोनों तरहकी हो सकती है। केवल विधर्मी होने के कारण किसी निर्दोष व्यक्तिकी अचानक हत्या कर देना अथवा उसकी जायदादको आग लगा देना कोई बहादुरी नही है। जो लोग ऐसा करते हैं वे अपनेको तथा अपने धर्मको बदनाम करते हैं और आजादी हासिल करने के प्रयत्नमें निश्चित रूपसे बाधा पहुँचाते हैं।

विशिष्ट परिस्थितियोंमें कांग्रेसीको क्या करना चाहिए, अब मैं इसके कुछ और उदाहरण आपके सम्मुख रखता हूँ।

कांग्रेसीका कोई शत्रु नही होता। जहाँ वह पुलिस या सेनाकी सहायता नही माँगेगा वहाँ साथ ही उनके कर्त्तव्य-पालनमें कोई बाधा भी नही डालेगा; लेकिन यदि वे पक्षपात करें या अपने अधिकारोंका दुरुपयोग करें तो उन्हें वैसा करने से रोकने में वह अपनी जानको बाजी लगा देने में नही हिचकिचायेगा। यह एक खतरनाक सिद्धान्त प्रतीत होता है। लेकिन यदि इसका पूरी तरह पालन किया जाये तो खतरनाक नहीं है। क्योंकि यदि उक्त कांग्रेसीने भूल की है तो उसका परिणाम भी उसे ही भुगतना होगा, पुलिस अथवा सेनाको नही। मुझे मालूम है कि एक नौजवानने, चूँकि वह सचमुच बहादुर था, ठीक समयपर हस्तक्षेप करके करीब एक सौ लोगोंकी जानें बचाईं। उसने एक अधिकारीके घोड़ेकी लगाम पकड़कर उससे दृढ़ स्वरमें कहा कि वह गोली चलाने का हुक्म न दे, वह (नौजवान) स्वयं भीड़को समझा-बुझाकर तितर-बितर करा देगा।

मान लीजिए कि हिन्दुओंका एक जुलूस है, जिसे एक मुसलमानोंके टोलेसे होकर गुजरने का अधिकार है तथा एक कांग्रेसी है, जिसका वहांके हिन्दुओं या मुसलमानों किसीपर भी कोई प्रभाव नहीं है। फिर भी वह जुलूसका विरोध करनेवाले मुसलमानोंसे जुलूसको राह देने की विनती करेगा, चाहे इसमें उसे अपने प्राणोकी बलि क्यों न देनी पड़े। इसका तात्कालिक परिणाम सम्भवतः नही के बराबर होगा। लेकिन वह कांग्रेसी अपने पीछे अहिंसात्मक वीरताकी एक विरासत छोड़ जायेगा। अहिंसाका यह एक सुन्दर अभ्यास होगा। निःशंक होकर प्राण या सम्पत्ति गँवाने की कला हमें

अंग्रेजोंसे सीखनी चाहिए। यही नियम किसी मुसलमान जुलूसके हिन्दू मोहल्लेमें से गुजरने पर भी लागू होगा। पारस्परिक धैर्य और सहिष्णुताका पाठ हम तबतक नहीं सीख सकेंगे जबतक हममें से कुछ लोग पूर्णतया निर्दोष होते हुए भी, अपने प्राणोंकी आहुति देकर भारतीय जनताके मानसको नही हिला देंगे।

मान लीजिए कि कोई भीड़ किसी कौमकी सम्पत्ति जला डालने को या किसी मन्दिर या मस्जिदको अपवित्र कर डालने पर उतारू हो तो कांग्रेसी, चाहे वह एक हो अथवा अनेक, भीड़के क्रोधको शान्त करने के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देंगे।

कोई व्यक्ति यदि किसी राह चलते व्यक्तिको छुरा मारना चाहे तो कांग्रेसी अपनी जान जोखिममें डालकर भी उस भावी अनिष्टकर्त्ताके हाथसे छुरा छीन लेगा।

कांग्रेसी इस टिप्पणीको पढ़कर शायद चौंक पड़ें, विशेषतः मैंने जो उदाहरण दिये हैं उन्हें देखकर कह उठें कि ऐसा करना 'असम्भव' है। लेकिन हिंसक अथवा अहिंसक कैसे भीउपायोंसे स्वराज्य प्राप्त करना तो और भी अधिक असम्भव है। आस्था-रहित व्यक्तिको जो बात असम्भव दीख पड़ती है वही आस्थावानके लिए सम्भव हो जाती है। और आस्था तो, कहते हैं, पहाड़ोंको भी हिला देती है। मैं इतना जानता हूँ कि प्रचुर आत्मोत्सर्ग, शौर्य और आत्मविश्वासके बिना, जो आस्था का ही दूसरा नाम है, न तो आजादी हासिल की जा सकती है और न साम्प्रदायिक एकता ही स्थापित की जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१ — गृह विभाग, पोलि० (१); सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार। अ० भा० कां० कमेटी फाइल, १९४१ भी; सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४०. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
४ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हारे पत्रसे मुझे दुःख पहुँचा है।[1] तुम सेवा करना नहीं, प्रत्युत ख्याति चाहते हो। तुम्हें पत्रकारोंसे भेंटवार्त्ता करने का कोई अधिकार नही था। अपने कदम पीछे हटा लो। यदि तुम ढाका गये तो सिर्फ अपनी जिम्मेदारी पर जाओगे। जहाँतक लड़कियोंका प्रश्न है, यदि वे सतीशबाबूके मार्ग-दर्शनमें नही रह सकती, तो मैं सारी जिम्मेदारीसे हाथ धो लूंगा। उन्हें वहाँ किसी संस्थामें रहना चाहिए।

१. अमृतलाल चटर्जी ढाकाके दंगाग्रस्त क्षेत्रमें जाना चाहते थे। देखिए "पत्र: अमृतलाल चटर्जीको", पृ० २९-३०।

किन्तु यह तुम्हारा अपना मामला है। यदि तुम सतीशबाबूके मार्ग-दर्शनमें रहना स्वीकार नहीं करते तो तुम्हारी आर्थिक सहायताके लिए मैं जिम्मेदार नहीं होऊँगा।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०२)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

४१. पत्र: पुरुषोत्तमदास त्रिकमदासको

५ मई, १९४१

समझमें नहीं आता कि मैं क्या कर सकता हूँ।[1] तुम कोई तरकीब निकालो। चाहो तो देवली दिवस मना सकते हो। शायद . . .[2] कुछ मदद कर सकें।

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

४२. पत्र: मनुबहन सु० मशरूवालाको

सेवाग्राम, वर्धा
५ मई, १९४१

चि० मनुड़ी,

तेरा पत्र मिला था। अब तो किशोरलालभाई और गोमती वहाँ जा रहे हैं, इससे तुझे ढाढ़स बँधेगा। व्यर्थ दुखी मत होना। हरिलाल कुछ दिन दिल्लीमें बा के पास रहा और फिर भाग गया। बा जूनके महीनेमें आयेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५८०)से। सौजन्य: मनुबहन सु० मशरूवाला

१. कांग्रेस-समाजवादी दलके मन्त्री पुरुषोत्तमदास त्रिकमदासने गांधीजी को सूचित किया था कि देवली नजरबन्दी शिविरके वन्दियोंकी माँगें यदि पूरी न हुईं तो वे लोग ४ मईसे भूख-हड़ताल शुरू कर देंगे।
२. यहाँ एक शब्द पढ़ा नहीं जा सका।

४३. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

५ मई, १९४१

भाई मुन्शी,

तुम एस्क्विथका[1] अनुकरण करो। बीमार पड़ने पर वे युद्धके दौरान भी भूमध्य सागरकी सैर करने चले गये थे। अहमदाबादकी चिन्ता क्यों करते हो? तुम्हे तो पूर्ण स्वस्थ होकर लौटना है। बादमें बाकी बातोंकी सब चिन्ता करते रहना।

दोनोंको अथवा सबको

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६५९) से। सौजन्य: क० मा० मुन्शी

४४. पत्र : उर्मिला म० मेहताको

५ मई, १९४१

चि० उर्मि,

तेरा पत्र मिला। तूने वर्णन अच्छा किया है। पत्र लिखने में हाशिया छोड़ना चाहिए। अक्षर साफ लिखने चाहिए। मुन्नोको[2] ठंडे पानीमें बिठाना चाहिए, उससे अम्हौरी खत्म हो जायेगी। मैं तो दिनमें शरीरपर भी ठंडा कपड़ा लपेटे रहता हूँ, जिससे गर्मी नहीं लगती। इस ऋतुमें दाल खाना छोड़ देना चाहिए। तेल भी नहीं खाना चाहिए। सागमें घी डाला जा सकता है, यद्यपि जरूरत तो उसकी भी नहीं होती। मंजुलासे कहना, वह ये सब चीजें जाड़ेके दिनोंमें खा सकती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १६१८) से। सौजन्य: मंजुला म० मेहता

१. हर्बर्ट हेनरी एस्क्विथ, लिबरल दलके नेता और १९०८ से १९१६ तक ब्रिटेनके प्रधान-मन्त्री

२. धर्मपाल, उर्मिला मेहताका छोटा भाई

४५. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

५ मई, १९४१

चि० हेमप्रभा[1],

तुमारे खत मिले हैं। अब तो मेरे सामने [सौदपुरसे] २२ मील दूरके ग्रामवाला खत है। हां, ऐसे कामोंमें तुमारा संतोष रहा है। मेरी तो ईश्वरसे यह प्रार्थना है कि तुम सबको आरोग्य देवे जिससे तुमारी सेवा शक्ति बढ़े।

अरुण[2] कैसा है?

अमृतलाल चेटरजी वहां आये थे? उसने जो अखबारोंमें लिखा है सब गलत है। मैंने उसे प्रतिनिधि नहिं बनाया है। अपने आप डाका [ढाका] जाकर भस्म हो जाय तो भले। उसको तो कहा है जैसे सतीशबाबू कहें ऐसे करो। उसकी लडकीयोंके बारेमें भी वही कहा है। अगर आवे तो उसे दोरे[3]।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७३७)से

४६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

५ मई, १९४१

भाई घनश्यामदास,

हिं[दुस्तान]को आर्थिक स्थितिके बारेमें तुम्हारा लेख मैंने आज खत्म किया। बहुत अच्छा लगा। उसका न्याय देनेके लिये उसका सार आरंभ भी होना हि चाहिये। ऐसे लेख और भी चाहिये और उसे चौपानियेमें छपाने चाहिये। उसका अनुवाद होना चाहिये।

बिहार जानेकी आवश्यकता सिद्ध होने पर जानेकी मेरी पूर्ण तैयारी समजो। शस्तर ई० का मैं दुबारा पढ़ गया। यहांसे कोई सूचनाकी आवश्यकता मैं नहिं महसुस करता। हम अपना घर संभालें और साफ करें। समय हमको मदद दे रहा है।

१. सतीशचन्द्र दासगुप्तकी पत्नी
२. हेमप्रभादेवीके पुत्र
३. दोरे, अर्थात् मार्ग-दर्शन करो

उन लोगोंको आगे बढ़ना हि होगा। कब्जा हमारे हाथमें आना हि चाहिये। इतना तो करें कि बोलने लिखने दें और सब कैदियोंको छोड़ दें। कोम्युनिस्टोंको भी बगैर ट्रायलके नहिं रख सकते हैं।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०४२) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

४७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

५ मई, १९४१

चि० कृष्णचंद्र,

लीलावतीबहन क्या कहती है? सिघडी व० के बारेमें मुझको समजाना। खरीदी सब कौन करता है?

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३८६) से

४८. पत्र : गोपीनाथ बारदलईको

सेवाग्राम, वर्धा
६ मई, १९४१

प्रिय बारदलई,

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे हर्ष हुआ। तुम सचमुच अपने समयका पूरा सदुपयोग कर रहे हो। मुझे इस बातकी भी खुशी है कि तुम सब लोग कातते हो।

तुम मेरे बारेमें लिखो इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।[1] किन्तु अवतारों या पैगम्बरोंकी पाँतमें मुझे बिठाकर तुम सभी सनातनियोंके कोप-भाजन बनोगे, और मेरी समझमें ठीक ही बनोगे। किसी जीवित मनुष्यके बारेमें उसी भावसे नहीं लिखा जा सकता जिस भावसे उन दिवंगत व्यक्तियोंके बारेमें लिखा जाता है जिन्हें सभी लोगोंने महान उपदेशकोंके रूपमें स्वीकार कर लिया है।

तुम्हारा दूसरा प्रश्न[2] टेढ़ा है। मैं उन मुसलमानोंसे सहमत हूँ जो यह मानते हैं कि पैगम्बर जितने समयतक मक्कामें रहे उस दौरान उन्होंने विशुद्ध अहिंसाकी

१. गोपीनाथ बारदलई, जो जोरहाट जेलमें थे, बच्चोंके लिए धर्म-गुरुओंके बारेमें असमी भाषामें एक पुस्तक लिख रहे थे। उस पुस्तकमें वे गांधीजीकी जीवनी भी देना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने गांधीजीसे अनुमति माँगी थी।

२. गोपीनाथ बारदलईने पूछा था कि मदीनामें हजरत मुहम्मदने शस्त्र उठाये और भगवद्‌गीतामें श्रीकृष्णने अर्जुनको युद्ध करनेका उपदेश दिया, इन दोनों कार्योंका अहिंसाके सिद्धान्तके साथ सामंजस्य कैसे बिठाया जा सकता है।

शिक्षा दी और स्वयं उसी पर आचरण किया। मदीनामें वे प्रशासक बन गये और इस तरह वे विशुद्ध धर्म-गुरु नहीं रहे। जो-कुछ भी हो, 'कुरान' का कुल निचोड़ यही है कि अहिंसा मनुष्यका कर्त्तव्य है किन्तु उसे हिंसाकी अनुमति भी है। हमें तो मेरी पसन्दकी व्याख्या नहीं बल्कि उस व्याख्याको प्रामाणिक मानना होगा जो सामान्यतः मुस्लिम जगतकी ओरसे दी जाती है।

कृष्णने अर्जुनको जो उपदेश दिया था उसके विषयमें तो तुम्हें 'अनासक्तियोग' की मेरी प्रस्तावना[1] पढ़नी चाहिए। यदि तुमने अभीतक नहीं पढ़ी है तो मुझे बताना, मैं तुम्हें एक प्रति भेज दूंगा।

मेरी सलाह है कि तुम सब लोग[2] हिन्दी और उर्दू दोनों भली प्रकारसे सीख डालो। तभी हम एक अखिल भारतीय बोलीका विकास कर सकेंगे।

तुम्हारा,
बापू
(मो० क० गांधी)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २) से

४९. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

६ मई, १९४१

चि० नरहरि,

अब तो तुम्हारे पास महादेव है, इसलिए इसका कोई खास मतलब नहीं रहा, लेकिन तुम्हारा पत्र मैंने कल रातको ही पढ़ा। बात महत्त्वकी है, इसलिए संक्षिप्त उत्तर दे रहा हूँ। मृदुला[3] तो फौलाद है ही। उसकी रक्षा ईश्वर करेगा।

भैया लोगों और चौकीदारोंसे मुझे सन्तोष नहीं होगा। मैं यह मानकर लिख रहा हूँ कि अहिंसक केवल उँगलियों पर गिनने लायक हैं। बाकी लोगोंको अपनी रक्षा आप कर लेनी चाहिए। ऐसा नहीं हुआ तो जो हो रहा है वही होगा। यह ध्यानमें रखकर जो हो सके वह किया जाये। जो भैया लोगोंको नौकर रखते हैं, वे राज्य नहीं चला सकेंगे। जो उँगलीपर गिने जा सकते हैं, उन्हें तो मुसलमानोंसे अवश्य मिलना चाहिए। जितनोंको अपने पक्षमें लाया जा सके, लाना चाहिए।

१. देखिए खण्ड ४१, पृ० ९२-९९।

२. गोपीनाथ बारदलईके साथ कुछ कांग्रेसी विधायक भी कैद थे।

३. अम्बालाल साराभाईकी पुत्री मृदुला साराभाई, जो अहमदाबादके दंगाग्रस्त क्षेत्रोंमें निर्भीक आया-जाया करती थीं।

अगर मुसलमान समाज दुश्मनी ही करता रहे, तो मैं बहिष्कारकी बातकी उपेक्षा नहीं करूँगा। छुरा भोंकना, घर जलाना आदिसे मैं सच्चे बहिष्कारको उच्चतर स्थान देता हूँ।

इसका मतलब यह समझना कि हिंसावादियोंका भी हमें जितना बने, मार्ग-दर्शन करना है। बायें हाथसे लिख रहा हूँ, इसलिए संक्षेपमें लिखा है।

महादेव जो कहे, उसमें यह जोड़ देना, अथवा इसको ध्यानमें रखकर चलना। वैसे महादेव स्वयं इसको समाविष्ट कर लेगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

साथके पत्र काका और बाबूके लिए हैं।[1]

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२२)से

५०. पत्र : सूरजराम पुरोहितको

६ मई, १९४१

भाई,

तुम्हारा पत्र मैं पढ़ गया हूँ। तुम्हारे हस्ताक्षर नहीं पढ़ पाया, और महादेव-भाई यहाँ हैं नहीं।

तुम्हारे राज्यसे बाहर रहने में ही तुम्हारी शक्ति निहित है। बाहर रहकर तुम चाहे कितना ही क्यों न कमाओ, लेकिन बाहर रहते हुए तुम एक होओ या पाँच, अच्छी तरहसे जूझ सकते हो। मूल बात तो यह होनी चाहिए कि तुम त्यागकी भावनासे प्रेरित होकर जाओ और पैसा कमाओ। ऐसा करने पर तुम उसका उपयोग लोक-कल्याणार्थ कर सकोगे।

दूसरा रास्ता वह है जो तुमने बताया है। यदि तुम वहाँ जेलमें जाकर बैठ जाओ तो यह अच्छा ही है। लेकिन यदि तुम शरीर और धनकी रक्षा करके कुछ करने की आशा करते हो तो कुछ नहीं हो सकेगा।

इसमें तुम्हारे सभी प्रश्नोंका उत्तर आ जाता है।

बापूके आशीर्वाद

सूरजराम पुरोहित
संस्थान राजपीपला लोकसभा
१३६-४० मीडोज स्ट्रीट, दूसरी मंजिल
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. ये पत्र उपलब्ध नहीं हैं।

५१. पत्र : विचित्रनारायण शर्माको

सेवाग्राम
६ मई, १९४१

भाई विचित्र[1],

तुम्हारे खत मिले हैं। मैं पूरी हकीकत नहीं समझ सका हूं। लेकिन तुम्हारी शक्ति और कर्तव्यता पर मेरा विश्वास है। इसलिए सब ठीक ही होगा। हमारा काम तो चलता ही है न?

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम
७ मई, १९४१

अभी-अभी मैंने बिहारके दुर्भाग्यपूर्ण दंगोंका सिवरण पढ़ा है। ३ तारीखको राजेन्द्रबाबूको जैसे ही श्री सच्चिदानन्द सिन्हाका तार मिला कि बिहारमें खतरनाक स्थिति बन रही है, वे तुरन्त बिहार चले गये।

दंगोंका विवरण पीड़ा पहुँचानेवाला है। उनके सम्बन्धमें विभिन्न वक्तव्य भी मैंने ध्यानपूर्वक पढ़े हैं। शान्ति और समझदारीके पक्षमें अपनी पूरी शक्ति लगाने के लिए ही राजेन्द्रबाबू बिहार गये हैं। वहाँ पहुँचकर उन्होंने मुझे जो पहला तार भेजा वह निम्नलिखित है :

> स्थिति सुधर रही है फिर भी घबराहट और अनिश्चितता कायम है। मथुरा-बाबू[2] और शाह साहब[3] दौरा कर रहे हैं। मैं स्वयंसेवकोंको लेकर जा रहा हूँ।[4]

१. एक प्रमुख खादी कार्यकर्त्ता, जो बादमें उत्तर प्रदेश कांग्रेस मन्त्रिमण्डलमें मन्त्री भी रहे।

२. राजेन्द्र प्रसादके निजी सचिव

३. शाह मुहम्मद उजैर मुनीमी

४. राजेन्द्र प्रसाद अपनी आत्मकथा में लिखते हैं: "...मैंने सोचा ऐसी अवस्थामें तुरन्त बिहार जाना चाहिए।... इत्तफाकसे उसी दिन प्रोफेसर अब्दुल बारी भी, जो बाहर थे, पटना पहुँच गये। हमने मोटर-लारी साथ ली। उनपर बिहार-विद्यापीठके अध्यापकों और विद्यार्थियोंको तथा कुछ दूसरे कार्यकर्त्ताओंको सवार करा लिया। उसी दिन बिहार-शरीफकी ओर चल दिया...।"

मैं जानता हूँ कि वे अच्छा काम करके दिखायेंगे। यदि पुलिस और सेना अब तक शान्ति स्थापित नहीं कर चुकी है तो किसी-न-किसी प्रकार स्थापित कर ही दी जायेगी। किन्तु यह तो केवल ऊपरसे लादी हुई शान्ति होगी। राजेन्द्रबाबू अथवा यों कहें कि प्रत्येक कांग्रेसजनका या प्रत्येक समझदार नागरिकका काम यह है कि वह दंगोंके कारणोंका पता लगाये। जबतक यह नहीं किया जाता, तबतक स्थायी शान्ति स्थापित होने की कोई सम्भावना नहीं है। मैं देखता हूँ कि दंगोंका आरम्भ पाकिस्तान-विरोध दिवस[1] मनाये जाने के प्रति उत्पन्न आक्रोशसे हुआ। पाकिस्तानके पक्षमें और पाकिस्तानके विरोधमें इस प्रकारके आयोजन आदि तो अब होते ही रहेंगे। जैसे-जैसे राष्ट्रीय चेतनाका विकास होता जायेगा और महत्वाकांक्षाएँ बढ़ती जायेंगीं वैसे-वैसे इस तरहके आयोजन अधिकाधिक संख्यामें होंगे। किन्तु इनके बावजूद हम शिष्टतापूर्ण व्यवहार क्यों नहीं कर सकते? हम भला इतने असहिष्णु क्यों बन जायें कि एक-दूसरेके दृष्टिकोणको बर्दाश्त ही न कर सकें? और फिर हम अपनी असहिष्णुताका परिचय इस तरह क्यों दें जैसे कि हम बिलकुल बर्बर हों?

मेरा पक्का विश्वास है कि लोग स्वेच्छासे शान्ति कायम रखें, ऐसी स्थिति उत्पन्न करने की मुख्य जिम्मेदारी कांग्रेसके कन्धों पर है, जो भारतकी सबसे पुरानी, सुसंगठित और सर्वाधिक जनप्रिय संस्था है। यह स्वीकार करना होगा कि कांग्रेसमें हिन्दुओंकी संख्या ही सबसे ज्यादा है और बिहार प्रधानतः एक हिन्दू प्रान्त है। इसलिए वहाँ पुलिस और सेनाकी सहायताके बिना ही शान्ति कायम रखना कांग्रेसके लिए अपेक्षाकृत सुगम होना चाहिए। समाजके कमजोर वर्गकी जान-मालकी रक्षा करना अधिक बलशाली दलके लिए प्रतिष्ठाकी बात होनी चाहिए। यह एक कठिन कार्य है, किन्तु इससे निपटना ही होगा। जब मैं यह बोझ कांग्रेसपर डालता हूँ, तब मेरा आशय यह नहीं है कि उसको अकेले ही यह सब करना है या वही इसे कर सकती है। कांग्रेसको सहायताके लिए मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा इत्यादि सभी दलोंका आह्वान करना होगा। सभी दलोंका अपना-अपना राजनीतिक कार्यक्रम हो सकता है। लेकिन अगर हम इस बातपर आमादा न हों कि हम अपने विरोधियों-पर अपने कार्यक्रम जोर-जबरदस्तीसे, जो आज गुंडागर्दीके रूपमें प्रकट हो रही है, थोपेंगे तो निश्चय ही हम सब इस बातपर सहमत हो सकते हैं कि हम अपने सारे मतभेदोंको बातचीत तथा शान्तिपूर्ण प्रयत्नोंसे, जिनमें पंच-फैसला भी शामिल है, निबटायेंगे। हो सकता है कि कांग्रेस सब दलोंके साथ मिल-जुलकर कुछ करने में असफल रहे। यह असफलता भी एक भव्य असफलता होगी। किन्तु यदि कांग्रेसकी अहिंसामें कुछ तत्त्व है तो उसे अकेले भी अपना काम करते रहना होगा।

इस समय बिहार एक ऐसा प्रान्त है जो अगुआ बनकर आदर्श स्थापित कर सकता है। राजेन्द्रबाबूका अपने प्रान्तपर ऐसा मृदुल और असाधारण प्रभाव है

१. मु० अ० जिन्नाके कहने पर २३ मार्चको मनाये गये 'पाकिस्तान दिवस' के विरोधमें यह दिवस मनाया गया था।

जैसा किसी और नेताका नहीं है। वे भूकम्पके[1] दिनोंके वह नायक हैं जिनपर उस समय सारे भारतने अपना भरोसा टिकाया था। भगवान करे, उन्हें बिहारमें और बिहारके द्वारा समस्त भारतमें शान्ति-दूत बनने का सौभाग्य प्राप्त हो।

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१ – गृह विभाग, पोलि० (१)। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार

५३. पत्र: के० बी० मेननको

सेवाग्राम, वर्धा
७ मई, १९४१

प्रिय मेनन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले थे। पहले पत्रका तो जवाब देने की आवश्यकता नहीं थी।

तुमने बैठकके बारेमें जो-कुछ लिखा है, वह मैंने ध्यानमें रख लिया है।

चूँकि सेठ जमनालालजी की श्री वझेके[2] साथ बातचीत हो चुकी है और चूँकि ऐसा समझा गया है कि श्री वझेने पत्रका[3] सम्पादन करना भी स्वीकार कर लिया है, इसलिए मैंने उन्हें पत्र लिख दिया है और उनके जवाबका रास्ता देख रहा हूँ। इसलिए मेरा सुझाव है कि मुझे उनका जवाब मिल जाने के बाद ही तुम बैठक बुलाओ।

मेरे खयालसे श्री जयनारायणजीको[4] तुमने जो जवाब दिया वह ठीक था।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

पुनश्च:

तुम्हारा अगला पत्र भी मुझे आज मिल गया। यदि स्थायी समिति कार्य करना बन्द कर देती है, तो ज० ना० का भी काम समाप्त हो जाता है। तुम यह संलग्न पत्र[5] ज० ना० को दे देना और मेरा यह पत्र भी उन्हें दिखला देना। ज० ना० का जवाब मिलने पर मैं तुम्हें आगे निर्देश दूँगा।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. १५ जनवरी, १९३४ का भूकम्प; देखिए खण्ड ५७, पृ० १२२।
२. एस० जी० वझे
३. **स्टेट्स पीपुल**, अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्का मुखपत्र
४. जयनारायण व्यास, अ० भा० देशी राज्य प्रजा परिषद्के तीन मन्त्रियोंमें से एक। के० बी० मेननने उन्हें लिखा था कि स्थायी समितिके अन्य सदस्योंके साथ उनके अधिकार भी समाप्त हो गये हैं।
५. देखिए अगला शीर्षक।

५४. पत्र : जयनारायण व्यासको

७ मई, १९४१

भाई जयनारायण,

भाई मेनन मुझे मिल गये। अब मेरे पास उनके तीन खत पडे हैं। तुम दो में कुछ वैमनस्य सा है क्या? मेरा अभिप्राय तो मैंने दिया है। तुमने देखा होगा। लेकिन अब मुझे लगता है कि तुम्हारी बात भी मैं सुन लूं। इसके बाद कुछ कहुं। यों तो मुझे इस काममें दखल देने का कोई अधिकार नही है। लेकिन पंडीतजी[1] चाहते है, इसलिये मैं भाई मेननको दे ही रहा हूं। लेकिन तुम्हारेमें झगडा हो जाय तो मेरी स्थिति कुछ नाजुक हो जायगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५५. पत्र : मणिबहन पटेलको

सेवाग्राम, वर्धा
७ मई, १९४१

चि० मणि,

नन्दूबहन [कानूगा] तेरी खूब शिकायत कर रही थी। कहती थी, तू हठ करके शरीरको गला रही है। अच्छी तरह खाती नही। मैं इसे पराजयके लक्षण मानता हूँ। सत्याग्रही अपना शरीर अच्छा ही रखता है। इसलिए तुझे मेरी खास सलाह है कि तू शरीरको सुधार।

सब बहनोंको आशीर्वाद। वहांके कामके समाचार मिलते ही रहते हैं।

मेरा स्वास्थ्य उत्तम रहता है। बा दिल्लीमें है। बहुत दुबली हो गई है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल
वन्दी
यरवडा सेंट्रल प्रिजन
यरवडा

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४: मणिबहेन पटेलने, पृ० १२७

१. जवाहरलाल नेहरू

५६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम, वर्धा
७ मई, १९४१

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा उत्तर मिला था। मणिबहनको पत्र लिख रहा हूँ, इसलिए तुम्हें भी लिख रहा हूँ। मेरी गाड़ी चल रही है। स्वास्थ्य उत्तम रहता है। गरमीमें कोई नुकसान होता नजर नहीं आता। ठंडा कपड़ा सिरकी रक्षा करता है।

मेरी इच्छा अब कहीं-न-कहीं सफरपर जाने की हो रही है। जहाँ भगवान ले जायेंगे वहाँ जाऊँगा। नजरमें तो अहमदाबाद, बम्बई और बिहार है। देखता हूँ। हमें सुलहका रास्ता ढूंढ़ना चाहिए अथवा कांग्रेस उसे ढूंढ़ने में स्वाहा हो जाये। मेरे सामने तो यही मार्ग हो सकता है न? परन्तु वह ईश्वर बताये तब मिले। इस प्रकार न मुझे घबराहट है, और न कोई चिन्ता। मैं घटनाओंको घटित होते देखता रहता हूँ और कर्त्तव्यरत रहने की कोशिश करता हूँ।

मेरे लिखने का कोई अर्थ न निकालना। जितना मुझे सूझा उतना सब लिख डाला है।

सबको

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
यरवडा सेंट्रल प्रिजन
पूना

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २४७

५७. पत्र : डाह्याभाई पटेलको

सेवाग्राम, वर्धा, सी० पी०
७ मई, १९४१

चि० डाह्याभाई,

साथके पत्रोंको यथास्थान भेज सको तो भेज देना। महादेवका पत्र या तो ज्यों-का-त्यों भेज देना या उसकी नकल भेज देना।

तुम्हारी गृहस्थी ठीक चल रही होगी। बाबाको[1] दो पंक्तियाँ लिखने के लिए प्रेरित करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
६८, मैरीन ड्राइव
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १६१

५८. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
८ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मुझे तुम्हारा नारायणगंजसे भेजा हुआ हैरान करनेवाला तार[3] मिला था, जिसका उत्तर[4] मैंने भेज दिया था। आशा है कि तुम्हें मेरे पत्र[5] मिले होंगे। उनमें मैंने स्पष्ट कर दिया है कि मेरी ओरसे बिना कोई अधिकार पाये ही तुम वहाँ गये हो। मैंने तो तुम्हें केवल सलाह दी थी, जिसे मानने या ठुकराने की तुम्हें स्वतन्त्रता थी। अब मेरा दृढ़ मत है कि तुम अपने बूते पर कोई जिम्मेदारीका काम सँभालने में

१. वल्लभभाई पटेलके पुत्र

२. डाह्याभाई पटेलके पुत्र विपिन

३. अमृतलाल चटर्जीके अनुसार यह तार "ढाकामें दंगेकी स्थितिके सम्बन्धमें था और उसमें गांधीजी से निर्देश माँगा गया था"।

४. यह उपलब्ध नहीं है; लेकिन देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० ५०-५१।

५. देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० २९-३० और ३३-३४।

सर्वथा अयोग्य हो। तुम काफी समयसे अपने पारिवारिक कर्त्तव्योंसे विमुख रहे हो। अपने परिवारका भार वहन करके तुम देश-सेवा करोगे। यदि तुम अपनी काम-वासना पर अंकुश रख सको तो और बच्चे पैदा न करना, और जिन बच्चोंके जन्मके लिए तुम जिम्मेदार हो उनके प्रति अपने कर्त्तव्यका पालन करना। इस दिशामें तुम क्या कुछ कर सकते हो, इसीसे तुम्हारी योग्यताका निर्णय हो जायेगा। मैं इस मासके अन्त तक तुम्हें पैसे भेजता रहूँगा, उसके बाद तुम अपना भार स्वयं सँभालना। याद रखो कि तुम्हारे ऊपर पैसे खर्च करने की कोई बाध्यता मुझपर नहीं थी। किन्तु यह सोचकर कि तुम एक योग्य देश-सेवक हो, मैंने तुमपर पैसे खर्च किये।

शैलेन और धीरेनको प्रशिक्षण देने का मैं अभी भी प्रयास करूँगा। कुछ समय तक करता रहूँगा। यदि वे सुपात्र सिद्ध हुए तो सहायता जारी रखूँगा, नहीं तो उन्हें तुम्हारे ही पास भेज दूँगा। यह एक अनर्थकारी प्रयोग सिद्ध हुआ है, जिसके लिए मुझे गहरा दुःख है। किन्तु यदि दैवयोगसे तुम अब भी चेत जाते हो और विनम्र बनकर अपनी नष्ट गृहस्थीको फिरसे बसा लेते हो तो मेरा यह दुःख हर्षमें परिणित हो जायेगा।

वीणाके नाम मेरा पत्र देखना।[1]

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०३)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

५९. पत्र : पुरुषोत्तम गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
८ मई, १९४१

चि० पुरुषोत्तम,

तेरे जन्म-दिवसपर तुझे आशीर्वाद देना तो मैं भूल ही गया। मैं भी क्या करूँ? लेकिन तू जानता है कि आशीर्वाद तो है ही। खैर अब लिखित [आशीर्वाद] भी ले। देरसे भेज रहा हूँ, इसलिए ब्याज समेत गिन लेना। बाकी तो तू सब जानता है। नारणदासका[2] पत्र मिल गया है। उसमें जवाब देने-जैसा कुछ होगा, तो बादमें दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से

१. यह पत्र उपलब्ध नहीं है।
२. पुरुषोत्तम गांधीके पिता

६०. पत्र : भुजंगीलाल का० छायाको

८ मई, १९४१

चि० भुंजगीलाल,

मेरे पास आकर क्या करोगे? मैं काममें व्यस्त रहता हूँ और मुझे एक मिनट भी किसीकी ओर नजर उठाकर देखने को नही मिलता। इसलिए तुम वही रहो और नारणदास आदिके सत्संगसे लाभ उठाकर जैसा चाहते हो, अपने जीवनका निर्माण करो। तुम्हें मेरा संग कबतक मिलेगा? इसका क्या भरोसा?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २५९४)से

६१. पत्र : पृथ्वीसिंहको

८ मई, १९४१

भाई. पृथ्वीसिंह,

तुमारा खत मिला। गोपालराव का निवेदन भी पढ़ गया। सब अच्छी तरहसे चल रहा लगता है।

मेरे खतकी पहूँच नहीं है। मैंने पो० बाक्स दी थी।

शेठ रामेश्वरदासजीको तुमने जो कहा सब दुरुस्त था। मैं बहूत मार्गसूचन नहीं कर सकुंगा। क्योंकि अखाडे में शस्त्रबलसे स्वरक्षा और पररक्षाका ज्ञान देना हि होगा। इसलिये निजी मति अनुसार करो। क्योंकि रामेश्वरदासजीका यह मतलब तो हो हि नहिं सकता कि अहिंसक तालीम दी जाय। कहां तक तुम हिंसक तालीमकी जिम्मेदारी ले सकते है, एक प्रश्न है। इसमें तो तुमारी वृत्ति पर हि सब निर्भर है। नाथजीसे[1] मशिवरा करो। अब तो किशोरलालभाई भी मुंबईमें हैं। यह पेचीदा प्रश्न है। तुमारी अंतरात्मा कहे वही सही समजा जाय।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६४७)से। सी० डब्ल्यू० २९५८ से भी; सौजन्य : पृथ्वीसिंह

१. केदारनाथ कुलकर्णी

६२. पत्र : एस० जी० वझेको

सेवाग्राम
९ मई, १९४१

प्रिय वझे,

पत्रका जवाब फौरन देने के लिए अनेक धन्यवाद। मैंने मेननसे पत्र [का प्रकाशन] जारी रखने के लिए कह दिया है। उसके आर्थिक पक्षपर सोच-विचार करने की जरूरत पड़ेगी। मुझे खुशी है कि तुम्हारा संकट दूर हो गया।

सप्रेम,

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६३. पत्र : लीलावती आसरको

९ मई, १९४१

चि० लीला,

तू आरामसे पहुँच गई होगी। आजके पत्रसे तो देखता हूँ, तुझे भेजकर मैंने बहुत अच्छा किया। अब वहाँ अपनी तबीयत मत बिगाड़ लेना और जो-जो दोष तुझमें हैं उन्हें अपनेमें से निकालने का प्रयत्न करना। मितभाषी बनना चाहिए और विचारपूर्वक बोलना चाहिए। बाकी यहाँ तो सब ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५९५)से। सी० डब्ल्यू० ६५६७ से भी; सौजन्य: लीलावती आसर

६४. पत्र : नारणदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा
९ मई, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। हमारे यहाँ दो-तीन पद्धतियाँ चल रही हैं। उनमें एक है तुम्हारी, दूसरी लक्ष्मीदासकी[1], तीसरी विनोबाकी, चौथी शायद जाजूजी[2]की, पाँचवी मेरठ आश्रमकी यानी कृपलानीकी, छठी मथुरादासकी[3], सातवीं दीवानजी[4]की। और भी नाम शामिल किये जा सकते हैं। इनमें से कोई भी सम्पूर्ण नहीं है। अगर होती तो वह सर्वमान्य हो जाती। लेकिन सम्पूर्ण तो ईश्वरकी कृति ही हो सकती है। तुममें मेरा विश्वास है, इसलिए जिसमें तुम न रह सको ऐसी समिति मैंने नहीं बनने दी। अब तुम तैयार हो, तो अवश्य अपने सुझावोंके अनुरूप एक समितिका निर्माण करो और कामको और अधिक गति दो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू० / २) से। सी० डब्ल्यू० ८५८२ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

६५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
९ मई, १९४१

बा,

तेरा पत्र मिला। उपवास ७२ घंटेका था।[5] बिलकुल कष्ट नहीं हुआ। शक्ति आ रही है। तू बीमार पड़ती है, तब चिन्ता होती है। तू जल्दी अच्छी हो जा। अब मैं सब खाने लगा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४०) से

१. लक्ष्मीदास आसर
२. श्रीकृष्णदास जाजू
३. मथुरादास गांधी
४. दिलखुश दीवानजी
५. देखिए "पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको", पृ० २२।

६६. पत्र : लक्ष्मी गांधीको

९ मई, १९४१[1]

चि० लक्ष्मी[2],

तेरी मददके लिये या बाको साथ चाहिये उसलिये लीलावती बहनको भेजता हूं। अगर सुशीला यहां आने से पहले बाको आना पड़े तो किसके साथ आवे इस विचारसे पहले तो लीलावती बहनका विचार किया।

बच्चे अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २१३७) से

६७. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
१० मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मिला।[3] स्पष्ट है कि तुमने मेरे कहे पर ध्यान नहीं दिया। मैंने तुमसे कहा था कि अपने किसी कार्यके सम्बन्धमें तुम मेरे नामका उपयोग मत करना। तुम्हें इसलिए भेजा गया क्योंकि वीणा और आभाको जाना था, बल्कि दरअसल शैलेन और धीरेनको भी जाना था। मैंने तुम्हें ढाका जानेकी सलाह अवश्य दी थी, किन्तु अपने प्रतिनिधि या सन्देशवाहकके रूपमें नहीं। तुम्हें किसी परिचयकी आवश्यकता नहीं थी। तुम जानते हो कि तुम्हारी विवेक-बुद्धिपर मुझे कोई भरोसा नहीं है। मैंने तो सुझाव-मात्र दिया था कि यदि तुम परिवारसे अपनेको अलग कर ही लेते हो तो वैसी स्थितिमें तुम क्या कर सकते हो। लेकिन मुझे इस विषयपर और आगे चर्चा नहीं करनी है। यदि तुम मित्रोंके बीच यह प्रकट कर दो कि तुम्हें वास्तवमें गलतफहमी हुई, जिसके कारण तुमने यह सब किया, और तुम किसी भी प्रकारसे मेरे प्रतिनिधि नहीं थे तो इतना काफी होगा। मेरी अब भी वही मान्यता है जो मैंने ढाकावाले अपने तारमें व्यक्त की थी। यदि तुम प्रसिद्धिमें रहकर

१ और २. साधन-सूत्रमें ये गुजराती लिपि में हैं।

३. अमृतलाल चटर्जीके अनुसार यह पत्र उन्होंने ढाकासे ७ मईको "गलतफहमी दूर करनेके लिए" भेजा था और "गांधीजी से ढाकामें शान्ति स्थापित करने के कार्यको चालू रखने की अनुमति" माँगी थी।

काम करोगे तो असफल रहोगे। अन्नदा को या जो कोई भी व्यक्ति वहाँ जिम्मा उठाये हुए है उसे तुम यह बता दो कि तुम स्वतन्त्र रूपसे काम कर रहे हो और इसके बाद भी यदि वे तुम्हें ढाकामें काम करने के लिए रखना चाहें तो तुम वहाँ रह सकते हो, बशर्ते कि वे तुम्हारा पूरा खर्च उठायें। यदि वे ऐसा न करें तो तुम्हें अपने परिवारके पास लौट जाना चाहिए और अपने उस प्राथमिक कर्त्तव्यका पालन करना चाहिए। मैं मईके बाद तुम्हारे खर्चकी जिम्मेदारीसे बरी हो जाऊँगा और मुझे अब पता चला है कि उस महीनेकी राशि तुम पेशगी ले चुके हो। मुझे यह सुनकर दुःख हुआ कि दूसरोंसे ली हुई चीजें भी तुम अपने साथ ले गये हो, उदाहरणार्थ चिमनलालका कम्बल।

सुरेन्द्र[1] किसीको बताये बिना ही आश्रम छोड़कर चला गया है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू १०३०४)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

६८. पत्र : डॉ० नाथूभाई पटेलको

१० मई, १९४१

भाई नाथूभाई,

महादेव अहमदाबादमें है। तुम दुर्गाबहनकी जरूरतसे ज्यादा चिन्ता करते हो। वह खूब सोती है। उसकी जाँघका दर्द भी कम होता जा रहा है। उसे सेलीसिलेट दिया जाता है। कभी-कभी एप्सम सॉल्ट भी। पेशाब आदि सब ठीक है। अपने-आप उठती-बैठती है। मन होने पर किसीकी मददसे खुलेमें बने चबूतरे परसे नीचे उतर जाती है। इस प्रकार रोज स्पष्ट सुधार होते हुए भी क्या तुम्हारी इच्छा उसे अस्पतालमें दाखिल करानेकी है? तुम्हें भय किस बातका है? वह पतली खाखरी, भाजी, फल आदि खाती है।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० एन० डी० पटेल, एम०डी०
बैकबे व्यू
बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २७२१)से। सौजन्य : डॉ० नाथूभाई पटेल

१. सुरेन्द्रनाथ सरकेल, बंगालके एक स्वतन्त्रता-सेनानी, जिन्हें गांधीजी ने आश्रममें आश्रय दिया था।

६९. पत्र : देवदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा
१० मई, १९४१

चि० देवदास,

तेरा पत्र बाकी डाकके साथ आज ११-४० पर मिला। तूने अपने पत्रमें शुक्रवार लिखा है। आज शनिवार है। शुक्रवारका लिखा पत्र शनिवारको ११ बजे यहाँ पहुँच ही नहीं सकता। तेरे लिफाफे पर तारीख भी गुरुवारकी है।

ऐसा लगता है, अब मुझे एसोशिएटेड प्रेसको वक्तव्य देना बिलकुल बन्द कर देना चाहिए। यूनाइटेड प्रेसने तो अपने-आप बन्द कर दिया है। अनेक अखबारोंने मेरा वक्तव्य[1] ज्यों-का-त्यों छापा है। तूने डटकर मुकाबला किया। लेकिन मुझे लगता है कि अन्तमें यह भी सम्भव नहीं होगा। या फिर तुम लोगोंको . . .[2] पड़ेगा। देखता हूँ, तूने लाल लकीरवाला अंश छोड़कर मेरा वक्तव्य छापा है।[3] यह ठीक नहीं हुआ। तूने वक्तव्य बिलकुल न छापा होता, तो ठीक लगता। अन्ततः जहाँसे कुछ अंश छोड़ दिया था, वहाँ "सेंसर्ड" तो जरूर लिखना चाहिए था। दूसरे अखबारोंकी तुलनामें 'हिन्दुस्तान टाइम्स' घटिया माना जायेगा। यदि अकारण ऐसा माना जाता तो कोई बात नहीं थी, लेकिन यहाँ तो कारण प्रस्तुत हो गया। खैर, अब जो हो गया सो हो गया। लेकिन आइन्दाके लिए मेरी यह स्पष्ट इच्छा है कि मेरे वक्तव्य छापे जायें तो बिना किसी रद्दोबदलके छापे जायें।

बा को तूने स्वस्थ देखा, यह पढ़कर प्रसन्न हुआ। लक्ष्मीकी सेवा करनेकी शक्तिके बारेमें मुझे कभी कोई सन्देह नहीं था। फिर भी उसका बोझ हलका करनेके लिए मैंने लीलावतीको भेजा है। अब तो लगता है कि बा जूनमें ही आयेगी।

महादेव यहाँ १३ को पहुँचेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४६) से

१. देखिए पृ० १५-१८।

२. साधन-सूत्रमें यहाँ पढ़ा नहीं जा सका है।

३. देवदास गांधी हिन्दुस्तान टाइम्सके सम्पादक थे।

७०. पत्र : मणिबहन पटेलको

[१०][1] मई, १९४१

चि० मणि,

तुझे एक पत्र[2] लिखा है। यह तुझे जेलमें मिलना चाहिए। यह तेरे पत्रके उत्तरमें है। पत्र कल मिला और रातसे पहले नहीं पढ़ सका।

तेरी तरह मैं यह कैसे मान लूँ कि यदि मैं अहमदाबादमें होता तो जो दंगे हुए वे न होते? आज किसीके लिए ऐसा कहना मुश्किल है। मैं ईश्वरके निर्देशपर काम करता हूँ। उसने मुझे यहाँ डाल दिया है। मैं जानता हूँ कि गुजरातमें ऐसे बहुत-से गाँव हैं जहाँ मैं बस सकता था।

मनुभाई[3] बड़ी बहादुरी दिखला रहा है। कल ही सारा परिवार प्रार्थनामें आया था।

बा तो आजकल नई दिल्लीमें रोगशय्या पर पड़ी है। बुखार आता है। लिखती है कि चिन्ताका कोई कारण नहीं है। कल मैंने लीलावतीको वहाँ भेजा है। जानकीबहनकी[4] तबीयत बहुत अच्छी कही जा सकती है। नन्दूबहनने किस आधारपर खराब बताई? वे आजकल जितना घूमती हैं उतना पहले कभी नहीं घूमती थीं। अच्छी तरह खाती हैं।

कनुकी सगाईकी बात अधरमें है। अभी तो नहीं होगी, यही मानकर चलना है। लड़की[5] भी अपने घर गई है।

मीराबहन चोरवाडमें गरमी बिता रही है। दुर्गाबहनकी तबीयत अच्छी होती जा रही है।

तू वहाँका काम ठीक करके दो-तीन दिन मेरे साथ रह जाये, यह मैं जरूर चाहता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

१. साधन-सूत्रमें "२०" है, जो स्पष्टतः भूलसे लिखा गया है, क्योंकि गांधीजीने पत्रमें एक दिन पहले लीलावतीको दिल्ली भेजनेका जिक्र किया है। लीलावती ९ मईको दिल्ली गई थीं। देखिए "पत्र: लक्ष्मी गांधीको", पृ० ५०।

२. देखिए पृ० ४३।

३. मानशंकर जयशंकर त्रिवेदी, जिनके पिता जयशंकर त्रिवेदीका देहान्त हो गया था

४. जमनालाल बजाजकी पत्नी

५. आभा चटर्जी

चि० डाह्याभाई,

मणिबहन आये तब यह पत्र उसे दे देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
६८, मैरीन ड्राइव
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४: मणिबहेन पटेलने, पृ० १२८-२९

७१. पत्र: डॉ० एस० के० वैद्यको

१० मई, १९४१

भाई वैद्य,

तुम्हारी कारबाइन मिली। मैं तुम्हारे अन्तःकरणकी शुद्धतापर मुग्ध हूँ। लेकिन खादी और चरखेने क्या अपराध किया है? वैसे कोई बात नहीं, तुम्हें जो अच्छा लगा वह तुमने किया। यही करते रहे, तो क्रमशः सत्य तक अवश्य पहुँचोगे। सब-कुछ सोच-विचारकर खादी और चरखेपर यदि जमे रह सको तो जमे रहना। लेकिन करना वही जो तुम्हारी अन्तरात्मा कहे।

बापूके आशीर्वाद

श्री वैद्यजी
अ० भा० च० संघ, खादी भण्डार
३९६, कालबादेवी रोड
बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७४६) से

७२. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

सेवाग्राम, वर्धा
११ मई, १९४१

चि० प्रेमा,

इस बार तुझे देरसे पत्र लिख रहा हूँ। कामकी भीड़ बहुत है। और तेरा पत्र भी पत्रोंके ढेरमें दबा रहा।

वहाँके समाचार तो मुझे मिलते ही रहते हैं।

मेरा स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

सबकी परीक्षा अच्छी तरह हो रही है।

अमतुस्सलाम तो बीमार ही रहती है। बा दिल्लीमें है। अभी तो कमजोर हो गई है। सुशीला खूब सेवा-शुश्रूषा कर रही है। उसे उम्मीद है कि बा अच्छी हो जायेगी। लीलावतीको बा की सेवाके लिए भेजा है।

महादेव अहमदाबाद गये हैं। वे अब १३ तारीखको वापस आयेंगे।

वहाँ सब बहनें खूब कातती होंगी। प्रार्थना अच्छी तरह चलती होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४१९) से। सी० डब्ल्यू० ६८५८ से भी; सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक

७३. पत्र : रणछोड़लालको

११ मई, १९४१

भाई रणछोड़लाल,

तुम्हारा पत्र मिला। जो मुझसे बनता है, अपनी योग्यतानुसार कर रहा हूँ।

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४२) से

७४. पत्र : डॉ० एस० के० वैद्यको

११ मई, १९४१

भाई वैद्य,

मजिस्ट्रेटको और गवर्नरके सचिवको पत्र लिखने में मुझे कोई सार नहीं दिखाई देता। तुम्हारा दिमाग गरम हो गया है। थोड़ा शान्त हो लो। कलमका और वाणी का मौन लेकर गहरेमें पैठो। एक-दो दिनके लिए यहाँ आकर शान्ति प्राप्त करनी हो तो आ जाओ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७४७)से

७५. पत्र : राममनोहर लोहियाको[1]

११ मई, १९४१

भाई राममनोहर,

तुम्हारा पत्र मिलने से बहुत आनंद हुआ। हरिदत्तजीको लिख दिया है। अच्छा है करीब करीब सब कातते हैं। तुम्हारे पिताजीकी यात्रा चल रही है। वे अपनी डायरी भेजते रहते हैं। सबको मेरे आशीर्वाद।

मो० क० गांधीके वं० मा०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. राममनोहर लोहिया उन दिनों बरेली सेंट्रल जेलमें थे।

७६. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

११ मई, १९४१

चि० ब्रजकिशन,

तुमारे सब खत मिले हैं। तुमारे खतोंका उत्तर बराबर महादेव देते रहे हैं। अजीब बात है कि तुम्हें खत नहिं मिले।

तुमारी सब बातें मैं समजा हूं। हम अपनी २ बुद्धि अनुसार काम करते रहें। परिणाम तो ईश्वरके हि हाथोंमें है।

तुमारा 'गीता' वर्ग बगैरा चलता है सो अच्छा हि है। मैं तो चाहूंगा कि इसी तरह 'कुरान' का भी चले और हम एक-दूसरोंके धर्मका आदर करें।

भाई फरीद[1] का खत मिला है। मैं इस वक्त अलग उत्तर नहिं दूंगा। उनकी गति अच्छी हो गई है। वहां सब दोनों लिपि सीख रहे हैं और दोनों तरीका हिंदी और उर्दूका सीख रहे हैं, बहूत अच्छी बात है। मैं उसका नतीजा बहूत अच्छा देखता हूं। हमारी तैयारी यहां तक जानी चाहिये कि हम आसानीसे उर्दू या हिंदी पढें और लिखें। कांग्रेसवालोंको तो इतना करना हि चाहिये।

बहन सत्यवतीजी[2] का तो ऐसा हि है। लिखती थी कि कोई वार सेवाग्राम आयेगी। आशा तो रखुं कि गरमीके दिनोंके बाद आये।

मेरी तबीयत बिलकुल अच्छी है।

सबको ब० मा० या आशीर्वाद।

तुमारी तबीयत अच्छी रहती होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४८५)से

१. फरीद अन्सारी

२. स्वामी श्रद्धानन्दकी पौत्री

७७. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
१२ मई, १९४१

प्रिय शैलेन,

तुम्हारा पत्र[1] मिला। तुम बड़ी लापरवाहीसे लिखते हो। तुम ऐसी गलतियाँ करते हो जिनसे बचा जा सकता है। तुम सर्वनाम भी उड़ा जाते हो। मुझे पत्र लिखनेमें जितना फूहड़पन दिखाते हो उतने ही फूहड़ यदि अपने काममें भी हो तो तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी। जानकी देवी नागपुरमें श्री मेहताके घर हैं। पुस्तक उनके हवाले कर देना; वे मुझे भेज देंगी। फिर देखूंगा कि और कौन-सी पुस्तक तुम्हें भेजूं।[2]

तुम्हारे पिता मुझे पत्र लिखते हैं। मैं असन्तुष्ट हूँ। फिर भी तुम्हें इस विषयमें चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वैसे वे ठीक हैं।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०५)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

७८. पत्र : प्रभावतीको

१२ मई, १९४१

चि० प्रभा,

तेरा पत्र मिला। जयप्रकाशका अभी तक तो नही मिला। सोशलिस्टों ने जो प्रस्ताव पास किया है, वह तूने देखा? कौन थे ये लोग? तू चिन्ता क्यों करती है? जो होना होगा सो होगा। हमें तो जो करना उचित हो वह कर गुजरना चाहिए। मेरी तबीयत ठीक है। उपवास कोई असर नहीं छोड़ गया। बा की तबीयत ठीक है। अभी दिल्लीमें है। लीलावतीको वहाँ भेजा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५५९)से

१. नागपुरसे, जहाँ शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको प्रशिक्षणके लिए भेजा गया था

२. अमृतलाल चटर्जीके अनुसार, गांधीजी शैलेन्द्रको ज्ञान-वर्धनके निमित्त पुस्तकें, समाचारपत्र इत्यादि भेजते रहते थे, जिनका सार लिखकर वे गांधीजी को संशोधनार्थ भेजते थे। कभी-कभी गांधीजी अमृतकौरसे भी उनपर संशोधन करवाते थे।

७९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१२ मई, १९४१

चि० कृ० चं०,

हां, रसोडेके लिये सामान मंगाना और निर्णयका काम तुमारा है।

मेहमानके बारेमें तुमने ठीक कहा है।

रसोडा सफाई इ० के बारेमें भी तुमने ठीक कहा है। कोई गैर मामुल खर्च करना पड़े तो कमिटीके पास जाना चाहिये।

तुमारे क्षेत्रमें आते हूए खातेमें खर्च होगा। उसमें तुमारी हि सही होगी। लेकिन व्य० की[1] तो तुमारी गैरहाजरीमें हो हि सकती है।

तुमारे क्षेत्रोंमें जो काम पड़े हैं उनमें लोगोंको काम देना तुमारा काम है। वही आदमी दूसरे क्षेत्रमें भी हो सकते हैं। इस बारेमें तो दूसरे खातेके अधिकारीसे बंदोबस्त होना चाहिये।

इतना याद रखना कि हमारा काम जिम्मेदारी अदा करनेका है। उसके अदा करनेके लिये जो अधिकार चाहिये वह अपने आप आ जायगा। यह मेरा ५० वर्षका अनुभव है।

तुमारे कार्य विभाग करना होगा। जैसे कें अमूक समय सफाई निरीक्षणके लिये। उस वख्त तुमारे हाथमें छोटी बकेट और फावड़ा और झाडू होना चाहिये। नित्य काम तो दूसरे हि करेंगे, लेकिन निरीक्षणके समय जो घाटा देखनेमें आवेगा उसे यथासंभव तुम हि कर लोगे और जिनका दोष होगा उनको बता दोगे। बहूत काम अपने आप करनेका लोभ नहिं करोगे। और जितना सहजमें अपने आप हो सके वह दूसरोंको नहिं दोगे।

यह चि० को[2] बताना और तुमारा खत भी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३८७) से

1. व्यवस्थापककी
2. चिमनलाल न० शाह, सेवाग्राम आश्रमके व्यवस्थापक

८०. पत्र : मीराबहनको

दुबारा नहीं पढ़ा

सेवाग्राम, वर्धा
१३ मई, १९४१

चि० मीरा,

संस्था तोड़नेकी तुम्हारी योजना पढ़नेमें तो अच्छी है, मगर उसमें सार बहुत कम है। गौशाला अलग है, परन्तु बलवन्तसिंह तो अलग नहीं है। दुग्धालय अलग है, परन्तु पारनेरकर[1] तो अलग नहीं है। बात यह है कि दुनिया मुझसे अलग नही हो सकती। भणसाली एक ही नहीं अनेक हैं। लेकिन सबका व्यवहार इतना अच्छा नहीं है जितना भणसालीका[2] है। लेकिन जैसे भी हैं वैसे हैं। तुम इस चीजकी गहराई में नहीं गई हो। मुझे चिन्ता रसोई-घरकी नही है। विकास अपने-आप सहज रूपमें हुआ है और विनाश या पुनर्निर्माण भी उसी तरह होना होगा। मैं इस प्रक्रियामें केवल सहायक ही हो सकता हूँ। हर जगह मुझे हारकर हटना पड़ा है। राजकोटके घरकी जगह बम्बईका घर बना। उसके स्थानपर नेटालका घर बना, फिर बम्बईमें, बादमें जोहानिसबर्गमें दो बने, फिर फीनिक्स, टॉल्स्टॉय फार्म, फिर वापस फीनिक्स, बादमें कोचरब, साबरमती, मगनवाड़ी और सेवाग्राममें। मैंने बीचके स्थान-परिवर्तन तो छोड़ ही दिये हैं। सब यथासमय हुए। भगवान ही जाने अब वह मुझे कहाँ पटकेगा। नहीं, मेरी रक्षा इसीमें है कि मैं प्रार्थना और प्रतीक्षा करूँ। "प्रभु, तू ही मुझे रास्ता बता।"

तुमसे सम्बन्धित अनुच्छेद मैंने नही देखा है। जबतक तुम एकान्तवासियोंके जैसा जीवन न बिताना चाहो, जो कि अत्यन्त मूर्खतापूर्ण और अकल्पनीय है, तबतक तुम छिपकर नहीं रह सकतीं।

महादेव कल लौट रहा है।

पी० की कक्षा छुट्टियों भर के लिए है। आशा है, वह १० जूनके लगभग बन्द होगी।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४७९)से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८७४ से भी

१. यशवन्त म० पारनेरकर, आश्रमके एक डेरी-विशेषज्ञ

२. जयकृष्ण प्रभुदास भणसाली

८१. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

१३ मई, १९४१

चि० किशोरलाल,

९ अगस्त, १९४० को तुमने 'सत्याग्रह साथी' की जो रूपरेखा तैयार की थी उसे मैंने अच्छी तरह सँभालकर रख छोड़ा था। समय निकालकर उसे पढ़ जाने का निश्चय था ही। अन्य किसी कारणसे नहीं तो तुम्हारे उत्साह और उद्यमका आदर करने के विचारसे ही आज उस निश्चयको पूरा किया।

आश्रमको लेकर मुझे इतने आघात सहने पड़े हैं कि अब कुछ भी नया आरम्भ करने का उत्साह मुझमें नहीं रह गया है। इसलिए यह 'साथ' तो मेरे जीते-जी अथवा मेरी मृत्युके पश्चात् तुममें से ही कोई खड़ा करेगा। वह होना चाहिए, यह मैं जरूर मानता हूँ। आरम्भमें बहुत छोटा हो तो भी काफी होगा।

परिशिष्ट उपयोगी है, मार्गदर्शक है। थोड़ा-बहुत सुधारकर उसे अभी भी प्रकाशित किया जा सकता है। छठे पृष्ठपर मैंने दो धाराओंको निकाल दिया है। हिंसाके प्रकारोंके बारेमें लिखा अंश मुझे अनावश्यक जान पड़ा, क्योंकि वे अगणित हैं। इसके अतिरिक्त इसके सम्बन्धमें मार्ग-दर्शनके लिए तुमने जो कसौटी प्रस्तुत की है वह स्थूल है। हिंसा तो हमारे हृदयमें भरी है। जल्दीमें पढ़ते हुए अगर मैंने कोई भूल की हो तो सुधार लेना।

१०वें पृष्ठपर मैंने जो अंश काटा है उसके बारेमें तुम समझ ही जाओगे। परिशिष्ट-ग फिलहाल तो कामका नहीं रहा।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०७२४)से। सौजन्य : गोमतीबहन मशरूवाला

८२. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

१३ मई, १९४१

प्रिय भगिनि,

क्यों बार बार बीमार होती है? सेवक सेविकाको तंदुरस्त रहने की कला भी सीख लेनी चाहिये। भगवानकी कृपासे दौरा तो निर्विघ्न खतम होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९५) से। सी० डब्ल्यू० ३०९२ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

८३. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१३ मई, १९४१

चि० कृ० चं०,

अ० स०[1] बहेन कुछ सामुदायिक काम करना चाहती है। दे सकते है तो दे दो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३८८) से

१. अमतुस्सलाम

८४. पत्र : लीलावती आसरको

१४ मई, १९४१

चि० लीला,

तेरा पत्र मिला। तू अपने वजनकी चिन्ता छोड़, और स्वाभाविक रूपसे जितनी भूख लगे उसके अनुसार बाकायदा खाया कर। उम्मीद है, तूने अध्ययन शुरू कर दिया होगा।

लक्ष्मीसे कहना, उसका पत्र मिल गया था।

तारासे कहना, तेरी सहेली कैसी है कि अपने दोस्तको पत्र ही नहीं लिखती।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३७९)से। सी० डब्ल्यू० ६६५४ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

८५. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

सेवाग्राम, वर्धा
१४ मई, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र विचित्र है। अव्यवस्थाकी हद हो गई! तुमने सौ रुपये मँगाये। तुरन्त भेजे। अब वापस भेजते हो और कहते हो कि सब-कुछ समझ लेनेके बाद अगर कंचन और मुझे सन्तोष हो जाये, तो रुपये वापस भेज दिये जायें। यह कहाँकी रीति है? हमें सन्तोष है कि नहीं, यह तुम पूछ सकते थे।

तुम्हारा भयंकर पत्र पढ़नेके बाद कंचनको भेज रहा हूँ। तुम नहीं आ रहे हो। अब जो मैं उसे तुम्हारे साथ रहनेके लिए भेजूं, तो तुम रख लेनेको तैयार हो। यह कैसी बात है? उसकी भावनाओंका तुम्हें कोई भी खयाल नहीं, मेरी भावनाओं का भी नहीं। यदि तुम नहीं ही आओ अथवा न आ सको, तो कंचनके वहीं रहनेकी बात थी। वह रह भी सकती थी, लेकिन तुमने तो उसके वहाँ पहुँचते ही उसे वापस भेज दिया। यह क्या है? तुम्हारा मन वहाँ लगता नहीं, फिर भी पड़े हो। वहाँकी हर चीजसे अपना मेल नहीं बैठा पाये, फिर भी हठपूर्वक वहाँ पड़े हो। यह उचित नहीं है।

मैंने किसीसे नहीं कहा है कि तुम मुझसे कोई चीज या कोई बात छिपाते हो।

तुम सेवाग्राम नहीं आना चाहते, यह मुझे तुम्हारे पत्रसे ही पता लगा।

मेरी सलाह यह है: सौ रुपये जब जरूरत हो, मँगाओ। अगर परीक्षा देनेको मन न करता हो अथवा तबीयत अच्छी न रहती हो, तो यहाँ आओ और फिर किसी ठंडी जगह जाओ। बोरडी जाना हो तो वहाँ जाया जा सकता है। यहाँ आओ तो फुर्सतसे बात करके निश्चित किया जा सकता है कि क्या करना चाहिए। तुम्हारी बातोंपर मैंने ध्यान नहीं दिया, यह मैं नहीं मानता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९८) से। सी० डब्ल्यू० ७१३८ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

८६. पत्र: बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षको

[१५ मई, १९४१ के पूर्व][1]

इस समय मैं आपको केवल यही सलाह दे सकता हूँ कि जिन्हें बाहर रहने दिया जाता है वे लोग रचनात्मक कार्योंमें, विशेष रूपसे साम्प्रदायिक शान्ति बनाये रखनेके कार्यमें रत रहें।

वास्तवमें कहा जाये तो यह कोई दुर्भाग्यकी बात नहीं है, क्योंकि हमें तो ऐसी गिरफ्तारियोंकी[2] आशा थी ही। उनसे हमारी शक्ति और एकताकी परीक्षा होती है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १६-५-१९४१

१. यह पत्र दिनांक "कलकत्ता, १५ मई" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

२. बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मन्त्री अरुणचन्द्र गुह तथा कांग्रेसके अन्य पदाधिकारियों व प्रान्तके अनेक भागोंमें कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओंको गिरफ्तार कर लिया गया था।

८७. पत्र : सारंगधर दासको

सेवाग्राम, वर्धा
[१५ मई, १९४१ के पूर्व][1]

प्रिय सारंगधर दास,

राजकुमारीके नाम तुम्हारा अत्यन्त दिलचस्प पत्र पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई।

हाँ, मुझे याद है कि तुम्हारा वक्तव्य प्राप्त हुआ था। मुझे तो याद नहीं कि उसमें कोई खटकनेवाली बात थी। राजकुमारी तब पंजाबमें थी।

मुझे खुशी है कि तुम हरिजनोंके इतने निकट सम्पर्कमें आये। 'सी' श्रेणी निःसन्देह सर्वश्रेष्ठ है। 'ए' और 'बी' श्रेणियाँ तो नासूरके समान हैं। किन्तु यह सब तो हमारा ही बनाया हुआ है। मुझे उम्मीद है, अपने अनुभवसे तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँची होगी।

मैं जानता हूँ कि बाहर सब जगह गड़बड़ है। राजेनबाबू फिलहाल बिहार नहीं छोड़ सकते। जैसा कि मैं पहले ही पढियारीको[2] बता चुका हूँ, हम सबको अपनी कठिनाइयाँ स्वयं सुलझाने की कला सीखनी है। . . .[3]

बापू[4]

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०५१६)से। सौजन्य: उड़ीसा सरकार

८८. 'खादी-जगत्'[5]

'खादी-जगत्' की आजकी मर्यादा अखिल भारतीय चरखा संघकी मर्यादा है। लेकिन अखिल भारतीय चरखा संघ कल्पनामें अमर्यादित है। आज तो इसमें २,२४,४२१ कत्तिनें हैं, जिसमें १,६७,९९६ हिन्दू हैं और ५६,४२५ मुसलमान हैं और उनके लिए २०,६४३ ओटनेवाले, पिंजारे, रंगरेज, जुलाहे, धोबी इत्यादि हैं। चरखा

१. यह पत्र जे० एन० घोषने अपनी १५ मई, १९४१ को रिपोर्टमें उद्धृत किया था।

२. प्राणकृष्ण पढियारी, उड़ीसा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

३. साधन-सूत्रमें इसके आगेका अंश छूटा हुआ है।

४. साधन-सूत्रमें "बापूजी" लिखा है।

५. यह लेख अ० भा० चरखा संघ द्वारा वर्धासे प्रकाशित हिन्दी मासिक खादी-जगत् के प्रथम अंकमें छपा था।

संघ उनका और खादी पहननेवालोंका प्रतिनिधि है। यह संस्था तो हिन्दुस्तानरूपी समुद्रमें बिन्दु समान है, तो भी सारे हिन्दुस्तानमें फैली हुई है। अखिल भारतीय चरखा संघ पूरी तरह पारमार्थिक संस्था है, और इतनी बड़ी पारमार्थिक संस्था शायद ही दुनियामें और कोई हो। अगर कल्पना सफल हुई तो अखिल भारतीय चरखा संघ करोड़ों हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी इत्यादिका प्रतिनिधि बनेगा, और जब ऐसा बनेगा तो सारे जगतका बनेगा। क्योंकि तब सारा जगत हिन्दुस्तानकी नकल अपने-आप करेगा। यह खूनी युद्ध बता रहा है कि यंत्रवादसे तो आखिरमें जगतका नाश ही होगा। हस्तकलासे ही जगतका पोषण हो सकता है। यह भविष्यकी बात हुई, और भविष्य ईश्वर ही जानता है। फिर भी पुरुषार्थ जैसी चीज तो जगतमें रहती ही है। और अखिल भारतीय चरखा संघका पुरुषार्थ इसमें है कि उसकी मारफत सारा हिन्दुस्तान खादीमय बने। तभी हिन्दुस्तानकी कंगाली जा सकती है। यहाँ खादीका व्यापक अर्थ लेना आवश्यक है। इतने प्रचंड कार्यके लिए संघमें ज्यादा सेवक चाहिए। जो हैं उनमें ज्यादा कुरबानी, ज्यादा अध्ययन, ज्यादा ज्ञान, ज्यादा उद्यम, ज्यादा जागृति होनी चाहिए।

इस प्रवृत्तिका केन्द्र चरखा है, क्योंकि करोड़ोंका उद्योग और धन तो चरखा ही हो सकता है। चरखेमें तकली तो आ ही जाती है। चरखा सिर्फ विधवाका औजार नहीं है। चरखा हिन्दुस्तानकी आर्थिक उन्नति, स्वातन्त्र्य और कौमी एकताकी निशानी है, इसलिए यह बड़ा शास्त्र है। इस शास्त्रको बढ़ाने मे कई विशारदोंकी शक्तिका संगठन होना है। विशारदोंमें अर्थशास्त्री तो होने ही चाहिए, साथ ही कई शास्त्रज्ञ भी होने चाहिए। एक मिस्त्री छोटा-सा घर बना देगा। बड़ी इमारत या पुल तो बड़ा इंजीनियर ही बना सकता है। चरखेमें सुधार करने के लिए गंगाका पुल बनानेवालेसे अधिक ज्ञान और शोधक-बुद्धिकी आवश्यकता रहती है। ऐसे लोगों को हम अपने त्यागसे और श्रमसे जब अपनी ओर खीचेंगे तब हम बहुत आगे जा सकेंगे।

इस दृष्टिसे देखें तो 'खादी-जगत्' छोटा साहस नहीं है। इसी दृष्टिसे मैंने 'खादी-जगत्' प्रकाशित करने के प्रस्तावका अनुमोदन किया है। मुझे आशा है कि 'खादी-जगत्' में जो लेख आवेंगे सब ज्ञानसे भरे हुए होंगे, जिससे संघके कार्यकर्त्ताओं और जनताको लाभ हो।

संघकी प्रवृत्तिके लिए सेवक चाहिए और धन भी चाहिए। दोनोंका मिलना आजके सेवकोंपर निर्भर है। अच्छा होगा कि 'खादी-जगत्' के आरम्भमें मैं संघके प्रमुखकी हैसियतसे एक दोष-धोवन कर दूँ। मेरी और मेरे ही साथीकी गफलतसे कहो या अतिविश्वाससे, संघको दो लाखसे अधिक रुपयेकी हानि हुई है। भाई शंकरलाल बैंकरने एक शख्सको भले मानकर संघमें रख लिया और जोखिमका काम उसको दिया। अतिविश्वास करके उसके कामकी देखभाल कम की। अपना शरीर खराब होने के कारण वे पूरी देखभाल कर न सके। हिसाब निरीक्षण वगैरह तो होता रहा। लेकिन उक्त भाईने बड़ी चालाकी से थोड़ा-थोड़ा करके दो लाखसे अधिक रुपये खा लिये। भाई जाजूजी के हाथमें दफ्तर आने पर इस चोरीका पता लगा। चोरने स्वीकार तो किया है लेकिन पैसे हमारे हाथ नहीं आये हैं। पैसे प्राप्त करने का सब प्रयत्न चल रहा है। हो सके, तबतक कोर्ट तक मामला नहीं जाने देने की नीतिपर संघ

कायम है। लेकिन आवश्यकता होने पर कोर्टतक जाने मे जरा भी संकोच नहीं होगा। यहाँ तो यह बात जाहिर करने का मतलव इतना ही है कि संघके सहायक हमारी गफलत जानें और हो सके तो क्षमा करें। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि हम सब जाग्रत हुए हैं, और ऐसी गफलत दुबारा न होने पावे, ऐसी चेष्टा कर रहे हैं। इस दोष-स्वीकारमें यह भी आशा है कि संघके सब कार्यकर्त्ता जाग्रत हो जायेंगे और अपनी शुद्धि करेंगे और जिस भाईने चोरी की है वह भी इसे पढ़कर सावधान हो जायेंगे तो बड़ा ही अच्छा होगा। कमसे-कम भाई शंकरलाल बैंकर, जिन्होंने भोलेपनमें इतना विश्वास किया उनको कुछ आश्वासन मिलेगा।

एक और बात। बाजारकी पर्वाह न करके कत्तिनोंकी मजदूरी एकदम वढ़ाने का साहस हमने किया है, वह हमेशा उज्जवल साहस माना जायेगा। खादी-प्रेमियोंने इस परमार्थमें बड़ी मदद दी है। खादीके दाम तो वढ़ने ही थे। खादी-प्रेमियोंने वह दाम खुशीसे दिये हैं। अब कार्यकर्त्ताओंका दुहरा धर्म उत्पन्न होता है। एक तो यह कि कत्तिनोंको प्रस्तावके मुताबिक पूरे दाम दिये जायें। और दूसरा यह कि खादीके ग्राहकोंसे हिसाबसे जितने दाम लेने चाहिए, उतने ही लें। बचाने के लिए नफा करने की कोशिश न की जाये। अगर किसी कारणसे नफा हो भी गया हो तो संघकी इजाजत लेकर उसे खादीका दाम कम करने में खर्च करना चाहिए। खादीकी उन्नतिका आधार बाजारकी नरमी-गरमी होने पर नहीं है बल्कि हमारे शुद्धव्यवहार पर ही है। हमारे शुद्ध व्यवहारसे तीन परिणाम अवश्य आयेंगे :

१. कत्तिन इत्यादि कारीगर आकर्षित होंगे।

२. खादीधारी बढ़ेंगे और इच्छित धन मिलेगा।

३. और अधिक कार्यकर्त्ता मिलेंगे।

यह मेरा ५५ वर्षका अनुभव है। 'खादी-जगत्' का प्रयत्न ये तीन उद्देश्य पूरे करने के लिए रहेगा, अर्थात् संघमें मौजूदा कार्यकर्त्ताओंकी शुद्धि, वृद्धि और कार्यशक्तिमें दिन-प्रतिदिन वृद्धि करने के लिए रहेगा।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम, १५ मई, १९४१

खादी-जगत्, २५-७-१९४१

८९. बातचीत: डी० के० गोसावी[1] के साथ

१५ मई, १९४१

प्र०: महाराष्ट्रके सत्याग्रहियोंकी तीसरी सूचीमें से बहुत कम (१०७२ में से १९३) सत्याग्रहियोंको सत्याग्रह करनेकी अनुमति मिली है। अनुमति प्राप्त करने में आवश्यकतासे अधिक समय चला जाता है और इस प्रकार सत्याग्रहियोंको बहुत असुविधा होती है।

उ०: सत्याग्रहियोंकी इन सूचियोंके मंजूर किये जानेकी विधिमें मैं कुछ परिवर्त्तन करना चाहता हूँ।[2] जिस दिन प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी किसी भावी सत्याग्रहीका नाम मेरे पास मंजूरीके लिए भेजेगी उसी दिनसे उस सत्याग्रहीको अपनी सब व्यक्तिगत गतिविधियाँ रोक देनी होंगी तथा कांग्रेसके १३ सूत्री रचनात्मक कार्यक्रमके किसी एक या अधिक अंगोंको कार्यान्वित करनेके कार्यमें पूरी तरह जुट जाना होगा। 'हरिजन' के १८-८-१९४० के अंकमें "रचनात्मक कार्यक्रम किसलिए?" शीर्षक अपने लेखमें[3] मैंने उसका जो व्यापक अर्थ समझाया था वही अर्थ यहाँ भी लिया जायेगा।

प्रत्येक भावी सत्याग्रहीको अपने पास कार्य-विवरण-पुस्तिका (या दैनन्दिनी) रखनी होगी, जिसमें वह हर रोज दिन-भरमें किया हुआ काम दर्ज करेगा और उक्त पुस्तिका निर्धारित समयपर, जैसे कि हर पखवाड़े या हर मास, सम्बन्धित प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी द्वारा मेरे पास भेजी जायेगी। दैनन्दिनीको देख जाने के बाद ही मैं योग्य व्यक्तियोंको सत्याग्रह करनेकी अनुमति दूँगा और दूसरे लोग, जबतक कि उन्हें सत्याग्रहकी अनुमति नहीं मिल जाती, इसी तरह कार्य करते रहेंगे।

सत्याग्रहीको कांग्रेससे किसी प्रकारकी आर्थिक सहायताकी अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।

मुझे मालूम है कि इस कड़ी कसौटीके फलस्वरूप सत्याग्रहियोंकी संख्या बहुत कम हो जायेगी, किन्तु मेरा आग्रह गुणवत्ता पर है, संख्यापर नहीं। संख्या चाहे जितनी भी

१. महाराष्ट्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष, जिनके साथ पूनाके डॉ० लागू भी आये थे। साधन-सूत्रके अनुसार, गांधीजी ने इसे "दुबारा पढ़ा था और पढ़कर इसमें संशोधन किये थे" और उनकी अनुमतिके बाद ही यह समाचारपत्रोंको प्रकाशनके लिए दिया गया था। देखिए "पत्र: डी० के० गोसावीको", १-६-१९४१ और ८-६-१९४१ भी।

२. "गांधीजी की सलाहसे सत्याग्रहियों और कांग्रेस कमेटियोंके मार्ग-दर्शनके लिए" जे० बी० कृपलानी द्वारा जारी किये गये निर्देशोंके लिए देखिए परिशिष्ट १।

३. देखिए खण्ड ७२, पृ० ४२४-२७।

घट जाये, मुझे उसका कोई दुःख नहीं होगा। इसके अलावा, इतने सत्याग्रही बेकार घूम रहे हैं कि मैं इस तरह बेकार घूमनेवाले सत्याग्रहियोंकी संख्यामें वृद्धि करना नहीं चाहता।

क्या आपको ऐसा महसूस नहीं होता कि इन भावी सत्याग्रहियोंके लिए ऐसी कड़ी आरम्भिक परीक्षा रखकर आप उनके साथ अन्याय कर रहे हैं, जब कि आपने उनसे पूर्ववर्ती सत्याग्रहियोंके लिए तो अपेक्षाकृत आसान कसौटी रखी थी?[1]

मेरा खयाल है कि मैं इसमें कुछ अन्याय नहीं कर रहा हूँ। आपको एक बात जरूर ध्यानमें रखनी चाहिए कि इस आन्दोलनका विकास हो रहा है। परिस्थितियोंकी माँगके अनुसार शर्तें भी भिन्न हो सकती हैं।

क्या जेलसे रिहा होनेवाले सत्याग्रहियोंके प्रति प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष का कुछ कर्त्तव्य है?

हाँ, अवश्य है। उसे उनसे कहना चाहिए कि वे फिरसे सत्याग्रह करें और छूटने के बाद कोई एक हफ्तेके अन्दर ही दुबारा जेल जायें। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियोंको मेरे पास केवल उन्हीं मामलोंको भेजना चाहिए जिनपर विशेष ध्यान देने की जरूरत है और उनके सम्बन्धमें मैं जो निर्देश दूँगा उन निर्देशोंको अच्छी तरहसे समझकर उन्हें उनपर अमल करना चाहिए।

यह सिलसिला कबतक चालू रहेगा?

अनिश्चित कालतक; यानी तबतक जबतक हम अपनी लक्ष्य-प्राप्ति नहीं कर लेते। मेरे अन्तरतममें यही भाव उठता है कि यह संघर्ष क्रमशः उग्रतर होता जायगा और हमें ऐसी सभी परीक्षाओंसे गुजरना होगा।

इस सम्बन्धमें हमें अंग्रेजोंसे सबक सीखना चाहिए। बहुत ज्यादा नुकसान और भारी कठिनाइयोंके बावजूद वे खूब हिम्मत बनाये हुए हैं और संघर्ष जारी रखने को कृतसंकल्प हैं। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

यदि किसी सत्याग्रहीने पुराने नियमोंके आधारपर अपना नाम दर्ज कराया हो और नये नियमोंको स्वीकार करनेमें वह अपनेको असमर्थ पाता हो, तो उसके लिए सत्याग्रह छोड़ने का सम्मानजनक रास्ता क्या होगा?[2]

वह अपना नाम वापस ले सकता है और इस प्रकार ईमानदारी से अपना नाम वापस लेनेमें लज्जाकी कोई बात नहीं है। मेरे साथ धोखा नहीं किया जाना चाहिए। मुझे धोखा देना तो अपने-आपको और इस प्रकार राष्ट्रको धोखा देना है। प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति अपना नाम वापस ले सकता है और उसे वापस लेना भी चाहिए। उसे जितनी बन सके उतनी देशकी सेवा करते रहना चाहिए। वह पहलेके समान ही कांग्रेसी है और बना रहेगा। कांग्रेसको निश्चय ही उसकी सेवाओंकी जरूरत है और वह उनकी कद्र करती है। किन्तु इस समय सत्याग्रही

१. यह तथा अगले तीन अनुच्छेद कांग्रेस बुलेटिन से लिये गये हैं।

२. यह और अगला अनुच्छेद कांग्रेस बुलेटिन से लिये गये हैं।

होने की जो शर्तें हैं उनके आधारपर सत्याग्रहियोंकी सूचीमें उसका नाम नहीं रह सकता।

वर्त्तमान परिस्थितियोंमें क्या हम एक स्वयंसेवक संगठनकी स्थापना और उसका विकास कर सकते हैं?

अवश्य कर सकते हैं। सिर्फ एक ही शर्त है कि ऐसे संगठनकी स्थापना केवल अहिंसा, विशुद्ध अहिंसाके आधारपर ही होगी।

अहिंसाके साथ खिलवाड़ करने से काम नहीं चलेगा और इसलिए उस विषयमें किसी प्रकारकी शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जा सकती। एक बात और; इस संगठनको कांग्रेस-समर्थक होते हुए भी कांग्रेससे स्वतन्त्र होना चाहिए। अ० भा० चरखा संघ आदि संगठनोंके समान यह कांग्रेससे सम्बद्ध संगठन हो सकता है।

यदि ऐसे स्वयंसेवक संगठनका कोई सदस्य आपात्-कालमें आत्मरक्षार्थ समुचित हिंसाका उपयोग करता है, तो क्या उसे अपवाद समझकर बर्दाश्त किया जायेगा?

नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। एक ऐसी संस्थामें, जो निश्चित रूपसे केवल अहिंसाके ही आधारपर संगठित की गई है, ऐसे अपवादोंकी न तो कल्पना की जा सकती है, न उनके लिए पहलेसे कोई व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे व्यक्तिको संस्थासे निकल जाना होगा।

इस विषयमें आप यह शिक्षा देते रहे हैं कि "अहिंसात्मक प्रतिरोध सबसे अच्छा तरीका है; यदि वह सम्भव न हो, तो उचित हिंसायुक्त प्रतिरोध भी सह्य है, किन्तु कायरता तो अकल्पनीय और निन्दनीय है।" लेकिन आपका यह कथन आपकी उपरोक्त उक्तिसे मेल नहीं खाता।

मेरी वह उक्ति तो उन करोड़ों लोगोंके लिए है जिन्होंने अभी तक कांग्रेस-सिद्धान्तको नहीं अपनाया है। यह उन संगठनों पर लागू नहीं की जा सकती जिनका संगठन अहिंसाके मूलभूत सिद्धान्तपर किया गया है। जो लोग अहिंसाके मूलभूत सिद्धान्तमें परिवर्त्तन करना चाहते हैं उन्हें या तो अपना सेनापति बदलना होगा या संगठन छोड़ना होगा।

चूँकि एक संगठनके रूपमें कांग्रेसकी प्रवृत्तियोंको बहुत हदतक स्थगित कर दिया गया है इसलिए सदस्योंकी सालाना भर्तीके सम्बन्धमें हमारी क्या नीति होनी चाहिए?[1]

वर्त्तमान परिस्थितियोंमें पहलेकी तरह नये सदस्य बनाने की कोई बन्दिश नहीं हो सकती। यदि नये प्रार्थी चाहें तो उन्हें सदस्यके रूपमें भर्ती किया जा सकता है और जहाँ व्यावहारिक हो वहाँ पुराने सदस्योंसे वार्षिक चन्दा लेने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

क्या आप शान्ति-सेनाओंकी स्थापना करना चाहते हैं?

१. यह और इससे आगेके तीन अनुच्छेद *कांग्रेस बुलेटिन* से लिये गये हैं।

हाँ, मैं अवश्य चाहता हूँ। कुछ समय पहले (देखिए 'हरिजन', १८ जून, १९३८) इस सम्बन्धमें मैंने कुछ ठोस सुझाव रखे थे।[1] मैं जानता हूँ कि कमसे-कम शुरूमें तो ऐसे संगठनके लिए बहुत कम लोग अपना नाम दर्ज करायेंगे? लेकिन शुरुआत तो छोटी-सी संख्यासे अथवा केवल एक व्यक्तिसे भी की जा सकती है। ऐसे संगठनको लोकतन्त्रीय पद्धतिपर नहीं चलाया जा सकता। यह तो एक सुनिश्चित उद्देश्य लेकर चलनेवाले व्यक्तियोंकी एक संस्था होगी। यदि सेनाके प्राथमिक सदस्य सही ढंगके लोग होंगे तो कालान्तरमें अपने अनुयायी भी जमा कर लेंगे।

स्थानीय निकायोंके चुनावोंके प्रति हमारा क्या रुख होना चाहिए?

सामान्यतः इन निकायोंके चुनाव कांग्रेसके नामपर नहीं लड़े जाने चाहिए। अगर कांग्रेसजन अपनी जिम्मेदारी पर ये चुनाव लड़ते हैं तो उसमें हमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती। परन्तु यह एक ऐसा प्रश्न है जिसपर केवल राजेन्द्रबाबू और आचार्य कृपलानी[2] ही अधिकृत रूपसे कोई निर्णय दे सकते हैं।

जिनके नाम सत्याग्रहियोंकी सूचीमें दर्ज हैं, क्या वे लोग व्यक्तिगत रूपसे इन चुनावोंमें खड़े हो सकते हैं?

नहीं। इस विषयपर मेरी राय बिलकुल साफ है।

जो सत्याग्रही इन चुनावोंके लिए उम्मीदवारोंके रूपमें खड़े हो चुके हैं उनके बारेमें क्या किया जाना चाहिए?

उन्हें या तो चुनावसे हट जाना होगा या सत्याग्रहकी प्रतिज्ञाका[3] त्याग करना होगा; वे दोनों हैसियतें एक साथ कायम नहीं रख सकते।

केन्द्रीय और प्रान्तीय विधान-मण्डलोंकी मतदाता-सूचियोंमें लोगोंके नाम दर्ज करानेके विषयमें कांग्रेसका क्या रुख होना चाहिए?

कांग्रेसको इस कामकी ओर पूरा ध्यान देना होगा। कांग्रेस इसकी उपेक्षा नहीं कर सकती।

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१ – गृह विभाग, पोलि० (१); सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार। **बॉम्बे क्रॉनिकल**, १७-६-१९४१ भी

१. देखिए खण्ड ६७, पृ० १४२-४४।

२. अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके महामन्त्री

३. देखिए खण्ड ७२, परिशिष्ट १।

९०. पत्र : चारुप्रभा सेनगुप्तको

१६ मई, १९४१

प्रिय चारुप्रभा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने जिन पुस्तकोंका उल्लेख किया है, वे मुझे नहीं मिली हैं। बहरहाल, मैंने प्रस्तावनाएँ लिखना छोड़ दिया है। इसलिए कृपया मुझे इस कामसे बरी करवा दो।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७०९) से। सी० डब्ल्यू० १४९४ से भी; सौजन्य : ए० के० सेन

९१. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

१६ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र[1] मिला। तुम मेरे पत्रोंको पूरी तरह पढ़ते तक नहीं हो। मैंने तुम्हें बता दिया है[2] कि जबतक तुम मेरे प्रतिनिधिके रूपमें या मेरे नामपर, अथवा मेरे निर्देशोंके अनुसार काम करनेका दावा नहीं करते, तबतक तुम जैसा चाहो वैसा करनेके लिए स्वतन्त्र हो। मुझे तुम्हारी निर्णय-बुद्धिपर तनिक भी भरोसा नहीं है। किन्तु यदि तुम्हें भरोसा है और लोग तुम्हें वहाँ चाहते हैं, तो न जाना गलत होगा।[3] मैंने तुम्हें यह भी बता दिया है कि अब मैं तुम्हारे खर्चके लिए जिम्मेदार नहीं हूँ। तुम्हारा सेवाग्राम लौटना बेकार है। यदि कोई सार्वजनिक संस्था तुम्हें अपने यहाँ नहीं रखती है अथवा तुम्हारे भरण-पोषणका भार नहीं लेती है, तो तुम्हें शान्तिपूर्वक कहीं जमकर अपनी आजीविका कमानी चाहिए और इस तरह अपने उजड़े हुए घरको फिरसे बसानेका प्रयत्न करना चाहिए। कृपया इसे ध्यानपूर्वक पढ़ जाना और तुम्हारी समझमें जो ठीक लगे वैसा करना।

१. दिनांक १३ मईका

२. देखिए पृ० २९-३०, ३३-३४, ४५-४६, और ५०-५१।

३. अमृतलाल चटर्जीके अनुसार वे "विरोधस्वरूप, गांधीजीके निर्देशको मानकर" ढाकासे कलकत्ता लौट आये थे।

शैलेन और बीरेनका चरित्र गढ़ने का प्रयत्न कर रहा हूँ। यह एक कठिन कार्य है। वीणा और आभासे कहना कि मुझे उनके पत्र मिल गये थे। उन्हें अपने समयका सदुपयोग करना चाहिए। वीणाने कचनको दो चूड़ियाँ क्यों दी?

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०६) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

९२. पत्र : लीलावती आसरको

१६ मई, १९४१

चि० लीला,

तू सोच-समझकर पत्र लिख ही नहीं सकती। मैंने याद करके तुझे लगभग रोज पत्र लिखे हैं, फिर भी तू कहती है कि तू मुझसे पत्रकी अपेक्षा कैसे रख सकती है! अपने नामकी वर्तनी भी तूने कैसी बिगाड़ ली है? तू 'लैला'[1] है क्या? तूने जो लिखा है उसका उच्चारण हुआ लैला। क्या तुझे लैलाके[2] बारेमें मालूम है? तू तो "लीला"[3] है। कितना अन्तर है दोनोंमें? लिखनेमें, बोलनेमें, चाल-ढालमें, सोच-विचारमें, प्रत्येक बातमें मर्यादाका पालन करना ही चाहिए। मैंने तुझसे कहा है कि प्रत्येक वाक्य विचारपूर्वक लिख, प्रत्येक बात विचारपूर्वक बोल। लेकिन मैं शिकायत करूँ तो किससे करूँ? अपने गुणों पर तू अपने हाथों पानी फेरती है। अभी भी चेत जा। तेरी अर्जी महादेवभाईने भेज दी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३८०) से। सी० डब्ल्यू० ६६५१ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

१. साधन-सूत्रमें यह नाम रोमन लिपिमें है।
२. फारसकी एक प्रेम-गाथाकी नायिका
३. साधन-सूत्रमें यह नाम रोमन लिपिमें है।

९३. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
१७ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मैं देखता हूँ कि तुम फिरसे समाचारपत्रोंको वक्तव्य देने लगे हो।[1] अपने वक्तव्यमें तुमने जो कहा बताते हैं वह सरासर झूठ है। यदि तुम सही वक्तव्य नहीं दोगे, तो मुझे सार्वजनिक रूपसे तुम्हारा प्रत्याख्यान करना होगा। ऐसा लगता है कि तुमने सुरेन्द्रजीकी मार्फत चीजें ली हैं; जैसे कि मंजन, साबुन, इत्यादि, क्योंकि जिस दिन तुम यहाँसे गये उसी दिनकी खरीददारीका एक बिल दुकानदारने भेजा है। तुम मुझे लिखो कि तुम क्या-क्या सामान ले गये थे।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०७)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

९४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१७ मई, १९४१

चि० कृ० चं०,

तुमको किसने सुनाया? तुमारे बारेमें किसीने कुछ कहा ऐसा मुझे याद तक नहिं है। अगर कहे तो कमसे कम तुमको मैं वह बात कह तो दूं। वानर राजको याद करो। ऐसी बातें सुननेसे कानको रोको। 'मेरी कुछ शिकायत होगी तो बापु मुझे कह देंगे' ऐसा कहकर सुनानेवालेसे भागो। दुःख क्यों?

मेरे पास काम होनेसे सेकड़ों बार आना, अन्यथा बिलकुल नहिं। अब बस ना?

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३८९)से

१. अमृतलाल चटर्जीके अनुसार, उन्होंने १३ मईको "यूनाइटेड प्रेसके प्रतिनिधिको ढाकाकी दंगा-सम्बन्धी स्थितिपर" एक वक्तव्य दिया था।

९५. पत्र : शुएब कुरैशीको

सेवाग्राम
१८ मई, १९४१

प्रिय शुएब,

देर आयद, दुरुस्त आयद।

मैं बज्मीका मामला समझता हूँ। तुमने अपने अँगूठेको क्या कर लिया? यहां हम गर्मीमें उबल रहे हैं। वर्धाकी गर्मी जैकबाबादका मुकाबला कर सकती है।

तुम सबको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

९६. पत्र : वालजी गो० देसाईको

१८ मई, १९४१

चि० वालजी,

तुम्हारा पत्र मिला।

दुर्गा बहनकी तबीयत सुधरती जा रही है।

गोपालनके बारेमें जब तुम आओ, तब जो कहोगे वह मैं सुननेके लिए तैयार हूँ। धीरजका मतलब यह नहीं था कि बरसों या महीनों बीत जायें। धीरजका मतलब यही था कि जब तुम्हारे पास पूरा केस आ जाये, तब तुम तैयार होकर सब गवाहोंको लेकर आओ। थोड़े-थोड़े करके मुझसे प्रश्न पूछने से बिलकुल काम नहीं चलेगा। अपनी तरफसे मैं ढील नहीं करूँगा। जबतक काम पूरा न हो जाये, तबतक रोज दो घंटेका समय देनेको तैयार हूँ।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च :

महेन्द्रका[1] पत्र मुझे मिला था।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४९४)से। सौजन्य: वालजी गो० देसाई

१. वालजी गो० देसाईके ज्येष्ठ पुत्र

९७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१८ मई, १९४१

बापा,

तुम गढ़वाल पहुँच गये, यह बहुत अच्छा किया। इसका परिणाम अवश्य अच्छा होगा। वहाँकी आबोहवा तो अच्छी होगी।

जयनारायण मुझसे मिल गये। मैंने उन्हींका सुझाव स्वीकार कर लिया, इसलिए उसे केवल तुम्हारे पास जानेको कहा। अपनी खुदकी राय तो मैंने तुम्हें बता दी है, कि स्थायी समिति निलम्बित है तथा लड़ाईके समय आपत्कालीन समिति काम करे। सारी संस्था अमृतलाल सेठके[1] नियन्त्रणमें रहे, यह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है। वे पैसे दें और अखबार चले, यह भी मुझे पसन्द नहीं है। जयनारायण-जी की मान्यता है कि आपत्कालीन समिति तो निजी समिति थी; इसकी खबर अखबारमें प्रकाशित भी नहीं हुई, और वह काम कर सकेगी, ऐसा भी नहीं लगता। स्थायी समितिको ही कर्त्ता-धर्त्ता होना चाहिए। मैंने जमनालालजी से पुछवाया था। वे कहते हैं कि जयनारायण आदिकी सम्मतिसे आपत्कालीन समिति बनी है, इस-लिए फिलहाल तो स्थायी समिति निलम्बित रहती है। स्टेट्स पीपुल्स [कांफरेंस] चलाने का आग्रह बलवन्तरायका था, जयनारायणका नहीं है। जवाहरलालने मेननको कहलवाया है कि उसे मेरी सलाहके अनुसार चलना चाहिए। इसीलिए मैं बीचमें पड़ा हूँ। मेरा मत ऊपर कहे अनुसार है। यदि तुम्हें भी यह पसन्द हो तो तुम्हारे यहाँ आनेकी जरूरत नहीं है। लेकिन अगर तुम्हारा मत इससे भिन्न हो तो तुम्हारा आ जाना उचित होगा। स्टेट्स पीपुल्स [कांफरेंस] को यदि एक स्वतन्त्र संस्थाके रूपमें चलाया जाये तो कोई हर्ज नहीं होगा, ऐसी मेरी मान्यता है। इसके सम्बन्धमें शायद हमें मिलना चाहिए। लेकिन मैं सब तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ। यहाँ आ जाओ, यह तो मुझे पसन्द है ही। और अगर तुम्हें लगे कि किसी औरको भी हाजिर रहना चाहिए, तो वैसा करना। मेरे अक्षर पढ़नेमें तुम्हें कठिनाई होती है क्या? आज मैंने यह प्रश्न इसलिए पूछा है क्योंकि पत्र मुझे लम्बा लिखना पड़ा है।

बापू

१. जन्मभूमि पत्र-शृंखलाके मालिक

[पुनश्च :]

तुम्हारा हर्षविह्वल पत्र इसके बाद मिला। मैंने तो भविष्यवाणी की ही थी कि तुम विजयी होगे। फिर भी इनाम माँगते हो?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११८७)से

९८. पत्र : प्रभावतीको

१८ मई, १९४१

चि० प्रभा,

तेरा पत्र मिला। मैंने जयप्रकाशको पत्र लिखा है। तू जमनालालजी को अवश्य पत्र लिख सकती है। उन्हें पत्र जरूर मिलते हैं। उनकी तबीयत अब ठीक है। दुर्गाबहन अच्छी है। बा भी अच्छी है। शायद २५ को यहाँ आयेगी। सुशीला २० तारीखको लाहौर जायेगी। २६ को उसकी परीक्षा शुरू होगी और छः दिन तक चलेगी। मैं तो यही मानकर चलता हूँ कि वह पास हो जायेगी। फिलहाल मृदुला और गुलजारीलाल[1] यहाँ हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६६) से

९९. पत्र : गुलाबचन्द जैनको

१८ मई, १९४१

भाई गुलाबचंद,

तुमारा खत मिला। तुमारे पिताजीके बारे अगर तार आया भी होगा तो मैं समजा नहीं हुंगा। पिताके वियोगका दुःख तो सुपुत्रको लगना ही चाहिये।

मुकुंदलालजी के बारेमें अन्याय कैसे? अन्याय तो तभी हो सकता है जब कोई अधिकार छीन लेवे तब अन्यायकी बात पैदा हो सकती है। लेकिन जेल जाने का तो धर्म हि हो सकता है, अधिकार कभी नहिं।

अगर दिल्लीसे नालायक आदमी चुने गये हैं तो यह बात तुमारे रघुनंदनजी को कहनी चाहिये। मैं तो विश्वाससे ही काम कर सकता हूं। हिं० टा०[2] का रिपोर्टर अगर

१. गुलजारीलाल नन्दा
२. हिन्दुस्तान टाइम्स

पैसे खाता है तो तुमारा धर्म है कि देवदासको कहना। ऐसे ही हिं० टा० की नीतिके बारेमें। मैं तो अखबार पढ़ता हि नही हूं। अगर तुमारी बात सही है तो नामका क्या छुपाना? परोक्ष तरह देवदासको मैं नही लिखुंगा। तुमारा नाम भेजने की इजाज [त] दोगे तो मैं लिख सकता हूं।

तुमारे बारेमें मैं निश्चयपूर्वक अभिप्राय नहिं दे सकता हूं। जो अन्तरात्मा कहे सो करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७७४४) से

१००. पत्र: डॉ० एस० के० वैद्यको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१९ मई, १९४१

भाई वैद्य,

तुम मेरा विनोद भला क्यों समझोगे? "स्वच्छता" के सब अर्थ लो और "मुग्ध" का अन्तिम अर्थ। खादी और चरखेको यदि नहीं छोड़ोगे तो अन्तमें शान्ति मिलेगी। जो रामनाम लेनेसे नहीं थकते उन लोगोंको जैसे अन्तमें रामके दर्शन अवश्य होते हैं, वही बात खादी-चरखेके बारेमें समझो। मुसलमान सभी छुरा रखनेवाले थोड़े ही होते हैं। जो हो, तुम्हारा शुद्ध हृदय अन्तमें शुद्धताको अवश्य देख पायेगा। खिलखिलाकर हँसना हो तो एक-दो दिनके लिए सेवाग्राम आ जाना चाहिए। अम्बु मजेमें होगी।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० वैद्य
श्रीपत भुवन
सान्ताक्रूज
बम्बई ७

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७४८) से

१०१. पत्र : मणिबहन पटेलको

१९ मई, १९४१

चि० मणि,

तेरा पत्र आज ही मिला। मुझे उम्मीद तो है कि यह पत्र तुझे जेलमें ही मिलेगा। मैंने तेरे लिए एक पत्र[1] डाह्याभाईको भेजा है। तू अपनी सेहतका ध्यान रख रही है, यह अच्छी खबर है।

रिहा होने के बाद यदि तू थोड़े समयके लिए बम्बई रहना चाहे तो रहना और बादमें मेरे पास चली आना। अहमदाबादके सम्बन्धमें मृदुला और गुलजारीलाल आये हैं। वे इस समय यहीं पर हैं और बातचीत चल रही है। बापूको[2] अथवा तुझे वहाँ बैठे-बैठे ऐसी समस्याओंपर विचार नहीं करना चाहिए। ज्यादा लिखने की जरूरत नहीं। जमनालालजी के बारेमें तनिक भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं। सब-कुछ ठीक-ठीक चल रहा है। मनु त्रिवेदी आनन्दपूर्वक है। बा थोड़े दिनोंमें दिल्लीसे आ जायेगी। लीलावती उसके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १२७-२८

१०२. पत्र : बलवन्तसिंहको

१९ मई, १९४१

चि० बलवन्तसिंह,

मुन्नालाल कहते हैं कि तुम्हारी क्षमा-याचनासे शांति नहीं हुई है। क्षमा मांगने के समय विठोबाको[3] सुनाया, तुमने विश्वासघात तो किया है तो भी क्षमा मांगता हूं। अगर यह ठीक है तो क्षमा-प्रार्थना निरर्थक है। विश्वासघातकी शिकायत बहुत कठोर है। मैं विश्वासघात नहीं पाता हूं, हृदय-दौर्बल्य भले कहो। यह बात सुधरनी चाहिये।

बापू

बापूकी छायामें, पृ० २८६-८७

१. देखिए पृ० ५३-५४।
२. वल्लभभाई पटेल, मणिबहनके बापू
३. विठोबाने बलवन्तसिंहसे एक संकटग्रस्त किसानकी जमीन खरीद लेने का अनुरोध किया था। सौदा पक्का हो जाने पर किसानके लड़केने अपनी जमीन वापस लेनी चाही जिसपर झगड़ा हो गया।

१०३. पत्र : शकुन्तलाको

१९ मई, १९४१

चि० शकुन्तला,

अच्छा है कि तुम जुनमें फिर सविनय भंग करोगी।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १३९६) से

१०४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
२० मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

दुःखकी बात है कि जो सीधी-सादी-सी बात मैं तुम्हें समझा रहा हूँ वह तुम समझना ही नहीं चाहते। तुम्हारे ही भलेके लिए मुझे तुम्हें कुछ नहीं देना चाहिए। तुम्हारा जरूरतसे ज्यादा लाड़ करके मैंने तुम्हारा अहित किया है। तुम तो शरीरसे हट्टे-कट्टे हो। जो भी काम पा सको वह तुम्हें करना चाहिए।

तुम जो-कुछ ले जा चुके हो, उसे लौटानेकी आवश्यकता नहीं है।[1]

सुरेन्द्रजी ने लोगोंको खूब ठगा है। उसका किस्सा तो दुःखद है।

अच्छी तरह समझ लो कि अब तुम्हें अपनी देखभाल खुद करनी होगी। तुम वापस नहीं आ सकते। यदि शैलेन और धीरेनको कुछ बना सका, तो मैं उतनेसे ही पूरा सन्तोष मानूँगा।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०८) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० ७४।

१०५. पत्र : भोगीलाल लालाको[1]

[२१ मई, १९४१ या उसके पूर्व][2]

मृदुलाबहन, गुलजारीलाल और मैंने चार दिनों तक जी-भरकर बातचीत की है। यदि आप और श्रीयुत जीवनलाल दीवान भी तब उपस्थित होते, तो मुझे किसी निश्चयपर पहुँचने में बहुत सहायता मिली होती।

मैं ऐसा समझता हूँ कि साम्प्रदायिक दंगोंके समय कांग्रेसने क्या किया या क्या नहीं किया, और भविष्यमें ऐसी स्थितिमें कांग्रेसको क्या करना चाहिए, इस विषयपर दो मत हैं। खैर, वह तो जो है सो है, किन्तु सब बातोंपर विचार करने पर मेरी राय यह है कि इस समय जैसी गम्भीर स्थिति है वैसी स्थितिमें एक सलाहकार समिति (जिसके सदस्योंके नाम नीचे दिये गये हैं) नियुक्त की जानी चाहिए और उसकी सलाहके अनुसार सारे काम होने चाहिए। आप देखेंगे कि मैंने इस समितिमें महादेव देसाईका भी नाम रखा है। वे हर अवसरपर वहाँ उपस्थित नहीं हो सकते, किन्तु जब-जब आपको उनकी उपस्थिति आवश्यक लगेगी तब-तब वे वहाँ पहुँचने का प्रयत्न करेंगे।

आपका प्रथम कर्त्तव्य यह पता करना है कि हमारे कितने कांग्रेसी भाई ऐसे हैं जो दृढ़तापूर्वक यह मानते हैं कि अपनी अथवा दूसरोंकी रक्षाके लिए हिंसक प्रतिरोधका कोई प्रश्न नहीं उठता। जो लोग हिंसक प्रतिरोधके पक्षमें है उन्हें चाहिए कि वे कांग्रेससे निकल जायें और जैसा ठीक समझें वैसा आचरण करें और दूसरोंका वैसा ही मार्ग-दर्शन करें। मेरा यह दृढ़ मत है कि यदि इस विषयपर कांग्रेस स्पष्ट रूपसे अपनी नीति निर्धारित नहीं करती तो अन्तमें वह एक बेकार संगठन ही सिद्ध होगी।

यदि अधिकांश कांग्रेसी ऐसा मानते हैं कि किसी आक्रमणकारीका हिंसक प्रतिरोध करना मनुष्यका कर्त्तव्य है और इसे वे कांग्रेसके सिद्धान्तके विपरीत नहीं मानते, तो उन्हें सुस्पष्ट शब्दोंमें उसकी घोषणा करनी चाहिए और उसके अनुरूप लोगोंका मार्ग-दर्शन करना चाहिए। संकटकी इस घड़ीमें किसीको अपना मत प्रकट करने से यह सोचकर हिचकिचाना नहीं चाहिए कि हमारे नेता लोग अभी जेलोंमें पड़े हैं। कारण, यह मत गलत सिद्ध होने पर उसे सुधारा जा सकता है। मुख्य बात यह है कि किसी भी व्यक्तिको अनिश्चय की स्थितिमें नहीं रहना चाहिए।

१ और २. गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मन्त्री। साधन-सूत्रके अनुसार कांग्रेसियों के मार्ग-दर्शनके लिए महादेवभाई यह पत्र अहमदाबाद ले गये थे। वे २१ मईको अहमदाबादके लिए रवाना हुए थे; देखिए अगला शीर्षक।

मुझे पक्का विश्वास है कि यदि सभी कांग्रेसजनोंने अपने कर्त्तव्यका पालन किया होता तो अभी हालमें जो गुण्डाशाहीका दौर-दौरा रहा, वह न रहा होता।

लोगोंको गुण्डोंसे डरकर प्राण बचानेके लिए भागना पड़े, यह एक असह्य स्थिति है। उनमें गुण्डाशाहीका हिंसक अथवा अहिंसक प्रतिरोध करनेकी सामर्थ्य होनी चाहिए। यदि कांग्रेसके सिद्धान्तोंकी मेरी व्याख्या सही है तो कांग्रेस और कांग्रेसजनोंको केवल अहिंसक प्रतिरोध ही करना चाहिए। फिर तो उनका सफल होना निश्चित है। लेकिन हमें जनताको बिलकुल स्पष्ट शब्दोंमें बता देना चाहिए कि डरकर भाग खड़ा होना कायरता है। प्रतिरोध करना उनका धर्म है — यदि सबसे ठीक यानी अहिंसक मार्गसे करने में अक्षम हों तो हिंसक मार्गसे भी करना।

कांग्रेसजन सरकारसे या पुलिस या सेनाकी सहायता नहीं माँगेंगे। वस्तुत: सरकारसे सहायता तो वे माँगेंगे जो हिंसक प्रतिरोधमें विश्वास रखते हैं।

कांग्रेसीको ऐसे किसी भी अखाड़ेसे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए जहाँ हिंसक प्रतिरोधका प्रशिक्षण दिया जाता हो। बल्कि वह तो हिंसक प्रतिरोधमें विश्वास रखनेवाले व्यक्तिसे भी कुछ संयमसे काम लेने का अनुरोध करेगा। हिंसक प्रतिरोधमें भी किसी हदतक शालीनताकी गुंजाइश तो है ही। उदाहरणार्थ, किसी निर्दोष व्यक्तिकी निर्मम हत्या करना बिलकुल निषिद्ध होना चाहिए। लोगोंको यह मूल बात याद रखनी चाहिए कि उन्हें किसी भी स्थितिमें कायर अथवा लाचार नहीं बनना है। गुण्डेसे लड़नेके लिए गुण्डा बननेकी कोई जरूरत नहीं है। किसीकी पीठमें छुरा भोंककर भाग जानेवाला आदमी कभी वीर नहीं कहलायेगा।

कांग्रेसीके मनमें पूर्वग्रह हो ही नहीं सकता। इस कारण वह शान्ति स्थापित करनेके उद्देश्यसे मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा तथा अन्य संस्थाओंके सदस्योंसे मिलनेके विशेष प्रयत्न करेगा और उन्हें इस बातके लिए समझा-बुझाकर राजी करेगा कि उनमें चाहे कितने ही राजनीतिक मतभेद क्यों न हों, लेकिन उन्हें परस्पर मिलकर बर्बरताकी स्थितिका अन्त कर देना चाहिए। ये प्रयत्न विफल हो सकते हैं, इस बातकी कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए। कांग्रेसियोंका कर्त्तव्य तो यह है कि वे हर किसीसे अपील करें और किसीकी खुशामद न करें।

दंगेके दौरान हुई हानिके लिए कांग्रेस क्षतिपूर्तिकी माँग नहीं करेगी। इससे उसका कोई सरोकार नहीं है। जनताको जो हानि हुई है वह तो होनी ही थी, क्योंकि उसमें आत्म-रक्षा करनेकी क्षमता न थी; और इसलिए उसे इसका खमियाजा तो भुगतना ही पड़ेगा। मेरा तो यहाँ तक विश्वास है कि सरकार यदि चाहे तो भी क्षतिग्रस्त लोगोंको पर्याप्त मुआवजा नहीं दिला सकेगी।

मेरे मतमें भैया, सिख या ठाकुरदा लोगोंकी सहायतासे आत्म-रक्षा करनेका विचार ही भयानक है। कोई साधारण चौकीदार या दरबान रखना बिलकुल दूसरी बात है। मध्य वर्गके व्यवसायी लोगोंमें एक भी ऐसा युवक नहीं होना चाहिए जिसे हिंसक या अहिंसक ढंगसे आत्म-रक्षा करनेकी शिक्षा न

मिली हो। आत्म-रक्षाके लिए उक्त बाहरी लोगोंको नौकर रखना गुण्डाशाहीको खत्म करने के बजाय उसे और बढ़ावा देना है।

मुसलमानी टोलोंमें रहनेवाले हिन्दुओंको अपना मुहल्ला छोड़कर भागना नहीं चाहिए, बल्कि अपनी जानका खतरा उठाकर भी उन्हें वहीं बने रहना चाहिए। हिन्दू मुहल्लोंमें रहनेवाले मुसलमानोंको वहांके हिन्दुओंका पूरा संरक्षण मिलना चाहिए।

आजकल दंगेकी जरा-सी अफवाह फैलते ही दुकानें बन्द कर देने का जो चलन हो गया है वह बन्द हो जाना चाहिए और प्रत्येक दुकानदारको हिंसक अथवा अहिंसक उपायसे आत्म-रक्षाके लिए कटिबद्ध रहना चाहिए। यदि उन लोगोंमें इतना साहस आ जायेगा तो नुकसान भी बहुत कम होगा और दंगे-फसाद अतीतकी बात बनकर रह जायेंगे। हमारे देशमें जैसे दंगे होते हैं वैसे दंगे पश्चिममें नहीं होते, हालाँकि वहाँ गृह-युद्ध भले हों। कारण यह है कि वहाँ प्रतिद्वन्द्वी दल बराबर की टक्करके होते हैं और वे एक-दूसरेको देखते ही भाग खड़े नहीं होते, और न वे पुलिसकी सहायता माँगते हैं, या उसे स्वीकार करते हैं। वहाँ पुलिसका उपयोग तो केवल चोर-डाकुओंसे बचने के लिए होता है। इस मामलेमें हम बिलकुल बर्बर, बल्कि पुंसत्वहीन हैं।

समितिके सदस्योंके नाम ये हैं: श्री महादेव देसाई — अध्यक्ष; श्री नरहरि परीख — उपाध्यक्ष; श्री भोगीलाल तथा गुलजारीलाल नन्दा — मन्त्री; श्री जीवनलाल दीवान, मृदुला साराभाई, इन्दुमती चिमनलाल, श्री खण्डूभाई देसाई तथा रावजीभाई पटेल।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २५-५-१९४१

१०६. पत्र : देवदास गांधीको

२१ मई, १९४१

चि० देवदास,

महादेवको आज अहमदाबाद भेज दिया। वहाँ खासा डर फैला हुआ है। बहुत करके तो महादेव शिमला पहुँच ही जायेगा। तू अगर यहाँ २७ तक रुक सका तो वह तुमसे यहीं मिल लेगा, या फिर सीधे शिमलामें। २४ तारीखको बहुत करके तो तुम सबको सेवाग्राममें ही इकट्ठा करूँगा; लेकिन देखूँगा। बा मजेमें होगी। लीलावती बहनसे कहना कि उसका कार्ड मिल गया है। रामदासका पत्र भी मिला है। सब २४ तारीखको मिलेंगे। दुर्गाबहन डाक्टरी जाँच कराने बम्बई गई है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१३८) से

१०७. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२१ मई, १९४१

चि० मुन्नालाल,

अच्छा है, तुम वहीं रहो। तुम वहाँ पूरी सेवा कर रहे हो, और तुम्हें थोड़ी शान्ति भी मिलती है। कंचनको तो मिलती ही है। अब तुम तभी आना जब यह स्पष्ट हो जाये कि वहाँ तुम्हारे रहनेकी जरूरत नहीं है।

कंचनसे कहना कभी मुझे लिखे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७१३३) से। सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

१०८. पत्र : पुरातन बुचको

२१ मई, १९४१

चि० पुरातन,

पत्र मिला। मैं इसमें सब प्रकारसे सहमत हूँ। ईश्वर तेरी रक्षा करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८१) से

१०९. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको

[२२ मई, १९४१ या उसके पूर्व][1]

एक विशेष भेंटके दौरान मेरे इस प्रश्नके उत्तरमें कि क्या वे (गांधीजी) ऐसा मानते हैं कि ब्रिटिश सरकार भारतके साथ कोई समझौता नहीं करेगी, और अनिश्चयकी यही नीति कायम रखेगी, महात्मा गांधीने कहा :

मुझे अफ़सोस है कि इसके उत्तरमें मुझे कहना होगा, 'हाँ'। बिलकुल; यह उनकी परम्परागत नीति रही है, और लगता है कि आज भी, जब कि वे अपने अस्तित्वके लिए लड़ रहे हैं, वे अपनी इस नीतिमें कोई परिवर्तन नहीं कर रहे हैं या नहीं करेंगे।

यह पूछने पर कि इस युद्धमें जब कि लगता है पहला शिकार नैतिक मूल्योंको ही बनाया गया है, तब क्या कांग्रेसको नैतिक विरोधका प्रदर्शन करके ही सन्तोष कर लेना चाहिए, गांधीजी ने उत्तर दिया :

कांग्रेसके पास नैतिक मूल्योंके सिवा अन्य कोई मूल्य नहीं है, और नैतिक प्रभावके अलावा कोई प्रभाव नहीं है। यद्यपि यह सही है कि युद्धमें पहला शिकार नैतिक मूल्य ही होते हैं, फिर भी यदि इन मूल्योंका प्रतिनिधित्व करनेवाला कोई जन-संगठन हो तो विजय अन्ततः इन मूल्योंकी ही होगी। और मुझे पूरी उम्मीद है कि कमसे-कम कांग्रेस नैतिक मूल्योंका प्रतिनिधित्व करनेवाला एक ऐसा ही जन-संगठन है। यदि कोई मुझसे इसका प्रमाण माँगे तो मैं कोई प्रमाण नहीं दे सकता। समय ही इसे सिद्ध करेगा।

जब मैंने गांधीजी का ध्यान साम्प्रदायिक दंगोंके बारेमें दिये गये वक्तव्यके[2] दौरान कही गई उनकी इस बातकी ओर दिलाया कि शरारत करनेवाले लोग और उसका शिकार होनेवाले वे लोग जो उनका मुकाबला नहीं करते, ये सब कांग्रेसके सिद्धान्तोंसे अप्रभावित हैं, और फिर भी ये ही लोग हैं जिनकी तादाद कांग्रेसकी सभाओंमें सबसे ज्यादा होती है, तो गांधीजी ने कहा :

हाँ, मुझे यह बात कहनी पड़ी, क्योंकि कांग्रेस उपद्रवी तत्त्वोंको नियन्त्रित करने में सफल नहीं हुई है। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इन तत्त्वोंको शक्तिशाली संगठनोंका समर्थन प्राप्त है या, जैसा कि कुछ लोगोंने संकेत किया है, इन्हें ब्रिटिश अधिकारियोंका प्रोत्साहन प्राप्त है। मुझे इस बातमें किसी भी तरहका सन्देह नहीं है

१. भेंटवार्त्ताकी यह रिपोर्ट दिनांक "नागपुर, २२ मई" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।
२. देखिए पृ० ३०।

कि जन-मानससे गुण्डागर्दीका डर बिलकुल निकल जाना चाहिए। यह भय हिंसात्मक ढंगसे छोड़ा जाये या अहिंसात्मक ढंगसे, इसे छोड़नेके बाद ही हम ब्रिटिश सत्तासे बल्कि सारे संसारसे अपनी रक्षा कर सकेंगे। सभ्य जीवनकी पहली शर्त यही है कि गुण्डागर्दीको चाहे किसी भी प्रकार क्यों न भड़काया गया हो, जनता उसका सामना कर सके।

यह पूछने पर कि क्या यह खबर सही है कि वे सत्याग्रहियोंकी और कोई नई सूची अब स्वीकृत नहीं करेंगे, गांधीजी ने कहा कि जिन स्थानोंपर साम्प्रदायिक दंगोंके कारण तनाव है और जहाँ ऐसे सत्याग्रहियोंकी काफी बड़ी संख्या है जिन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया है, वहाँ सत्याग्रह अस्थायी रूपसे स्थगित कर दिया गया है।

इस प्रश्नके उत्तरमें कि क्या जेलसे रिहा होनेवाले सत्याग्रहियोंसे फिर सत्याग्रह करनेकी अपेक्षा की जायेगी, गांधीजी ने कहा:

जिस चीजकी खातिर सविनय अवज्ञा की जा रही है, जबतक वह चीज तय नहीं हो जाती, अर्थात् जबतक सविनय अवज्ञाका लक्ष्य पूरा नहीं हो जाता, तबतक मेरा खयाल है, उनमें से प्रत्येक व्यक्तिको समय-समयपर जेल जाना होगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २३-५-१९४१

११०. पत्र : भारतन् कुमारप्पाको

सेवाग्राम
२२ मई, १९४१

प्रिय भारतन्[1],

हाँ, कुमारप्पा बेशक साल्ट्स लें — किन्तु कम परिमाणमें। जबतक पीलापन बिलकुल दूर नहीं हो जाता तबतक उन्हें कुन्नूरमें ही रहना चाहिए। आवश्यकता हो तो तार भेजना।

जहाँतक बम्बई रिपोर्टका सवाल है मैं तुम्हारे सुझावसे सहमत हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५४)से

१. जे० सी० कुमारप्पाके भाई

१११. पत्र : मीराबहनको

२२ मई, १९४१

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला।

लन्दनसे पूछताछ हुई है कि क्या यह खबर सच है कि तुमने मुझसे सारे सम्बन्ध तोड़ लिये हैं और मुझसे दूर रहती हो। इच्छा किस तरह विचारोंको जन्म देती है!

जैसा कि तुम कहती हो, अगर कोई बड़ी चीज होनी होगी, तो वह किसी तुच्छ दीखनेवाले बहानेसे भी हो सकती है।[1]

तुम्हें पुरुषोत्तमसे[2] अच्छे भजन सीखने चाहिए। तुम जानती हो कि वह लगभग स्वर्गीय पंडितजी[3] जैसा ही अच्छा है। नारणदास जाकर तुमसे मिल ले तो अच्छा होगा।

तुम अखबारोंमें जो समाचार पढ़ती हो, उनमें से अधिकांश निरे झूठे होते हैं, जिन्हें बिक्री बढ़ाने के लिए गढ़ लिया जाता है। मैं न अहमदाबाद जा रहा हूँ और न दौरे पर या शिमला ही जा रहा हूँ। फिर भी, इनमें से कोई भी बात हो सकती है, हालाँकि फिलहाल ऐसी कोई उम्मीद नहीं है। परन्तु ये अखबारवाले अब कह देंगे, 'देख लो, हमने ठीक कहा था न'।

बा २४ तारीखको लौटेगी। देवदास आ रहा है और रामदास भी।

महादेव अहमदाबाद गया है, वहाँ वह देखेगा कि मेलजोल करवाने में वह कुछ मदद कर सकता है या नहीं। दुर्गा डाक्टरी जाँचके लिए बम्बई गई है।

युद्धके समाचार सनसनीखेज चल रहे हैं। इंग्लैंडमें हो रही विनाशलीलाके समाचार हृदय-विदारक हैं।

संसदके दोनों भवन, [वेस्टमिंस्टर] ऐबी, कैथीड्रल तो अनश्वर प्रतीत होते थे। और अभी भी कोई अन्त नहीं है। इतना सब होने के बावजूद अंग्रेजोंका दर्प अखण्डित है। क्या यह अभी भी बहादुरी ही कहलायेगी?

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८०) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८७५ से भी

१. मीराबहन लिखती हैं: "सेवाग्राम आश्रम और उसके बारेमें क्या किया जाये, हम इस विषयमें अभी भी पत्र-व्यवहार कर रहे थे।"

२. पुरुषोत्तमदास गांधी

३. नारायण मोरेश्वर खरे

११२. पत्र : मीठूबहन पेटिटको

२२ मई, १९४१

चि० मीठूबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। बा दिल्लीमें है। स्वास्थ्यके लिए डॉ० सुशीलासे इलाज कराने गई है। २४ तारीखको वापस आ जायेगी। उसकी तबीयत ठीक हो गई है, हालाँकि कमजोरी अभी है। तुम्हारा पत्र उसके लिए सहेजकर रखूंगा।

तुम्हारा आरोग्य-विभाग अच्छा काम कर रहा जान पड़ता है। बहुतोंको उससे मदद मिलती है।

तुमने अपनी तबीयतके बारेमें कोई खबर नहीं दी। क्या इससे समझ लें कि तबीयत अच्छी है?

जायजीके पत्रका उद्धरण भेजा, यह बहुत अच्छा किया। उम्दा है। जायजीको लिखना कि मैं उन्हें अक्सर याद करता हूँ। अंग्रेजोंके सद्‌गुणोंके बारेमें वे जो लिखती हैं, वह सही है, लेकिन वर्णन अधूरा है। हमारे देशमें इन लोगोंकी मदान्धता, तानाशाही और बेशर्मीसे झूठ बोलने की आदत, ये सब बताते हैं कि इनकी सभ्यताके मूलमें इनका स्वार्थ तथा इनकी भोग-लोलुपता है। इतना समझ लेना हमारे लिए जरूरी है। यह जानकर भी हम क्रोध न करें और इनसे मैत्री बढ़ायें, तब हमारी अहिंसा की शोभा है। ऐसी अहिंसा अभी हम लोगोंमें नही आई है।

वहाँ सब ठीक चल रहा होगा। सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७१८)से

११३. पत्र : धीरेन्द्रको

सेवाग्राम, वर्धा
२२ मई, १९४१

भाई धीरेन्द्र,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारी कैद मैं समझ ही नही सका हूं। देखें क्या क्या होता है।

सबसेनाने शर्तपर निकलने से इन्कार किया सो तो बिलकुल ठीक ही था। लेकिन कोई कौटुंबिक भावनाको रोक न सके और शर्तपर भी निकले तो मैं उसको बर्दाश्त कर लुंगा। लेकिन सही तो यही है कि हम निकलें ही नही।

तुम्हारा ग्राम उद्योगका इतना अच्छा कामको चलते रहनेकी कोशिश तो भरसक करूंगा। लेकिन तुम्हारी जगह तो कौन ले सकता है? सब भगवानके हाथोंमें है। सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको[1]

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२३ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

देखता हूं कि तुमने सुरेन्द्रजीसे कुछ भी नहीं लिया था। क्या लड़कियोंने कुछ लिया था? यदि अब तुम खानगी ढंगका जीवन बिताना चाहते हो तो तुम्हें कोई सार्वजनिक वक्तव्य देनेकी जरूरत नहीं। अन्नदाबाबूके नाम लिखे अपने पत्रकी[2] प्रतिलिपि मैं तुम्हें भेज चुका हूं।

सप्रेम,

बापू

श्री अमृतलाल चटर्जी
४/१, श्यामाचरण डे स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०९) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. अमृतलाल चटर्जीके अनुसार यह पत्र उनके २० मईके पत्रके उत्तरमें था, जिसमें उन्होंने "गांधीजी के इस आरोपका खण्डन किया था कि उन्होंने सुरेन्द्रजी की मार्फत कुछ सामान लिया था।" देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० ७४ और ८०।
२. देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० १०५ भी।

११५. पत्र : पृथ्वीसिंहको

२३ मई, १९४१

भाई पृथ्वीसिंह,

तुमारा खत मिला। हमारी शिक्षा केवल अहिंसक दृष्टिसे हि होनी चाहिये। इसलिये हम तलवारादि हिंसक हथियारोंका उपयोग नहिं सिखा सकते हैं लेकिन उसका अहिंसक प्रतिकार अवश्य सिखाते। तलवारका उत्तर तलवारसे देना हिंसक प्रतिकार है। तलवार खुनीके हाथमें से छीन लेना अहिंसक प्रतिकार होगा। उत्तम प्रतिकार यह होगा कि खुनीके पास सर झुकाना और मर जाना। ऐसा प्रतिकारके लिये हमारे क्षमाकी पराकाष्ठा होनी चाहिये। ऐसी के लिये व्यायामकी अथवा किसी प्रकारकी शिक्षाकी आवश्यकता नहिं रहेगी। व्यायाम शिक्षाका क्रम उन लोगोंके लिये है जिन्होंने डर छोडा नहिं है। जो हिंसा अहिंसाका भेद भी पूरा नहिं जानते हैं उनको हम अहिंसक व्यायामकी शिक्षा देना चाहते हैं यह कल्पनासे मैं लिख रहा हूं। मेरा ख्याल है कि मैंने संक्षेपमें तो सब दे दिया है।

नाथजी औ[र] कि०[1] भाई भी इसे देखें और कुछ प्रश्न नीकले तो पूछा जाय।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६४८)से। सी० डब्ल्यू० २९५९ से भी; सौजन्य: पृथ्वीसिंह

११६. भाषण : राष्ट्रीय युवक प्रशिक्षण शिविरमें[2]

वर्धा
२३ मई, १९४१

आजकल वैसे तो मुझे सेवाग्राम छोड़नेकी इच्छा हो ही नहीं सकती। अगर सेवाग्राम छोड़ना चाहूँ तो कई जगहसे बुलावे आते हैं। परन्तु सेवाग्राममें मेरे पास इतने काम पड़े हैं कि मैं खत्म नहीं कर सकता। इसलिए दूसरी बातोंमें दिलचस्पी लेना मेरे लिए मुमकिन नहीं रह गया है।

१. किशोरलाल

२. यह भाषण इस टिप्पणीके साथ प्रकाशित हुआ था: "२३ मई, १९४१ को रात को ८-२० बजे वर्धामें ... गांधीजी ने जो भाषण दिया था, उसकी रिपोर्ट अखबारोंमें निकल चुकी है। परन्तु यहाँ उस व्याख्यानकी प्रमाणित रिपोर्ट दी जाती है।"

फिर भी मैंने सोचा कि वर्धामें इतने लड़के आकर रहें और मैं खेलूं-कूदूं या मजाक न करूँ, यह मुझे अच्छा नही लगा। इसलिए मैंने खुद ही कहा कि मैं आ जाऊँगा।

आज तो मेरे दिलमें एक ही चीज भरी है। अहमदाबाद, ढाका, बिहार और बम्बईमें जो-कुछ हुआ, उसीसे मैं बिल्कुल भरा हुआ हूँ। अहमदाबादमें फिर उपद्रव शुरू हो गया। बम्बईमें भी गड़बड़ है।

मैं पूछता हूँ कि ऐसे समय पर नौजवानोंका स्थान कहाँ है? हरएक हिन्दुस्तानीको यह सवाल अपने-आपसे पूछना चाहिए।

इस विकट परिस्थितिका मुकाबला करने के दो ही तरीके हैं—एक तो मारके बदले मारका जगतका पुराना तरीका है। दूसरा एक प्रतिकारका तरीका और है, वह है शान्तिसे मार,खाकर बदला न लेने का तरीका। पहला तरीका सार्वत्रिक समझा जाता है। खतरेसे भाग जाना मनुष्यका काम नही है। गूंगे जानवर मारे जाने पर भागने लगते हैं। हमें उनके जैसा नही बनना चाहिए। हमें तो मर्द की तरह भयका सामना करते हुए मौका पड़ने पर जान दे देना ही शोभा देता है।

कांग्रेसने देशके सामने हिंसाका सामना करने का अहिंसक मार्ग पेश किया है। यह अचूक मार्ग है। परन्तु, अगर तुम यह रास्ता नही पकड़ सकते, तो आक्रमणकारीसे जी-भरकर लड़ लेना तुम्हारा कर्त्तव्य है। लेकिन याद रखो कि तुम्हें सिर्फ आक्रमणकारीसे निपटना है। निर्दोष व्यक्तियों पर वैर निकालना अमानुष और नामर्दी का लक्षण है।

मैं चाहता हूँ कि तुम अहिंसक ढंगसे और बहादुरीके साथ मर जाने के नये और बेहतर तरीकेको अपनाने की लियाकत हासिल करो। तुम्हें न तो मारके बदले मार देना चाहिए, न अपनी जानके लिए भागना ही चाहिए। पिछले बीस वर्षोंसे हम यह श्रेष्ठ कला सीख रहे हैं और उसका अभ्यास कर रहे हैं। आज वह परिस्थिति है जो हमारे पौरुषको और अहिंसक प्रतिकारकी इस नई कलामें हमारी श्रद्धा को चुनौती दे रही है। मैं आशा करता हूँ कि संकटके अवसरों पर इस कलाका प्रयोग करना तुम्हें सिखाया गया है।

आजकी परिस्थिति हर एक कांग्रेसजनको बड़ी सख्त कसौटी पर कस रही है। अगर कांग्रेस आज इस कसौटी पर खरी न उतरी, तो एक राष्ट्रीय संस्थाके नाते जीवित रहने का उसे कोई अधिकार नही रहेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि हम अपने-आपसे सच्चे रहें।

सर्वोदय, जून, १९४१

११७. पत्र : अन्नदाशंकर चौधरीको

सेवाग्राम, वर्धा
२४ मई, १९४१

प्रिय अन्नदा,

तुम्हारा पत्र मिला। महादेवको वहाँ[1] भेजना बेकार होगा। वहाँ जाकर वह कोई कारगर काम नहीं कर सकता। वह सभी कांग्रेसजनोंका सहयोग नहीं प्राप्त कर सकता। जहाँतक रिपोर्टोंका सम्बन्ध है, मेरे पास इस बातका स्वयं निर्णय कर सकने लायक काफी सामग्री इकट्ठी हो गई है कि नुकसान कितना हुआ है। इस बीमारीसे कैसे निपटा जाये, इसका पता चलाने की जिम्मेदारी कांग्रेसजनों की है। यदि तुम इस समस्यासे निपट सको, तो यह एक सार्थक कार्य होगा।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११८. पत्र : सी० ए० तुलपुलेको

२५ मई, १९४१

प्रिय तुलपुले,

जहाँतक मैं जानता हूँ, पूना-प्रस्ताव[2] हमेशाके लिए खत्म हो चुका है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९२०)से

१. ढाका तथा बंगालके अन्य दंगाग्रस्त क्षेत्रोंमें
२. देखिए पृ० १७।

११९. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको

[२५ मई, १९४१][1]

चि० अन्नपूर्णा,

तेरा पत्र मिला। धीरेनका भी। तुम सब अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखो, ठोस ज्ञान प्राप्त करके उत्तीर्ण हो जाओ। मुन्नालालका बुखार उतर गया है। बा, लक्ष्मी-बहन, देवदास, रामदास और बच्चे कल आ पहुँचे। लीलावती तो यहाँ है ही। अकबरभाई कल दंगोंमें मदद करने अहमदाबाद गये। तारी[2] और उमियाकी[3] चाबियाँ मिल गई हैं।

तुम सबको

बापूके आशीर्वाद

अन्नपूर्णाबहन
खादी कार्यालय
मूल

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४२७) से

१२०. पत्र : अग्निहोत्रीको

सेवाग्राम
२५ मई, १९४१

भाई अग्निहोत्री,

किशोरलाल पर तुम्हारा खत आया है। मैंने पढ़ा। महादेवभाई यहां नहीं है। तुम्हारे खतसे ही सिध्ध होता है कि मैंने जो शर्त लगाई है वह सही है। अगर लोग नये हैं तो सिध्ध होता है कि सत्याग्रहके लायक नहीं है। अगर रचनात्मक कार्यमें दिलचस्पी नहीं है तो भी वे निकम्मे है। ऐसे लोगोंको भेजने से हमको कुछ भी फायदा पहुँचनेवाला नहीं है। इस बारेमें मैं निवेदन निकालुंगा। उसे पढ़ो और

१. डाकको मुहरपर से
२. तारा मशरूवाला
३. उर्मिला अग्रवाल, शंकरलाल अग्रवालकी पत्नी

बादमें मुझे पुछना है तो पुछो। लोगोंमें निराशा पैदा होवे उसका हम फिकर नहीं करें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१२१. पत्र : अता मुहम्मदको

सेवाग्राम
२६ मई, १९४१

प्रिय अता मुहम्मद,

इससे पहले कि मैं तुम्हें आने के लिए कहूँ, तुम मुझे पूरी बात लिखकर भेज दो।[1] लेकिन तुम्हारे लिए सबसे अच्छा तो यह होगा कि तुम अहमदाबाद जाओ और वहाँ श्री गुलजारीलाल नन्दासे मिलो।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१२२. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

२६ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुममें यही तो बुराई है कि तुम हर कार्यकर्त्ताको निकम्मा समझते हो और उसके साथ काम करने से इनकार करते हो।[2] यह तुम्हारा एक मर्ज है। यहाँ भी तुम्हें कोई व्यक्ति योग्य नहीं जान पड़ता था। मैं चाहता हूँ कि तुम विनम्र बनो। किसी भी राष्ट्रीय संस्थामें तुम्हारे लायक काफी काम है। तुम्हें

१. अता मुहम्मद गांधीजी से मुलाकात करना चाहते थे और उन्हें "साम्प्रदायिक दंगोंके मूल कारणको समाप्त करने के लिए ठोस और परिपूर्ण तरीका" बताना चाहते थे।

२. अमृतलाल चटर्जीके अनुसार, गांधीजी को लिखे अपने २३ मईके पत्रमें उन्होंने "बंगालकी किसी भी सार्वजनिक संस्थामें काम करने में कठिनाई और अनिच्छा व्यक्त की थी, क्योंकि वहाँ दलगत मतभेद और सत्ता-प्राप्तिके लिए संघर्ष बहुत ही ज्यादा है।"

दूसरोंकी ही तरह सादगी और विनम्रतासे रहना चाहिए। चूड़ियोंका किस्सा तो एक रहस्य बन गया है।[1] मुझे इसकी पड़ताल करनी होगी।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३१०)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१२३. पत्र : उर्मिला म० मेहताको

२६ मई, १९४१

चि० उर्मि,

तेरा कार्ड मिला। हम सब तो आशा लगाये बैठे थे कि तुम सभी २८को यहाँ पहुँच जाओगे। लेकिन कश्मीर तो यहाँकी अपेक्षा अधिक अच्छा है ही। यहाँ तो इस साल अब भी बहुत गर्मी पड़ रही है। अब तो रातमें भी हम लोग तपते हैं। इसलिए अच्छा है कि तुम लोग कश्मीरकी ठंडी हवा खाओ। जब भी तुम आओगे मकान तो तैयार है ही। उसमें किसी अन्य व्यक्तिको नहीं ठहरने दूंगा। मगनने[2] पास होने का निश्चय कर लिया, यह अच्छी बात है।

तुम सबको

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १६१५)से । सौजन्य : मंजुला म० मेहता

१२४. पत्र : डॉ० एस० के० वैद्यको

सेवाग्राम, वर्धा
२६ मई, १९४१

भाई वैद्य,

मुझे अंग्रेजीमें लिखना रास नहीं आता। तुम्हारे वर्णनमें ही तुम्हारे प्रश्नका उत्तर है। कोई व्यक्ति किसी सुनसान जंगलमें अकेला जा रहा हो और उसकी पीठमें कोई छुरा भोंक दे, तो वह कुछ नहीं कर सकता। लेकिन तुम्हारे वर्णनके अनुसार तो अनेक जगहों पर जहाँ बस्ती थी, वहाँ छुरे भोंके गये हैं। ऐसी जगह छुरा भोंकने-वाला सहज ही पकड़ा जा सकता है या मारा जा सकता है, बशर्ते कि लोग कायर

१. देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० ७२-७३।
२. मगनलाल मेहता, उर्मिला मेहताके पिता

न हों। एक निर्दोष व्यक्ति मर गया, इसलिए दूसरे निर्दोष व्यक्तिको मारकर बदला लेने से बदला लेना नहीं होता। अज्ञानमें अज्ञान जोड़ने से जोड़में अज्ञान ही हाथ लगता है। तुम शान्त होकर इसपर विचार करना और यदि मैंने तथ्यको समझने में भूल की हो तो मुझे लिखना। तुम्हें अंग्रेजीमें लिखने की छूट है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७४९) से

१२५. पत्र: कुँवरजी खे० पारेखको

[२६ मई, १९४१][1]

चि० कुँवरजी,

बहुत दिनों बाद तुम्हारा कार्ड मिला और यदि सब प्रकारसे तुम्हारी तबीयत ठीक रहती हो तो कुछ पौंड वजन कम हो जाने में चिन्ता की कोई बात नहीं। जुगतराम भाईकी ओरसे पैसे मिल गये हैं। रामी[2] तुम्हारे साथ ही है न? बच्चे मजेमें होंगे। बा परसों आ गई। अच्छी है। देवदास, रामदास और लक्ष्मी भी आये हैं। लक्ष्मी बच्चोंको लेकर मद्रास जा रही है। देवदास कल शिमला जायेगा, रामदास अहमदाबाद।

बापूके आशीर्वाद

श्री कुँवरजी खेतसी पारेख
झंडू फार्मेसी
दादर, बम्बई–१४

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७४८) से। सी० डब्ल्यू० ७२८ से भी; सौजन्य: नवजीवन ट्रस्ट

१. डाककी मुहरपर से
२. कुँवरजी की पत्नी, हरिलाल गांधीकी पुत्री

१२६. पत्र : ऋषभदास रांकाको

सेवाग्राम
२६ मई, १९४१

भाई रिषभदास,

तुम्हारा खत मिला। दुःख हुआ। मैंने तुम्हारा खत पढ़ा, इतनेमें गिरध्वरी आ गये। वह नागपुर बैंकके तरफसे मुझे सब खबर देने आये थे। उनके कहने से और ओडिटरके रिपोर्टसे ऐसा पता चलता है कि तुमसे गलतिया हुई हैं। ऐसा ही है तो नम्रतासे स्वीकार किया जाय। इस हालतमें कनुभाईको एक वक्त नही भेजूंगा। जब कुछ साफ हो जाय तो यहां आकर हिसाब तपास पूरी करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२६ मई, १९४१

चि० कृ० चं०,

तुमारा खत अच्छा नहि लगा। दिलमें जो भाव उठे और मुझे बताये सो तो अच्छा हि किया। लेकिन एसे भाव उठे क्यों? जो बातें लिखी हैं सब का शुद्ध निर्णय धीरजसे चि०[1] से हि करा सकते थे। एक वखत तुमारा पद जान लिया, पीछे उसे सरलतासे रखना और शोभाना वही तुमारी कला होनी चाहिये। मैं तो सब बातोंको ठीक कर सकता हूं लेकिन उसमें तुमको लाभ नहि हो सकता है। चि० तो कहते हैं मुझे व्य०[2] के पदसे हटा दो तो भी मैं राजी हूंगा। कोई व्य० न रहे, सबके सब विभागका वही जवाबदार सबका कोई नहि, यह भी ठीक नहीं है। अब कहो।

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९०) से

१. चिमनलाल
२. व्यवस्थापक

१२८. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

सेवाग्राम, वर्धा
२६ मई, १९४१

प्रिय भगिनि,

तुम्हारा अच्छा खत मिल गया है। ठक्करबापाने सब हाल लिखे थे। हम आशा करें कि जो हूआ है वह स्थायी हो जायगा। तुमारी तबीयत बिगडनी नहि चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९६) से। सी० डब्ल्यू० ३०९३ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

१२९. पत्र : सावित्री बजाजको

सेवाग्राम, वर्धा
२६ मई, १९४१

चि० सावित्री[1],

तू प्रथम विभागमें आई है इसलिये तुझे तो बहुत मुबारकबादीयां मिली होंगी। मेरे तरफसे चाहिये तो ले सकती है। तेरे प्रथम विभागमें आने से मुझे कोई आश्चर्य नहि है। क्योंकि जो विषय सीखने के थे वे तेरी बुद्धिके लिये कठिन नहि थे। कठिन परीक्षा और हमारे मुलकके लिये कामकी तो चर्खा संघकी है। उसमें सर्वांगीणता चाहिये। और मैं जिस परीक्षाका उल्लेख करता हूं वह प्रथम परीक्षा है। रसपूर्ण तो है हि। तू वचनका पालन करती होगी।

यहां तो अंगार झरता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०६०) से

१. कमलनयन बजाजकी पत्नी

१३०. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
[२८ मई, १९४१][1]

प्रिय पगली,

अच्छा है कि तुम यहाँकी सड़ी गर्मीसे दूर हो।

मुझे डर था कि तुम्हारे लिए सफर कष्टकर होगा[2] और वैसा ही हुआ। जहाँ तक मुझे याद है, आजके जैसा तार तुम्हें पहले कभी भी भेजना नहीं पड़ा था। आशा करता हूँ, बम्बईमें सुस्थिर होने के बाद तुम्हें चैन मिला होगा।

साथमें चार पत्र हैं। मैं शिवाजी को[3] लिख रहा हूँ। मेटकॉफका[4] पत्र काफी अच्छा है। यदि कनिंघमसे[5] तुम्हारा परिचय है तो उन्हें पत्र लिख सकती हो।

मेरा रक्तचाप काफी स्थिर है — १५४/९२ है; और सुबह भी लगभग इतना ही था।

तुम्हारी जगहपर मदालसा रही। रात अपेक्षाकृत कुछ अच्छी थी।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३२)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३१ से भी

१. डाककी मुहरपर से
२. अमृतकौर एक महिला सभामें भाग लेने के लिए बम्बई गई थीं।
३. विनोबा भावेके भाई
४. हरबर्ट औब्री फ्रांसिस मेटकॉफ
५. जॉर्ज कनिंघम, उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्तके गवर्नर

१३१. पत्र : प्रभावतीको

सेवाग्राम, वर्धा
२८ मई, १९४१

चि० प्रभा,

चम्पारनसे लिखा तेरा पत्र मिला। तू वहाँ अच्छी उलझी हुई है। बा आ गई है। वह अच्छी है। लक्ष्मीबहन मद्रास और महादेव तथा देवदास शिमला चले गये। राजकुमारी स्त्रियोंकी सभामें भाग लेने चार दिनके लिए बम्बई गई है। वहाँ गर्मी यहाँ जैसी ही होगी। यहाँसे ज्यादा तो क्या होगी?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६०)से

१३२. पत्र : प्रभुलालको

२८ मई, १९४१

भाई प्रभुलाल,

मेरे आशीर्वाद तो तुम्हें हैं ही। यदि उनसे तुम्हें कोई प्रेरणा मिलती हो, तो उनका उपयोग अवश्य करो। यदि तुम उन्हें पत्रोंमें प्रकाशित करोगे तो समझ लेना कि उनकी प्रेरणा-शक्ति नष्ट हो जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१३६)से

१३३. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा
२९ मई, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला था। आश्चर्य है, आज तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया। आशा करता हूँ कि अब तुम्हारे जबड़ेका दर्द मिट गया होगा। यदि न मिटा हो तो जीवराजको[1] दिखा देना चाहिए।

मणि[2] कल यहाँ आ रही है।

बा की तबीयत ठीक है।

मेरी तबीयत बहुत अच्छी है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

क्या तुम्हें याद है कि पाकिस्तान-विषयक साहित्य कहाँ रखा हुआ है? कनुने तलाश की किन्तु उसे कुछ नहीं मिला। यदि तुम्हें कुछ अन्दाज हो तो तार भेजो और यह भी बताओ कि तुम्हारे जबड़ेका क्या हाल है।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३२ से भी

१. डॉक्टर जीवराज मेहता

२. मणिबहन पटेल

१३४. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

२९ मई, १९४१

भाई मुन्शी,

तुम्हारा निर्मल पत्र[1] मिला। कोई हर्ज नहीं जो अंग्रेजीमें लिखा। तुम अपने विचारोंका दमन करो अथवा जो मैं कहूँ उसमें केवल मुँहसे हाँ में हाँ मिलाओ, यह मुझसे बिलकुल सहन नहीं होगा। यह हम दोनोंके लिए शर्मकी बात होगी।

तुम्हें पूर्ण विचार-स्वातन्त्र्य है। जो लिखना उचित समझो स्वतन्त्रतापूर्वक लिखो। अगर भूल हो गई हो, तो ऐसा तो है नहीं कि उसे सुधारा नहीं जा सकता। इतना याद रखना कि अहिंसाकी शक्ति हिंसाकी शक्तिकी अपेक्षा बहुत आगे बढ़ जाती है। यदि यह ठीक है, तो जिसे अहिंसामें श्रद्धा है, वह क्या कभी हिंसाका सहारा लेगा? जिसमें श्रद्धा नहीं है, उसके लिए तो हिंसा ही धर्म है, ऐसा मैं पहले ही कह चुका हूँ न?[2]

तुम वहाँ बैठे-बैठे यहाँकी चिन्ता मत करो। कौसानी जाकर धवलगिरिके दर्शन करके अपनी आँखें ठंडी करना। आँखोंके लिए ज्यादा ठहरना पड़े, तो जरूर ठहरना। कोई जल्दी नहीं है। तुम अच्छे होकर आओगे, तब भी यही काम तुम्हें प्रतीक्षा करता मिलेगा। बम्बई लौटो, तब यहाँ जरूर आना।[3]

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६१) से। सौजन्य: कन्हैयालाल मा० मुन्शी

१. देखिए परिशिष्ट २।

२. देखिए "पत्र: मोतीलाल कालाको", पृ० ८१-८३।

३. क० मा० मुन्शी गांधीजी से १२/१३ जूनको मिले थे; देखिए "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको", १५-६-१९४१।

१३५. पत्र : डॉ० एस० के० वैद्यको

२९ मई, १९४१

भाई वैद्य,

तुम ठीक समाचार देते रहते हो। कोई भी व्यक्ति चाहे अहिंसाकी पद्धतिको स्वीकार करे या हिंसाकी पद्धतिको, लेकिन यदि वह धीरजसे काम लेगा तभी पार उतर सकेगा। हिटलर आदिको कितना धीरज, कितनी शान्ति रखनी पड़ती होगी, इसकी हम कल्पना भी कैसे कर सकते हैं? छूरेका जवाब छुरा बिलकुल नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७५०) से

१३६. पत्र : पुरातन बुचको

२९ मई, १९४१

चि० पुरातन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम ठीक काम कर रहे हो। अकबरको क्या काम सौंपा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८२) से

१३७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२९ मई, १९४१

चि० कृ० चं०,

अगर मेरा खत[1] समझ गये हो तो दूसरे दो [प्रश्नों] के उत्तरकी आवश्यकता नहिं रहती है। यहि तो दुःख है कि दोनों अपना काम छोडने को तैयार हो। क्या छोडोगे? कर्तव्य या अधिकार? कर्तव्य तो छुट सकता नहिं, अधिकार तो है कहां? जितना कर्तव्यमें समाविष्ट है वह तो छुटता नहिं। तदुपरांत तो बोज है। यह वचन दोनोंको, तुमको और चि० को, लागु होता है। चि० व्यवस्थापकत्वंका अधिकार न भोगे तो वह छुट गये। जितना कर्तव्यमें भरा है सो तो है। जैसे सुरेन्द्र चोरी करता है तो उसे रोकने के लिये अधिकारका उपयोग होगा हि। वह अपमान करता है वहां अधिकारका उपयोग त्याज्य है। यह दोनों पढ़ो। शायद काफी चीज यों हि सुलझ जायगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९१) से

१३८. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा
[३० मई, १९४१][2]

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे दुःख है कि जबड़ा अभी भी तुम्हें तकलीफ दे रहा है। तुम हिदायतों का पूरा पालन करना।

आशा है, तुम्हें मेरा कलका पत्र मिल गया होगा।

तुम्हारा प्रस्ताव अपेक्षित स्तरका नहीं है। मिलने पर उसपर चर्चा करेंगे।

यहाँ सब-कुछ ठीक चल रहा है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३३ से भी

१. देखिए पृ० ९७।

२. डाककी मुहरपर से

१३९. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
३० मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मैं तुम्हारे पत्रसे सन्तुष्ट नहीं हूँ। तुम इतने भोले हो कि तुम्हें कोई जिम्मेदारीका काम नहीं दिया जा सकता। लड़कियाँ तुमसे छल कर रही हैं। तुम तो उनके पास ही थे। भला सुरेन्द्रने वे सब चीजें हठपूर्वक उन्हें कैसे दे दीं कि तुम्हें पता ही न चला? और उन्होंने सुरेन्द्रकी बातका कैसे विश्वास कर लिया? तुम अपने बच्चोंको बिगाड़ रहे हो। उन सब वस्तुओंको लौटानेका या उन्हें बेचनेका तुम्हारा प्रस्ताव आश्चर्यजनक है। मैं यह माननेको बिलकुल तैयार नहीं हूँ कि लड़कियाँ उन वस्तुओंका उपयोग करना नहीं चाहती थीं। जो-कुछ भी हो, मैं उस सामानका मूल्य नहीं चाहता, क्योंकि तुम्हें कोई कीमत मिलेगी ही नहीं; साथ ही मैं वह सामान भी नहीं वापस चाहता हूँ।[1]

रही बात अन्नदाबाबूकी, तो उन्हें अपनी जिम्मेदारी पर ही तुम्हें रखना होगा। मुझे कहना पड़ता है कि तुम कोई भी कार्य सुचारु रूपसे कर सकते हो, इसका मुझे कोई भरोसा नहीं है।

तुम मुझे अपने वक्तव्यका मसौदा[2] भेज सकते हो। मैं देखूंगा कि मैं उसमें कुछ सुधार कर सकता हूँ या नहीं।

तुम ऐसा क्यों कहते हो कि मैंने तुम्हें आश्रमके विषयमें, या उसके साथ तुम्हारे सम्बन्धके विषयमें कुछ कहनेसे मना किया है? तुम कुछ भी कह सकते हो, बशर्ते कि वह सच हो।

खानगी ढंगके जीवनसे मेरा तात्पर्य था कि तुम अपनी योग्यताके अनुसार कोई भी काम करो। यदि तुम एक देशभक्तकी हैसियतसे खादी-कार्यको हाथमें लेते हो तो इसे मैं खानगी ढंगका जीवन नहीं कहूँगा। लेकिन यदि तुम जीविकोपार्जनके लिए इसे करोगे तो यह खानगी ढंगका काम होगा।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३११) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० ५०-५१, ७४, ८० और ८९।

२. अमृतलाल चटर्जीका ढाकाके दंगोंके सम्बन्धमें एक सार्वजनिक वक्तव्य देनेका विचार था; देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० ८९।

१४०. पत्र : वीणा चटर्जी और आभा चटर्जीको

३० मई, १९४१

चि० वीणा और आभा,

तुम्हारा खत झूटसे भरा है, पिताजी तुमारे पास थे और उनको पूछा तक नहीं? इतना भी सत्य नहिं बोल सकती है कि चीज पसंद थी और ली।[1]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३१२)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१४१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

३० मई, १९४१

चि० कृ० चं०,

तुमारी चिट्ठी पढ़ ली। कष्ट तो है। जो साधन मिले उसीसे काम निकालना है इसमें बुद्धिकी परीक्षा होगी। कामका बटवारा ऐसे किया जाये जिससे अनिश्चित लोगोंसे भी काम लिया जाय। लड़ाईयोंमें ऐसे हि चलता है। सबको ऐसी शिक्षा मिलती है कि आरामसे कोई भी आदमी काम कर सके। मैं इसमें कोई आपत्ति नहिं पाता हूं। आवश्यकता हो तो मेरे साथ बात कर लो।

बलवंतसिह मुझे भाजी बताते थे। उनको संतोष दे सकते हो तो देना, अन्यथा मुझे बताना यह क्या है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९२)से

१. देखिए पिछला शीर्षक

१४२. पत्र : लक्ष्मी सत्यमूर्तिको

३१ मई, १९४१

प्रिय लक्ष्मी[1],

हाँ, मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले थे। काश, तुम अपने अगले पत्रमें मुझे यह बता सको कि पिताजी दवाओंकी मदद लिये बिना ही ठीकसे सो सके हैं। आशा है, तुम और माँ दोनों अच्छी हो।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजीसे : एस० सत्यमूर्ति पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय। सी० डब्ल्यू० १०३१३ से भी; सौजन्य : तमिलनाडु सरकार

१४३. पत्र : मार्गरेट जोन्सको[2]

३१ मई, १९४१

प्रिय कमला,

गांधीजी के नाम लिखा आपका पत्र मिला। वे चाहते हैं कि आप उनको ठीक-ठीक बतायें कि आपको कौन-सा चर्म-रोग है। वे यह भी कहते हैं कि आप अपने लिए आटा खरीदकर स्वयं ही पावरोटी या चपाती क्यों नहीं बना सकतीं? यह तो आपको कर सकना चाहिए।

आपके दूसरे प्रश्नका उत्तर यह है कि लोगोंसे परिचय प्राप्त करने अथवा उनसे सम्बन्ध-विच्छेद करने के लिए आपको अपनी ओरसे कोई विशेष प्रयत्न नहीं करना चाहिए। जो-कुछ स्वयमेव आपके सामने आता चले उसे स्वीकार करें और

१. एस० सत्यमूर्तिकी पुत्री

२. एफ० मेरी बार लिखती हैं: "कमलाने मईमें पत्र लिखा था कि उसे चर्मरोग हो गया है और गांधीजीसे सलाह माँगी थी कि अनेक मित्रोंने उसके लिए पूर्णतः अपरिचित जिन लोगोंके पते दिये हैं उनसे जाकर वह मिले या न मिले। ऐसी एक मुलाकातके बाद उसे ऐसी मुलाकातोंकी उपयोगिता पर सन्देह हो गया था। गांधीजीने अपने एक सेक्रेटरी द्वारा यह उत्तर भेजा था।" देखिए "पत्र : मार्गरेट जोन्सको", पृ० २९ भी।

लोगोंको कुछ भी शिक्षा देनेका मौका ढूंढ़ने या उसकी प्रतीक्षा करनेकी आवश्यकता नहीं है। आपका जीवन ही आपका सन्देश होना चाहिए। . . .[1]

[अंग्रेजीसे]
बापू — कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९२

१४४. पत्र : मार्गरेट जोन्सको

३१ मई, १९४१

प्रिय कमला,

तुम फिसल गईं, यह शरारतका काम किया। आशा है, तुम शीघ्र ही ठीक हो जाओगी। राजकुमारी बम्बईमें है। वह तुमसे मिलने जा पाती तो अच्छा होता।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]
बापू — कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९३

१४५. पत्र : चन्देलको

३१ मई, १९४१

भाई चन्देल,

कमलाको चोट लगनेकी खबर[2] देकर तुमने ठीक किया। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि तुम्हारे काममें प्रगति हो रही है। . . .[3]

[अंग्रेजीसे]
बापू — कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९३

१. साधन-सूत्रमें इसके बादका अंश छूटा हुआ है।
२. देखिए पिछला शीर्षक भी।
३. साधन-सूत्रमें आगेका अंश छूटा हुआ है।

१४६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
३१ मई, १९४१

भाई वल्लभभाई,

मणिबहन कल आई। वह दुबली तो खूब हो गई है। तिसपर भी मैं तो उसे तुरन्त वापस भेज देता,[1] परन्तु मैं मानता हूँ कि अहमदाबादमें वह बहुत काम कर सकेगी। इसलिए मैंने उसे वहाँ जाने को कहा है। दो-तीन दिन बम्बईमें रह लेगी।

मणि कहती है कि महिला-वार्डमें पाखानोंकी स्थिति असह्य है। तुम्हें उस बारेमें वहाँ लड़ना चाहिए। इसमें मुझे खर्चकी बात कम और लापरवाही अथवा आलस ही ज्यादा दिखाई देता है। मुझे लगता है कि तुम विवेकपूर्वक बीचमें पड़कर सुधार करा सकोगे। मणि कहती है कि हंसाबहनने[2] जो लिखा है वह अपर्याप्त है।

दंगोंसे तुम्हें जरा भी चिन्ता नहीं होनी चाहिए। जो होना है सो होगा। मैं तो मानता हूँ कि गृह-युद्ध ही शुरू हो गया है। देखना है कि वह हम सबको कहाँ तक ले जाता है। इसमें किसीका कोई वश नहीं चलनेवाला है। मैं तो बिलकुल निश्चिन्त बैठा हूँ। मैं अपनी शक्तिके अनुसार लोगोंका मार्गदर्शन कर रहा हूँ। जरूरत हुई तो मैं अहमदाबाद या बम्बई या अन्यत्र भी जाऊँगा।

विजय तो अन्ततः सत्य और अहिंसाकी ही होगी। सत्य और अहिंसा हममें है या नहीं, इसका पता चल जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २४८

१४७. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

३१ मई, १९४१

भाई घनश्यामदास,

तुमारा पत्र और साथका मैं पढ़ गया हूं। ऐसी बातोंका हम खयाल तक न करें। मैं तो उस पर कुछ भी नहिं करना चाहता हूं। हां, अंतमें तो भगवान होने देगा वही होगा। तो हम चिन्ता क्यों करें? जो सावधानी रखनी चाहिये, रखें; डर छोड़ें। मुझे गुरखा इ० रखने से संतोष नहिं होता है। उनको रखे लेकिन सब

१. अभिप्राय जेल भेजने से है।
२. हंसा मेहता

डर छोड़ें और हिंसासे या अहिंसासे रक्षा करना सीखें। परवश रहकर हम मर जायेंगे। लोग डरपोक हैं। इसलिये ऐसी बातोंसे डर जाते है और डरानेवाले तो जगतमें पड़े हि हैं। इस मौके पर तुमको मेरी यह सलाह है कि हर प्रकारका डर छोड़ें और दूसरोंको डर छोड़ने का कहा जाय। ऐसे हुल्लड़ चलते हि रहेंगे और बढ़ेंगे। हां मिट सकते हैं अगर हिन्दु सच्ची तरह बहादुर बनें। ऐसी बहादुरी एक दो दिनमें नहीं आ सकती है। ऐसी आपत्तिको समजकर उसका सामना कर सकें तो हम सुरक्षित बन सकते हैं। हमारे लोग नीति भी छोड़ते है वह मुझे चुभता है। कमजोर नीति कैसे रखें।

महादेव दिल्ली पहोंचेगा।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०४३) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

१४८. पत्र: अब्राहमको

सेवाग्राम, वर्धा
[मई/जून, १९४१][1]

प्रिय डॉ० अब्राहम,

इसके साथ आपके पत्रके सम्बन्धमें प्राप्त रिपोर्टकी नकल भेज रहा हूँ। यदि तथ्योंके बारेमें मतभेद है, तो यह खेदकी बात होगी। सम्भव है कि दंगेका कारण धार्मिक होने के बजाय आर्थिक ही हो। लेकिन आप अपनी सुविचारित राय मुझे भेजें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें इस पत्रको १९४१ के पत्रोंके साथ रखा गया है। मार्च और अप्रैलमें ढाका, अहमदाबाद और बम्बईमें दंगे शुरू हो गये थे। पत्रके पाठसे मालूम होता है कि यह मई या जूनमें लिखा गया होगा।

१४९. पत्र : डी० के० गोसावीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१ जून, १९४१

प्रिय गोसावी,

हमारी बातचीत[1] प्रकाशनार्थ नहीं थी। उसमें से कुछ तो प्रकाशित हो चुका है। ऐसा नहीं होना चाहिए था। मैं मराठी अच्छी तरहसे नहीं समझता। लेकिन जहाँतक मुझे तुम्हारी टिप्पणियाँ समझमें आई हैं, उनमें मेरे उत्तरोंको सही ढंगसे प्रस्तुत किया गया है। तथापि बेहतर यही होगा कि मैं बातचीतका पूरा विवरण इस रूपमें रखूँ कि वह प्रकाशनके लिए ठीक रहे।

यदि समाजवादी मित्रों तथा अन्य लोगोंको मेरे द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धों पर आपत्ति है तो वे निःसन्देह स्वतन्त्र रूपसे कार्रवाई कर सकते हैं। ऐसा वे कांग्रेससे त्यागपत्र देकर कर सकते हैं। कांग्रेसमें रहते हुए यदि वे स्वतन्त्र रूपसे कोई कार्रवाई करते हैं तो यह विद्रोह होगा। लेकिन यदि अपने विद्रोहमें वे कांग्रेसियोंके अधिकांशको अपने साथ ले लेते हैं तो उनका विद्रोह न्यायोचित ठहरेगा। इस तरह तुम देखोगे कि मेरे निर्देश एक भी व्यक्तिकी स्वतन्त्रतामें किसी भी प्रकार बाधक नहीं हैं।

दो शब्द तुम्हारे बारेमें। तुम्हारी स्थिति क्या है? मुझे लगता है कि मैंने जो प्रतिबन्ध सुझाये हैं वे स्वयं तुम्हें भी पसन्द नहीं हैं। यदि ऐसा है तो तुम महाराष्ट्रमें सफल नहीं होगे। तुम संघर्षको यन्त्रवत् जारी नहीं रख सकोगे। तुम्हें पूर्ण आस्था और उस आस्थासे उत्पन्न दृढ़ताके साथ कार्यक्रमपर अमल करना होगा।

यदि मैंने तुम्हें गलत समझा है, तो तुम्हारे बारेमें मैंने जो-कुछ लिखा है उसे न लिखा हुआ ही समझना।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

[पुनश्च :]

यदि तुम मुझसे फिर मिलकर बातचीत करना जरूरी समझो तो तुम आ सकते हो।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२३२) से

१. देखिए पृ० ६८-७१।

१५०. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

१ जून, १९४१

चि० मुन्नालाल,

मुझसे बात करनी हो, तो कल कर सकोगे। आज मैंने मौन धारण किया है। फिर भी बिना बोले बता सकता हूँ। धनुष तकली बाँसकी बनाओ, और मैं छातेकी तीली मँगवाता हूँ, उससे तकुआ बनाओ। यह काम तुमसे जितना करते बने, उतना करो। काम सरल है, इससे शिक्षण भी मिलेगा। परीक्षाकी बात तो इस समय भूल ही गये लगते हो। दोनों साथ ही देनी हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९९) से। सी० डब्ल्यू० ७१४० से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१५१. पत्र : नटवरलाल वेपारीको

सेवाग्राम, वर्धा
१ जून, १९४१

भाई वेपारी,

'हरिजन' के हिसाबके निरीक्षणका काम कबतक पूरा होने की सम्भावना है? अगर तुम्हारा स्वास्थ्य साथ दे, तो मेरी इच्छा है कि यह काम झटपट कर डालो।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

२ जून, १९४१

यह पत्र कल लिखा गया था, डाक निकल जाने के बाद। तुम्हारा पत्र आज मिला। मेरी इच्छा तो है कि अगर तुम मुझे पुस्तकोंका हिसाब लिख भेजो, तो बाकीका काम मैं कर लूं, क्योंकि आखिर हिसाबकी जाँच तो मुझे करनी ही पड़ेगी।

बापू

नटवरलाल जे० वेपारी
३६१, हॉर्नबी रोड
बम्बई–१

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०११९) से

१५२. पत्र : मार्गरेट जोन्सको

सेवाग्राम, वर्धा
२ जून, १९४१

प्रिय कमला,

तुम्हारी दुर्घटनाकी खबर सुनकर मैंने तुम्हें अस्पतालके पते पर पत्र[1] लिखा था, लेकिन देखता हूँ कि तुम अपनी पुरानी जगह पर ही हो। हाँ, जब तुम आना चाहो तब आ सकती हो और यहाँ जबतक रुक सको तबतक रुक सकती हो। जितनी मददकी जरूरत होगी वह सब तुम्हें मिलेगी।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]
बापू—कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पॉण्डेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९४

१५३. पत्र : महेन्द्रप्रसादको

२ जून, १९४१

भाईश्री महेन्द्रप्रसाद,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं आशा करता हूँ कि ४ तारीख निर्विघ्न बीत जायेगी। तुम्हारा और तुम जैसोंका धर्म स्पष्ट है। तुम्हें तो अपनी जानको जोखिममें डाल कर भी दोनों पक्षोंको शान्त रहने के लिए समझाना चाहिए। ऐसा करते-करते हम सही स्थितिपर पहुँच जायेंगे। इतना निश्चित है कि किसीको भी कायर नहीं बनना है।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च :

मुझे पूरी जानकारी देते रहना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१)से

१. देखिए पृ० १०८।

१५४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

३ जून, १९४१

चि० कृ० चं०,

आज कल तो कुएका पानी करीब २ स्वच्छ ही रहता है तो कोई हरज नहीं है। जब बारीश शुरू होगा तब देखना होगा।

जानकी बहिनके फलका तो जितना हिसाब आसानीसे रखा जा सकता है रखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९३)से

१५५. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

४ जून, १९४१

भाई घनश्यामदास,

मेरे मन पर उस पत्रका कोई असर नहिं पड़ा क्योंकि मुझको उसमें कोई नया अनुभव नहिं था। मैं उस बारेमें कुछ लिखता भी तो एक मौका और जूठ बनाने का मैं उनको देता और फायदा कुछ नहिं। सिद्धांत तो है हि कि अपना कर्तव्यको छोड़कर हम और झनझटमें न पड़ें। लेकिन मेर अनिच्छाके साथ सिद्धातका कोई संबंध नहिं था।

कलकत्तेमें कुछ भयभीतता नहिं है सुनकर मुझे आनन्द होता है। यह अभयके पीछे अगर प्रतिकार करने में मर्यादा है तो बहूत संतोषजनक बात है। हुल्लड़ादि तो शायद बढ़ेंगे। दोनोंमें एक भी मर्यादाके बाहर न जाय तो अच्छा होगा। अन्यथा देशका कल्याण नहिं हो सकता है। आजसे हवा बदली है। ठंडा वायु शरु हुआ है।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०४४)से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१५६. पत्र : फरीद अन्सारीको

सेवाग्राम, वर्धा, सी० पी०
४ जून, १९४१

प्रिय फरीद,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमपर जो दुःख आ पड़ा है वह तो हम सबका है। तथापि मुझे उम्मीद है कि तुम्हारी माँ बीमारीसे छुटकारा पा गई होंगी। बेशक, कोई भी पुत्र अपनी बीमार माँसे अलग नहीं रहना चाहेगा।[1]

तथ्य तो यह है कि वे[2] बहुतोंके एक निस्वार्थ मित्र और मार्गदर्शक थे। ऐसी थी उनकी नेकदिली। भगवान करे कि उनकी रूह हमें बल प्रदान करे और ऐसा आचरण करने की सामर्थ्य दे जो उनके योग्य हो।

तुम व्यर्थ ही मुझसे सान्त्वना और शक्ति चाहते हो। मुझमें उनकी जैसी महान् चिकित्सा-योग्यता नहीं है और वे तुम लोगोंको जितनी अच्छी तरह जानते थे उतनी अच्छी तरह मैं नहीं जानता। लेकिन मैं जानता हूँ कि ईश्वरने तुम्हें वियोग सह सकने लायक शक्ति और साहस दिया है।

यहाँ भी बहुत ज्यादा गर्मी रही है। रात-दिन लू चलती रहती थी। आज हवामें थोड़ी ठंडक आ गई लगती है।

तुम्हें मालूम होगा कि स्वास्थ्य खराब होनेके कारण जमनालालजी रिहा कर दिये गये हैं। उनका वजन काफी घट गया है, लेकिन उन्होंने जान-बूझकर वजन घटाया है। सवाल यह है कि वे गठियेसे छुटकारा पा सकेंगे या नहीं। वे सेवाग्राममें रहकर वही पथ्य ले रहे हैं जो उन्हें जेलमें दिया जा रहा था। बेशक, चिन्ता करने का कोई कारण नहीं है।

अभी भी शौकत[3] क्या उसी जगह पर है? अगली बार जब मुझे पत्र लिखो तो उनका पता लिख भेजना। वह और जोहरा दोनों बहुत नटखट हो गये हैं। वे मुझे कभी भी पत्र नहीं लिखते। आशा है शौकतका काम ठीक चल रहा होगा।

डॉ० गोपीचन्दके[4] यहाँ जल्दी ही आने की सम्भावना है।

१. स्पष्ट ही यहाँ कुछ शब्द या वाक्य छूट गये हैं।

२. डॉ० मु० अ० अन्सारी

३. शौकत अन्सारी, जोहराके पति

४. गोपीचन्द भार्गव, पंजाबके एक प्रमुख कांग्रेसी नेता जो देश-विभाजनके बाद पंजाबके मुख्य-मन्त्री (१९४७-५१) भी रहे हैं।

ब्रजकृष्णकी चन्द सतरें पढ़कर खुशी हुई। उसे कब्जसे छुटकारा पाना चाहिए। मुझे सत्यवतीका पत्र पहले कभी मिला था, लेकिन काफी दिनोंसे उसने चुप्पी साध रखी है।

तुम सबको प्यार।

बापू
(मो० क० गांधी)

[पुनश्चः]

५ जून, १९४१

यह पत्र कल रात लिखा गया था और ब्रजकृष्णका दुःखद सन्देश आज सबेरे मिला। मैंने तुम्हें एक तार[1] भेजा है। उम्मीद है कि वह मिल गया होगा। जीवनकी गति ऐसी ही है। मृत्युके बिना जीवन सम्भव नहीं है। हमें उस दैवी नियमके आगे सिर झुकाना ही है जो किसीको भी नहीं छोड़ता। ईश्वर तुम्हें पूर्ण शान्ति और बल दे।[2]

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०३७३) से

१५७. पत्र : शुएब कुरैशीको

सेवाग्राम, वर्धा
५ जून, १९४१

प्रिय शुएब,

मैं मानता हूँ कि दंगोंके सम्बन्धमें दिये गये मेरे वक्तव्य[3] तुमने देखे होंगे। मुसलमान पत्र-लेखकोंने उनकी बड़ी कड़ी आलोचना की है। मैं अपने वक्तव्योंपर तुम्हारी प्रतिक्रिया जानना चाहूँगा। यदि तुमने उन्हें नहीं पढ़ा है तो मैं उनकी कतरनें लेकर तुम्हें भेज दूँगा। मैंने यह जो कहा कि ढाका और अहमदाबादमें दंगोंकी शुरुआत मुस्लिम गुण्डोंने की, उसपर विशेष रूपसे रोष प्रकट किया गया है। मैं जानना चाहूँगा कि उसके बारेमें तुम क्या कहते हो। सबसे ज्यादा कष्ट तो मुझे छुरेबाजी और ऐसी अन्य अशोभनीय घटनाओंसे होता है। विभिन्न दलों और जातियोंमें चाहे कैसे भी

१. तार उपलब्ध नहीं है।

२. पत्रमें बादमें जोड़ा गया अंश ब्रजकृष्ण चाँदीवाला पेपर्समें उपलब्ध मूलकी फोटो-नकलसे लिया गया है।

३. देखिए पृ० ३०-३३ और ४०-४२।

राजनीतिक मतभेद क्यों न हों, लेकिन हमें इस बातकी जमकर कोशिश करनी चाहिए कि लोग जंगलियों की तरह व्यवहार न करें।

पहले तो मैंने जाकिर[1] और ख्वाजा, दोनोंको एक साथ लिखने की बात सोची थी। लेकिन जब मैंने लिखना शुरू किया तो मुझे लगा कि पहले मैं केवल तुम्हींको पत्र लिखूंगा।

मैं जानता हूँ कि तुम अपने दिलकी सारी बात मुझे खोलकर लिखोगे।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

मध्यप्रदेश और गांधीजी, पृ० १२८ और १२९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१५८. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

सेवाग्राम, वर्धा
५ जून, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारी चिट्ठीका जवाब देना रोज रह जाता था। वैसे कुछ खास कहने को नहीं था। यदि इस समय तुम धनुष-तकलीकी आराधना करो और उसे बनाना भी सीख लो, तो बहुत अच्छा हो। उससे शान्तिके साथ-साथ ज्ञान प्राप्त होगा और दरिद्रनारायणकी सेवा तो होगी ही। बादमें दोनों परीक्षाएँ तो एकसाथ देनी ही है। सुशीला बहनके आने के बाद कंचनको वालोड या बंगलौर भेज देंगे। वैसे उसकी इच्छा तो जबतक तुम पूर्ण सशक्त न हो जाओ, यहीं रहने की है। उसका मन जरा भी मत दुखाना। वह बच्ची है, तुम सयाने हो और तुमने संसार देखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९७) से। सी० डब्ल्यू० ७१४१ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. जाकिर हुसैन

१५९. उत्तर : 'हिन्दू' के संवाददाताको[1]

७ जून, १९४१

रवीन्द्रनाथ ठाकुरके उत्तर[2] के बाद क्या मुझे कुछ कहना चाहिए? कुछ नहीं कहना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ९-६-१९४१

१६०. पत्र : डी० के० गोसावीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
८ जून, १९४१

प्रिय गोसावी,

मुझे आपका बिलकुल साफ और खरा पत्र मिला। उसमें शक करने-जैसी कोई बात नहीं थी। लेकिन चूँकि आपने अपने पत्रमें अथवा हमारी आपसी बातचीतमें[3] अपनी स्थिति स्पष्ट नहीं की थी, इसलिए मुझे उसके बारेमें पता तो लगाना ही था। प्रोफेसर लिमये और अन्य लोगोंके साथ आपके होने की बात मुझे अच्छी तरह याद है। आपने मुझे जो आश्वासन दिया है उसपर मुझे विश्वास है और जिन मित्रोंका आपने जिक्र किया है उनसे उसकी पुष्टि कराने की मुझे कोई आवश्यकता नही है।

१. भारतीय मित्रोंके नाम अपने एक खुले पत्रमें ब्रिटेनकी एक संसद-सदस्या, कुमारी एलिनर रैथबोन ने कहा था कि हमारे अधिकांश ब्रिटिश मित्र इस प्रश्नपर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं कि वर्तमान भारतीय गतिरोधके लिए ब्रिटिश सरकार कहाँतक जिम्मेदार है और इसे दूर करने के लिए वे क्या कर सकते हैं। उनके इस रवैयेसे चूँकि असहयोगी भारतीयोंके इस भ्रममें पड़ जाने का खतरा है कि प्रगतिशील विचार के सभी अंग्रेज उन्हींकी तरह सारा दोष ब्रिटिश सत्ताधारियों को ही देते हैं, अतः उन्होंने इसके विपरीत रास्ता अपनाया है और उनकी दृष्टिमें जो बातें असहयोगियोंके विरुद्ध जाती हैं उन्हें प्रस्तुत करके वह तस्वीरका दूसरा पहलू उजागर करने की कोशिश कर रही हैं। हिन्दू के संवाददाता ने गांधीजी से पूछा था कि क्या वे कु० रैथबोन के पत्रपर कुछ कहना चाहेंगे।

२. दिनांक ४ जून, १९४१ का; देखिए परिशिष्ट ३।

३. १५ मईको; देखिए पृ० ६८-७१।

मैं प्रश्नों और उत्तरोंमें संशोधन करके लौटा रहा हूँ। आप चाहें तो उन्हें प्रकाशित कर सकते हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२३३) से

१६१. पत्र : कँवरलाल शर्माको

सेवाग्राम
८ जून, १९४१

प्रिय कँवरलाल,

यदि आप चाहें तो लड़ सकते हैं, लेकिन मेरी सलाह है कि न लड़ें।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम
९ जून, १९४१

एक मुस्लिम परिवारकी, जिसमें तीन सालकी एक बच्ची भी शामिल थी, अकारण ही नृशंस हत्या किये जाने के सरकारी विवरणको मैंने शर्म और दुःखके साथ एक बार नहीं, बार-बार पढ़ा है। हालाँकि बिहारमें साम्प्रदायिक शान्ति बनाये रखने की दिशामें राजेन्द्रबाबू शानदार काम कर रहे हैं, फिर भी ऐसे नृशंस अपराधके बारेमें मैं अपनी राय व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता। अपराधियोंने, वे जो भी हों, अपने इस कार्यसे न तो अपना, न अपने धर्मका — यदि उनका कोई धर्म है तो — और न अपने देशका ही कोई हित किया है। मैं जो बात कह रहा हूँ उसका अहिंसा-सम्बन्धी मेरे विचारोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है। मेरा कहना है कि किसी भी आधारपर, यहाँतक कि हिंसाके आधारपर भी, ऐसी हत्याओंको उचित नहीं ठहराया जा सकता। यदि

१. कँवरलाल शर्माको सत्याग्रह करने के कारण डेढ़ वर्षकी कैदकी सजा हुई थी। उन्होंने भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत अपनी वकालतका लाइसेंस रद्द हो जाने के मामलेमें गांधीजी से उनकी राय माँगी थी।

ऐसी हत्याएँ व्यापक पैमाने पर होने लगेंगी तो हमारा यह सुन्दर देश वर्बर बन जायेगा और देशके लिए स्वाधीनता प्राप्त कर सकना असम्भव हो जायेगा। कोई भी सरकार ऐसे अपराधोंसे निपट नहीं सकती। सरकार तो केवल घटना हो जाने के बाद ही अपराधियोंको सजा दे सकती है और वह भी तब जब उनका पता चले। अपराधियोंका पता चल जाने पर उनको मिलनेवाला दण्ड भी सम्भवतः उतना ही विवेकशून्य और वर्बर होगा जितना कि उनका अपराध था। इसलिए मैं पूरे जोरके साथ अपराधियोंको यह सलाह दूंगा कि वे बिना किसी शर्तके अधिकारियोंके सामने आत्म-समर्पण कर दें और अधिकारी जो दण्ड देना चाहें उसे भोगें। पश्चात्तापके उनके इस कार्यसे, भले ही यह देरसे ही किया गया कार्य हो, उन्होंने जो गम्भीर अपराध किया है उसका कुछ हदतक प्रतिकार हो जायेगा। उन्होंने अपने इस अपराधके द्वारा अपने धर्मके और अपने देशके मुँहपर जो कालिख लगाई है वह कुछ हदतक धुल जायेगी। यदि वे अपना अपराध साफ और खुले दिलसे स्वीकार कर लेते हैं तो यह लोगोंके सामने एक अच्छा उदाहरण होगा और हो सकता है कि आगे ऐसी वर्बरतापूर्ण घटनाएँ फिर न हों।

अंग्रेजीकी नकलसे: अ० भा० कां० कमेटी फाइल, १९४१। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१६३. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

९ जून, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे भेजे कागजात चन्द्रशंकरको भेज रहा हूँ और लिख रहा हूँ कि अपना उत्तर तुरन्त भेजे।

मैं देखता हूँ, चन्द्रशंकरको तुम्हारी निष्पक्षतामें विश्वास नहीं रहा। वह महादेवको और कभी-कभी मुझे भी शिकायतके पत्र लिखता रहता है। लेकिन वे पत्र तुम्हें भेजकर तुम्हारा वक्त खराब करने की मैंने जरूरत नहीं समझी। मैंने उसे लिख दिया है कि अन्तिम निर्णय तो मुझे ही करना पड़ेगा और तुम्हारी रिपोर्टमें तो केवल आँकड़े ही रहेंगे।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०१२०) से

१६४. पत्र: डॉ० युद्धवीर सिंहको[1]

९ जून, १९४१

भाई युद्धवीर,

तुम्हारा खत मिला। मैं तो विद्यार्थियोंका झगडा तटस्थतासे और दु:खके साथ देख रहा हूं। इसलिये न मैं संदेशा भेज सकता हूं न किसी नेताको। और इसीमें विद्यार्थी वर्गका भला है। आप लोगोंको आपसमें ही झगडा तय करना है। किस तरहसे हो सकता है वह तो मैंने सत्याग्रहका निरुपण करके बता दिया है। दुर्बलतासे कुछ न किया जाय, वैरभावसे कभी नहीं, सत्ता पाने के लिये भी नहीं। सक्रिय राजकारणसे अलग रहें। ऐसी बातें याद रख कर थोडे विद्यार्थी भी काम करें तो अंतमें दूसरे उनके साथ होंगे।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१६५. पुर्जा: कृष्णचन्द्रको

९ जून, १९४१

खानेमें मेरे नहिं आने से सबको दु:ख हुआ होगा। सचमुच दु:खका कारण हि नहिं। मेरी मूर्खता या अज्ञानके कारण थोडासा मरडा[2] हो गया है। थोडासा बुखार है। सुशीलाबहनकी मनाई न रहती तो मैं आरामसे खानाघरमें आ सकता था। परंतु मैं तो दाक्तरोंकी बातका यथा संभव पालन करनेवाला हूं। कोई चिंता न करें।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९४)से

१. दिल्लीके एक कांग्रेसी कार्यकर्त्ता, जो कुछ समयतक दिल्ली राज्यके स्वास्थ्य-मन्त्री भी रहे।
२. पेटमें मरोड़

१६६. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

१० जून, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र ध्यानपूर्वक पढ़ गया। कंचनके साथ रहा ही नहीं जा सकता, ऐसा निश्चय न करो तो काफी होगा। सुशीला छुट्टी दे दे, तो वह वालोड चली जाये। पीहरमें रहने का मन होना स्वाभाविक है। अब इसकी खास जरूरत नहीं है कि वह तुम्हारे साथ रहे। तुम यहाँ रहो और जो करते बने सो करो। तुम्हें अपने विचारों को परिपक्व बनाना चाहिए और शान्ति बनाये रखनी चाहिए। संयमका पालन करके शरीरको मजबूत बना लेना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९६)से। सी० डब्ल्यू० ७१४२ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१६७. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

सेवाग्राम, वर्धा
१२ जून, १९४१

प्रिय अमला,

तुम्हारा पत्र मिला। महादेव अहमदाबादमें है। वह बीमार नहीं था। दुर्गा बीमार है और भाटिया अस्पताल में है। मुझे खुशी है कि सतीके रूपमें तुम्हें नई सहेली मिलनेवाली है। कॉलेजके बारेमें मैं यह क्या सुन रहा हूँ? उस बारेमें तुम मुझे विस्तारसे लिखना।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजीसे : स्पीगल पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१६८. पत्र : वालचन्द हीराचन्दको

१३ जून, १९४१

भाई वालचन्द[1],

आपका पत्र मिला। राजेन्द्रवाबू वहाँ [विजगापट्टम][2] आ रहे हैं। अतः मेरे पत्रकी आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन चूँकि नरोत्तम सेठके[3] साथ मेरा पुराना सम्बन्ध रहा है, इसलिए आप मेरे आशीर्वादकी आशा रखते हैं, यह मैं समझता हूँ। आपका साहस सफल सिद्ध हो और सारे देशके लिए लाभप्रद हो।

आपका,
मो० क० गांधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२०) से

१६९. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

१४ जून, १९४१

चि० अम्बुजम,

तुम्हारा वर्णनात्मक पत्र मिला। तुम्हारे और तुम्हारी माताजीके दुःखको मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ।[4] क्या मुझे व्यक्तिगत रूपसे इस बातकी जानकारी नहीं है कि तुम्हारे पिताजी कितने सद्‌गृहस्थ थे? तुम सब लोगोंके प्रति उनका स्नेह अगाध था। देशके प्रति उनका प्रेम तो बादमें उत्पन्न हुआ, लेकिन अपने परिवारके प्रति उनके प्रेममें कोई कमी नहीं आई। क्या मुझे याद नहीं है कि वे किस तरह तुम्हारी ही खातिर वर्धा आये थे?[5] इससे मैंने यह भी देखा कि यद्यपि राजनीतिमें हमारा मतभेद था, किन्तु हमारे वैयक्तिक सम्बन्ध कभी नहीं टूटे।

तुम्हें तो अपनी माताजीके लिए शक्ति-स्तम्भ बनना चाहिए। उनसे कहना कि मैं तो उनसे रमाबाई रानडेके पदचिह्नों पर चलने की और जो सेवा बन सके, वह

१. सिन्धिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनीके बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्सके अध्यक्ष

२. राजेन्द्रबाबू २१ जून, १९४१ को सिन्धिया नेवीगेशन कम्पनीकी आधारशिला रखनेवाले थे। जहाज बनाने का यह पहला कारखाना था, जिसका स्वामित्व भारतीयों के हाथमें था।

३. नरोत्तम मोरारजी, शान्तिकुमार मोरारजीके पिता

४. अम्बुजम्मालके पिता एस० श्रीनिवास अय्यंगारका १९ मई, १९४१ को देहान्त हो गया था।

५. १९३४ में

बहादुरीके साथ करने की अपेक्षा रखता हूँ। उन्हें दुःखके आगे हार नहीं माननी चाहिए।

जब भी आ सको, अवश्य आओ।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

बिल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया : एस० श्रीनिवास अय्यंगार, पृ० ९५ और ९७ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१७०. पत्र : चिमनलाल वा० शाहको

सेवाग्राम
१४ जून, १९४१

भाई चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। कानूनन तुम अपना जो बचाव कर सको वह अवश्य करना।[1] झुकना नहीं। तुम पर यदि जुर्माना लगाया जाता है तो लगने देना। जेल हो तो जेल काटना। तुम्हारे बाद यदि कोई छापेखानेको चलानेवाला न हो तो छापाखाना भले ही बन्द हो जाये। अथवा यह प्रकाशन[2] केवल समाचारपत्रके रूपमें ही चलाया जाये। यदि यह भी सम्भव न हो, तो जो भी परिणाम हो, होने देना। मुझे तो इतना ही कहना है कि तुम दबकर कुछ न करना। लेकिन अभी चूँकि वहाँ मुन्शीजी हैं, इसलिए मुझसे पूछने की कोई जरूरत नहीं है। वे जैसा कहें वैसा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. चिमनलाल वा० शाहको ६ महीनेकी कैद अथवा २,००० रुपये जुर्मानेकी सजा दी गई थी।

२. *भारत समाचार*, जिसके प्रकाशनपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था

१७१. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम

१५ जून, १९४१

इसके साथका पत्र[1] श्री क० मा० मुन्शीने मुझे नैनीतालसे लिखा था। इसका उत्तर[2] मैंने गुजरातीमें दिया था; मूल पत्र और उसका अनुवाद संलग्न है। हमारे बीच हुए पत्र-व्यवहारके फलस्वरूप श्री क० मा० मुन्शी बम्बई लौटने के यथासम्भव तुरन्त बाद मुझसे मिलने आये।[3] बातचीतके दौरान मैंने पाया कि यद्यपि वे अहिंसाको सिद्धान्त-रूपमें उसके सभी फलितार्थों-सहित स्वीकार करते हैं, पर उसपर अमल करना उन्हें बहुत कठिन मालूम होता है। यह कठिनाई और भी ज्यादा इसलिए महसूस होती है, कि बम्बईकी अपनी अन्तरंग जानकारी के आधारपर उनका यह विश्वास है कि मुसलमानोंकी क्या बात, हिन्दुओं को भी वे अपने विचारोंसे सहमत नहीं कर सकते। वे जानते हैं कि जो असंख्य हिन्दू उनके प्रभावमें हैं वे उनसे मार्गदर्शनकी अपेक्षा रखेंगे और उनसे सलाह मांगेंगे। श्री मुन्शीको इन हिन्दुओंको इस बातका यकीन दिलाने का कोई रास्ता नजर नहीं आता कि वे अहिंसा द्वारा अपनी रक्षा कर सकते हैं। इन दंगोंमें, जो एक छोटा-मोटा गृह-युद्ध ही प्रतीत होता है, वे अहिंसाका तत्काल काममें लाये जा सकनेवाले एक राजनीतिक शस्त्रके रूपमें कोई कारगर उपयोग नहीं कर सकते। उनके सामने सवाल कांग्रेसके प्रस्तावोंकी व्याख्याका नहीं, बल्कि यह है कि अपने प्रति और देशके प्रति सच्चे किस प्रकार रहें। इसलिए, अ० भा० कां० कमेटीके उस प्रस्तावको[4] देखते हुए जिसमें वर्धा वक्तव्यका स्पष्टीकरण किया गया है, मैंने उन्हें सलाह दी कि उनके लिए सम्मानजनक और बहादुरीका रास्ता यही है कि वे कांग्रेससे त्यागपत्र दे दें, ताकि वे कांग्रेसकी अहिंसा-नीतिके प्रतिबन्धोंसे मुक्त होकर स्वतन्त्र रूपसे कार्य कर सकें। प्रस्ताव निम्नलिखित हैं :

> कांग्रेस कार्य-समितिने २१ जून, १९४० को वर्धासे जो वक्तव्य जारी किया था उसपर अ० भा० कां० कमेटीने अच्छी तरह विचार किया है और वह उसकी पुष्टि करती है। जैसा कि वक्तव्यमें बताया गया है, अ० भा० कां० कमेटीकी यह राय है कि यद्यपि कांग्रेसको स्वाधीनताकी अपनी लड़ाईमें

१. देखिए परिशिष्ट २।

२. देखिए पृ० १०२।

३. १२ जून, १९४१ को; देखिए परिशिष्ट ४।

४. यह प्रस्ताव २८ जुलाई, १९४० को पूनामें पारित हुआ था।

अहिंसाके सिद्धान्तका दृढ़तासे पालन करते रहना चाहिए, तथापि वह वर्त्तमान परिस्थितियोंमें यह घोषणा नहीं कर सकती कि इस सिद्धान्तको स्वाधीन भारतकी राष्ट्रीय सुरक्षाके मामलेमें भी लागू किया जाना चाहिए। अ० भा० कां० कमेटी इस बातकी अभिपुष्टि करना चाहती है कि कांग्रेस संगठनका संचालन आगे भी अहिंसाके सिद्धान्तपर ही किया जाना चाहिए और सभी कांग्रेसी स्वयंसेवक अपने कर्तव्य-पालनमें अहिंसापूर्ण आचरणके लिए वचनबद्ध हैं तथा कांग्रेसी स्वयंसेवकोंकी कोई भी संस्था अहिंसाके सिद्धान्तके अलावा और किसी आधारपर न तो संगठित की जा सकती है और न कायम रखी जा सकती है। आत्मरक्षाके उद्देश्यसे बनी किसी भी अन्य स्वयंसेवक संस्थाको भी जिसके साथ कांग्रेसके लोग सम्बद्ध हों उसी प्रकार अहिंसाका पालन करना होगा।

मैंने उन्हें बताया कि हर कांग्रेसीके जीवनमें एक ऐसा अवसर भी आता है जब उसे लगता है कि उसका कांग्रेसी होना उसके लिए एक बोझ बन गया है; ऐसा तब होता है जब उसके विचार और कार्यमें विरोध होता है। अहिंसात्मक कार्यका स्रोत अहिंसात्मक विचार होता है। यदि व्यक्तिमें अहिंसात्मक विचारका अभाव है तो अहिंसात्मक कार्यका अपने-आपमें कोई महत्त्व नहीं रह जाता। इसलिए स्वयं उनके लिए, कांग्रेसके लिए और देशके लिए यही बेहतर है कि वे कांग्रेससे त्यागपत्र दे दें और समय-समयपर जैसा कुछ उन्हें ठीक लगे, उसके अनुसार कार्य करें। अपने इस कार्यसे वे उन अन्य कांग्रेसियोंके लिए भी कांग्रेससे त्यागपत्र देनेका मार्ग खोल देंगे जिनके कार्य और विचार परस्पर मेल नहीं खाते। कांग्रेसकी कल्पना एक अहिंसक और सत्यनिष्ठ संस्थाके रूपमें की गई थी और जो लोग पूरी ईमानदारीके साथ इन दो शर्तोंपर अमल नहीं कर सकते उनके लिए कांग्रेसमें कोई जगह नहीं होनी चाहिए। भले ही यह आश्चर्यजनक लगे, लेकिन अहिंसाका पालन तो सत्यके पालनसे भी कठिन दिखाई देता है। कारण, असत्यके परिणाम हिंसाके परिणामोंसे अधिक सूक्ष्म हैं और दिखाई नहीं देते।

मेरी सलाह श्री मुन्शीको पसन्द आई और उन्होंने उसे स्वीकार करनेका निश्चय किया है।[1] जिस कांग्रेसकी उन्होंने इतने समयतक सेवा की है, उसके प्रति चूँकि वे द्रोह नहीं कर सकते, अतः वे उससे अलग हो जायेंगे। और उनके कांग्रेससे त्यागपत्र देनेका अर्थ यह नहीं है कि वे शान्त और सौम्य व्यक्तिसे एकाएक खूँखार व्यक्तिमें परिणत हो जायेंगे और उन लोगोंसे प्रतिशोध लेनेकी कसम खायेंगे जिन्हें वे अपना विरोधी समझते हैं, अथवा वे राष्ट्रीयता-विरोधी सम्प्रदायवादी बन जायेंगे। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि उनकी निगाहमें ऐसा हर गैर-हिन्दू, जिसका एकमात्र घर भारत है, उतना ही भारतीय है जितना कि भारतमें जन्मा और पला कोई भी हिन्दू। श्री मुन्शी जो कदम उठाने जा रहे हैं उसके लिए मैं

१. कन्हैयालाल मा० मुन्शीके वक्तव्यके लिए देखिए परिशिष्ट ५।

उन्हें बधाई देता हूँ और मुझे पूरी उम्मीद है कि कांग्रेससे त्यागपत्र देने के बाद वे अपने गुणोंका सदुपयोग कर सकेंगे और इस तरह बम्बईमें स्थायी शान्ति स्थापित करने में निश्चित योगदान दे सकेंगे।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २७-६-१९४१; पिल्ग्रिमेज टु फ्रीडम, पृ० ४१५-१६ भी

१७२. उत्तर : ब्रिटिश महिलाओंकी अपीलका[1]

सेवाग्राम
१५ जून, १९४१

प्रिय बहनो,

भारतकी महिलाओंके लिए आपने जो सन्देश भेजा है उसे हमने बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ा है। यह अपील हम व्यक्तिगत रूपसे और अखिल भारतीय महिला परिषद् को प्रतिनिधिकी हैसियतसे भी भेज रही हैं। जैसा कि आपको मालूम ही है, यह एक पन्द्रह वर्ष पुरानी संस्था है। हम इसकी चर्चा यह बताने के लिए कर रही हैं कि हम जो कहने जा रही हैं वह केवल हमारी अपनी गहरी निजी मान्यता नहीं है, बल्कि जहाँतक हम देख सकती हैं, भारतकी अधिकांश महिलाओं की भी मान्यता है।

कहने की जरूरत नहीं कि आपकी अपीलमें निहित निश्छलताकी हम कद्र करती हैं। लेकिन उसमें वास्तविकताओंके प्रति जो अज्ञान दिखाई देता है उसपर हमें आश्चर्य है। सच तो यह है कि इसके विपरीत आपके प्रधान मन्त्री[2] अपने वास्तविकता-बोधका कहीं ठीक परिचय देते हैं, भले वह कितना ही दुःखद क्यों न हो। ब्रिटेनके मनमें भारतका क्या दर्जा है, इसके बारेमें उनके मनमें कोई शंका नहीं है। वह एक पराधीन देश है, जिसका अंग्रेज मनमाने ढंगसे उपयोग कर सकते हैं और कर रहे हैं। वे जानते हैं कि ब्रिटेनको अपनी लड़ाई लड़ने के लिए जो-कुछ भी चाहिए उसमें उसे भारतके विचारवान पुत्रों और पुत्रियोंकी सहमति अथवा सहयोगकी जरूरत नहीं है। वे उन भारतीय सैनिकोंकी बहादुरीकी प्रशंसा करना नहीं भूलते जो भारतपर कब्जा जमाये रखनेवाली सेनाके अंग हैं। आपको मालूम होना चाहिए कि ये सैनिक भारतके राष्ट्रीय जीवन और क्रियाकलापसे सर्वथा अलग हैं। ये लोग किसी राष्ट्रवादी व्यक्तिसे बिना भारी दण्डका खतरा उठाये खुलकर नहीं मिल सकते और अगर आपके

1. इसका मसौदा गांधीजी ने तैयार किया था तथा इसपर अखिल भारतीय महिला परिषद्की ओर से सरोजिनी नायडू, रामेश्वरी नेहरू, विजयलक्ष्मी पण्डित, अमृतकौर, रानी लक्ष्मीबाई राजवाडे, अम्मू स्वामिनाथन और राधा सुब्बारायनने हस्ताक्षर किये थे। यह २१ जून, १९४१ को भेजा गया था।

2. विन्सटन चर्चिल

प्रधान मन्त्रीको पैसेकी जरूरत होती है तो कर लगाकर अथवा तथाकथित स्वैच्छिक चन्दे द्वारा पैसा जमा करने में इन्हें कोई कठिनाई नहीं होती। हम इस असहायावस्थाकी शिकायत तो नही कर सकतीं लेकिन हम तथ्योंकी ओरसे आँख भी नहीं मूंद सकतीं। ऐसी स्थितिमें जबरन वसूल की जानेवाली जिस सहायताका हमने जिक्र किया है, उसमें विदेशी दासताके जुएको उतार फेंकने के लिए अधीर भारत कैसे सहयोग दे सकता है?

सच तो यह है कि आपने स्थितिको बिलकुल गलत समझा है। राष्ट्रपति रूजवेल्टकी घोषणामें निहित असत्यको आपने जो उद्धृत किया है उसे देखकर आश्चर्य होता है। आपने उद्धृत किया है: "आज सारा संसार मानव दासता और मानव स्वतन्त्रताके बीच विभाजित है।"[1] सच तो यह है कि एशियाई जातियोंके लिए मानवी स्वतन्त्रता नामकी कोई चीज ही नहीं है — भारतके लिए तो निश्चय ही नहीं है, और न पुरुषार्थी आफ्रिकी लोगोंके लिए ही है। युद्धका परिणाम चाहे जो हो उससे उनकी अवस्थामें कोई सुधार नहीं होनेवाला है। उनकी अवस्था बदलेगी तो स्वयं उनके अपने प्रयत्नोंसे। वास्तविकताको जिस रूपमें हम देखते हैं वह इस प्रकार है। यह युद्ध ब्रिटिश साम्राज्य तथा नाजियों और फासिस्टोंके बीच विश्वपर अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए हो रहा है, और इस प्रभुत्वका मतलब तत्त्वतः गैर-यूरोपीय जातियोंका शोषण है।

हमें नाजीवाद या फासिज्मसे कोई प्रेम नहीं हो सकता। लेकिन हमसे ब्रिटिश साम्राज्यवादसे भी प्रेम करने की आशा नहीं की जानी चाहिए।

अब शायद आप समझ गई होंगी कि स्त्रियोंके रूपमें हम युद्ध-मात्रके विरुद्ध क्यों हैं। इस समय तो स्त्रियोंका कर्त्तव्य है कि आज हम जिस असत्य और हिंसासे घिरे हुए हैं उसके विरुद्ध हम सत्य और अहिंसाका पक्ष लेकर उठ खड़ी हों। हम ब्रिटिश स्त्रियोंके आत्मत्यागकी, जिसपर आपका गर्व करना सर्वथा उचित है, प्रशंसा करते हैं। यहाँ हम सोचते है कि यदि आप लोग अपने पुरुषोंको मानव-रक्तसे सने अपने हाथोंको धो डालने को कहती — जो आपके लिए ज्यादा बहादुरी और गौरवकी बात होती — तो कितना अच्छा होता। सम्भव है, आपको उसमें तत्काल सफलता नहीं मिलती। लेकिन आपने स्थायी शान्तिकी स्थापनाका मार्ग तो प्रशस्त कर दिया होता। आज जिस व्यापक पैमाने पर नर-संहार हो रहा है वह इतिहासमें अभूतपूर्व है, और इस संहार-लीलामें स्त्रियोंका पुरुषोंकी नकल करना हमारी समझमें बुद्धिमानी नहीं है।

अन्तमें हम एक असंगतिकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहती हैं। ब्रिटेनकी स्त्रियाँ गुलामोंके मालिकोंको अपने अन्यायका मार्जन करने और अपने प्रारम्भिक पापसे अपने-आपको मुक्त कर लेने और इस तरह अपनी स्थितिको नैतिक दृष्टिसे न्यायसंगत बनाने को कहने के बजाय भारतसे, जो स्वयं ही एक गुलाम राष्ट्र है, यह कह रही हैं कि वह अपने मालिकोंकी उनकी कठिनाईमें सहायता करे।

१. उद्धरण बॉम्बे क्रॉनिकल, २३-९-१९४१ से लिया गया है।

हमने तसवीरको जिस रूपमें पेश किया है वह शायद आपको बुरा लगे, लेकिन इसे ईमानदारीसे पेश किया गया है। आपकी ईमानदारीका जवाब हम उतनी ही ईमानदारीसे ही दे सकती थीं।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३६०)से

१७३. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१६ जून, १९४१

चि० कृ० चं०,

हरिजनोंके हाथमें रसोइघर रखने का तरीका यह है कि जो पुरुष या औरत स्थिर रूपसे काम करे उनको तैयार करके दूसरोंको हटा लेना। उनका मुखी तो प्रथम हमारेमें से हि किसीको रहना होगा। यही तरह सब प्रबंध होते है।

रसोडाके नियम तो है जो आज बनता है वही है। फरक सिर्फ फलके बारेमें हि है। जिनको देने का धर्म हो जाता है उनको दें, बाकीको जब मिले तब। आम तो थोड़े हि दिनोंकी बात रही। पपीता मिले तब देवे। सबको दे सकें तो अवश्य देवें।

किसीको रुचीके लिये तो कुछ देना हि नहीं है। बा इसमें अपवाद है। शकरी बहन अपने लिये कुछ बनाना चाहे, बना सकती है। औरोंके लिये अगर मैं खास कहुं तब हि अलग चीज बने। शास्त्रीजी का तो जानते हि हैं।

इसमें सब आ जाता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९५)से

१७४. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

सेवाग्राम, वर्धा
१६ जून, १९४१

प्रिय भगिनि,

तुमारा खत आज मिला। धोती मिल गई थी। मैंने दूसरे दिन हि ओढी और इस्तेमाल करुंगा। मैं समझता हूं उसमें कितना प्रेम भरा है।

अहिंसाका प्रचार केवल हमारे अमलसे हि होनेवाला है। 'हरिजन' इस वक्त तो नहिं निकल सकता है। उसे निकालना हि सत्यकी हानि होगी। लेकिन हम विश्वास रखें कि वाणी और लेखनीसे विचारका असर ज्यादा है। अगर मैं शुद्ध विचार करता हूंगा तो मेरा दृढ़ निश्चय है कि वह विचार अपना असर डाल हि रहे हैं। और उसका असर सर्वव्यापी हि होता है।

गढवालका किस्सा दुःखद है। मेरा अभिप्राय है कि तुम या बापाको वहां जाना हि चाहिये। हो सकता है तो दोनोंको जाना चाहिये। वहां जाने के बाद और समझोता करने के बाद उसके भंग होने पर कमसे कम एकका वहां शीघ्र पहूंच जाना अत्यावश्यक है। सेवाधर्म कठिन धर्म है।

मेरी बीमारीकी वात सुनकर चितामें नही पडी होगी। अब तो कुछ रहा हि नहिं है। जो हुआ सो मेरी मूर्खता या अज्ञानका फल था।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९७) से। सी० डब्ल्यू० ३०९४ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

१७५. पत्र : गणेशदत्त सिंहको

१६ जून, १९४१

भाई गणेशदत्त सिंहजी,

आपका पत्र पाकर बहूत आनंद हुआ। राजेन्द्रबाबू कहते हैं आप बहूत वृद्ध हो गये हैं तो भी प्रजाके कामोंमें काफी दिलचस्पी ले रहे हैं।

अगर सब सत्याग्रही छुट भी जांय तो मैं कोई विश्वास नहिं दिला सकता हूं कि किसीको दूबारा जइल नहिं भेजूंगा। राजेन्द्रबाबुसे मश्विरा कर रहा हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७३८) से

१७६. पत्र : विद्यावतीको

१६ जून, १९४१

चि० विद्या,

सचमुच तुमारे सरपे दुःखका पहाड़ आ पड़ा है। यही तुमारी परीक्षाका समय है। धीरजसे सहन करना है। दिल्लीमें क्षयका हुस्पताल है वह सिर्फ दिल्लीवालोंके लिये है। भरा हुआ रहता है। लेकिन भुआलीमें सबसे अच्छा है। वहां यू० पी० वालोंको प्रथम स्थान मिलता है, दूसरा धरमपूरमें है। चिंताकी कोई बात नहिं है। परहेजगार रहेगा तो राजेन्द्र अच्छा हो जायगा। टी० बी० का आरम्भकाल होगा तो असाध्य नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे: रानी विद्यावती पेपर्स। सौजन्य: राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय

१७७. पत्र : जीवकृष्ण शर्माको

१८ जून, १९४१

भाई जीवकृष्ण शर्मा,

खादी और ग्राम उद्योगकी वस्तुओंकी नुमाइश करना और उसमें जो लाभ होगा वह सब कमला नेहरू हुस्पतालमें[1] देने का तुमारा इरादा स्तुत्य है। मैं आशा करता हूं कि उसमें सफलता मिलेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८९)से

१. इलाहाबादमें

१७८. पत्र : एस० सत्यमूर्तिको

सेवाग्राम, वर्धा
१९ जून, १९४१

प्रिय सत्यमूर्ति,

बहुत लम्बी चुप्पीके बाद आपके हस्ताक्षर देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मुझे पूरी आशा है कि आपकी जो सेवा-शुश्रूषा की जा रही है उसके फलस्वरूप आप बिलकुल ठीक हो जायेंगे।

हालांकि पिछले युद्धके दौरान मैंने जो-कुछ किया और आज हम जो कर रहे हैं उनका आपसमें कोई सम्बन्ध नहीं है, फिर भी मैं इस बातसे पूर्णतया सहमत हूँ कि आज जो लोग अपनी सेवाएँ अर्पित कर रहे हैं, उन्हें किसी कांग्रेसी सरकार की ओरसे बदलेकी कार्रवाई किये जाने की कोई आशंका नहीं होनी चाहिए।[1]

कृपया लक्ष्मीसे कहिए कि मैं बिलकुल ठीक हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२०२) से

१७९. पत्र : एस० रंगनायकीको[2]

१९ जून, १९४१

प्रिय बहन,

अम्बुजमकी मार्फत आपका पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। उसने मेरे लिए उस पत्रका अनुवाद कर दिया। बेशक, मैं स्वयंको आपके परिवारका एक सदस्य मानता हूँ और उसके सुख-दु:खमें व्यक्तिगत दिलचस्पी लेता रहूँगा।

१. एस० सत्यमूर्तिने गांधीजी से अनुरोध किया था कि वे मानवीयताके आधारपर सेनामें डाक्टरोंकी भर्तीको प्रोत्साहित करें।

२. स्वर्गीय एस० श्रीनिवास अय्यंगारकी पत्नी

अम्बुजमने अपने कीमती जवाहरात मुझे दे दिये हैं, जिन्हें आपने दिवंगत देशभक्तकी[1] पुण्य स्मृतिमें दान करने की उसे अनुमति दी है। इससे प्राप्त होनेवाले धनको मैंने हरिजन छात्रवृत्तिकी स्थापनाके लिए अर्पित करने का निर्णय किया है।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

बिल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया : एस० श्रीनिवास अय्यंगार, पृ० ६७

१८०. पत्र : वल्लभराम वैद्यको

१९ जून, १९४१

भाई वल्लभराम,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम सचमुच ही तपश्चर्या कर रहे हो। तुम्हारी विजय हो। जब आने की इच्छा हो, आ जाना। मैं मजेमें हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री वल्लभराम वैद्य
शान्तिसदन
माउण्ट आबू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २९१४)से। सौजन्य : वल्लभराम वैद्य

१८१. तार : ओबेदुल्लाको

वर्धा
२१ जून, १९४१

ओबेदुल्ला[2]
कांग्रेस ऑफिस
त्रिची

वेंकटाचलमके[3] लिए छूट स्वीकृत।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : अ० भा० कां० कमेटी फाइल, १९४१। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. एस० श्रीनिवास अय्यंगार
२. तमिलनाडु प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष
३. जेलसे रिहा हुए एक सत्याग्रही, जो त्रिचिरापल्ली जिला बोर्डके अध्यक्षपदके चुनावमें खड़ा होना चाहते थे

१८२. वर्धाके जिलाधीशके नाम पत्रका मसौदा[1]

२१ जून, १९४१

प्रिय महोदय,

आपके १६ तारीखके पत्रके सम्बन्धमें मुझे यह कहना है कि मेरे पुत्र अब संयुक्त परिवारके सदस्य नहीं हैं। मेरे प्रत्येक पुत्रके पास आयके अपने साधन हैं। लेकिन चूंकि मेरे पुत्र रामकृष्णके[2] पैसे मेरे पास जमा हैं इसलिए मैं आपको उसपर किये गये जुर्माने की पूरी रकम अर्थात् ३०० रुपयेके नोट भेज रहा हूँ।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०६४) से

१८३. पुर्जा : जमनालाल बजाजको[3]

[२१ जून, १९४१][4]

इस रकमको भेजने से क्या रामकृष्णको रिहा नहीं कर दिया जायेगा?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०६४) से

१८४. पत्र : चिमनलाल वा० शाहको

२१ जून, १९४१

भाई चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे तो तुम्हारा लेख बिलकुल निर्दोष जान पड़ा है। तुम्हें समय-समयपर सेंसरके अधीन होना पड़ता है, यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती। लेकिन समाचारपत्रोंने अपना काम चलाने की कला सीख ली है जिससे मैं पूर्णतया अनभिज्ञ हूँ। इसलिए मैं इसमें ज्यादा मदद नहीं कर सकता। इसके सिवा,

१. यह मसौदा जमनालाल बजाजकी ओरसे तैयार किया गया था; देखिए अगला शीर्षक भी।

२. रामकृष्णने १५ अप्रैल, १९४१ को वर्धा में सत्याग्रह किया था।

३ और ४. गांधीजी ने जमनालाल बजाजके लिए अंग्रेजीमें पत्रका जो मसौदा तैयार किया था उसके हाशिये पर उन्होंने यह टिप्पणी लिखी थी; देखिए पिछला शीर्षक।

अभी मुन्शीजी वहाँ हैं। इसलिए मेरी सलाह है कि वे तुम्हें जो सलाह दें, तुम उसी पर अमल करो। यदि तुम्हारे बारेमें उन्हें कुछ पूछना होगा तो वे मुझसे पूछ लेंगे। उनके वहाँ रहते हुए मैं इस मामलेमें अपनी ओरसे स्वतन्त्र रूपसे कुछ नहीं कहना चाहता। यह पत्र भी उन्हें दिखाना और वे जैसा कहें वैसा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८५. पत्र : हरिभाऊ उपाध्यायको

सेवाग्राम
२१ जून, १९४१

भाई हरिभाऊ,

साथमें बहन रुक्मिणीका पत्र है।[१] तुमारी तबीयत अच्छी होगी। रामनारायण कहते हैं कि अजमेरमें जो वैमनस्य म्यु०[२] बारेमें चलता है वह अगर तुम थोडा समय देंगे तो दूर हो सकता है। अगर इसमें कुछ है तो ऐसा किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ६०९०) से। सौजन्य : हरिभाऊ उपाध्याय

१८६. पत्र : बलीबहन म० अडालजाको

[२१ जून, १९४१ या उसके पश्चात्][३]

चि० बली[४],

तूने तो हरिलालके बच्चोंकी सेवा करने के लिए ही जन्म लिया है, इसलिए अब मैं तुझसे क्या कहूँ?

अगर तू बीमार न पड़े, तो और क्या हो?

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५८२) से। सौजन्य : मनुबहन सु० मशरूवाला

१. पत्र उपलब्ध नहीं है।

२. म्युनिसिपैलिटी

३. यह पत्र किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बलीबहन अडालजाको लिखे इस तारीखके पत्रकी पीठपर लिखा हुआ है।

४. हरिलाल गांधीकी साली

१८७. पत्र : मीराबहनको

सोमवार, २३ जून, १९४१

चि० मीरा,

मैंने साथकी सामग्री पढ़ ली। यह अच्छा संकलन[1] है। इन सब ऋचाओंके तुम्हें जितने अर्थ मालूम हुए है, उनसे कहीं अधिक अर्थ किये गये हैं। परन्तु हमारे लिए शाब्दिक अर्थ काफी है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८१)से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८७६ से भी

१८८. पत्र : मीठूबहन पेटिटको

२३ जून, १९४१

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे नहीं लगता वा अभी उस ओर आयेगी। वह अच्छी है। आम कहींसे मिल जायेंगे। रणजीत अच्छा हो गया, इसके लिए बधाई। न होता, तो तुम्हारे लिए शर्मकी बात होती न? आखिर तुम्हें भी बकरी माताकी शरण लेनी पड़ी। लेकिन कल्याणजी तो किसान है, उसे डूब मरना चाहिए कि थोड़ी तकलीफ उठाकर भी एक गाय रखकर उसकी वंश-वृद्धि न कर सका। प्रागजी की भी यही गति होगी।

बापूके आशीर्वाद

मीठूबहन पेटिट
मरोली, बरास्ता नवसारी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७१७)से

१. अंग्रेजीमें रूपान्तरित ऋग्वेद की ऋचाओंका

१८९. पत्र : महावीर गिरिको

२३ जून, १९४१

चि० महावीर,

तेरा बुखार अभी भी जाता नहीं, यह क्या बात है? क्या तू खान-पानमें सावधानी बरतता है? ऐसा बुखार सिर्फ थकावटके कारण नहीं आना चाहिए। चाहे जैसे आया हो, लेकिन इससे छुट्टी पाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२४३)से

१९०. पत्र : मीराबहनको

[२३ जून, १९४१ के पश्चात्][1]

चि० मीरा,

तुम्हें कई परेशानियाँ हैं। तुमने स्वयं यह रास्ता चुना है।[2] मैं मुन्नालालको और उसके साथ सम्भवतः ओझाजी को भेजने की कोशिश कर रहा हूँ। कुएँका उपयोग करने की बात अत्यन्त गम्भीर है। देखें, क्या होता है? हाँ, आशा[3] एक अच्छी मित्र है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

संकलनका जो अंश पढ़ लिया है वह इसके साथ भेज रहा हूँ।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८२)से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९८७७ से भी

१. मीराबहन इस पत्रको २३ जून और १ जुलाई के बीच किसी दिन लिखा हुआ मानती हैं।

२. मीराबहन लिखती हैं: "मैं चोरवाडसे लौटकर सेवाग्रामसे कोई आधा मील दूर नये बगीचेमें कुएँके किनारे बनी एक कुटियामें रह रही थी।"

३. आशादेवी आर्यनायकम्। मीराबहनने चुनी हुई वैदिक ऋचाओंका संकलन किया था। उसके अंग्रेजी अनुवादमें सुधारमें मदद लेने के विचारसे वह आशादेवीके पास कुछ दिन ठहरने गई थीं।

१९१. तार : ईश्वरलाल व्यासको

वर्धागंज
२५ जून, १९४१

ईश्वरलाल
आश्रम
भद्रक

जीवरामभाईकी[1] मृत्युको एक वरदान समझो। उनके कष्टसे मुक्ति पाने पर नाथीबहनको[2] खुश होना चाहिए। पूरा समाचार दो।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०६०)से

१९२. पत्र : डी० पी० करमरकरको

२५ जून, १९४१

प्रिय करमरकर[3],

नगरपालिका-सम्बन्धी मामलोंकी क्योंकि मुझे बहुत कम जानकारी है, इसलिए वे सभी राजेन्द्रबाबू और आचार्य कृपलानीको भेजे जाते हैं। इस समय दोनों-के-दोनों यहाँ नहीं हैं। या तो आप वर्त्तमान नियमानुसार चलें अथवा पटनाके पतेपर राजेन्द्रबाबूको लिखें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : अ० भा० कां० कमेटी फाइल सं० १२९३-ए, १९४०-४१। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. जीवराम कोठारी; देखिए पृ० १४१-४२ भी।
२. जीवराम कोठारीकी पत्नी
३. कर्नाटक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके तत्कालीन अध्यक्ष

१९३. तार : गोपीनाथ बारदलईको

सेवाग्राम
२६ जून, १९४१

मैं सहमत हूँ।[१] आशा है स्वास्थ्य सुधर रहा होगा।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९४. पत्र : कन्हैयालालको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२६ जून, १९४१

भाई कन्हैयालाल,

आशा है कि चि० कुमारी विद्यावतीका विवाह निर्विघ्न हो जायगा। और दोनों दीर्घजीवी होंगे। और मुल्ककी सेवा करेंगे। मीराबाई चोरवाडसे वापिस आ गई है। खुश है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १००५२)से। सी० डब्ल्यू० ६४५७ से भी

१. गोपीनाथ बारदलईने जेलसे रिहा होने के तुरन्त बाद फिर सत्याग्रह करने के विषयमें गांधीजी की सलाह माँगी थी।

१९५. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२७ जून, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र दुःखद है। लेकिन शायद तुम्हारे चले जाने में ही तुम्हारा कल्याण है। कड़वा अनुभव प्राप्त करके वापस आओगे, ऐसी मेरी मान्यता है। लेकिन अगर यह बात झूठी सिद्ध हो और जानकी प्रसादके समान तुम वहाँ कुछ कर सको, तो मुझे प्रसन्नता होगी। मैंने तो पाण्डिचेरी अथवा रमण आश्रमका सुझाव दिया है। लेकिन तुमसे कहीं भी स्थिर न हुआ जाये, तो यहाँ तो जगह है ही।

हीरामणिके बारेमें जवाहरमलजी जो कहते हैं वही ठीक है। धीरे-धीरे उसका प्रशिक्षण हो, इसमें कोई हर्ज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९३) से। सी० डब्ल्यू० ७१४३ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१९६. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२८ जून, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मेरे मनमें यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। अब तुम धरती पर उतर आओ और जो अन्य लोग करते हैं — ईमानदारीसे कौड़ी कमाने के लिए मजदूरी करने और उसमें निर्वाह करने का काम — वही करो तब तुम सीख सकोगे कि आत्म-सम्मान क्या चीज है।[1]

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३१४) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. अमृतलाल चटर्जीने "समाज-सेवाका कार्य छोड़कर सिर्फ आर्थिक लाभके लिए कोई काम करने की अनिच्छा व्यक्त की थी"।

१९७. पत्र : मनुबहन सु० मशरूवालाको

२८ जून, १९४१

चि० मनुड़ी,

इस बीच तेरे पत्र नही आये। लेकिन सुना है तेरी तबीयत ठीक है। मुझे पत्र लिखना। बड़ी माँ मजेमें है। मै भी अच्छा हूँ। मनोज्ञा, कृष्णदास[1] आ गये हैं। अभी प्रभुदास[2] भी यही है। अब जाने की तैयारीमें है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५८१)से। सौजन्य: मनुबहन सु० मशरूवाला

१९८. भक्त जीवराम

जीवरामभाई गये। वे मेरी दृष्टिमें सच्चे भक्त थे और भक्त तो मरकर ज्यादा जीते हैं। मेरी आत्मा साफ ना कहती है कि वे मरे हैं। उनका व्याधिग्रस्त देह अवश्य गया — राख हो गया। उनकी उज्ज्वल आत्मा अमर है और उड़िया प्रान्तकी रजकणमें ओतप्रोत है।

जीवरामभाई धनिक थे। मेरी व्याख्याके आदर्श ट्रस्टी बने। अपने पैसे उड़िया के गरीबोंमें चरखा प्रचारमें दिये। वे खुद भी उड़ियामें गरीब बनकर रहे। और उनका चौबीस घंटोंका चिन्तवन उड़िया लोगोंका कल्याण ही रहा। श्री ईश्वरलालने इस भक्तके अन्तिम जीवनका इस प्रकार वर्णन किया है:

> उन्हें करीब तीन महीनोंसे दस्तकी बीमारी थी। ता० १८-६-१९४१से दवा बन्द कर दी। कहने लगे, 'आज तीन महीनोंसे दवा करा रहा हूं; लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता; तो अब प्रभुकी इच्छा।' पानी और मिट्टी की पट्टी रखवाते थे। खाना तो छोड़ दिया था। मोसंबीका रस लेते थे, उसे भी बन्द कर दिया। ता० २३ की सुबहसे पानी भी नहीं लिया। गला सूखने पर खूब कुल्ले करते थे। मैंने कहा, 'थोड़ा पानी पी लीजिए।' तो उन्होंने कहा, 'अब दम उखड़ रहा है, देखते नहीं।' यह सुबहमें कहा था और तीन बजनेमें दस मिनट बाकी थे, तबतक वे पूरे होशमें थे। दस मिनट

१ और २. छगनलाल गांधीके पुत्र

में एकाएक बेहोश हो गये और एकदम सीधे सो रहे। जरा भी हाल-चालके बिना धीरेसे श्वास बन्द हो गया।

ऐसे हम सब बनें। ऐसा भव्य मृत्यु हम सबको मिले।

सेवाग्राम, २९ जून, १९४१
सर्वोदय, जुलाई, १९४१

१९९. पत्र : मोतीलाल रायको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२९ जून, १९४१

प्रिय मोतीबाबू,

प्रवर्तक संघके बारेमें श्री जाजूजी ने मुझे फाइल भेजी है। उसे पढ़कर मुझे दु:ख हुआ। अ० भा० चरखा संघ एक बहुत बड़ी संस्था है, जिसका एकमात्र उद्देश्य देशके गरीबसे-गरीब लोगोंकी भलाई है। उसे अपना सारा लेनदेन ठोस कानूनी आधारपर करना चाहिए। तभी वह नैतिक दृष्टिसे सुदृढ़ हो सकता है। इसलिए मुझे समझमें नहीं आता कि अपेक्षित प्रॉमिसरी नोट देने में इतनी हिचकिचाहट क्यों है। निःसन्देह कर्ज तो बहुत पहले चुका दिया जाना चाहिए था। और फिर प्रमाण-पत्र प्राप्त करने में इतनी हिचकिचाहट क्यों? यदि तुम शर्तोंको स्वीकार नहीं कर सकते तो वैसी स्थितिमें कमसे-कम इतना तो करना ही चाहिए कि खादी-कार्यको बिलकुल छोड़ दो।[1]

मुझे विश्वास है कि सब चीजोंको व्यवस्थित करने के लिए मुझे उनकी ओर तुम्हारा ध्यान दिला देना काफी है।

मुझे उम्मीद है कि अब आँखोंकी वजहसे तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा, और अन्य प्रकारसे भी तुम स्वस्थ होगे।

सप्रेम,

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०५४)से

१. देखिए "पत्र : मोतीलाल रायको", १८-७-१९४१ भी।

२००. पत्र : धीरूभाई भू० देसाईको

२९ जून, १९४१

चि० धीरूभाई,[१]

भाई मोतीचन्द कापड़ियाके पत्रका मैंने तुरन्त जवाब दिया था। मेरी टिप्पणीमें भी उसका उल्लेख है। संयोगवश उसकी नकल मैं नहीं रख पाया, लेकिन जवाब मुझे याद है। वह इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ।[२] इसे पढ़कर भाई मोतीचन्दको दे देना।

तुम्हारे पिछले पत्रका जवाब देना जरूरी नहीं रह गया था, क्योंकि उसके बाद तो भाई मुन्शीने त्यागपत्र[३] दे दिया और महादेवकी उनसे भेंट भी हो गई।

तुम और माधुरी मजेमें होंगे।

वहाँका वातावरण कैसा है?

साथका पत्र[४] दे सको, तो भूलाभाईको दे देना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे: भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

२०१. पत्र : नटवरलाल वेपारीको

२९ जून, १९४१

भाई नटवरलाल,

मुझे आफिससे ऐसी खबर मिली है कि यह तुम्हारा तीसरा या चौथा पत्र है, जिसमें पहलेसे कम दोष दिखाये गये हैं। अपने आदमियोंको सावधान करना।

मैं तुम्हारे पत्र महादेवभाईको भेज रहा हूँ। उन्होंने तुम्हारे साथ बात की है, इसलिए अब तुम हरिजन आश्रम, साबरमतीके पतेपर सीधे उन्हें लिखना।

१. भूलाभाई देसाईके पुत्र

२. कनु गांधीने पत्रमें निम्नलिखित टिप्पणी जोड़ दी थी: "मोतीचन्दभाई को लिखे पहले पत्रकी नकल अब मिल गई है, लेकिन वह संलग्न नकल जैसी ही है, इसलिए उसे नहीं भेज रहा हूँ।"

३. देखिए "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको", पृ० १२५-२७।

४. एक अन्य टिप्पणीमें कनु गांधीने यहाँ लिखा है: "यह पत्र वे बादमें लिखेंगे इसलिए मैं उसे इस पत्रके साथ नहीं भेज सकता।"

वही जवाब देंगे। उद्देश्य केवल यह है कि जो सामग्री तुम्हें मिली हो उसके आधारपर यदि तुम अपनी रिपोर्ट दे दो तो काफी होगा। क्योंकि आखिर सारी जाँच मुझे ही करनी पड़ेगी। इसलिए यदि तुम्हारी [मदद][1] की विशेष आवश्यकता हुई, तो मैं तुमसे लूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२१) से

२०२. पत्र : जोहरा अन्सारीको

२९ जून, १९४१

बेटी जोहरा,

तेरा खत मिलने पर मैं तो खुश खुश हो गया। फरीदभाई लिखते हैं कि तूने उनकी अम्माजानकी बहुत खिदमत की। खुदा तेरा भला करेगा। थोडी धीरज रख। कोई रोज तो मैं तुझे जरूर जेल जाने दूंगा। शौकत अच्छे होंगे। बच्चोंको प्यार।

बापूकी दुआ

[उर्दूसे]
महात्मा, जिल्द ६, पृ० ४८ और ४९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

२०३. पत्र : गोपीनाथ बारदलईको

सेवाग्राम, वर्धा
३० जून, १९४१

प्रिय बारदलई,

मैंने तुम्हारे तारका जवाब तत्काल ही उसी समय दे दिया था।[2] मुझे तार-घरसे एक पत्र मिला कि तुम जा चुके थे और तार तुम्हारे नाम डाकसे भेज दिया गया था। वह तुम्हें मिल गया होगा। तुमने जो नोटिस दिया है उसे देखते हुए तो मेरे खयालसे तुम्हें अपनेको गिरफ्तार करवाना चाहिए, लेकिन यदि सरकारके पास तुम्हें रिहा कर देने के अच्छे आधार हों तो वैसी स्थितिमें तुम्हारा अपनेको गिरफ्तार करवाना हिंसा होगी। लेकिन इसका ठीक फैसला तुम्हीं कर

१. यहाँ एक शब्द स्पष्ट नहीं है।
२. देखिए पृ० १३९।

सकते हो। अपनी गतिविधियोंके बारेमें मुझे सूचित करते रहना। यह लड़ाई तो लम्बे समयतक चलनेवाली है, इसमें जल्दबाजी नहीं चलेगी। हर व्यक्तिको अपना जौहर दिखाने का पूरा मौका मिलेगा।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फ़ोटो-नकल (जी० एन० ३) से

२०४. पत्र : एगथा हैरिसनको

३० जून, १९४१

प्रिय एगथा,

श्री एम० लंकास्टरका परिचय देते हुए तुमने जो पत्र लिखा वह मुझे मिला। मैंने उन्हें मिलने का समय दे दिया है। मैं नहीं जानता कि मैं उनकी कुछ मदद कर सकूँगा।

हाँ, मुझे एन्ड्रयूजकी बहनोंके बारेमें तुम्हारा पत्र मिला था। उसकी प्राप्ति-सूचना अमृतने भेजी थी। लेकिन कौन-कौन-से पत्र अपने ठिकानों पर पहुँचते हैं, कोई नहीं जानता। आश्चर्य तो यह है कि इतनी भयंकर मार-काटके बीच भी अभी इतनी व्यवस्था बनी हुई है।

[एन्ड्रयूजकी] बहनोंके सम्बन्धमें मैं अभीतक कुछ नहीं कर पाया हूँ। [एन्ड्रयूज] स्मारककी बात भी अभी अधरमें लटकी है। यदि मैं उतने दिन जीवित रहा तो चन्दा अवश्य इकट्ठा कर लूँगा।

दंगोंने, बाढ़ने, और हमारे संघर्षने मेरी सभी योजनाएँ गड़बड़ कर दी हैं। इस बारके दंगों और पहलेके दंगोंमें कोई साम्य नहीं है। इस बार तो यह गृहयुद्धका पूर्वाभ्यास है। अधिकारियोंके प्रति मेरे विश्वासको रोज गहरा धक्का पहुँचता है। लगता है कि वे न तो कभी कुछ सीखेंगे और न कभी कुछ भूलेंगे।

भारत-मन्त्री जब भी बोलते हैं तो ऐसी बात कहते हैं जिससे लोगोंमें चिढ़ ही पैदा होती है। दरार चौड़ी होती जा रही है। बहुत दिखावा चल रहा है। इस सबके बावजूद अपनी अहिंसाके कारगर होने के बारेमें मैं निराश नहीं हूँ। इसका प्रभाव चुपचाप और धीरे-धीरे — इतना धीरे कि मनुष्य धीरज खोने लगे — होता है, लेकिन निश्चित रूपसे होता है। इसलिए मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी ओरसे आपसी समझ-बूझ और मैत्री-भावको बढ़ावा देने में कोई कोर-कसर उठा नहीं रखी जायेगी।

ब्रिटिश महिलाओंकी अपीलका भारतीय महिलाओंने जो उत्तर[1] दिया है वह तुमने देखा होगा। मालूम नहीं कि चि० तुम्हें कतरनें भेजते रहते हैं या नहीं।

महादेव अहमदाबादमें है और अमृत शिमलामें।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५२१) से

२०५. पत्र : फरीद अन्सारीको

३० जून, १९४१

प्रिय फरीद,

मैं जो-कुछ भी करता हूँ वह मेरे लिए सहज और स्वाभाविक होता है। सत्यका उपासक इसके अतिरिक्त और कुछ कर ही नहीं सकता। जिस प्रकार यदि कोई व्यक्ति मनुष्यवत् व्यवहार करे तो इसमें प्रशंसाकी कोई बात नही है, उसी प्रकार जो चीज स्वाभाविक है उसे करने के लिए प्रशंसाकी कोई आवश्यकता नही होती।

हाँ, जोहराने मुझे लिखा है। उसने मुझसे अनुमति माँगी है, किन्तु मैंने उसको प्रतीक्षा करने के लिए कहा है।[2] जोहराने माँकी अच्छी तरह सेवा की, इसपर मुझे कोई आश्चर्य नहीं है। अगर वह ऐसा न करती तो डॉ० अन्सारीसे प्राप्त शिक्षा को झुठला देती।

मैं बिलकुल ठीक हूँ। कोई खास बात नहीं थी। तबीयत जरा-सी गड़बड़ा गई थी। मैं मानता हूँ कि इतना भी नहीं होना चाहिए था। मैं तबीयतमें हर प्रकारकी गड़बड़ी को प्रकृतिके नियमोंका उल्लंघन मानता हूँ। अक्सर अनजान में ऐसा होता है, ऐसा मानकर हम छुटकारा नहीं पा सकते।

सत्यवतीका पता क्या है?

आशा करता हूँ कि तुम लोगोंका हालचाल ठीक होगा।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १२७-२९।

२. देखिए पृ० १४४।

२०६. पत्र : भूलाभाई ज्ञ० देसाईको

३० जून, १९४१

भाई भूलाभाई,

भाई मुन्शीके साथ हुई तुम्हारी बातोंका सार उन्होंने मुझे सुनाया था। मेरे वक्तव्यसे[1] तुमने देखा होगा कि कांग्रेसकी नीति बिलकुल स्पष्ट है। यह स्पष्टता काफी चर्चाके बाद हो पाई। इसलिए जो लोग पूना-प्रस्तावके इस अंशको स्वीकार नहीं करते उनके लिए कांग्रेससे अलग हो जाने के सिवाय और कोई मार्ग ही नहीं रह जाता। इसीलिए मैंने भाई मुन्शीको यह कदम उठाने के लिए प्रेरित किया। अब अगर तुम्हारा विचार जैसा मैं समझता हूँ वैसा ही है तो तुम्हारा मार्ग स्पष्ट है। तुम्हें उसका ऐलान करके उसके अनुसार लोकमत तैयार करना चाहिए। यह समय आचरणका है। हम सबका मूल्य हमारे आचरणसे आँका जायेगा। कांग्रेसके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। यह जिम्मेदारी तभी पूरी की जा सकेगी जब हमारे आचार और विचारमें मेल होगा। हम ३५ करोड़ लोगोंके प्रतिनिधि होनेका दावा करते हैं। हालाँकि यह बात मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, लेकिन तुम सब इसपर विचार करना। यह लड़ाई लम्बी और विकट होगी। अभी जो हो रहा है, यह तो उसकी तैयारी मात्र है।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे: भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए पृ० १२५-२७।

२०७. पत्र : धीरूभाई भू० देसाईको

३० जून, १९४१

चि० धीरूभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। कलका मेरा पत्र[1] मिला होगा। भाई मुन्शीके बारेमें तुमने कतरनें भेजीं, इसी प्रकार और भी भेजा करना। भाई मुन्शीके इस कदमसे मैं शुभ परिणामकी ही आशा करता हूँ। लेकिन बहुत-कुछ उनके व्यवहारपर निर्भर करेगा। और जो लोग उनके जैसे विचारोंके हों, उन्हें भी अलग हो जाने के लिए प्रोत्साहित करना। यह अवसर सच्चा काम कर दिखाने का है, जिसमें अधकचरे लोग भाररूप सिद्ध होंगे। अहिंसाका मार्ग तभी सफल होगा, जब उसमें केवल अहिंसा को पूर्णतया माननेवाले लोग ही रहें। अहिंसाका नाम लेने मात्रसे कोई अहिंसक थोड़े ही हो जाता है।

चि० कनुका खाता-बहीका काम पूरा होने पर मैं उसे वहाँ भेज दूँगा।

तुम्हारे पिताजीको मैं पत्र कल नहीं लिख सका। इस पत्रके साथ है।[2]

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे : भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

२०८. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

३० जून, १९४१

भाई सतीशबाबु,

इसका उत्तर दो।[3] बिना विघी पहूंचे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १४३।

२. देखिए पिछला शीर्षक।

३. यहाँ संकेत अन्नदाशंकर चौधरीके उस पत्रकी ओर है जिसमें उन्होंने कलिमपौंगमें काम करने के बारेमें पूछा था।

२०९. पत्र : अमृतकौरको

३० जून, १९४१

प्रिय पगली,

दिल्लीसे तुम्हारा प्रफुल्लित करनेवाला तार मिला। शिमलासे भी एक तार मिलना चाहिए। अभी दिनके साढ़े तीन तक तो मिला नहीं है।

खम्भाताकी ओरसे मिले २५१ रुपयेके चेकके बारेमें क्या तुम्हें कुछ मालूम है?

रामेश्वरीका लिखा एक पत्र भेज रहा हूँ। उस्मान सोबानीने जो इच्छा व्यक्त की थी उसे पूरा करने के लिए मैंने हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए २४ घंटेका उपवास रखा है। उपवास ५.२० पर खत्म होगा। अन्य सात लोगोंने भी अपनी इच्छासे मेरे साथ उपवास रखा है। बरसात बाकायदा शुरू हो गई है। सारी रात बारिश होती रही, अभी-अभी बन्द हुई है।

मैं पूरी रफ्तारके साथ काम करता रहा हूँ। उपवासका मेरे स्वास्थ्यपर कोई बुरा असर नहीं पड़ा है। सुशीला नागपुर गई है, जहाँ वह उषाके गर्भाशयकी जाँच करवाने के लिए उसके साथ डॉ० मार्टिनके यहाँ जायेगी। वह प्यारेलालसे भी मिलेगी।

महादेव जवाहरलालसे[1] मिलने के लिए कल अहमदाबादसे देहरादून रवाना होगा। वह ९ तारीखको वापस आयेगा। देहरादूनसे वह बम्बई और वहाँसे पंचगनी जायेगा जहाँ वह मथुरादाससे[2] मिलेगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२५)से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३३४ से भी

१. जवाहरलाल नेहरू उस समय देहरादून जेलमें थे।

२. मथुरादास त्रिकमजी

२१०. 'रेंटिया बारस'[1]

नारणदासको प्रतिवर्ष जैसे-जैसे सफलता मिलती जाती है वैसे-वैसे उसका लोभ और उत्साह भी बढ़ता जाता है। श्रद्धावान व्यक्तिके साथ ऐसा ही होना चाहिए। खादीका विस्तार समस्त हिन्दुस्तानमें तो है ही, लेकिन आज जो प्रलयंकर युद्ध हो रहा है उससे कदाचित् यह बात भी सिद्ध हो जायेगी कि खादी, अर्थात् मेहनत-मजदूरी करके अपनी आजीविका कमाने का मन्त्र सर्वव्यापक है। चाहे जो हो, हिन्दुस्तानके लिए तो गरीबी और बेकारीको दूर करने का मुख्य साधन चरखा ही है। इसलिए मुझे आशा है कि काठियावाड़ नारणदासके मनोरथको पूरी तरह सिद्ध करेगा।

याद रखना चाहिए कि काठियावाड़में खादीका उपयोग बढ़ता जाता है। काठियावाड़को अपनी जरूरतकी खादी काठियावाड़में ही पैदा करनी चाहिए। इसके लिए स्पष्ट है कि अधिक धनकी जरूरत होगी। इसको ध्यानमें रखकर इस बार जो धन प्राप्त होगा वह सारा धन खादी पैदा करने में खर्च किया जायेगा।

आगामी ७२ दिनोंमें नारणदासको कमसे-कम एक लाख रुपया इकट्ठा होने की उम्मीद है। भगवान करे उसकी आशा पूरी हो।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम, १ जुलाई, १९४१

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५८३ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

२११. पत्र : मीराबहनको

सेवाग्राम,
१ जुलाई, १९४१

चि० मीरा,

रामदासका कहना है कि उसके पास अभी एक भी आदमी फालतू नहीं है। क्या उँधरू तुम्हारी देखरेखमें वह काम कर सकता है? क्या तुम्हें वरोडासे मजदूर मिल सकते हैं? तुम्हारी कठिनाई वास्तविक है। लेकिन मैं लाचार हूँ। इस तरह के अनुभव दिखाते हैं कि धनसे श्रम बड़ा है। तुम्हारे पत्रपर से कई नैतिक प्रश्न

१. अर्थात् चरखा द्वादशी। नारणदास गांधीने गुजराती कैलेण्डरके अनुसार गांधीजी का ७२ वाँ जन्मदिवस मनाने के बारेमें जो अपील जारी की थी, यह टिप्पणी उसके साथ संलग्न थी।

उठते हैं, किन्तु उनकी चर्चा यहाँ नहीं करूँगा। मुझे बताना कि तुम मुझसे क्या करने की अपेक्षा रखती हो। क्या तुम चाहोगी कि मैं वर्धासे मजदूर जुटा दूं?

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८३) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९८७८ से भी

२१२. पत्र : अमृतकौरको

१ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

शिमलासे भेजा तुम्हारा तार मुझे मिला था और अब दिल्लीसे लिखा पत्र मिला है।

तुम्हारे नाम लिखा बालकोबाका पत्र इसके साथ है।

अभी भी बारिश हो रही है। तुम्हारा हिन्दी-लेखन लगभग निर्दोष है।

मेरे पास मुन्शीके बारेमें कतरनोंका एक पुलिन्दा है। ये पढ़ने में काफी दिलचस्प हैं। सम्भव है कि मैं एक वक्तव्य जारी करूँ।

मैंने नन्दनको[1] प्रोफेसर इन्द्रका[2] त्यागपत्र स्वीकार करने की सलाह दी है। जितने ज्यादा लोग त्यागपत्र देंगे उतना ही अच्छा होगा। इससे वातावरण साफ हो जायेगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२६) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३३५ से भी

१. रघुनन्दन शरण, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष; देखिए "पत्र : रघुनन्दन शरणको", १६-७-१९४१ के पूर्व और "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", ५-८-१९४१ भी।

२. प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, स्वामी श्रद्धानन्दके पुत्र

२१३. अमृतलाल चटर्जीके लिए वक्तव्यका मसौदा[1]

[२ जुलाई, १९४१][2]

किन्हीं घरेलू कारणोंसे, जिनमें जनताको कोई दिलचस्पी नही हो सकती, अपने दो बड़े पुत्रोंको गांधीजी की देख-रेखमें छोड़कर मुझे बंगाल वापस आना पड़ा। बंगाल पहुँचने के तुरन्त बाद मैं ढाकाके लिए रवाना हो गया। और मेरा खयाल था कि ऐसा मैं गांधीजी के निर्देशों पर कर रहा हूँ। मैंने ढाका जाने के बारेमें एक लम्बा वक्तव्य दिया। वक्तव्य पढ़ने के तुरन्त बाद गांधीजी ने एक तार[3] द्वारा उसका खण्डन करते हुए लिखा कि उन्होंने मुझे कभी कोई निर्देश नहीं दिया बल्कि यह कहा था कि यदि मैं अपनी जिम्मेदारी पर ढाका जाना चाहूँ तो जा सकता हूँ और बिना किसी शोर-शराबेके दोनों जातियोंकी सेवा करते हुए अपने प्राणोंकी बलि दे सकता हूँ। मुझे खेद है कि मैंने गांधीजी के निर्देशोंको गलत समझा। मुझे अच्छी तरह याद है कि उन्होंने अन्य सब कार्यकर्त्ताओंकी तरह मुझसे भी बार-बार यह कहा था कि हमें चुपचाप और निःस्वार्थ भावसे काम करते जाना होगा। लेकिन भावावेशमें आकर मैं अपना आपा खो बैठा और ऐसा वक्तव्य दे डाला जिसके अनुरूप मैं काम नहीं कर सकता। ढाकामे मुझे निर्देशोंकी जरूरत थी, जिनके बिना मैं काम नही कर सकता था। निर्देश जारी करने के लिए मैंने गांधीजी को तार दिया और उन्होंने मुझे तार[4] भेजा कि वे कोई निर्देश जारी नही कर सकते और मैं वापस लौट आऊँ तथा आकर अपनी आजीविका अर्जित करूँ। मैं वही करने की कोशिश कर रहा हूँ।[5]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३६१) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१ और २. वक्तव्यका यह मसौदा गांधीजी ने अपने २ जुलाई, १९४१ के पत्रके साथ ही भेजा था; देखिए अगला शीर्षक।

३ और ४. तार उपलब्ध नहीं हैं।

५. अमृतलाल चटर्जीको यह वक्तव्य पसन्द नहीं आया और इसलिए यह प्रकाशित नहीं किया गया।

२१४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा
२ जुलाई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मुझे खेद है कि मैं तुम्हें अपना मसौदा न भेज सका। अब मैं तुम्हारे मसौदे की जगह एक अन्य मसौदा[1] भेज रहा हूँ। यदि तुम्हें मेरा मसौदा पसन्द न आये तो तुम्हें कुछ भी छपवाने की जरूरत नहीं है। यह विषय पुराना हो चुका है।

मुझे आशा है कि अब आभा तन्दुरुस्त हो गई होगी।

तुम्हें किसी खानगी पेढ़ीमें काम ढूँढ़ना चाहिए और धीरे-धीरे अपनी जीविका कमानी चाहिए। अभीतक तुम जिस तरहसे रहते रहे हो उससे मैं यही समझता हूँ कि तुमने अपना जीवन व्यर्थ गँवाया है। तुम आभा और वीणासे भी वे जो-कुछ कमा सकें, कमाने को कहो। तुम्हें मेहनत करने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३१५) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

२१५. पत्र : अमृतकौरको

२ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

ये रहे दो पत्र। आशा है, तुम्हारे पास यह सही-सलामत पहुँच जायेगा।

अभीतक एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब मैंने तुम्हें पत्र न लिखा हो।

बहुत ठंडी हवा चल रही है। फिलहाल तो यहाँ शिमला-जैसा मौसम है। इससे श०को[2] प्रसन्नता होनी चाहिए। मुझे आशा है कि उसे तुम्हारी सूरत देखकर आघात नहीं पहुँचा होगा।

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. कुँवर शमशेर सिंह, अमृतकौरके भाई

यहाँ सब ठीक है।

सिकन्दर आज यहाँ आ रहा है। मैं तुम्हारे बिना निरुपाय हूँगा। किन्तु दामोदरने उसके साथ मैत्री कर ली है। उसने उसका ध्यान रखने का वादा किया है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

यह पत्र व्यवधानोंके बीच लिखा गया है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३६ से भी

२१६. पत्र: लीलावती आसरको

२ जुलाई, १९४१

चि० लीली,

तेरा पत्र मिला। अगर तू अभीसे हिम्मत हार बैठेगी, तो कैसे काम चलेगा। तुझे ध्यान लगाकर पढ़ना और समझना चाहिए। किसीकी मददकी जरूरत हो तो लेनी चाहिए। वजन बढ़ता हो तो बढ़े, लेकिन दूध और घी तुझे नियमपूर्वक खाना चाहिए। तेरा वजन १०५ या ११० भी हो जाये, तो कोई हर्ज नहीं। अगर पौष्टिक भोजन नहीं लेगी तो तबीयत खराब होगी और दिमागमें ताजगी नहीं रहेगी। यहाँ चार दिनसे खूब बारिश हो रही है। ठंड खूब पड़ती है। चाय, जैसा मुझसे कहा था, हलकी बनाती होगी।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

राजकुमारी शिमला गई। सुशीला मजेमें है। तेरा खर्चा उठाने का शान्तिकुमारने वचन दिया है।

श्रीमती लीलावतीबहन उदेशी
कानजी खेतसी कन्या छात्रालय
६५, मिंट रोड
फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१०९) से। सौजन्य: लीलावती आसर

२१७. पत्र : सतीन सेनको

सेवाग्राम
३ जुलाई, १९४१

प्रिय सतीन,

अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला। हालाँकि स्थानीय परिस्थितियाँ ही अन्ततः स्थितिका निर्धारण करेंगी, तथापि मैं सोचता हूँ कि यदि तुम लोगोंके मतभेदका आधार साम्प्रदायिक नही है तो तुम्हें किसी निश्चित उद्देश्योंके लिए दिये गये चन्दे स्वीकार कर लेने चाहिए, बशर्ते कि वे दोनों जातियोंसे मिलें। यदि मुसलमानोंमें से अधिकाश लोग विरोध करें, तो तुम्हें साम्प्रदायिक आधारपर वितरणका काम अपने ऊपर नहीं लेना चाहिए।

मारवाड़ी सोसायटीके उत्तरपर मुझे कोई आश्चर्य नही हुआ। तुम स्थानीय तौरपर जो कार्य कर सकते हो, करो।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१८. पत्र : अमृतकौरको

३ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

साथमें जीन्दके राजाका उत्तर है। यह खराब है, टालमटोलवाला है। किन्तु किया क्या जाये? मुझे खुशी है कि तुम्हें इतना ठीक-ठाक देखकर उन सबको सुखद आश्चर्य हुआ। तथापि मुझे खुशी है कि मैं घबरा गया और तुम्हें भेज दिया। तुम्हारे लिए स्वस्थ या बीमार, हर हालतमें शिमला जाना जरूरी था।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२८) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३३७ से भी

२१९. पत्र : मीराबहनको

३ जुलाई, १९४१

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। कल रात मुझे तुम्हारी बहुत याद आई। और फिर भी मैं मना यह रहा था कि तुम न आओ। जब मुझे मालूम हुआ कि उँधरूको तुम्हारे पास भेजा गया है तो मैंने सोचा कि तुम्हारी देखभाल हो रही है। अभी-अभी पूछताछ करने पर पता चला कि केवल उँधरूको ही भेजा गया है। मुझे अभी-अभी यह मालूम हुआ है कि उँधरूको पूरी हिदायतोंके साथ भेजा गया था। तथापि तुम्हारी कैसी गुजर रही है, यह देखने के लिए मैं पुरीको तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। उससे बात करने के लिए तुम अपना मौन भंग कर देना।[1]

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८४) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९८७९ से भी

१. बापूज लेटर्स टु मीरा में ७ सितम्बर, १९४० को लिखे पत्रसे पहलेकी एक टिप्पणीमें मीराबहन लिखती हैं: "मेरा अन्तर्द्वन्द्व अत्यन्त नाजुक दौरमें पहुँच गया था और मेरा मार्ग दुविधाओं तथा भ्रान्तियोंके कुहासेसे आच्छादित हो उठा था। मैं इतनी व्याकुल हो उठी थी कि मैंने एकान्त और मौन धारण कर लिया था जिससे कि मैं ईश्वरसे मददके लिए प्रार्थना कर सकूँ। मेरा यह मौन, सफरके कुछ दिनोंको छोड़कर, पन्द्रह महीने चला। कुछ समयके लिए मेरा नियम आवश्यकता पड़ने पर दिनमें एक बार आधा घंटेके लिए बोलना था। बाकी समयमें, जब मैं सेवाग्राममें बनी एक कुटियामें रहती थी, मैं सप्ताहमें दो बार बोला करती थी, जब मैं शामको बापूसे मिलने जाती थी।"

२२०. पत्र : गोपीनाथ बारदलईको

३ जुलाई, १९४१

प्रिय बारदलई,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे मनमें यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि जबतक तुम अपने तमाम रोगोंसे मुक्त नहीं हो जाते, तबतक तुम्हें अपनेको गिरफ्तार नहीं करवाना चाहिए। यह पत्र अध्यक्षको दिखा देना।[1]

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४)से

२२१. पत्र : दिलखुश दीवानजीको

३ जुलाई, १९४१

भाई दिलखुश,

तुम्हारी पुस्तिका मिली। उसे पढ़ने का प्रयत्न करूँगा और उसपर लिखने जैसा कुछ हुआ तो लिखूंगा।[2] जब तुम सब लोग आते हो, तब मुझे कुछ लोगोंसे खास तौरपर मिलने की इच्छा तो जरूर होती है, लेकिन मुझे उसे दबाना पड़ता है।

बापूके आशीर्वाद

दिलखुश दीवानजी
"गांधी कुटीर"
कराड़ी, नवसारी होते हुए
बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २६४८) से

१. देखिए "पत्र: गोपीनाथ बारदलईको", पृ० १४४-४५ भी।
२. देखिए "पत्र: दिलखुश दीवानजीको", २१-७-१९४१।

२२२. पत्र : अरुणचन्द्र गुहको[1]

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
४ जुलाई, १९४१

प्रिय अरुण बाबू,

पुराने बसेरेसे लिखा आपका पत्र पाकर बहुत खुशी हुई। आश्चर्य तो इस बातका है कि आपको वहाँ और पहले नही ले जाया गया। भीतर हों या बाहर, आप सेवा करते ही है। हाँ, मुझे आपके सभी पत्र मिले थे और मैंने उन सबको निपटा दिया है। हमारा काम निश्चय ही कठिन किन्तु सीधा-सादा है। हम जानते है कि अमुक समयपर हमें क्या करना है। हमें कोई जल्दी नही है, क्योंकि हमें सफलताका विश्वास है।

बंगालसे शायद मेरे पास किसीको आने की जरूरत नही होगी, क्योंकि राजेन-बाबू और प्रोफेसर वहाँ गये थे और उन्होंने कार्यकर्त्ताओंके साथ दिल खोलकर बातें की थीं।[2]

यदि हम लोग पूरी तरह साम्प्रदायिकतासे मुक्त और अहिंसक बने रहें, तो किसी दिन हम साम्प्रदायिक प्रश्नको हल करने में निर्णायक भूमिका निभायेंगे। क्या आप इस बातसे सहमत नहीं हैं कि बिना अहिंसाके हम साम्प्रदायिकतासे पूरी तरह मुक्त नही हो सकते?

आशा है, आप सब लोग ठीक-ठाक होंगे।

सब लोगोंको मेरा सप्रेम अभिवादन कहें।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री अरुणचन्द्र गुह
सुरक्षा बन्दी
मार्फत अतिरिक्त पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट
मिदनापुर
हिजली शिविर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६६८)से

१. इस पत्रको पहले सेंसरने रोक लिया था, किन्तु बादमें २२ जुलाईको पास कर दिया था।

२. २३ जूनको कलकत्तेमें राजेन्द्रप्रसाद और जे० बी० कृपलानी ने बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालयमें बंगालके कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंके साथ साम्प्रदायिक समस्यापर बातचीत की थीं।

२२३. पत्र : अमृतकौरको

४ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

ये रहे तुम्हारे पत्र। तुम्हारा पत्र ठीक समयपर आ गया है। जमनालाल बजाजके बारेमें मुझे कोई जल्दी नहीं है।[1] यदि तुम्हें जरा-सी भी दिक्कत महसूस हो तो तुम मुझे बिना किसी झिझकके बता देना।

जरा सोचो कि तुमपर भार डाले बिना कोई आदमी यदि तुम्हारी गति-विधियाँ निर्धारित कर दे तो कितना आराम रहेगा। यदि नौकर-चाकर ऐसा करें तो कहा जायेगा कि वे बड़े निष्ठावान हैं। यदि यही चीज मित्र लोग करें तो कमसे-कम उतना श्रेय तो उन्हें मिलना ही चाहिए। और जरा सोचो कि इससे अपना काम करने के लिए तुम्हें कितना मौका मिल जाता है! लेकिन हम लोग जिस दुनियामें रह रहे हैं वह बड़ी एहसान फरामोश है। आखिर किया क्या जाये? सिकन्दर यहाँ है। वह तुम्हारे बिना बहुत सूना महसूस करता है। वह हैदराबाद जानेवाला है और बादमें आयेगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२९)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३८ से भी

२२४. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

४ जुलाई, १९४१

चि० प्रेमा,

जिस पत्रके लिए मैंने लिखा था कि नहीं मिला, वह बादमें मिल गया।

तू जो लिखती है वह सच है। बहुत तेजीसे काम करने में कभी-कभी पत्रोंके जवाब रह जाते हैं और कभी-कभी दुबारा दे दिये जाते हैं, जैसा तेरे बारेमें हुआ। जवाब देना रह जाये इसके बजाय दुबारा दे दिया जाये, यही अच्छा है न? मैंने तुझे पत्र लिखा तभी मुझे खयाल हुआ था कि इसका उत्तर तो दे दिया होगा। तेरे पत्रोंका उत्तर अधिकतर लौटती डाकसे लिखने की आदत पड़ गई है। परन्तु ऊपर जवाबकी तारीख नहीं लिखी थी। इससे भ्रम हो गया। यह तो हुआ व्यर्थका व्याख्यान।

१. अमृतकौरने गांधीजीको एक तार भेजा था, जिसमें उनसे जमनालाल बजाजको स्वास्थ्य-सुधारके लिए शिमला भेजने का अनुरोध किया गया था।

सुशीलाका[1] मोतीझरा भयंकर कहा जायेगा। राधावहनने[2] उसके वारेमें मुझे कुछ अधिक विस्तारसे लिखा है। आज मैं सुशीलाको लिख रहा हूँ। जमनादासने[3] उसकी वड़ी सेवा की।

अप्पा[4] तो वढ़िया काम कर ही रहे हैं। इस वार तू [जेलसे] सीधी यहाँ आयेगी ही।[5]

'धनुष-तकली' मिली होगी। वह ठीक बनी हो तो गति अच्छी देती है।

अपनी उर्दू अच्छी कर लेना। लिखना और पढ़ना आना ही चाहिए।

अपना वजन वढ़ाना।

मैंने तो समझा था कि कनुकी सगाई होनेवाली है। परन्तु अव ऐसा नहीं है। भविष्यमें क्या होगा, यह तो ईश्वर जाने।

राजकुमारी वायु-परिवर्त्तनके लिए शिमला गई है। मेरी और वा की तवीयत अच्छी है। महादेव देहरादून गया है। आज मुलाकात करके लौटेगा। अहमदावादमें उसने वढ़िया काम किया है।

सव वहनोंको

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४२०)से। सी० डब्ल्यू० ६८५९ से भी; सौजन्य: प्रेमावहन कंटक

२२५. पत्र: नारणदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा
४ जुलाई, १९४१

चि० नारणदास,

सदाकी तरह प्रेमावहनका पत्र तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम्हारे वक्तव्यपर मेरी टिप्पणी[6] तुम्हें मिली होगी। जमनाकी चिट्ठी आई थी, उसमें जवाव देने जैसा कुछ नहीं था।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५८४ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

१. सुशीला पै
२. मगनलाल गांधीकी पुत्री
३. जमनादास गांधी
४. अप्पासाहव पटवर्धन, महाराष्ट्रके गांधीके रूपसे प्रसिद्ध
५. इससे आगेके एक वाक्यको जेल-अधिकारियोंने काट दिया था।
६. 'रेंटिया वारस' के वारेमें, देखिए पृ० १५०।

२२६. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

४ जुलाई, १९४१

भाई मुन्शी,

राव बहादुरको तुम्हारा पत्र मिले, इससे पहले ही मैं उन्हें लिख चुका था।

डॉ० खरेको लिखा तुम्हारा जवाब मुझे कमजोर लगा। उन्होंने तुम्हारे साथ अपनी तुलना ही कैसे की? कहाँ तुम और कहाँ वे! उन्होंने तो कांग्रेसके सब नियमोंका उल्लंघन किया है।[1] इसके विपरीत, तुमने नियमोंका आदर्श रीतिसे पालन किया और फिर पालन करनेके लिए ही अलग हो गये। किसीके कहने या इच्छा करने से तुम्हारे-हमारे बीच भेद थोड़े ही उत्पन्न होनेवाला है।

उम्मीद है तुम सपरिवार कुशलपूर्वक होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६४)से। सौजन्य : कन्हैयालाल मा० मुन्शी

२२७. पत्र : माधवदास गो० कापड़ियाको[2]

[४ जुलाई, १९४१][3]

तुम्हारी गाड़ी किसी प्रकार चल रही है, या अभी भी बिना किसी धन्धेके हो?

बापूके आशीर्वाद

श्री माधवदास गोकुलदास कापड़िया
पहली मंजिल, श्यामजी शिवजी बिल्डिंग
मनोहरदास स्ट्रीट, मोदीखाना
फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२)से

१. जुलाई, १९३८ में कांग्रेस कार्य-समितिने मध्य प्रान्तके भूतपूर्व मुख्यमन्त्री डॉ० एन० बी० खरेको "घोर अनुशासनहीनताका दोषी" पाया था और उन्हें "कांग्रेस संस्थामें किसी भी जिम्मेदारीके पदके अयोग्य" ठहराया था; देखिए खण्ड ६७।

२ और ३. माधवदास कापड़िया कस्तूरबा गांधीके भाई थे। कस्तूरबा द्वारा उन्हें लिखे गये इस तारीखके पत्रके नीचे ही गांधीजी ने ये पंक्तियाँ जोड़ दी थीं।

२२८. पत्र : प्रभावतीको

४ जुलाई, १९४१

चि० प्रभा,

तेरा कार्ड मिला था। अब तो तू देवली जाने की तैयारीमें होगी। लौटते हुए यहाँ जरूर आना। जयप्रकाशने मुझे पत्र लिखा था। लगता है उसे मेरे कामसे कुछ असन्तोष है। लेकिन सन्तोष उसे था ही कब? मैं उसे जवाब लिखनेवाला हूँ। उससे कहना कि अगर वह अपनी तबीयत सुधार ले, तो उसके असन्तोषके बावजूद मुझे पूरा सन्तोष होगा। राजकुमारी वायु-परिवर्तनके लिए शिमला गई है। राजेन बाबू ज्यों ही वहाँ पहुँचे कि उनका बीमार पड़ जाना निश्चित है। बा मजेमें है। मैं ठीक हूँ। सुशीला अभी यहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६१)से

२२९. तार : जमनालाल बजाजको

वर्धा

५ जुलाई, १९४१

सेठ जमनालालजी
बिड़ला आरोग्य मन्दिर
नासिक रोड

शिमलासे तार मिला है कि तुम्हारा स्वागत है।[1] [अभी यहाँ] आ जाओ।

बापू

[अंग्रेजीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २३६

१. देखिए "पत्र : अमृतकौरको" पृ० १५९ भी।

२३०. पत्र : अमृतकौरको

व्यक्तिगत

सेवाग्राम, वर्धा
५ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा तार और पत्र मुझे आज मिले। तुम्हारे पत्रके अनुसार मुझे तुम्हारा तार ज्यादासे-ज्यादा ३ तारीख तक मिल जाना चाहिए था। क्यों नहीं मिला, इसका तुम पता लगाना।

अब मैंने नासिकके पतेपर जमनालालको 'तार'[1] दिया है। तुम अगले हफ्ते उसके पहुँचने की आशा कर सकती हो। मैंने तुम्हारा पत्र उसे दिखाने के लिए रख लिया है। बाकी सब पत्र मेरे पढ़ने के तुरन्त बाद नष्ट कर दिये जाते हैं।

तुम्हारे पत्रोंसे पता चलता है कि तुम कितना भारी त्याग करके सेवाग्राममें रहती हो। मेरे सामने यह बात स्पष्ट है कि गर्मियोंमें तुम्हें पहाड़पर रहना चाहिए। तुम्हें अपने शरीरके साथ हिंसा नहीं करनी चाहिए। शम्मीकी तरह मुझे भी इस बातका पूरा विश्वास है कि अपने शरीरके साथ इस तरह हिंसा करने से तुम एका-एक गम्भीर रूपसे बीमार पड़ सकती हो। एक सीमाके बाद आत्म-दमन नुकसानदेह बन जाता है। मैं चाहूँगा कि इस बार तुम शिमलामें ही रहकर देखो कैसी रहती हो। स्वस्थ आत्मनिग्रह वही है जिसमें मनुष्यको आन्तरिक आनन्दका अनुभव हो। यह अच्छी बात है कि जमनालाल तुम्हारे साथ होंगे।

यह रहा शम्मीका पत्र। देखें कि तुम शिमलामें रहकर कितनी मोटी हो जाती हो।[2] जितना वजन लेकर आओ, वह फिर घटना नहीं चाहिए।

अमतुल सलाम अभी भी एक कठिन समस्या बनी हुई है। वह बड़ी रहस्यमयी है। उसका दमा पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। वह बहुत कमजोर है। उसका गुस्सा पहले-जैसा ही है।

महादेव ९ तारीखको वापस आ रहा है।

बेशक मौसम काफी ठंडा है। बारिश अभी भी हो रही है, हालाँकि लगातार नहीं हो रही है। मैं बरामदेके बजाय अपने कमरेमें सोता हूँ। बरामदा आश्रम-वासियोंके लिए चाहिए। पिछली रात मैं दो दरवाजोंके बीच सोया, उसमें ताजी

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. देखिए "पत्र : अमृतकौरको", १७-७-१९४१ भी।

हवा आती रही। शंकरन-समेत मेरे साथी मेरे साथ ही सोये, शंकरन दीवारके पीछे प्यारेलालकी तरफ तख्तपर सोया।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६७५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६४८४ से भी

२३१. पत्र: मार्गरेट जोन्सको

५ जुलाई, १९४१

प्रिय कमलाबहन,

बापूको लिखा तुम्हारा पत्र मिला। वे अब ठीक हैं, और पहलेकी तरह अपना काम कर रहे हैं और चलते-फिरते हैं। बापू कहते हैं कि तुम वहाँ प्रशिक्षण प्राप्त करने गई हो, और तुम्हें तुम्हारे चारों ओर जो-कुछ हो रहा है उसकी परवाह न करते हुए और उसपर ध्यान दिये बिना अपना काम करते जाना चाहिए।[1] हाँ, यूरोपमें घटना-चक्रकी गति दिनों-दिन तीव्रसे तीव्रतर होती जा रही है, और कोई नहीं जानता कि विश्वके घटना-चक्रमें हम कहाँ होंगे। किन्तु ईश्वर जानता है। हमें भरोसा रखना चाहिए कि वह हमें उसी स्थितिमें रखेगा जिसमें हमें होना चाहिए, फिर उससे हमें कुछ समयके लिए दुःख मिले या सुख। . . .[2]

बापूके प्यार सहित, . . .[3]

[अंग्रेजीसे]

बापू — कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पॉण्डेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९५

१. मार्गरेट जोन्सने, जो बम्बईमें प्रसूति-विज्ञानका प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थीं, बम्बईके "आम तौरपर असन्तोषजनक वातावरण" के बारेमें लिखा था।

२ और ३. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।

२३२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम
६ जुलाई, १९४१

अभी कुछ दिन पहले जब पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष मियाँ साहब इफ्तिखारुद्दीन और डॉ० गोपीचन्द मुझसे मिलने आये थे, तो मियाँ साहबने मुझे बताया था कि कुछ चीजोंको लेकर कतिपय कांग्रेसियोंके मनमें गलतफहमी है और उनका स्पष्टीकरण किया जाना चाहिए। मुझे उनके बारेमें पहले ही लिखना चाहिए था। लेकिन ज्यादा काम होने और उसे निपटाने की अपनी सीमित क्षमताके कारण मुझे लिखने में देर हो गई। मैं आज उनपर लिख रहा हूँ।

जब पंजाबके वकील संघने देश-प्रेमसे प्रेरित होकर निष्पक्ष न्यायिक सलाहकार की अपनी सम्मानित भूमिका निभाते हुए पंजाब उच्च न्यायालयमें ऐसे सत्याग्रहियोंके मामलोंको पुर्नविचारके लिए प्रस्तुत करने का निश्चय किया जिनके साथ, उसकी रायमें, साफ-साफ अन्याय किया गया था, तब मुझे बड़ी खुशी हुई थी। खुशी मुझे इसलिए नहीं हुई कि उससे सत्याग्रहियोंको कुछ राहत मिलेगी, बल्कि इसलिए हुई कि उससे वकील संघकी कर्त्तव्यनिष्ठता और न्यायकी पवित्रता सिद्ध होगी। यद्यपि सत्याग्रहियोंको, उन्हें जो सजा सुनाई गई हो, उसके प्रति उदासीन रहना चाहिए, फिर भी उन्हें अन्यायका पर्दाफाश किये जाने की बातका स्वागत करना चाहिए, विशेषकर तब जब ऐसा निष्पक्ष लोगोंके कहने पर किया जाये। इसलिए जब इस्मत बेगमने मुझे तार दिया और लिखा कि उनके पति अपने मामले पर पुर्नविचार किये जाने की बातसे नाराज़ और परेशान हैं, तब मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे हस्तक्षेप न करें और कहा कि वे अपने पतिसे कहें कि पुर्नविचार किये जाने की बातमें कोई खराबी नहीं है; और यदि उन्हें रिहा कर दिया गया तो वे फिरसे सविनय अवज्ञा कर सकते हैं। बेशक अगर कोई सत्याग्रही कैदी न्यायिक सलाहकारसे यह अनुरोध करे कि वह सत्याग्रहियोंके मामलेको अदालतमें फिरसे उठाये, तो यह एक बिलकुल भिन्न और भद्दी चीज होगी। ऐसा आचरण सत्याग्रह आचार-संहिताके बिलकुल विपरीत होगा।

पंजाबकी तरह देशके अनेक भागोंमें शिकायतें की जा रही हैं कि सत्याग्रहियों की नई सूचियाँ जिस तेजीसे भेजी जाती हैं उतनी तेजीसे उनपर स्वीकृति नहीं दी जाती। जहाँतक सूचियाँ भेजने का सवाल है, पंजाब अथवा किसी प्रान्तमें तत्परताकी कोई कमी नहीं है। लेकिन उनपर अपनी स्वीकृति प्रदान करने की मुझे कोई जल्दी नहीं। मैं हजारवीं बार यह दोहरा रहा हूँ कि वर्त्तमान सविनय अवज्ञा आन्दोलनका उद्देश्य सरकारके काममें बाधा डालना नहीं है; इतना ही नहीं, इस बातका ध्यान भी रखा जा रहा है कि जहाँतक हो सके, ऐसी स्थिति उत्पन्न ही न होने दी जाये।

सविनय अवज्ञा आन्दोलनकी खूबी इसीमें है और उसकी शक्ति भी इसी बातमें निहित है कि आज जब अंग्रेज जिन्दगी और मौतके भयंकर युद्धमें लगे हुए हैं, उन्हें कमसे-कम परेशानीमें डाला जाये। इसके अतिरिक्त, चूँकि हमारी यह लड़ाई अनिश्चित काल तक चलनेवाली है —मैं मानता हूँ कि कमसे-कम पाँच सालतक तो अवश्य ही चलेगी —इसलिए जेलोंको भरने की जल्दी मचाने की कोई जरूरत नहीं है। आज हम स्वतन्त्रता-प्राप्तिके जितने नजदीक हैं, मात्र जेलें भरने से उससे अधिक नजदीक नहीं हो जायेंगे। इसकी उपयोगिता तो यह है कि मर्यादित सविनय अवज्ञाके माध्यम से लोग अनुशासन, कष्ट-सहन और आत्म-बलिदानकी आवश्यकताको ठीक तरहसे समझें। सत्याग्रहका हर सच्चा उदाहरण जनमानसको व्यापक रूपसे प्रभावित करता है। आन्दोलनके शुरूमें सूचियोंकी जाँच करने में मैंने जान-बूझकर ढिलाईसे काम लिया था। उसका परिणाम यह हुआ कि उसमें कई ऐसे लोग आ घुसे जिन्होंने कोई रचनात्मक कार्य नहीं किया था। कुछ लोगोंको तो उसमें कोई आस्था भी नहीं थी। ऐसे लोग कांग्रेस संगठनके लिए बोझ सरीखे हैं और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के रास्तेमें निश्चित रूपसे बाधक हैं। मैंने बार-बार कहा है कि रचनात्मक कार्य सविनय अवज्ञाकी नींव है। इससे कार्यकर्तामें अनुशासन की भावना आती है और अहिंसा का विकास होता है। अतः जैसे-जैसे समय बीतता जाता है कांग्रेसियोंको मेरी ओर से अधिक सख्तीकी अपेक्षा रखनी चाहिए। शर्तें वही होंगी, लेकिन उन्हें लागू करने में कड़ाई बरती जायेगी। यदि हम धीरे-धीरे शक्तिका विकास करना और अपनी लड़ाई को अधिकाधिक शुद्ध बनाना चाहते हैं तो ऐसा करना स्वाभाविक है। मैं किन्हीं अन्य शर्तोंपर इसका संचालन नहीं कर सकता।

फिर मियाँ साहबने मुझे यह भी बताया कि उन्होंने पंजाबके सभी दलोंको जो इस बातपर सहमत कराने की कोशिश की कि अपने कार्यक्रमोंपर अमल करने में वे गुण्डागर्दीका सहारा न लें उसकी कुछ कांग्रेसियोंने आलोचना की है। जब मियाँ साहबने मुझे बताया कि ऐसे प्रयत्नमें सफलता मिलने की सम्भावना है तो मैंने तत्काल उनसे कहा कि वे इस दिशामें जरूर प्रयत्न करें और फिलहाल वे खुद सविनय अवज्ञा न करें और जिन लोगोंकी सहायता इस कठिन कार्यके लिए वे जरूरी समझें, वे लोग भी सविनय अवज्ञा न करें। मियाँ साहबने अपनी बैठकमें गैर-कांग्रेसियों, यहाँ तक कि साम्प्रदायिक नेताओंको भी बुलाया, यह बात कुछ कांग्रेसियोंको, मालूम होता है, ठीक नहीं लगी। ये आपत्तिकर्त्ता यह भूल जाते हैं कि मियाँ साहबके प्रभावका सार यही है कि सभी विरोधी तत्वोंको इकट्ठा किया जाये और यह देखा जाये कि वे लोग अपने-अपने उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए गुण्डागर्दीका सहारा न लेने की बातपर सहमत हो सकते हैं या नहीं। और ऐसी बैठकमें लोगोंकी गिनतीके आधारपर ही कोई निर्णय नहीं किये जा सकते। गुण्डागर्दीको खत्म करने का हमारा उद्देश्य तो सभी दलोंकी दिली सहमतिसे ही पूरा हो सकता है। कुछ भी हो, कांग्रेसियोंको यह जानना चाहिए कि मियाँ साहबने मुझसे सलाह करने और मेरी पूर्ण सहमति प्राप्त करने के बाद ही इस कठिन कार्यको अपने हाथमें लिया है। मैं आशा करता हूँ कि मियाँ साहबको सभी कांग्रेसियोंका पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा।

वे [मियाँ साहब] सविनय अवज्ञा करने के लिए अधीर हो रहे हैं। पंजाब कांग्रेसका अध्यक्ष होने के नाते वे सविनय अवज्ञा आन्दोलनमें भाग लेना अपना प्रमुख कर्त्तव्य समझते हैं। मैंने उनसे कहा है कि ऐसा कोई सर्वसामान्य नियम नहीं है। इसके विपरीत उनका, और उन लोगोंका जिन्हें वे इस कार्यके लिए चुनें, यह स्पष्ट कर्त्तव्य है कि तबतक सविनय अवज्ञा आन्दोलनमें भाग न लें जबतक वे और उनके साथी यह समझते हैं कि वे गुण्डागर्दीको खत्म करने की दिशामें कुछ योगदान कर सकते हैं।

अब सवाल उन लोगोंका रह जाता है जिन्हें पंजाब उच्च न्यायालयने इस आधार पर रिहा कर दिया है कि उन्होंने सविनय अवज्ञा करने की जो सूचना दी थी वह उनको सजा देने का पर्याप्त कारण नहीं हो सकती। इस निर्णयके बारेमें पता चलने पर मैंने मियाँ साहबको सूचित किया था कि उन्हें उन लोगोंको जेल भेजने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए और जब वे सेवाग्राम आयेंगे तब मैं उनसे इस विषयमें बातचीत करके कोई निश्चय करूँगा। वे आये और मैंने उन्हें सलाह दी कि जिन लोगोंको शान्ति-स्थापनाके कार्यके लिए जरूरत नहीं है उन्हें फिरसे सविनय अवज्ञा आन्दोलन करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१–गृह विभाग, पॉलि० (१)। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार

२३३. पत्र : अमृतकौरको

व्यक्तिगत

सेवाग्राम, वर्धा
६ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

मैंने एक दिनका भी नागा नहीं किया है। इसलिए तुम्हें अप्राप्त पत्र मिलना ही चाहिए।

फारुकी यहाँ आये थे, मैं तुम्हें यह बताना भूल ही गया। हम एक घंटे तक विचारोंका आदान-प्रदान करते रहे। लेकिन वह तो केवल प्रारम्भिक बातचीत थी। उन्होंने कहा कि वे फिर आयेंगे। मैं नहीं समझता कि उनसे मिलने से हमारा कोई नुकसान हुआ है। नन्दनको फारुकीके बारेमें अपनी राय मुझे बतानी चाहिए, खासकर इसलिए कि वे दिल्लीके हैं।

कल पुरुषोत्तम त्रिकमदास यहाँ आये थे। खान साहब ९ तारीखको आ रहे हैं। जमनालाल कल अथवा बुधवारको निश्चित रूपसे आयेंगे।

तुम्हें सिरदर्द क्यों होना चाहिए?

राजाको[1] बच्चेकी खातिर रिहा कर दिया गया है। मुझे उसका एक पत्र मिला था। राजाकी रिहाईके लिए धीरूने पुलिस कमिश्नरसे अनुरोध किया था।

अपने पिछले जन्मोंके बारेमें जानने की विद्या तुमने कबसे सीख ली? तुम्हें कैसे मालूम कि तुम अपने पिछले लाखों जन्मोंमें बनियेसे भी बदतर नहीं थी? बहरहाल, क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि अगर तुम कागजवालेसे यह कहोगी कि वह तुम्हें बिल न दे तो वह तुम्हारे इस अनुरोधको स्वीकार कर लेगा? और मैंने तुमसे यह भी कहा था कि मुझे उस कागजको इस्तेमाल करना अच्छा नहीं लगेगा। उसका बिल सही बिल था। वह किसी भी ग्राहकसे उतना ही पैसा लेता। लेकिन अन्तिम निर्णय करने में जल्दबाजीकी जरूरत नहीं है। तुम मुझे समझाने की कोशिश करना और यदि तुम मुझे समझाने में सफल रहीं, तो मैं खुशीके साथ पैडोंका इस्तेमाल करूँगा।

सब जगह बहुत ज्यादा वर्षा हुई है। हम उम्मीद करें कि इसका मतलब यह नहीं है कि आगे मौसम सूखा रहेगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३०) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३९ से भी

२३४. पत्र : लीलावती आसरको

६ जुलाई, १९४१

चि० लीली,

तेरा पत्र मिला। अच्छा नहीं लगा मुझे। तेरी दिक्कतें किसी लेखेमें नहीं आतीं। अन्य अनेक स्त्रियाँ बहुत ज्यादा दिक्कतें उठाकर भी पढ़ती हैं। तू अस्वस्थ रहती है, अध्ययनमें तेरा मन नहीं लगता, यह क्या तुझे शोभा देता है? जिस कामका बीड़ा उठाया है उसे पूरा कर। अभी सेवाग्रामको भूल जा। शान्तिकुमारको कष्ट न देने का तेरा दृढ़ निश्चय मुझे अच्छा लगा। लेकिन पैसोंके अभावमें तेरी पढ़ाई बिलकुल नहीं बिगड़नी चाहिए। तुझे तो यह संकल्प करना ही है कि तुझे खूब मेहनत करके पास होना है। ऐसा नहीं हुआ, तो यहाँ पढ़ने में जो तीन महीने तूने बिताये उन्हें व्यर्थ बीता मानूँगा और मुझे इस बातका दुःख होगा कि मैंने तुझे आने दिया।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३८१) से। सी० डब्ल्यू० ६६५६ से भी; सौजन्य: लीलावती आसर

१. गुणोत्तम हठीसिंह

२३५. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

६ जुलाई, १९४१

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र आज मिला। तार भी कल ही मिला। इसलिए उसमें किसीका दोष न होते हुए भी, यहाँ तो शकरीबहन घबरा गई थी। मुझे तो कोई चिन्ता नही थी। तेरी खासी परीक्षा हो गई। आज यहाँ तो मौसम खुल गया है। तू अपनी तबीयत सँभालना। खानसाहब ९ को आयेंगे। आनन्दघनको[1] बहुत-बहुत राम-राम। तेरी पुस्तकका प्रबन्ध कर दिया है। उम्मीद है चोखावालाकी तबीयत ठीक होगी।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३२)से। सौजन्य: शारदाबहन गो० चोखावाला

२३६. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
७ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

सिर्फ एक बार छोड़कर तुम्हारे पत्र बिना नागा मुझे मिले हैं। किन्तु मेरे पत्र तुम तक नहीं पहुँचते, यह बड़े आश्चर्यकी बात है।

इसके साथ तीन पत्र व तुम्हारा तार भेज रहा हूँ, जो मैं कल भेजना भूल गया था।

जब जमनालाल यहाँ आयेंगे तो मैं उनके भोजनके बारेमें तुम्हें सूचना भेज दूँगा। किन्तु उसमें विशेष कुछ नहीं है। उन्हें जिन चीजोंकी जरूरत हो सकती है वे सब तुम्हारे पास हैं — ताजी सब्जियाँ, फल व दूध।

महादेवका कहना है कि वे १० तारीखको पहुँचेंगे। रेलवे लाइनोंमें टूट-फूट के कारण कुछ भी निश्चित नहीं है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३१) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४० से भी

१. शारदाबहनके पुत्र

२३७. पत्र : लक्ष्मी भारतीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
७ जुलाई, १९४१

प्रिय बहन,

अपनी कमजोर सेहत व अन्य परिस्थितियोंको देखते हुए तुम्हें दुबारा सविनय अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्रीमती लक्ष्मी भारती, एम० एल० ए०
मार्फत श्री एल० के० भारती
पसुमलै
मदुरै (दक्षिण भारत)

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९२६९) से। सौजन्य : एल० कृष्णस्वामी भारती

२३८. पत्र : डी० के० गोसावीको

७ जुलाई, १९४१

प्रिय गोसावी,

राजेनबाबूके आने की तिथि अनिश्चित है। वे मध्य जुलाईसे पूर्व नहीं आयेंगे। देवकीनन्दनका तर्क युक्तियुक्त होते हुए भी तसल्लीबख्श नहीं है। लेकिन राजेनबाबू तो आयेंगे ही, ऐसा मानकर तुम आ सकते हो और अपने साथ डी० को भी ला सकते हो।

तुम्हारा,
बापू

श्री डी० के० गोसावी
कांग्रेस हाउस
पूना–५

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२३५) से

२३९. पत्र : कंचन मु० शाहको

७ जुलाई, १९४१

चि० कंचन,

तेरा कार्ड मिला था। आज फिर पत्र मिला। इसलिए यह नही कहा जा सकता कि तू आलसी है। यहाँ जब तुझे आना हो, आ जाना, लेकिन वहाँ सबको सन्तुष्ट करके आना। और यहाँ आना, तो यह निश्चय करके आना कि रोऊँगी नही। हर समय प्रसन्न रहना तेरा धर्म है। हाँ, बारिश तो सब ओर खूब हुई। अब लम्बे समयतक खुला न रहे तो अच्छा हो। मुन्नालाल प्रसन्न रहता है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती कंचनबहन
मार्फत शाह मगनलाल कालिदास
वालोड, स्टेशन मढी
(सूरत), टी० वी० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२७४) से। सी० डब्ल्यू० ७१४५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२४०. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा
८ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। भाषा और लिखावट दोनों अच्छी हैं। और यदि तुम हिन्दी भी उतनी ही तेजीसे लिखती हो जितनी अंग्रेजी तब तो तुमने आश्चर्य-जनक प्रगति कर ली है।

जमनालाल आज आ गये। बहुत स्वस्थ दिखाई देते हैं। वे ज्यादासे-ज्यादा १५ तारीख तक ठहरना चाहते हैं। वे कुछ काम पूरे करना चाहते हैं। मैं नही चाहता कि वे उतावली करें।

तुम्हें अपनी प्रतिष्ठा नहीं खोनी चाहिए। सरकारी अधिकारियों द्वारा हमेशा तुम्हें विनयपूर्वक 'न' कहने की बात मुझे अच्छी नहीं लगती। यह इस बातका संकेत

है कि चूँकि तुम अब प्रकट रूपसे मुझसे आ मिली हो इसलिए तुम्हें किसीसे कुछ अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। उनके दृष्टिकोणसे विचार करने पर मैं उनके व्यवहारको उचित ही ठहराऊँगा। तुम एक साथ दो नावोंमें पैर नहीं रख सकती। उनके दृष्टिकोणसे यह ठोस दलील होगी। वे और कोई दलील दे ही नहीं सकते। लेकिन अगर तुम मुझसे सहमत नहीं हो तो तुम्हें जो ठीक लगे सो करना। क्योंकि यदि तुम अधिकारियोंको लिखती हो तो उसमें अपने-आपमें कोई दोष नहीं है। यही बात बुलके[1] मामलेमें भी लागू होती है। उसके नोटिसके बाद उन्होंने उससे उनके निर्देशोंकी प्रतीक्षा करने को कहा है। वह १० तारीख तक प्रतीक्षा करने के लिए राजी हो गई है। इसमें भी तुम्हें अपनी समझके अनुसार काम करना चाहिए।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३४१ से भी

२४१. टिप्पणी

९ जुलाई, १९४१

मैं दोनो पत्र पढ गया। करियाप्पाका दोष तो स्पष्ट है। मुन्नालाल माफी मागते है वह भी ठीक है। लेकिन मुन्नालालके पत्रमें बहुत गल्ती है। संस्थामें रहने के नालायक कोई हो नहि सकता। जगत हि तो संस्था है। जगतके बाहर कौन रह सकता है? कुटुंब भी संस्था है। वह पेटा संस्था है और कुटुंब और जगतके बीचमें हमारे जैसी संस्थाएं है। सब अपूर्ण है। जगत भी अपूर्ण—संपूर्ण संस्था जैसी वस्तु हि नहि है। क्योंकि संस्था अपूर्ण मानवीओंकी बनी हुई है। संपूर्ण एक मात्र ईश्वर है। इसलिये मुन्नालाल संस्था मात्रसे भाग नहि सकते। किसी न किसीमें तो रहना हि है।

बापु

टिप्पणीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९२) से। सी० डब्ल्यू० ७१४४ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. खुर्शेदबहन नौरोजी; देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", ४-८-१९४१।

२४२. पत्र : ईश्वरलाल व्यासको

१० जुलाई, १९४१

भाई ईश्वरलाल,

तुम्हारा सजीव पत्र पढ़ गया। अब वहाँ क्या व्यवस्था है, मुझे लिखना। जीवरामभाईके पैसे जहाँ-तहाँ पड़े हैं, उनका क्या होगा? आश्रमकी व्यवस्था कौन करेगा? नाथीबाई यहाँ आये तो मुझे अच्छा लगेगा। उनका पत्र उन्हें दे देना। जीवरामभाईका जहाँ अग्नि-सस्कार हुआ, उस जगहपर कुछ होना चाहिए। तुमने कुछ सोचा हो तो लिखना। अग्नि-संस्कार कहाँ हुआ? कुछ फूल बचाये हैं या सब समुद्रमें विसर्जित कर दिये? जीवरामभाईने जो बीज बोये हैं, उस सबमें से विशाल वृक्ष प्रस्फुटित हो, तभी कहा जायेगा कि हमने, जो उनके पीछे रह गये हैं, उन्हें शोभान्वित किया।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०५९)से

२४३. पत्र : सी० ए० तुलपुलेको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
११ जुलाई, १९४१

प्रिय मित्र,

गांधीजी को आपका ९ तारीखका पत्र मिला। जबतक आपकी तकलीफ[2] पूरी तरह दूर न हो जाये, आपको जेल जाने का विचार नहीं करना चाहिए। उस समय तक जो भी रचनात्मक कार्य आपके सामने आये, आप उसे ही करें।

हृदयसे आपका,
महादेव देसाई

श्रीयुत सी० ए० तुलपुले, एडवोकेट
तिलक रोड
पूना

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० २९०२)से। सौजन्य: सी० ए० तुलपुले

१. देखिए पृ० १४१-४२ भी।
२. श्री तुलपुले हृदय-रोगसे पीड़ित थे।

२४४. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

११ जुलाई, १९४१

चि० मुन्नालाल,

मनुष्यके रूपमें सम्पूर्णता प्राप्त कर लेनेवाला व्यक्ति भी ईश्वर नहीं बन सकता। देहधारी कृष्णको भी बुरी मौत मरना पड़ा था।[1] वे पुरुषोत्तम भले हों, ईश्वर नहीं थे। जैसे मेंढक मेंढकके रूपमें सर्वोत्तम हो सकता है, ऐसा ही मनुष्यके बारेमें समझना चाहिए। इसलिए मनुष्यकी सभी संस्थाएँ अपूर्ण ही रहेंगी।

लेकिन अगर तुम इस संस्थासे घबराते हो, तो तुम्हें इसे छोड़ देना चाहिए। मैंने तो इतना ही कहना चाहा था कि संस्था-मात्रके बारेमें तुमने जो लिखा है, वह अज्ञानसे भरा हुआ है।[2]

कुटुम्ब नामकी संस्थामें तुम बने रहो, यह तो मेरे मनकी बात जरूर होगी। कंचन बेचारी तो यही चाहती है। उसने यह सुख तो देखा ही नहीं। यह सुख उसे दो और उसे सन्तुष्ट करो।

यहाँ तो स्वतन्त्रता है ही। जितनी स्वतन्त्रताका उपभोग तुम यहाँ करते हो, उतनी तुम्हें अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगी, यह मेरा निश्चित मत है। अगर तुम गहराईमें उतरकर विचार करो, तो समझोगे कि जितनी स्वतन्त्रता तुम अपने लिए चाहते हो, उतनी तुम्हें दूसरेके सम्बन्धमें सहन नहीं होती। करियाप्पाने मजबूरी बताई, यह उसकी गलती थी; लेकिन उसकी यह स्वतन्त्रता तुम्हें सहन करनी चाहिए थी। इसी प्रकार, निम्बारकरको न रखने की चिमनलालकी स्वतन्त्रता तुम्हें बरदाश्त करनी चाहिए; जैसे कि अपना मत प्रकट करने की तुम्हारी स्वतन्त्रता चिमनलालको सहन करनी चाहिए। निम्बारकरके साथ न्याय हुआ है या अन्याय, इसकी जाँच तो मुझे करनी है। मैं करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५१८) से। सी० डब्ल्यू० ७१४७ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

१. जब कृष्ण एक पेड़के नीचे विश्राम कर रहे थे तो एक व्याधने भूलसे उन्हें तीर मार दिया था।

२. देखिए "टिप्पणी", पृ० १७२।

२४५. पत्र : अमृतकौरको

११ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

कल मैं कुछ नहिं लिख सका। तुमारा खत तो मिला। उसका क्या उत्तर हो सकता है? भूल जाना क्या? मैंने गरम ऋतुके दो या तीन मास हि माने हैं। हां, मैं मानता हूं कि हम शरीरकी चिंता न करे। व्यक्तिओंके लिये तो बिलकुल ठीक है। लेकिन ईर्दगिर्दमें रहनेवालोंको बाझ दफा फिकर करनी पड़ती है।

यह सैलन[1] का है। वहीसे उसको थोड़ा लिखा करो। सुशीला कल दो हफ्तेके लिये डाक्तरी अनुभव लेने को गई। डा० जीवराज कल रह गये। कलकत्ता आज गये। खानसाहब आ गये हैं। आज फिर बारिश शरु हो गया है। इस वक्त विचित्र तरह कुदरत काम कर रही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८७४)से। सी० डब्ल्यू० ४२४१ से भी; सौजन्य : अमृतकौर

२४६. पत्र : वर्धाके डिप्टी कमिश्नरको

सेवाग्राम, वर्धा
१२ जुलाई, १९४१

डिप्टी कमिश्नर
वर्धा

प्रिय मित्र,

यह पत्र सेठ जमनालाल बजाज द्वारा टेलीफोनसे आपको दी गई इस सूचना की पुष्टि करने के लिए है कि श्रीयुत विनोबा भावे, जिन्हें आज ही रिहा किया गया था, इसी सोमवार, १४ तारीखको शाम ६ बजे नालवाड़ीमें पुनः सविनय अवज्ञा करेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. शैलेन्द्र चटर्जी

२४७. पत्र : मीराबहनको

१२ जुलाई, १९४१

चि० मीरा,

साथकी सामग्री[1] अन्तिम है। यह बहुत दिलचस्प है। देवताओं और मनुष्योंमें एक-जैसे गुण-दोष हैं और वे ऐसे सुपरिचित मित्र हैं जो अकसर परस्पर लड़ते रहते हैं। केवल एक अदृश्य शक्ति ही ऐसी है जो सर्वोपरि और निर्बन्ध है।

तुम कठिनाइयोंके बीचमें से अपना रास्ता बना रही हो। ज्वारके आटेकी चपातियाँ तुम आसानीसे बना सकती हो। कोशिश करो तो कामयाब हो जाओगी।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८५)से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८८० से भी

२४८. पत्र : धीरूभाई भू० देसाईको

१२ जुलाई, १९४१

चि० धीरूभाई,

अप्पासाहब लिखते हैं कि तुमने उन्हें बम्बईमें घूमने-फिरने से मना कर दिया, इसलिए वह बाहर नहीं निकलते। लेकिन मुझे तो लगता है तुम्हें उन्हें आजादीसे घूमने-फिरने देना चाहिए। उनके जैसे व्यक्ति बहुत कम हैं, इसलिए हम उन्हें सहेजकर रखें, यह ठीक नहीं है, फिर भले ही उनका खून होना हो तो हो जाये। वह जो अनुभव प्राप्त कर रहे हैं, वे अमूल्य हैं। वे अनुभव और किसी तरीके से नहीं मिल सकते। यदि यह तर्क तुम्हारे गले उतर जाये, तो अप्पाको छुट्टी दे देना। मेरा कलका पत्र[2] मिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे: भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. चुनी हुई वैदिक ऋचाओंका अंग्रेजी रूपान्तर मीराबहन समय-समयपर गांधीजी को भेजती रहती थीं। देखिए "पत्र: मीराबहनको", पृ० १३६ भी।

२. यह उपलब्ध नहीं है।

२४९. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

[१२ जुलाई, १९४१ के पश्चात्][1]

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र बहुत दिनोंके बाद मिले। तुम दोनों सुखी रहो तो मुझे कोई चिन्ता न रहे। सीता तो जब आये तब ठीक है। वहाँ भी वह पढ़ती तो रहेगी ही और प्रगति भी करेगी ही। वह भले तुम्हारे साथ रहे। वह तुम्हारी कुछ मदद भी कर सकेगी।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :][2]

यहाँ भी नेतागण जेलमें पड़े सड़ रहे हैं। विनोबा छूटनेके बाद फिर पकड़े गये।

मेढ[3] कहाँ है? मेढ और तुम, दोनों ही जोहानिसबर्गमें रहते हो, तुम दोनोंमें से कोई एक फीनिक्समें जाकर क्यों नहीं रहता? सुशीला लिखती है कि तुम उसे समाचारपत्र सीधे न भेजकर किसीके हाथ भेजते हो।[4] वह तो यह भी लिखती है कि कदाचित् वहाँ बलवा भी हो सकता है। मैं तो तुमसे केवल इतना ही कहूँगा कि तुम्हें सुशीलाके पास रहना चाहिए।

महादेवभाई तो हर तरफका दौरा करते रहते हैं। बम्बई और अहमदाबादमें तो उपद्रव होते रहते हैं। इसके अतिरिक्त . . .[5]

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९१७) से। सी० डब्ल्यू० १३३० से भी; सौजन्य : सुशीला गांधी

१. पत्रमें विनोबा भावेके जेलसे छूटने और पुनः गिरफ्तार होने के उल्लेखसे। विनोबा भावे ११ जुलाई, १९४१ को जेलसे रिहा हुए थे और अगले ही दिन फिर गिरफ्तार हो गये थे। इसके अतिरिक्त महादेव देसाई भी मईसे लेकर अगस्त, १९४१ तक लगातार दौरे पर थे।

२. यह अंश सी० डब्ल्यू० नकलसे लिया गया है।

३. सुरेन्द्र राय मेढ

४. मूल गुजरातीमें यह वाक्य कुछ अशुद्ध और अस्पष्ट है।

५. साधनसूत्रमें पत्र अधूरा है।

२५०. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

१३ जुलाई, १९४१

चि० नरहरि,

महादेव दिल्लीमें है। मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा। प्रलय उपस्थित हुआ है। कांग्रेसकी जितनी शक्ति है, वह पूरी-की-पूरी लोगोंकी मदद करने में लग जानी चाहिए, यह बात तो बिना कहे समझ लेनी चाहिए। कहाँ, कैसी और कितनी मदद दी जाये, यह सवाल पैदा होगा, लेकिन इसका निर्णय परिस्थिति देखकर और अपनी सीमाओंको ध्यानमें रखकर किया जा सकता है। स्थायी [सहायता] कोषका उपयोग तो वहाँ अवश्य ही किया जा सकता है।

दंगोंकी बात तो वहाँ लोग इस समय भूल गये होंगे। महादेव १७ को यहाँ आयेगा। तभी उसके उस तरफ जाने के बारेमें हम विचार करेंगे। मुझे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२३) से

२५१. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

सेवाग्राम, वर्धा
१४ जुलाई, १९४१

प्रिय अमला,

तुम मूर्ख हो। महादेव दिल्लीमें है। फिलहाल तो उसे यहाँ-वहाँ घूमना है। इतनी उत्कंठा किसलिए? सच्ची मित्रतामें मिलने, यहाँतक कि पत्र-व्यवहारकी भी कोई जरूरत नहीं होती। क्यों न मूक प्रेमको सँजोकर रखा जाये? अथवा तुम सदा पगली ही बनी रहना चाहती हो?

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजीसे : स्पीगल पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

२५२. पत्र : डॉ० एस० के० वैद्यको

१४ जुलाई, १९४१

भाई वैद्य,

तुम्हारा प्रमाणपत्र तो सुन्दर है। मनपर उसका कोई प्रभाव पड़ा क्या? चारों ओर फैली हुई हिंसाके बीच भी चरखा कुछ शान्ति दे पाया या नहीं? तुम्हारा व्यवसाय तो चल रहा है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७५१) से

२५३. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१४ जुलाई, १९४१

भाई बापा,

तुम्हारे लोभका पार नहीं है। तो मजेमें उसे सन्तुष्ट करो। तुम्हारा मन्त्री[1] होना उसके आड़े आयेगा, ऐसा कहाँ है? तुम और घनश्यामदास साथ गये हो, अब तो मौत ही तुम्हें अलग कर सकती है। उन्हें, और मुझे भी, तुम्हारे नैतिक बलकी, तुम्हारी आत्म-समर्पणकी शक्तिकी आवश्यकता है। मन्त्रीका पद उसका द्योतक है। जब यह पद सँभालते हुए भी तुम आदिवासियोंको जितना समय चाहो दे सकते हो, तो मैं नहीं समझता कि इस सुविधाके होते हुए भी तुम मन्त्री-पद छोड़ना चाहोगे। तुम्हारी ही खातिर तो हमने दो शब्द लिखकर वैद्यनाथ अय्यरको रोक लिया था। दूसरे लोग काम नहीं करते, ऐसा थोड़े ही था। लेकिन इस पापको धोने के लिए हमें साधु पुरुषोंका नैतिक बल चाहिए। इतना मत भूलना कि आजकल अस्पृश्यता-रूपी अधर्म धर्मके नामसे चल रहा है, जब कि आदिवासियोंके सामने यह बाधा नहीं है। लेकिन आदिवासियोंके लिए भी तुम अपने प्राण अर्पण कर दो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। हाँ, उस दूसरे कार्यसे सम्बन्ध-विच्छेद करके नहीं।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११८८) से

१. हरिजन सेवक संघका

२५४. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१५ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

तुमारा खत मिला। आज तो बिलकुल समय हि नहिं है। ज०[1] खुशीसे पहुंच गये होंगे। अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८७५) से। सी० डब्ल्यू० ४२४३ से भी; सौजन्य : अमृतकौर

२५५. पत्र : रघुनन्दन शरणको

[१६ जुलाई, १९४१ के पूर्व][2]

तुमने जैसे प्राथमिक सदस्योंका जिक्र किया है वैसे सदस्योंसे तुम्हें अपने नाम वापस लेने के लिए कहना चाहिए। यदि वे नहीं मानते तो तुम कार्रवाई कर सकते हो; किन्तु तुम्हें ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है, जिसका सीधा-सादा कारण यह है कि आजकल संस्था पूरी तरह कार्य कर ही नहीं रही है। किन्तु तुम्हें उनकी अनुशासनहीनताकी सार्वजनिक रूपसे निन्दा करनी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १८-७-१९४१

१. जमनालाल बजाज

२. यह पत्र दिनांक "नई दिल्ली, १६ जुलाई" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

२५६. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१४/१६ जुलाई, १९४१

प्रिय भगिनि,

तुमारे प्रश्न अच्छे हैं। अहिंसक युद्धमें पानीमें जहर देना या अनाज, तैल इ० जलाना निषिद्ध है और होना चाहिये। शत्रुसे असहयोग करना एक बात है और उसको नुकसान करने के लिये पानी इ० रोक लेना दूसरी बात है। असहयोगी अपने पर दुःख लाता है। जैसे वकील असहयोग करके भूखों मर सकता है। मोतीलालजी[1] ने लाखोंका त्याग किया। विद्यार्थीओने अभ्यासका त्याग किया। नोकर लोगने नोकरीका त्याग किया। आक्रमण करनेवाले से हम थोडे भागनेवाले हैं और दु:ख सहन न होने से भागे तो भी हमारी जायदाद ऐसे हि छोडकर हिजरत करेंगे जैसे दुखोबोरने[2] रूससे किया था। स्टेलिनको जो करना पडा ऐसा मौका अहिंसामें आ हि नहि सकता है।

सत्याग्रही अपना माल बचा नहि सकता है, उसके लिये जान खो सकता है। सत्याग्रही अपरिग्रही होना चाहिये। और अपरिग्रही रह कर दूसरोंकी रक्षा कर सकता है। इसीलिये मैंने कहा न कि इंग्रेज इग्लांडको लूटने दे लेकिन अपना स्वमानभंग न करें। स्वमान बचाने के लिये और प्रतिस्पर्धीको हानि न करने के कारण उसको क्षणभर अपनी जायदाद लुटा देनी पडती है। शस्त्रयुद्धमें भी हारने पर तो खो बैठेगा हि।

सरकारी पुलीसकी मदद लेने की प्रथा तो सहन की जाती है यद्यपि अहिंसाकी विरोधी है। दीवानाको जबरदस्तीसे रोक लेने में कोई दोष नहि होगा अगर उसमें रोकनेवाले का कुछ स्वार्थ नहि होगा तो। प्रत्येक ऐसा केसकी स्वतत्र परीक्षा करनी चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९८) से। सी० डब्ल्यू० ३०९५ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

१. मोतीलाल नेहरू

२. रूसका एक धार्मिक सम्प्रदाय, जिसे सबसे पहले १८ वीं शताब्दीमें प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। अब उसके अनुयायी कनाडामें बसे हुए हैं।

२५७. तार : रवीन्द्रनाथ ठाकुरको

वर्धा
१६ जुलाई, १९४१

गुरुदेव
शान्तिनिकेतन

अखबारोंकी रिपोर्टें चिन्तोत्पादक हैं। तारसे सही हालत सूचित करें।

गांधी

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० १०३१७)से। सौजन्य: विश्वभारती, शान्तिनिकेतन

२५८. पत्र : अमृतकौरको

१६ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

कल मैं तुम्हें केवल पोस्टकार्ड ही लिख पाया। ये रहे तुम्हारे शिष्योंके लिखे दो पत्र। यदि मुझे तुम्हारा सन्देश याद रहता तो वे इससे पहले लिखे गये होते। लेकिन तुम्हारे पत्र पढ़नेके बाद नष्ट कर देनेकी तुम्हारी हिदायतके कारण बातोंको याद रखना और ठीक समयपर उन्हें कह पाना मेरे लिए कठिन हो जाता है।

खान साहब अपने सारे दाँत निकलवाकर नागपुरसे लौट आये हैं। कुछ तो इतने मजबूत थे कि निकालना मुश्किल था, लेकिन बरेटो सारे दाँत निकालने पर तुले हुए थे। उन्हें काफी दर्द हुआ। आज उनकी तबीयत पहलेसे बेहतर है। ठीक होते ही वे बुलके पास जायेंगे।

महादेव कल घनश्यामदासके साथ लौट आये। घनश्यामदास आबोहवा बदलनेके लिए शनिवारको नासिक जा रहे हैं। उनका स्वास्थ्य कोई बहुत अच्छा नहीं है।

हमारी कुटियापर दीमकोंने हल्ला बोल दिया है। रानी दीमकका पता लगानेके लिए रामदास हर चीज खोद रहा है। इसका अर्थ हुआ दीवारें आदि फिरसे बनाना। इस सबके लिए और पैसा चाहिए। सोचने-भरसे परेशानी होती है!

प्रभा यहीं है और अभी कुछ दिन रहेगी। उसे जयप्रकाशके पास फिर जाना होगा।

तुम्हें सुशीलाकी परीक्षाके बारेमें चिन्ता नहीं करनी है। कर्नल ए० ने उसे लिखा है कि वह कैसे और क्यों फेल हुई और पास होनेके लिए उसे क्या करना

चाहिए। उसे रोगोंके उपचारका पर्याप्त अनुभव नहीं है। इसलिए वह पन्द्रह दिनोंके लिए बम्बई गई है। यह तो शुरुआत है। कमाई और पढ़ाई, ये दोनों काम साथ-साथ करना मुश्किल चीज है। लेकिन उसे ऐसा करना ही होगा, क्योंकि वह किसी भी हालतमें छात्रवृत्ति स्वीकार करने को तैयार नहीं है। और मामलोंकी तरह इसमें भी वह अद्भुत है। और वह विकास कर रही है। *अमतुल सलाम* पहलेसे बेहतर है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४२ से भी

२५९. पत्र : जमनालाल बजाजको

१६ जुलाई, १९४१

चि० जमनालाल,

मेरा जी तुममें ही लगा रहेगा। यदि तुम्हें वहाँ इच्छित लाभ मिले तो मुझे बहुत शान्ति मिलेगी। बहुत-कुछ तो राजकुमारीके निर्मल प्रेमपर निर्भर है। लेकिन तुम्हारी मानसिक दृढ़ताका भी उसमें योगदान होगा। खाने में या और किसी चीजमें कुछ परिवर्तन करना हो तो मुझे लिखना या तार देना।

मदालसा आज मीराबहनके पास रह गई है। उसकी भावनाएँ तो बहुत ऊँची हैं। उसका शरीर ठीक हो जाये और प्रसूति निर्विघ्न हो जाये तो मेरा विचार है कि वह जरूर चमकेगी। विनोबाका शिक्षण सफल होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

खान साहबके सारे दाँत निकाल दिये गये हैं।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०१६) से

६०. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
१७ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

हाँ, तुम्हें जवाहरलालसे मिलने २४ तारीखको जाना चाहिए। महादेवका कहना है कि नन्दन २९ तारीखको नहीं जा रहा है।

आशा है कि जमनालाल वहाँ सकुशल पहुँच गये होंगे। हालांकि मैंने तार देने को नहीं कहा था फिर भी उसकी अपेक्षा रखता हूँ।

अब तुम्हें गर्मीके मौसमके बारेमें पता चल गया होगा। जिस तरहकी चिन्ता मुझे तुम्हारे बारेमें रहती है वैसी दूसरोंके बारेमें नहीं रहती, क्योंकि तुम्हें लेकर शम्मीके प्रति, जिसे तुम्हारा मेरे साथ रहना पूरी तरह पसन्द नहीं है, मेरी एक जिम्मेदारी है। मुझे चिन्ता इसलिए होती है कि किस समय तुम्हारे प्रति मेरा क्या कर्त्तव्य है, इसका मुझे सदा स्पष्ट भान नहीं होता। लेकिन इसका कोई महत्त्व नहीं है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४४) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८७६ से भी

२६१. पत्र : दुनीचन्दको

१७ जुलाई, १९४१

प्रिय लाला दुनीचन्द,

आपने जिन परिस्थितियोंका उल्लेख किया है, उनको देखते हुए मैं आपसे सहमत हूँ कि आपके सामने कांग्रेसके सभी उत्तरदायी पदोंसे इस्तीफा दे देने के अलावा और कोई चारा नहीं है। ४० वर्ष तक अविराम सेवा करनेके बाद अब आप विश्रामके अधिकारी हैं।

जहाँतक अहिंसा, सत्याग्रह आदिके सम्बन्धमें आपके दृष्टिकोणकी बात है, हमें आपसी मतभेदोंको बर्दाश्त करना होगा।

आपने जिस प्रसंगका उल्लेख किया है, उसमें असत्याचरणका कोई सवाल नहीं उठता। यह तो मूलतः आपके अपने ही क्रियाकलापकी व्याख्याका प्रश्न है। मैं

तो यह सब भूल चुका था। निःसन्देह आपकी पत्नीको आपके साथ रहना ही चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५९३) से

२६२. पत्र : नारणदास गांधीको

१७ जुलाई, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारे पत्रका उत्तर मैं आज ही दे पाया हूँ। तुम्हारा मसौदा मुझे पसन्द नहीं आया। इसलिए अपनी पसन्दका पत्र मैंने जीवनजी को भेजा है। उसकी नकल इस पत्रके साथ है।[1] होना होगा तो उसी पत्रसे सारा प्रयोजन सिद्ध हो जायेगा।

मेरा कातना तो निरन्तर चल ही रहा है। कमसे-कम ७५ तार कातने का प्रयत्न करता हूँ। मैं ७२ दिन तक यह प्रयत्न करूँगा। इससे आगे बढ़ने की मेरी हिम्मत नहीं होती।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

'खादी पत्रिका' में तो तुम्हारा वक्तव्य प्रकाशित होगा ही। मेरी टिप्पणी[2] भी।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू० / २) से। सी० डब्ल्यू० ८५८५ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. यह उपलब्ध नहीं है।
२. देखिए "रेंटिया बारस", पृ० १५०।

२६३. पत्र : सुरेश सिंहको

१७ जुलाई, १९४१

भाई सुरेश[1],

तुमने प्रश्न ठीक पूछा है। मुझे कुछ भी कहने का उत्साह नहिं होता है। ऐसे काममें मैंने जवाहरलालको प्रधानपद दिया है, वह तो है नहिं। जो उनकी नीति वह कांग्रेसकी नीति थी। वह जेलमें होने से मेरी बुद्धि इसमें नहिं चलती है। रूस स्पेन, चीन जैसा देश नहिं है। इंग्रेज तो मदद दे हि रहे हैं। स्टेलीन और लेनिनमें मैं बड़ा फरक पाता हूं। लेनिनका रूस आज नहिं रहा है। लेकिन यह तो गुण-दोष देखने की बात हुइ। यह निरीक्षणमें मेरी गलती भी हो सकती है। जब तक मैं हृदयसे कुछ न कर सकुं तब तक मौन रखना हि मेरे स्वभावको अनुकूल है। अलसर दुरस्त हो गया होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६९२) से

२६४. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा
१८ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

जहाँतक सम्भव हो, मैं तुम्हें एक-दो पंक्तियाँ रोज लिख देना चाहता हूँ, किन्तु कई बार यह सर्वथा असम्भव हो जाता है।

जमनालालकी सकुशल पहुँचका तुम्हारा तार मुझे मिला। मै आशा करता हूँ कि सब ठीक ही होगा।

मेरा वजन ९९½ व रक्तचाप १६०-९४ है। रक्तचाप रातको बढ़ जाता है। किन्तु फिर भी मैं बिलकुल ठीक हूँ।

शेष समाचार महादेवसे।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८७७ से भी

१. कालाकांकर रियासत (उत्तर प्रदेश) के कुँवर सुरेश सिंह

२६५. पत्र : विजयराघवाचारीको

१८ जुलाई, १९४१

प्रिय मित्र,

निःसन्देह, मैं आपके स्वास्थ्यके बारेमें पूरी जानकारी चाहता हूँ, क्योंकि मेरी कामना है कि आप पूरे सौ साल अच्छी तरह और स्वस्थ रहते हुए जियें। परन्तु मेरे द्वारा किये गये किसी कार्यकी स्मृतिको चिरस्थायी बनाने में मुझसे सहयोगकी अपेक्षा मत कीजिए। मैं जो कार्य करता हूँ, यदि उनमें जीवन-शक्ति नहीं है तो उन्हें नष्ट हो जाने दीजिए। और यदि है, तो फिर उन्हें किसी सहारेकी क्या आवश्यकता है?

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे। सौजन्य : नारायण देसाई

२६६. पत्र : मोतीलाल रायको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१८ जुलाई, १९४१

प्रिय मोती बाबू,

आपका शीघ्रतासे भेजा गया उत्तर पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। संघके कानूनी सलाहकारोंका आग्रह है कि प्रॉमिसरी नोटका होना आवश्यक है। अत: कृपया आप प्रॉमिसरी नोट भेज दें।

मैं श्री जाजूजीसे कह रहा हूँ कि आप अ० भा० चरखा संघका प्रमाणपत्र पाने के इच्छुक हैं और रहे हैं तथा उसके लिए जो सामान्य शर्तें हैं उनका पालन करने के लिए भी तैयार हैं।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[पुनश्च :]

आशा करता हूँ कि आपकी आँखें ठीक हो सकेंगी। आप और संघ इतने अभिन्न बन गये हैं कि उससे आपके नाममात्रको अलग होने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०५५) से

१. देखिए पृ० १४२ भी।

२६७. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१९ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

तुम्हारा छोटा-सा पत्र मिला।

तुम्हें भरपूर काम मिल गया है। परमात्मा तुम्हें पूर्ण सफलता दे। आशा है, तुम्हारी दाँतकी तकलीफका पूरी तरह इलाज होगा। महादेव बम्बई जाने की तैयारी कर रहा है। आज और ज्यादा लिखना सम्भव नहीं है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४६) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८७८ से भी

२६८. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

१९ जुलाई, १९४१

चि० मुन्नालाल,

अपनी तबीयतकी ओर पहले ध्यान देना चाहिए, बादमें और सब बातोंकी ओर। ग्रामसेवाका अभ्यास-क्रम ठीक है। लेकिन उसका आरम्भ तुम्हें स्वयं व्यवस्थित तथा दृढ़निश्चय होने से करना चाहिए।

वेद आदिका अध्ययन करना चाहो तो करो, लेकिन सेवाधर्मको जानना और उसका पालन करना, यही सच्चा अध्ययन है।

रहने के लिए तो मैंने कहा ही है कि जहाँ कहो व्यवस्था कर दूँ। खर्चेका प्रश्न उठता है क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५२०) से। सी० डब्ल्यू० ७११६ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

२६९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२० जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

वहाँ जमनालालके पहुँचने के बाद तुम्हारा यह पहला पत्र है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि शिमलाके मौसमसे उन्हे कोई परेशानी नही होगी।

यहाँ सब ठीक है। आज यहाँ कंचन व कुसुम आ गई है। शेष प्रभा लिखेगी।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८७९ से भी

२७०. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२० जुलाई, १९४१

तुम्हारा यह पत्र[1] ठीक है। खरीदारीके लिए वर्धा जाने का लोभ छोडना। वह तब करना जब तबीयत ठीक हो जाये, क्योंकि वह काम तुम अच्छी तरह कर सकते हो। अभी तो मेरे कहे अनुसार बस खेतमें ही काम करो। वह भी जितना बने उतना ही। उससे स्वास्थ्य सुधरेगा। चिन्ता मात्र छोड़ दो। अधिकतर दूध-दहीपर निर्वाह करो। फल जो भी मिल सके, खाओ। रोटी कम ही खानी चाहिए। साग-भाजी खूब।

तुम्हारा दूसरा पत्र सुन्दर है। काम करके, सेवा करके निःस्वार्थ भावसे जो विश्वास उत्पन्न किया जाता है, वही सच्चा होता है। इसकी कुंजी "आत्मवत् सर्वभूतेषु" में है। इतना हृदयमें बैठ जाये तो दुःख कोई नही। तुम्हारे खर्चके बारेमें मेरी योजना यह है। मैं चाहता हूँ कि जो पैसे तुम्हारे खातेमें जमा हैं, बड़े-बड़े खर्चोंके लिए उन्हें निकालकर आखिर उन्हें बिलकुल खत्म कर दिया जाये। एक बार वे समाप्त हुए कि तुम दोनोंकी प्रगति चुटकियोंमें होगी। जबतक वे हैं तब तक परिग्रह है, तबतक 'मेरापन' है। यह ठीक है कि तुम दोनोंने वे पैसे लगभग

१. १९ जुलाईका, जिसके ठीक नीचे गांधीजीका यह पत्र लिखा मिला है।

दान कर दिये हैं; फिर भी, वे तुम्हारे हैं, यह भान घातक है। यह भेद अगर समझमें न आये, तो पूछना।

कंचन आई है, इससे तुम्हारे मनमें जरा भी विक्षोभ उत्पन्न नहीं होना चाहिए। वह आई, यह तो अच्छा ही हुआ। लेकिन उसपर मेरा अधिकार है, यह धारणा अपने मनसे निकाल दो। घर देरसे बसाओ, तब भी यदि यह मानो कि वह भी तुम्हारे समान ही स्वतन्त्रताकी अधिकारिणी है, तो उसके किसी कृत्यसे तुम्हें कोई रोष नहीं होगा। वह तुम्हारी जो सेवा करे, उसे स्वीकार भले करो, लेकिन यदि वह कम करे, तो तुम्हे बुरा नहीं लगना चाहिए। उसका भी विश्वास प्राप्त करना तुम्हारे लिए आवश्यक है न? तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहने के लिए तुम्हारा निरन्तर प्रसन्न रहना जरूरी है। इस बातको समझना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५१९) से। सी० डब्ल्यू० ७११७ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

२७१. पत्र : सर्वपल्ली राधाकृष्णन्‌को

सेवाग्राम, वर्धा

२१ जुलाई, १९४१

प्रिय सर राधाकृष्णन्[१],

मैं देखता हूँ कि आपकी गहन और व्यापक ज्ञान-साधनामें याचनाकी कलाका कोई स्थान नहीं था। उस कलामें मालवीयजी बेजोड़ हैं। आप तो उनके नामसे ही माँगेंगे। क्या आप सोचते हैं कि मेरी सिफारिशका कुछ अधिक प्रभाव होगा? अपनी स्वाभाविक विनम्रताके कारण आप यह देख नहीं पाते कि मुझसे परिचय-पत्र लेने की आपको कोई जरूरत पड़ ही नहीं सकती। आपने जिन मित्रोंका जिक्र किया है, उनमें से कुछसे शायद मैं मिला भी नहीं हूँ। खैर, यदि मेरी सिफारिशका कुछ भी उपयोग हो सके, तो आप कृपया इस पत्रको इस्तेमाल कर लें और जिन मित्रोंसे भी आप मिलें उन्हें बता दीजिए कि मैं धनवान लोगोंका यह कर्त्तव्य समझता हूँ कि वे आपके द्वारा उल्लिखित कर्जेकी अदायगीके लिए दिल खोलकर पैसा दें और इस तरह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके बारेमें मालवीयजी महाराजको चिन्तासे मुक्त कर दें। मुझे पूरी आशा है कि आप अपने उद्देश्यमें पूर्णतया सफल होंगे।

आप जानते हैं कि आप जब भी आ सकेंगे आपका स्वागत होगा।

१. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके तत्कालीन उप-कुलपति

सुन्दरम विश्वविद्यालयके लिए चन्दा इकट्ठा करने का काम करते रहे हैं। उनकी सेवाओंका उपयोग क्यों नहीं करते?

मेरे स्वास्थ्यका हाल पूछने के लिए धन्यवाद। मैं स्वस्थ हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

मूल अंग्रेजीसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२७२. पत्र : अमृतकौरको

२१ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

तू, तुम, आप एक हि बात हो जाते हैं अगर मनमें भाव एक है तो। अगर भाव[1] दूसरा है तो जो-कुछ कहो निरर्थक होता है। हिन्दीमें बोलने की और लिखने की मुझे तो मनाइ है न? अगर छुटसे हिंदीमें व्यवहार हो जाय तो 'तू' स्वाभाविक बन जाय। क्यों?[2]

मैंने आज तुम्हें तार दिया है, जिसमें तुमसे आगराके कैदियों[3] के बारेमें संयुक्त प्रान्त सरकार, अर्थात् मूडी[4] को तार देने के लिए कहा है। उन्हें अविवेकी अथवा कंजूस नहीं होना चाहिए।

यहाँ भणसाली[5] गठियासे पीड़ित हैं। वे उपवास कर रहे हैं और इसलिए आज बेहतर हैं। वीरम्मा अपने भावी पतिसे किसी बातपर नाराज होकर परमैंगनेट खा गई। लेकिन समयपर पता चल गया और उसे बचा लिया गया।

जमनालालजी को अत्यन्त साधारण सब्जियाँ खानी चाहिए, स्टार्चवाली और तली हुई चीजें बिलकुल नहीं।

मैंने तुम्हें एक महीनेका समय दिया था। तुम्हारी राय थी कि कमसे-कम दो महीने होने चाहिए। इसलिए तुम अगस्तके अन्ततक रह सकती हो। लेकिन यदि जमनालालके स्वास्थ्यमें अच्छी प्रगति हो और उनकी खातिर ज्यादा देरतक

१. साधन-सूत्रमें 'भाज' है, जो भूलसे लिखा गया जान पड़ता है।
२. यह अनुच्छेद हिन्दीमें है।
३. ये कैदी भूख-हड़ताल कर रहे थे, जो २३ जुलाईको समाप्त हुई।
४. सर फ्रांसिस मूडी, मुख्य सचिव (कार्यवाहक), संयुक्त प्रान्त
५. जयकृष्ण प्रभुदास भणसाली

रुकना जरूरी हो तो बेशक तुम रुकना। यदि वे शरीर, मन और आत्मासे सशक्त बन जाते हैं तो वहाँ अधिक समयतक रुकना सार्थक होगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४८) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८८० से भी

२७३. पत्र : जमनालाल बजाजको

२१ जुलाई, १९४१

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी प्रार्थना तो जारी है ही, और तुम्हारे प्रयत्नपर भी मेरी श्रद्धा है। फिर, राजकुमारीका सत्संग है तथा और सब प्रकारसे भी वहाँ का वातावरण शुद्ध है। इसलिए मैं तो वहाँ तुम्हारे निवाससे बड़ी आशा किये बैठा हूँ। मदालसा खूब खुश है। वह ठीकसे खाती है। कुँवारका पाक उसे अच्छा लगता है। मैंने उसे यह पाक जितना चाहे खाने की छूट दे दी है। वह जो-कुछ खाती है, ठीक स्वादसे खाती है। जानकी देवी भी प्रसन्न रहती हैं, इसलिए इस ओर तो सब प्रकारसे कुशल है।

घनश्यामदास परसों गये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०१८) से

२७४. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२१ जुलाई, १९४१

गाँवके लोगोंके बारेमें अन्तमें जो मार्ग बताया है, वही ठीक है। यदि हम इनके भीतरी झगड़ोंमें पड़ेंगे तो इनकी सेवा ही नहीं कर सकेंगे। इसलिए जो गरीब से भी गरीब है, उसकी जितनी बने मूक सेवा करो। वह फलवती हुए बिना नहीं रहेगी। इसी उद्देश्यसे मैंने वह एक-दो लड़कोंका सुझाव दिया था। उन्हें गढ़ते-गढ़ते तुम स्वयं गढ़ जाओगे और दूसरोंकी सेवा करना सीख जाओगे।

हमारे रहन-सहनका पंचायतपर जो प्रभाव पड़ना हो पड़ा करे। कृष्णदास और चिमनलालसे मैं कहूँगा तो जरूर, लेकिन सब-कुछ तुम्हारी सरलता और मिठास

पर निर्भर होगा। दूधमें जैसे चीनी घुल जाती है, वैसे तुम यहांके समाजमें घुल-मिल जाओ, तो तुम्हारा काम तीव्र वेगसे प्रगति करेगा।

परिग्रहके बारेमें जो तुम लिखते हो ठीक है। जमीन आदि सभीका समावेश उसमें होता है। यदि तुम समस्त व्यवसायों तथा स्वत्वोंसे मुक्त हो जाओ, तो फूल-जैसे हलके हो जाओगे।

इस तरह, लगता है, तुम्हारे सब प्रश्नोंका उत्तर दिया जा चुका है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५१६)से। सी० डब्ल्यू० ७१४८ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२७५. पत्र : नारणदास गांधीको

२१ जुलाई, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारे पत्रका उत्तर दे चुका हूँ। काम ठीक ढंगसे चल रहा है। अवश्य फलदायी होगा।

चि० छगनलालके[1] बारेमें हम सबको लगा कि उसके बीजापुरमें रहने से नुकसान ही होगा। अब उसे कोई निर्धारित काम नहीं करना चाहिए। वह या तो यहाँ कृष्णाके[2] पास रहे या प्रभुदासके[3] पास या राजकोटमें तुम्हारे पास। ऐसा होने से काशी[4] भी स्वतन्त्र रह सकेगी और छगनलाल भी अकेलेपनका अनुभव नहीं करेगा। प्रभुदासने, कृष्णदासने और बहुत करके काशीने भी तथा मैंने भी, हम सबने स्वतन्त्र रूपसे यह अनुभव किया है कि बीजापुर अब उसके लिए नहीं रहा। लेकिन यदि यह योजना छगनलालको पसन्द न हो, तो मैं उसे जबरदस्ती और कहीं बिलकुल नहीं भेजना चाहता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५८६ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. छगनलाल गांधी, नारणदास गांधीके बड़े भाई
२. कृष्णदास, छगनलाल गांधीके पुत्र
३. छगनलाल गांधीके पुत्र
४. छगनलाल गांधीकी पत्नी

२७६. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२१ जुलाई, १९४१

बापा,

मैसूर कांग्रेससे जितनी मदद हमें लेनी हो, लें, और उसकी जितनी मदद करनी हो हम करें। आखिर उसकी नीति तो जो है वही रहेगी। यहाँ भी हम, जहाँ जरूरत होती है, कांग्रेसकी मदद लेते हैं या उसकी मदद करते हैं। इस प्रकार मुझे सन्तोष है कि कांग्रेसी ही हमारी ज्यादासे-ज्यादा मदद करते आये हैं। हम उनकी अन्य प्रवृत्तियोंसे अछूते रहें तो काफी है। इसमें तुम्हें और कोई सन्देह होता है क्या?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११८९)से

२७७. पत्र : दिलखुश दीवानजीको

२१ जुलाई, १९४१

भाई दिलखुश,

'कांतण प्रवेशिका'[1] ध्यानपूर्वक पढ़ गया। नाम ठीक नहीं है। यह 'प्रवेशिका' नहीं है। जिसने प्रवेश कर लिया है, उसे यह उपयोगी सुझाव देती है। इसलिए मैं तो इसे 'कांतनारने उपयोगी सूचनो'[2] अथवा 'कांतनारने'[3] नाम दूँगा।

तुम्हारे सुझावोंमें बहुत-कुछ अधूरा है। तुमने मान लिया है कि तकुआ टेढ़ा है या नहीं अथवा उसकी नोक ठीक है या नहीं, यह कातनेवाला बराबर समझ जाता है। मेरा अनुभव है कि १०० में से ९५ यह नहीं समझ पाते। इसलिए तकुआ टेढ़ा कैसे जाना जाता है या नोक ठीक कैसे मानी जाती है, यह समझाना चाहिए। इसी प्रकार अच्छी पूनीकी पहचान आदि सब बातें बतानी चाहिए।

१. कताई प्रवेशिका
२. कातनेवाले के लिए उपयोगी सुझाव
३. कातनेवाले के लिए

[सूतका] अंक निकालने की तीसरी और सरलसे-सरल रीति वह नहीं है जो तुमने बताई है। इकन्नीके वजनके सूतमें जितने तार हों, उतने अंक मानना चाहिए। तुमने जो रीति बताई है उसमें इसका समावेश तो हो जाता है, लेकिन नौसिखियोंको यह बात सूझेगी नहीं। मुझे तो अनुभवसे यह अपनी सुझाई रीति सबसे सरल लगी। यरवडामें रोज अपने सूतके अंक निकालते-निकालते मुझे उपरोक्त रीति सूझी थी।

तुम नारियलका तेल काममें लाने की बात लिखते हो। मेरा अनुभव है कि नारियलके तेलसे भी बास आने लगती है और उसपर चींटियाँ भी आने लगती हैं। मैं तो नारियलके तेलमें एक-चौथाई या कुछ ज्यादा मिट्टीका तेल मिलाता था। इससे चींटियाँ नहीं आतीं और तेलमें कचरा भी कम जमा होता है।

इतने पर से अन्य सुधार तो तुम्हें अपने-आप ही सूझेंगे। मनमें तो और बातें भी उठी थीं, लेकिन इस समय वे कलमपर नही उतर रही। इतना कहने के बाद मेरी यह राय तो है ही कि तुम्हारी पुस्तिका सुन्दर है। वह पूर्ण हो जाये, इस उद्देश्यसे उपरोक्त सुझाव दिये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २६४९) से

२७८. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
२२ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

मुझे तुम्हारा एक और लम्बा पत्र मिला। मुझे तुम्हारी समझदारी और विवेकशीलता पर पूरा भरोसा है। शम्मीके मजाक उड़ाने के बावजूद टेनिस खेलने के बारेमें मेरी वही सलाह है। उनका खेलना पेशेवर खिलाड़ियोंके-जैसा तो नहीं होगा, किन्तु वे बल्लेसे गेंदको उछालकर तो तुम सबका मनोरंजन कर सकते हैं। मतलब तो सिर्फ इतना है कि वे खुली हवामें आधा घंटा खालिस मनोरंजनमें बितायें।

उनके पास कामसे मिलने आनेवालोंको अधिक संख्यामें मत आने दो।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३४) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३४३ से भी

२७९. पत्र : अनन्तराय ठक्करको

सेवाग्राम, वर्धा
२२ जुलाई, १९४१

भाई अनन्तराय[1],

जिस तरह मुझे किसी अंग्रेज युवक द्वारा गुजरातीमें लिखने की बात पसन्द नहीं है उसी तरह मुझे तुम्हारा अंग्रेजीमें लिखना नापसन्द है। दोनों ही अपना फर्ज भूल गये हैं। बहरहाल अब सब-कुछ खत्म हो गया। लेकिन तुम्हारा पत्र पढ़ने के बाद मुझे रुलाई आने लगी। तुमने जहरके प्यालेमें कलम डुबोकर लिखना शुरू किया और अन्तमें सारा जहर उँड़ेल दिया। यह सब क्यों? मुझे विश्वास था कि डॉ० अरुण्डेल अवश्य आयेंगे। यदि आते, तो वे निश्चय ही अंग्रेज़ीमें बात करते। मैंने विश्वनाथदासको बहुत हिचकके साथ अंग्रेजीमें बात करने की अनुमति दी थी, लेकिन डॉ० अरुण्डेलको मैं सहर्ष अंग्रेजीमें बात करने देता। इसमें सन्देह करने का तुम्हारे पास कोई ठोस कारण नहीं हो सकता। मेरे मनमें डॉ० अरुण्डेल अथवा किसी अंग्रेज के प्रति कोई वैरभाव नहीं है। जनरल डायरके प्रति भी मेरे मनमें कोई वैर-भाव न था और श्रीमती एनी बेसेन्टका तो मैं उपासक था। मैं तो उस समय ही उनका भक्त बन गया था जब कदाचित् तुम पैदा भी नहीं हुए थे। यह १८८९-९० की बात है। लेकिन यदि उस समयतक तुम्हारा जन्म हो चुका हो तो मुझे क्षमा करना। मुझे उस बैठककी कोई स्मृति नहीं है जिसमें श्री अय्यंगार भी उपस्थित थे। श्रीमती एनी बेसेंटकी प्रतिमा स्थापित किये जाने की बातका भला मैं क्यों विरोध करने लगा? मुझे इस बारेमें कुछ भी याद नहीं है। तुम्हारे पास जो प्रमाण हैं यदि वह तुम मुझे दोगे तो तुम्हारा आभार मानूँगा।

अन्तमें तो तुम सीमाका अतिक्रमण कर गये हो। अपने लोगोंको बुरा-भला कहते हुए तुमने जैसी अंग्रेजीका प्रयोग किया है उससे तो तुमने अंग्रेजी भाषाका ही अपमान किया है। कदाचित् तुम गुजरातीमें इतना जहर नहीं उँड़ेलते।

चूँकि तुम्हारे परिवारके साथ मेरे अच्छे सम्बन्ध हैं, इसलिए तुम्हारे पत्रसे मुझे आघात पहुँचा है। तुम्हारा पत्र अविनय और अज्ञानसे भरा हुआ है। मेरे पत्रको ध्यानसे पढ़ जाना और ईश्वरसे प्रार्थना करना कि वह तुम्हारे अज्ञानको दूर करे।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
महात्मा, जिल्द ६, पृ० ४८ और ४९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१. एक थियोसॉफिस्ट

२८०. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको[1]

सेवाग्राम
२२ जुलाई, १९४१

भाई घनश्यामदास,

'बापू' अभी पूरी की। दो तीन जगह हकीकत दोष है। अभिप्रायको हानि नहिं पहूंचती है, निशानी की है।

बछड़ाके बारेमें जो दलील की है वह कर सकते हैं। लेकिन उसमें कुछ मौलिक दोष पाता हूं। रावणादिके वधके साथ यह वध किसी प्रकार मिलता नहिं है। बछड़े के वधमें[2] मेरा कुछ स्वार्थ नहिं था, केवल दुःख-मुक्त करना हि कारण था। रावणादिके वधमें तो मौलिक स्वार्थ था, पृथ्वी पर भार था उसे हलका करना था। उसका संहारक साक्षात राम रूपी ईश्वर था। यहां तो संहारक कोई काल्पनिक अवतार न था। मेरा तो कथन यह है कि मेरी हालतमें सब कोई ऐसा कर सकते हैं। अंबालालने ४० कुत्तोंको मेरी प्रेरणा या प्रोत्साहनसे मारे। इसमें लौकिक कल्याण था सही, लेकिन इसमें और रावणादिके वधमें बड़ा अन्तर है। और मैंने तो इन चीजोंका अलग अर्थ किया है। उसकी चर्चा वहां आवश्यक थी। ज्यादा और कोई समय आवश्यक समजा जाय तो। भाषा मधुर है। कोई जगह दलीलकी पुनरुक्ति हो गई है। यह काम प्रुफ सुधारमें हो सकता था। उससे भाषाके प्रवाहमें कुछ क्षति नहीं आती। शायद दूसरे तो इस पुनरुक्तिको देख भी नहि सके होंगे।

अब तो तबीयत अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०४६)से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. यह पत्र बापूके संशोधित संस्करणमें प्रकाशककी एक टिप्पणीके साथ दिया गया है।

२. देखिए खण्ड ३७, पृ० ३२३-२७।

२८१. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको

२२ जुलाई, १९४१

जिस समय मैं गांधीजी से मिलने गया वे चरखा चला रहे थे। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने सरकारी विज्ञप्ति[1] पढ़ी है, तो उन्होंने कहा कि नहीं पढ़ी है। उन्होंने मुझसे उसे पढ़ कर सुनाने को कहा। मैंने गांधीजी को विज्ञप्ति पढ़कर सुनाई, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद्के सदस्योंकी सूची भी थी। जब मैं विज्ञप्ति पढ़ रहा था, गांधीजी बराबर चरखा चलाते रहे, बीच-बीचमें वे सूत लपेटने के लिए थोड़ी देर रुक जाते थे। जब मैंने पढ़ना खत्म किया तो गांधीजी ने मेरी ओर देखा और जोरसे हँसते हुए पूछा कि क्या मैंने पूरी विज्ञप्ति पढ़ डाली। मैंने कहा कि हाँ, मैंने पूरी विज्ञप्ति पढ़ डाली है, और उनसे पूछा कि क्या वे उसके बारेमें कुछ कहना चाहेंगे। गांधीजी बोले कि उन्हें कोई वक्तव्य नहीं देना है। उन्होंने कहा :

मैं तो [इस विषयमें] मौन रखना चाहूँगा — सोमवारवाला मौन — भले ही इसका कुछ भी अर्थ क्यों न हो और आप समाचारपत्रोंमें ऐसा कह सकते हैं।

यह पूछने पर कि क्या इसका मतलब यह है कि उन्हें इस घोषणामें कोई दिलचस्पी नहीं है, उन्होंने कहा :

मैं ऐसा नहीं कह सकता। यह तो शेखी बघारना होगा।

तब मैंने गांधीजी को एक कागज दिया, जिसमें मैंने पहलेसे कुछ प्रश्न लिख रखे थे। गांधीजी ने उन प्रश्नोंको पढ़ा और बोले :

मैं इनमें से कुछ प्रश्नोंके जवाब दे सकता हूँ। लेकिन मैं नहीं जानता कि उससे क्या फायदा होगा।

मेरे यह आग्रह करने पर कि वे जो-कुछ कहना चाहते हों, कहें, गांधीजी ने मेरे पहले सवालका जवाब दिया। मेरा सवाल यह था कि क्या भारत सरकारकी घोषणाका कांग्रेसके रुखपर कुछ असर पड़ेगा और उससे क्या कांग्रेसकी माँग किसी हदतक पूरी होती है?

कांग्रेसने जो रुख अपनाया है उसपर इस घोषणाका कोई असर नहीं होगा और इससे कांग्रेसकी माँग जरा भी पूरी नहीं होती।

१. यह विज्ञप्ति भारत सरकार द्वारा २१ जुलाईको शिमलासे जारी की गई थी। इसमें वाइसराय की कार्यकारिणी परिषद्के विस्तार और एक राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद्का गठन किये जाने की घोषणा थी।

मेरे अगले सवालके जवाबमें, जिसमें मैंने पूछा था कि यदि अ० भा० कां० कमेटीके सदस्योंको जेलसे रिहा कर दिया जाता है तो क्या उन्हें देशमें हालमें हुई घटनाओंको ध्यानमें रखते हुए वर्त्तमान स्थितिपर विचार करने दिया जायेगा, गांधीजी ने कहा :

मेरे खयालसे आपका आशय यह है कि क्या मैं अ० भा० कां० कमेटीके सदस्योंको, यदि उन्हें रिहा कर दिया जाता है तो, वर्त्तमान स्थितिपर विचार करने दूँगा। यदि आपके कहने का आशय यही है तो मैं विना किसी हिचकके यह कह सकता हूँ कि अ० भा० कां० कमेटीके सदस्योंको कुछ भी करने से रोकने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। अ० भा० कां० कमेटीने मुझे जो अधिकार दिया है वह मुझे उसके सदस्योंकी पूर्ण स्वतन्त्रतामें हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं देता। और हर हालतमें जिस संस्थाने मुझे अधिकार दिया है वह किसी भी समय उससे इनकार कर सकती है अथवा उसे वापस ले सकती है।

मैसूर विधान परिषद्ने जो माँग[1] की है उसे मैं निश्चय ही एक मर्यादित और समयानुकूल माँग मानता हूँ।

जब मैंने गांधीजी से पूछा कि देशकी वर्त्तमान स्थितिको देखते हुए क्या मन्दिरोंमें हरिजन-प्रवेशका कार्यक्रम शुरू करना समयानुकूल होगा, तो गांधीजी ने कहा :

सच पूछा जाये तो यह कार्यक्रम बहुत पहले शुरू कर दिया जाना चाहिए था। देशकी वर्त्तमान स्थितिको हरिजनोंके प्रति बुनियादी न्याय किये जाने के मार्गमें बाधक नहीं बनने दिया जा सकता।

मैंने उनसे पूछा कि सरकार युद्ध-विरोधी नारे लगानेवाले सत्याग्रहियोंको जो गिरफ्तार नहीं कर रही है उसका क्या यह अर्थ लगाया जा सकता है — जैसा कि कुछ लोग लगाते जान पड़ते हैं — कि सरकारने युद्ध-विरोधी प्रचारकी छूट दे दी है, तो गांधीजी ने कहा :

लोगोंके ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। कुछ प्रान्तीय सरकारोंने तो स्पष्ट रूपसे यह कह दिया है कि वे उन सदस्योंको गिरफ्तार नहीं करना चाहती जिन्हें वे महत्त्वपूर्ण नहीं समझतीं। लेकिन जिन्हें वे महत्त्वपूर्ण समझती हैं उन लोगोंको युद्ध-विरोधी नारे लगाने पर अवश्य गिरफ्तार किया जा रहा है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २४-७-१९४१

१. माँग यह थी कि सरकार एक समिति नियुक्त करे, जो सरकारके अधीनस्थ मन्दिरों तथा अन्य धार्मिक संस्थाओंमें हरिजनोंको प्रवेश करने देने के सवालपर लोकमतका पता लगाये।

२८२. पत्र : मिर्जा इस्माइलको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२३ जुलाई, १९४१

प्रिय सर मिर्जा[1],

महादेव बम्बईमें है। मैंने उसको लिखा आपका पत्र पढ़ा है। यह "मिस्टर महादेव" क्यों?

फिलहाल तो मुझे सम्मेलनोंमें कोई आस्था नहीं है। जबतक लोग कुछ मानसिक संकोच लेकर सम्मेलनमें आते हैं, तबतक हम कुछ नही कर सकते। लेकिन जिन लोगोंको सम्मेलनोंमें विश्वास है, उन्हें मै रोकता भी नही। अतः यदि आप अथवा सर तेज कोई सम्मेलन[2] आयोजित करें और मुझे बुलाना चाहें, तो मैं अपनी निजी हैसियतमें खुशीके साथ आऊँगा। किन्तु मेरे कारण शायद मतभेद ही पैदा होंगे, और कुछ नहीं।

पूरे परिवारको और ज्यादा प्यार।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८३) से

२८३. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

सेवाग्राम, वर्धा
२३ जुलाई, १९४१

चि० अमृतलाल,

तुम तो झपाटेके साथ जीवन-पथ तय करते जा रहे हो और मैं यही माने बैठा हूँ कि मैंने जैसा तुम्हें पहली बार देखा था, उसमें और आजमें कोई अन्तर नही है। अब इस विरोधाभाससे कैसे मुक्त हुआ जाये? जैसे थे वैसे ही बने रहो और कालको लज्जित करो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८०१) से

१. मैसूरके भूतपूर्व दीवान

२. निर्दलीय राजनैतिक नेताओंका सम्मेलन पूनामें २६ और २७ जुलाईको सर तेजबहादुर सप्रूकी अध्यक्षतामें हुआ था।

२८४. भेंट: ए० एस० एन० मूर्तिको[1]

सेवाग्राम
सायं ४ से ४.२० तक, २३ जुलाई, १९४१

अभिवादन करने के बाद जब मैं क्षण-भरको ठिठका, तो गांधीजी ने कहा कि मैं आपकी बात सुनने के लिए तैयार बैठा हूँ। मैंने कांग्रेसके पूना प्रस्तावके उल्लेखके साथ अपनी बात शुरू की। मैंने उनसे पूछा कि अगर मेल-मिलापका कोई रास्ता निकल सके, तो कांग्रेसके पूना प्रस्तावके आधारपर कोई समझौता होने की सम्भावना उनकी रायमें क्या है। इसपर महात्माजी ने कहा कि पूना प्रस्तावको पुनरुज्जीवित नहीं किया जा सकता। उसके उपयुक्त मनःस्थिति अब देशमें नहीं रही है। देशमें दिनों-दिन जो अशान्ति फैलती जा रही है उसका जिक्र करते हुए मैंने उनसे कहा कि यदि कांग्रेस अपना दृष्टिकोण नहीं बदलती तो वह अपना आधार खो देगी। इसके उत्तरमें उन्होंने कहा कि यदि कांग्रेसको रेगिस्तानमें भी जाना पड़े तो देशके हितका बलिदान करने की अपेक्षा वह उसे ज्यादा पसन्द करेगी, और फिर विनोदपूर्वक बोले कि कभी-कभी रेगिस्तानकी हवा स्वास्थ्यके लिए अच्छी होती है। मैंने उनसे इस बातका जिक्र किया कि कांग्रेस मन्त्रिमण्डलोंके त्यागपत्र देने से, जनताकी जो थोड़ी-बहुत भलाई करने की कोशिश की गई थी, उसे बीचमें ही छोड़ देना पड़ा। उन्होंने उत्तर दिया कि वास्तविक स्थितिका सही जायजा लेने पर प्रगतिके लिए किये गये प्रयत्नोंपर बहुत ज्यादा जोर देना बेकार था, क्योंकि उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण मसले उस समय सामने थे। जब कांग्रेस साम्राज्यवादको खत्म करने के लिए कृतसंकल्प है, ये सारी बातें महत्त्वहीन हैं। यदि कांग्रेस अहिंसाका परित्याग कर दे, तो भी हमने यह देख लिया है कि एक विशुद्ध राजनीतिक उपायके रूपमें पूना प्रस्तावको पुनरुज्जीवित नहीं किया जा सकता।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५४)से

१. किशोरलाल मशरूवालाने २७ जुलाईको सर्वोदय भवन, छतरपुरके श्री ए० एस० एन० मूर्तिको जो पत्र लिखा था, यह उसके साथ संलग्न था। उन्होंने लिखा था: "आपके २४ तारीखके पत्रके लिए धन्यवाद। गांधीजी के साथ हुई भेंटकी आपकी रिपोर्ट उनके द्वारा संशोधित रूपमें मैं इसके साथ भेज रहा हूँ। हम परस्पर इस बातपर सहमत हैं ही कि यह हमारी निजी जानकारीके लिए है।" किशोरलाल मशरूवाला इस भेंटके समय मौजूद थे।

२८५. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
२४ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

यह पत्र लिखने की खातिर ही लिख रहा हूँ। आशा है कि जमनालालने खोई हुई शक्ति फिरसे पा ली होगी। मुझे मालूम है कि उनकी अत्यन्त स्नेहपूर्वक देख-भाल की जायेगी। उनका कहना है कि उनकी देखभाल इतने यत्नपूर्वक की जाती है कि उन्हें संकोच होता है।

जवाहरलालको मेरा ढेर सारा प्यार देना। तुम आनन्दमयी देवीसे मिलने की कोशिश करना। वह देहरादूनके पास ही कहीं है। वह कमलाकी[1] गुरु थीं।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४४ से भी

२८६. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

२४ जुलाई, १९४१

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। तूने वहाँके वातावरण पर ठीक प्रकाश डाला है। जिन्हें अलग होना है, अच्छा है अलग हो जायें। मुझे तो यह अच्छा लगेगा। वे लोग लड़ाईका रहस्य नहीं समझते। चोखावाला झपाटेसे फिर अपना वजन बढ़ा लेंगे। 'मुनि' की पुस्तक बाजारमें नहीं मिलती। मैं दिल्लीसे प्रबन्ध करूँगा। आनन्दको दस्त आने का कारण स्पष्ट है, इसलिए घबराने की कोई बात नहीं है। जो खुराक तू दे रही है, ठीक है। तुम लोग क्या अभी वहीं रहोगे? सुशीलाबहन कल आ रही है। वह २८को यहाँसे दिल्ली जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३३) से। सौजन्य: शारदाबहन गो० चोखावाला

१. कमला नेहरू

२८७. पत्र : डॉ० एस० के० वैद्यको

[२४ जुलाई, १९४१][1]

भाई वैद्य,

तुम्हारा कातना तुम्हें अवश्य फलेगा। जब छूरे हमारे सामने भोंके जाते हैं, तो हम बेचैन हो जाते हैं। लेकिन हमसे दूर रोज लाखों आदमी मरते हैं और बड़ी मेहनतसे बनाये गये घर आदि क्षण-भरमें नष्ट कर दिये जाते हैं, उनका क्या? अशान्त होकर हम यह सब नहीं रोक सकते, लेकिन शान्त रहकर यह सब रोकने की शक्ति प्राप्त करना हमारा धर्म है। मेरी मान्यता है कि यदि इस संकल्पके साथ चरखेको हाथमें लिया जाये तो सार्थक होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७५२)से

२८८. पत्र : जमनालाल बजाजको

सेवाग्राम
[२४ जुलाई, १९४१ के आसपास][2]

चि० जमनालाल,

तुम्हारे बुखारकी खबर पढ़कर मैं कुछ घबरा तो जरूर गया था, लेकिन तारसे तसल्ली मिली। वहाँ तबीयत बिलकुल अच्छी हो जानी चाहिए। सेवासे डरने का कोई कारण नहीं। उसे प्रभुके नामपर स्वीकार करना चाहिए और आशा करनी चाहिए कि ईश्वर तुम्हें इस योग्य बनायेगा कि तुम इस सेवाके बदले सौ गुनी सेवा कर सकोगे। यह सारा परिवार ही सेवा-भावसे ओतप्रोत है। इसके[3] पिता भी ऐसे ही सरल थे। वस्तुतः देखा जाये तो इन्हें ही कपूरथलाका राजा होना चाहिए था, लेकिन ईसाई धर्म अंगीकार कर लेने के कारण गद्दी दूसरेको मिली।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०१७)से

१. डाककी मुहरपर से

२. पत्रमें जमनालालके बीमार होने के उल्लेखसे लगता है कि यह पत्र भी उसी समय लिखा गया जिस समय अमृतकौरको पत्र लिखा गया, देखिए पृ० २०२। जमनालालने पत्रका उत्तर २७ जुलाई को दिया था। देखिए अगला शीर्षक भी।

३. अमृतकौरके

२८९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा
[२५ जुलाई, १९४१][1]

प्रिय पगली,

तुम्हारा हस्बमामूल पत्र मिला।

मेरा खयाल था कि मैंने तुम्हें बता दिया है कि मेरा वजन डेढ़ पौंड बढ़ गया है।

तुम्हें अथवा शम्मीको गुजरातके[2] लिए कुछ देने की जरूरत नहीं है। नोआखली[3] और मलाबारका[4] हक ज्यादा है। दोनों जगहोंमें बेहद नुकसान हुआ है।

पृथ्वीसिंहके बारेमें जो-कुछ किया गया है उसकी मीराको पूरी जानकारी है।

सुशीला बम्बईसे वापस आ गई है। बम्बईके अनुभवसे उसे निश्चय ही लाभ हुआ है, हालाँकि यह अनुभव बहुत कम समयका था। और उसने हमारे बहुत सारे रोगियोंकी जाँच भी की।

महादेवको चन्दा इकट्ठा करने में कुछ दिक्कतें पेश आ रही है, लेकिन वह रकम इकट्ठा कर ही लेगा।

खान साहब खुर्शेदसे मिलने के लिए आज बम्बई गये हैं।

मुझे आशा है कि जमनालालके स्वास्थ्यमें निरन्तर सुधार हो रहा है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३६) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३४५ से भी

१. डाककी मुहरपर से
२. यहाँ आशय अहमदाबादके दंगोंके सिलसिलेमें चल रहे राहत-कार्यसे है।
३ और ४. इन जगहों पर जो तूफान आया था, यहाँ संकेत उसकी ओर है।

२९०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम
२५ जुलाई, १९४१

चि० कृष्णचंद,

यह सबकी सब मेरी हि गलती है। मैंने कहा है ना कि इनको बरदास्त करना होगी। मैंने उस रोज सुना कि स०[1] तेल नहि है तो दाक्तरको देने के लिये, तुम्हारा समय बचाने के लिये, जब झवेरभाई आये मैंने कहा अगर तेल है तो भेज दो। यह बात है। सही है कि तुमको कहना चाहिये था। मैंने मंगाया भी तो तुमको कहना भी चाहिये था। इस वक्त तो हो चुका। अब खबरदारी रखने की कोशीश करुंगा, लेकिन बहुत दिनोंकी मेरी आदत है।

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९६) से

२९१. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
२६ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुमने अवश्य ही सुना होगा कि आगराकी हड़ताल खत्म हो गई है। अच्छा तो अब जमनालालके वस्त्रादिकी व्यवस्था भी तुम ही कर रही हो।

आज चूंकि तारा यहाँ आनेवाली थी, इसलिए मैंने यह घर उसके लिए खाली कर दिया है और स्वयं डिस्पेंसरीमें चला गया हूँ। डॉ० दास अपने मरीजोंके साथ जानकीबहनके यहाँ चले गये हैं। अतः मैं वास्तवमें अनिकेत[2], बेघर हूँ। मुझे कोई परवाह नहीं है।

१. सरसों
२. यह शब्द देवनागरीमें है।

सुशीला प्रभावती व कुसुमके साथ प्यारेलालसे मिलने गई है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४९) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८८१ से भी

२९२. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

२६ जुलाई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मुझे दुःख है कि तुम्हारा पुत्र[1] बीमार है। आशा है, वह पहलेसे अच्छा होगा। टाइफाइडका इलाज तुम्हें मालूम है। तुम्हें डाक्टरकी शायद ही जरूरत हो। टाइफाइडमें कड़ी परिचर्या और उपवास ही जरूरी है।

जमनालालजी कह रहे थे कि वीणाको महिला आश्रममें भरती नहीं किया जा सकता। उसकी जगह तो तुम्हारे पास अथवा बाड़ीमें रमाबाईके पास है। उसे अपनी आजीविका कमानी होगी। कदाचित् उसके लिए सबसे अच्छा यही है कि वह विवाह कर ले। यदि अकेली आभा ही आश्रम आना चाहे तो मैं उसे आजमाइशके तौर पर आश्रममें रखूँगा। बा आभाके बारेमें चिन्तित है। आभासे उसे बहुत मोह है, और उसके बारेमें वह अकसर मुझसे बात करती है। लेकिन यदि वह आये तो उसे एक बदली हुई लड़कीके रूपमें आना होगा।

शैलेन और धीरेन पर निगरानी रख रहा हूँ।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३१८) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१. अमृतलाल चटर्जीके कनिष्ठ पुत्र रणेन्द्रनाथ

२९३. पत्र : आभा चटर्जीको

[२६ जुलाई, १९४१][1]

चि० आभा,

तेरा खत मिला। पिताजीके खतमें मैंने लिखा है। वे तुझे समजावेंगे। अगर यहां अकेली आ सकती है और ठीक नियमन में रह सकती है तो यहां रखुंगा। महिलाश्रममें नहिं। वीणाको शेठजी[2] वहां नहिं रखेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३५४)से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

२९४. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२६ जुलाई, १९४१

चि० मुन्नालाल,

मैंने तो तुम्हें बिलकुल मुक्त कर दिया है। ऐसा करते-करते कभी तो तुम स्थिर होगे। यहाँ आजादी नहीं है आदि बातें केवल तुम्हारी कल्पनाकी उपज हैं। मन ही हमारे बन्धन अथवा मोक्षका कारण है। सभी प्रकारसे विचार करना बिलकुल छोड़कर जब काम, और केवल काम ही करोगे, तभी शान्त होगे, फिर चाहे वह सेवाग्राममें हो या हिमालयकी चोटी पर। हाँ, एक बात है — जो चोटीपर चढ़ता है उसे गिरने का डर रहता है। सेवाग्राम-जैसी तलहटीमें यह डर बिलकुल नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९५)से। सी० डब्ल्यू० ७१५० से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. यह पत्र पिछले शीर्षककी पीठपर लिखा हुआ है।

२. जमनालाल बजाज

२९५. पत्र : वालजी गो० देसाईको

२६ जुलाई, १९४१

चि० वालजी,

तुम्हारा तार मिला। मैं तो लिख चुका हूँ कि जहाँतक की रिपोर्ट तैयार हो वहाँतक की भेज दो, तो काफी होगा। रिपोर्ट आई कि तुरन्त तुम्हें लिखूंगा और दिन भी मुकर्रर कर दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४९५) से। सौजन्य : वालजी गो० देसाई

२९६. पत्र : नटवरलाल वेपारीको

[२६ जुलाई, १९४१][1]

भाई नटवरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मै भाई महादेवको लिख रहा हूँ। मेरी स्वतन्त्र राय तो यही है कि तुम्हारे पास जो सामग्री है, उसपर से अपनी रिपोर्ट तैयार करो। लेकिन महादेवने इस समस्याका अध्ययन किया है, इसलिए अगर उसकी जुदा राय हो, तो मुझे अवश्य इसपर पुर्नविचार करना पड़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१३१) से

२९७. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
२७ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

तुम्हारी हिन्दी दिनोंदिन अच्छी होती जा रही है।

मुझे जमनालालके बारेमें कोई चिन्ता नहीं है। जब यह पत्र शिमला पहुँचेगा तब तुम देहरादूनमें होगी। वहाँकी यात्राके बारेमें तुमसे पूरे विवरणकी अपेक्षा रहेगी। तुम्हारे रानीके साथ न होने की बातपर मुझे कोई हैरानी नहीं हुई।

१. डाककी मुहरपर से

बाजपेयीने[1] बर्माके साथ कितना खराब समझौता[2] किया है!

इस समय अधिक नहीं।

सुशीला कल दिल्ली जा रही है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४६ से भी

२९८. तार: इफ्तिखारुद्दीनको

[२८ जुलाई, १९४१ या उसके पूर्व][3]

लायलपुर जेलके राजनीतिक बन्दियोंसे भूख-हड़ताल बन्द करने को कहो।[4]

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ३०-७-१९४१

२९९. पत्र: उमेशराव एम० वकीलको

२८ जुलाई, १९४१

[घटनाओंकी] तारीखें भेजिए और क्या आप उनकी सत्यताकी जिम्मेदारी ले सकते हैं?[5]

मूल अंग्रेजीसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१ और २. सर गिरिजाशंकर बाजपेयी, वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्‌के सदस्य; भारत सरकार की ओरसे उनके नेतृत्वमें एक प्रतिनिधि-मण्डल बर्मा गया था, जिसका उद्देश्य बर्मामें भारतीयोंके प्रवेशको नियमित और सीमित करने के प्रश्नपर विचार-विमर्श करना था। २८ जूनको सर गिरिजाशंकरने भारत-बर्मा समझौतेपर हस्ताक्षर किये, और २१ जुलाईको शिमलासे यह समझौता दोनों सरकारोंके संयुक्त वक्तव्यके रूपमें प्रकाशित किया गया। गांधीजी के वक्तव्यके लिए देखिए "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको", २४-८-१९४१।

३. तारकी रिपोर्ट दिनांक "लाहौर, २८ जुलाई" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

४. रिपोर्टमें यह भी कहा गया था कि इफ्तिखारुद्दीनने यह निर्देश जेलके अधीक्षकके माध्यमसे बन्दियोंको पहुँचा दिया था और साथ ही लायलपुर जिला कांग्रेस कमेटीको भी सूचित कर दिया था।

५. उमेशराव वकीलने अपने १८ जुलाईके पत्रमें दक्षिण कनारा जिलेके कासरगोड ताल्लुकेके दक्षिणी भागके कृषकोंकी दयनीय हालतकी सूचना देते हुए पुलिसकी ज्यादतियोंके कुछ दृष्टान्त भी दिये थे।

३००. पत्र : इफ्तिखारुद्दीनको

सेवाग्राम, वर्धा
२८ जुलाई, १९४१

प्रिय इफ्तिखार,

तुम्हारा इसी २५ तारीखका पत्र मिला। तुम अच्छा काम कर रहे हो। मुझे उम्मीद है कि जिला कमेटियाँ ऐसा काम करेंगी कि पंजाबमें गुण्डागर्दी पनपने ही न पाये। यदि यह प्रयास सफल हो जाता है तो इसका सारे हिन्दुस्तानपर जबर्दस्त प्रभाव पड़ेगा। मैं तुम्हारे इस कामको अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, जेल जाने से भी कही अधिक महत्त्वपूर्ण, समझता हूँ।

जो लोग अपील करनेके कारण छोड़ दिये गये हैं वे यदि फिर जेल नहीं जाते तो इसके लिए तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। उनके नाम सूचीसे काट दिये जाने चाहिए।

किसी भी सदस्यने अपना नाम सूचीमें रहने देनेके लिए मुझसे इजाजत नहीं माँगी है। ऐसी इजाजत देनेकी बात मैं सोच भी नहीं सकता। इस तरहके हर मामलेको और अन्य मामलोंको भी मैं सदा तुम्हारे पास ही भेजता रहा हूँ।

मैंने डॉ० सत्यपालके[1] बारेमें सब-कुछ पढ़ लिया है। तुम्हें उनका तथा उनका अनुकरण करनेवालों का इस्तीफा स्वीकार कर लेना चाहिए। संसदीय [बोर्ड] से त्यागपत्र देने से सम्बन्धित मामला तुमने राजेन्द्रबाबूको भेजकर ठीक किया, लेकिन यह तो स्वाभाविक ही है कि यदि [वे] कांग्रेसकी चवन्नी सदस्यता त्याग देते हैं तो उन्हें दूसरे सभी पदोंसे भी त्यागपत्र दे देना चाहिए।

मेरा अपना खयाल यह है कि समाचारपत्रोंमें दिये गये उनके वक्तव्योंपर तुम्हें कोई ध्यान नही देना चाहिए।

तुमने ब्रह्मदत्तके बारेमें जो-कुछ किया, बिलकुल ठीक किया है। उसने मुझे लिखा है कि अपने व्यवहारके लिए उसने माफी माँग ली है। वह बहुत जल्दी आवेशमें आ जाता है।

लाला दुनीचन्दको भेजे अपने पत्रकी[2] नकल यदि मेरे पास रखी होगी तो तुम्हें भेज दूँगा।

लाला शामलालके विषयमें मुझे भी दुःख है। मैं सीधे कोई इस्तीफा स्वीकार नहीं करूँगा। इसके साथ मैं भिवानीसे आया एक पत्र भेज रहा हूँ। पत्र-लेखकने

१. पंजाब कांग्रेस कमेटीके भूतपूर्व अध्यक्ष, जिन्होंने २१ जुलाईको लाहौरमें अपने एक वक्तव्यमें गांधीजी से स्थितिपर पुनर्विचार करने के लिए कहा था और सुझाव दिया था कि वे सत्याग्रह-आन्दोलनके बजाय, जिससे किसीका भी भला नहीं हो रहा है, ऐसा कोई रास्ता निकालें जो वस्तुतः लाभदायक हो।

२. देखिए पृ० १८४-८५।

इस बातकी शिकायत की है कि अपने दौरेके दिनोंमें जब तुम भिवानी गये थे, तब तुमने वहाँ बहुत कम समय दिया। उनका कहना है कि वहाँका वातावरण बहुत तनावपूर्ण है। तुम देख लेना।

फारुकी मुझसे नाराज हैं, क्योंकि मेरे साथ हुई मुलाकातके बारेमें उन्होंने जो वक्तव्य लिखा था उसे मैंने स्वीकृति नहीं दी। मैंने उन्हें लिखा था कि उनका वक्तव्य विज्ञापन-जैसा लगता है, और उसके साथ ही मैंने एक संक्षिप्त वक्तव्य लिखकर उनके पास भेज दिया था। उनका गुस्सेसे भरा जवाब आया है कि मेरा तैयार किया हुआ वक्तव्य एक विज्ञापन (मेरे खयालसे शायद मेरा अपना विज्ञापन!) है।

तुम्हें व इस्मतको प्यार।

तुम्हारा,
बापू

संलग्न:

१. भिवानीके राजेन्द्रप्रसाद जैनका पत्र, २६-७-४१
२. फाटकके श्रीराम शर्माका पत्र, २७-६-४१

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३०१. पत्र: रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

२८ जुलाई, १९४१

प्रिय रथीन[1],

तुम्हारा इसी २४ तारीखका पत्र मिला। वह अपील इस समय मेरे पास नहीं है। मेरा विचार है कि प्रस्तावित योजनाका समावेश उद्देश्योंमें किया गया है। यदि ऐसा है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु दूसरोंसे भी पूछ लो और उनकी सहमति ले लो।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री रथीन्द्रनाथ ठाकुर
'उत्तरायण'
शान्तिनिकेतन, बंगाल

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० १०३१९) से। सौजन्य: विश्वभारती, शान्तिनिकेतन

१. रवीन्द्रनाथ ठाकुरके पुत्र

३०२. पत्र : सर रॉबर्ट ई० हॉलैंडको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२८ जुलाई, १९४१

प्रिय मित्र,

विलम्बसे उत्तर देने के लिए क्षमा चाहता हूँ।

मैंने उभय पक्षोंसे अपनी गतिविधियाँ रोकने को नहीं कहा है। मैंने तो केवल यह कहा है कि अपनी माँगें पूरी कराने के लिए गुण्डागर्दीका सहारा न लिया जाये। मुस्लिम लीग पाकिस्तानकी अपनी माँग करती रह सकती है और इस माँगका विरोध करनेवाले इसका विरोध करते रह सकते हैं, बशर्ते कि ऐसा वे अहिंसक ढंगसे ही करें। फिलहाल मैंने विवादास्पद प्रश्नोंपर मतैक्यके लिए कोशिश नहीं की है। मैंने तो केवल इस बातकी कोशिश की है कि दोनों पक्ष अहिंसापर, अर्थात् शान्तिपूर्वक बातचीतके उपायपर सहमत हो जायें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४५२)से। सौजन्य: सर रॉबर्ट ई० हॉलैंड

३०३. पत्र : नारणदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२८ जुलाई, १९४१

चि० नारणदास,

इस पत्रके साथ जेठालाल भाईका कार्ड है। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। तुम्हें कुछ लिखना हो तो सीधे लिखना। अगर समझते हो कि मुझे लिखना चाहिए तो मुझे बताना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

'खादी जगत'के बारेमें कोई सुझाव देना हो तो देना।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५८७ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

३०४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२८ जुलाई, १९४१

चि० कृष्णचंद्र,

यह बात तो हो हि गई है कि महमानोंका तुमारे हि देखना है। कोई अचानक आ जावे तो चि०[1]को उसी वक्त निर्णय करना होगा। मुझे पता नहि है तुमारी खास मुसीबत क्या है। स्पष्ट करोगे तो मै अधिक मदद दे सकुंगा। जिनका मै प्रबंध नहि कर लेता हूं उनको कहां बिठाना वगैरा तो तुमारे हि देख लेना है। तुमको नाटी[2] सभी जितनी जल्दी मिल सके देनी होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९८) से

३०५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२८ जुलाई, १९४१

चि० कृष्णचंद्र,

[कूड़ा तुमने] अदावतसे जलवाया ऐसा ध्वनि मैंने ब०[3]के खतमें नहि पाया। खतमें तो उनका दुःख ही है। करीब २ सब कचरा खाद है, फूटा ग्लास इ० छोड़कर-ब० का कहना ठीक लगता है कि जलवानेके पहले उनको पूछना अच्छा होता। जब मदद मांगी तो उनको देनी चाहिये थी। सच बात है कि किसानका जी जलेगा यदि उसका खाद जला ले। ब० को शांत करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९७) से

१. चिमनलाल नरवरलाल शाह
२. नोटिस
३. बलवन्तसिंह

३०६. पत्र : लक्ष्मी गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२८ जुलाई, १९४१

चि० लक्ष्मी,

बा ने कल खत भेजा। उसीमें मेरे पास कुछ लिखवाना चाहती थी। लेकिन खत गलती से चला गया। बच्चोंकी बीमारीके बारेमें मैं भी कुछ आश्वासन दूं यह मतलब था, लेकिन बच्चे तो अच्छे हो गये हैं और न भी हो तो तुझको आश्वासन क्या? भगवानके हाथोंमें हम सब पड़े है। हां, प्रयत्न करना हमारा काम है, सो तो तू करती है। भाईयोंको और पापाको[1] मेरे आशीर्वाद। सुशीला आज दिल्ली गई। आश्रममें कितने भी मकान बनाकर भरता हि जाता है। शायद दे०[2] यहां होकर दिल्ली जायेगा।

तुम सबको

बापुके आशीर्वाद

श्री लक्ष्मीबहन गांधी
मार्फत श्री च० राजगोपालाचारी
बाजुलुल्ला रोड
त्यागराज नगर
मद्रास[3]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २००१) से

१. लक्ष्मी गांधीकी बड़ी बहन
२. देवदास गांधी
३. साधन-सूत्रमें पता रोमन लिपिमें है।

३०७. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२९ जुलाई, १९४१

चि० मुन्नालाल,

मैंने तुम्हें सब स्पष्ट लिख दिया है।[1] लेकिन तुम्हारा चित्त डाँवाडोल होने के कारण तुम्हें अस्पष्ट-जैसा लगता है। मेरी सलाह है कि तुम्हें आग्रहपूर्वक यहाँ रहने का निश्चय करना चाहिए और जो काम मिले वह करके सन्तोष करना चाहिए। यही राजमार्ग है और यही राजयोग। लेकिन अगर यह बिलकुल न कर सको, तो यात्रा करो और जब या यदि थक जाओ तो वापस आ जाओ। एक भी चिन्ता साथ लेकर मत जाना। कंचन भले यहीं रहे। इन दो के सिवाय तीसरा मार्ग नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४८८) से। सी० डब्ल्यू० ७१५१ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

३०८. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२९ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

पत्ता लिखने की तुमारी मनाई तो है लेकिन क्या करुं? आज तुमारा खत नहिं है। और मेरे सामने खूब खत पडे हैं। आज तो इस वक्त तुम देहरादूनमें हो। यहां सब कुशल हैं। मिस मूरे इतवारको जानेवाली है। बारीश नहिं होती है। इ[स] से फिकर हो रही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८८२) से। सी० डब्ल्यू० ४२५० से भी; सौजन्य : अमृतकौर

१. देखिए पृ० २०७।

३०९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
३० जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारे दो पत्र एकसाथ मिले।

तुमने देखा कि यह चीज दोनों तरफसे समान रूपसे काम करती है। हमें जीवनकी ये छोटी-छोटी तकलीफें सहन करनी ही चाहिए।

यदि जमनालालका वहाँसे जल्दी चल देना जरूरी है, तो उन्हें रोकना नही चाहिए।

मुझे खुशी है कि तुम आगरावाले मामलेमें आगे कार्रवाई कर रही हो।[1]

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० /४०३८) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४७ से भी

३१०. पत्र : जमनालाल बजाजको

सेवाग्राम
३० जुलाई, १९४१

चि० जमनालाल;

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें अच्छा लगे, तभीतक वहाँ रहना है। यदि तुम इस परिवारके साथ मुझसे बेहतर सम्बन्ध बना लो तो मुझे अच्छा ही लगेगा, ईर्ष्या नही होगी। लेकिन आज जो तुम वहाँ रहने में ही डरते हो तो भला मेरा-जैसा सम्बन्ध कैसे जोड़ोगे? जबतक रा० कु० वहाँ रहे तबतक रहने में कोई हर्ज नहीं है। परन्तु तुम्हें जैसा ठीक लगे, वैसा करना। जवाहरलालसे मिलो, यह तो अच्छा ही है। लेकिन मिलने की खबर प्रकाशित न होने देना। देहरादूनके पास आनन्दमयी देवी रहती हैं। वे कमलाकी गुरु थीं। वे साध्वी महिला कही जाती हैं। उनसे मिल सको तो मिल लेना। लेकिन बहुत दौड़-धूप न करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०१९) से

१. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पृ० १९१-९२ भी।

३११. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
३० जुलाई, १९४१

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। जबतक तेरी इच्छा हो, वहाँ जरूर रहना। जब यहाँ आने की इच्छा हो, तब आ जाना।

साथका पत्र तुम दोनों पढना। मैंने भाई अहमद कुरैशीको तुम दोनोसे मिलने को कहा है। यह भी लिखा है कि आश्रमका जीवन बड़ा कठिन होता है। एकान्त-जैसी कोई चीज यहाँ नहीं होती। अब तुम दोनो उस दम्पतिका मार्ग-दर्शन करना। क्या असर पड़ता है, मुझे लिखना।

आनन्द मजेमें होगा।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३४) से। सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला

३१२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

३० जुलाई, १९४१

चि० कृष्णचंद्र,

चि० के बारेमें तुमने लिखा है उसमें मैं कोई नैतिक या अन्य दोष नहिं पाता हूं। यह दूसरी बात है कि हम जिसे न्याय कहे वह भी हमें न मिले या देरसे मिले तो उसे सहन करना। यह तो एक अनोखी संपत् है।

रामजीसे बात हो रही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९९) से

३१३. पत्र : हरिभाऊ उपाध्यायको

सेवाग्राम
३० जुलाई, १९४१

भाई हरिभाऊ,

वालकृष्णजी से मैंने तो खुशखवरीके उपरान्त कोई वात ही नहीं की। समय कहां है? उनको मैंने ४ वजे मिलने का तो कहा था — लेकिन कुछ कहना नहीं चाहते थे।

भाई कोतवालको मैंने उत्तर दिया था — ऐसा ख्याल है। मैं उनका अजमेरमें[1] जेल जाना विलकुल पसंद नहीं करता हूं। यहां आने की तो आवश्यकता ही नहीं है। जेलमें जायं ही क्यों? इन्दौरमें ही जो रचनात्मक सेवा कर सके सो किया करें। यह मेरा उत्तर समझे अगर मेरा खत न मिले तो।

मिश्रीलालजी ने वजन वहुत गमाया। अव वह आराम करें। ऐसे ही कन्हैयालाल खादीवालेका। यू० पी० में काफी निकम्मे आदमी [जेल] गये हैं। उसका मुझे पता है।

हरिलालके खवर ठीक दिये। वा की तवीयत आजकल वहुत अच्छी रहती है।

तुम्हारे आराम लेना चाहिये। धर्म समझकर।

हम वारिशकी इन्तजारीमें हैं। न पड़े तो लोग परेशान होंगे।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : हरिभाऊ उपाध्याय पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. साधन-सूत्रमें ऐसा ही है, परन्तु देखिए "पत्र : कोतवालको", पृ० २४४।

३१४. पत्र : 'टाइम्स ऑफ इंडिया' को

सेवाग्राम, वर्धा
३१ जुलाई, १९४१

प्रिय महोदय,

इसी २९ तारीखके 'टाइम्स ऑफ इंडिया' की सम्पादकीय टिप्पणीके[1] अन्तमें आपने लिखा है :

> या तो उन्होंने (श्री गांधीने) सत्याग्रहके अपने नियमोंकी व्याख्यामें ढील की है, अथवा जिन लोगोंके नाम पेश किये गये उनमें से ज्यादातरने उन्हें धोखा दिया है। इनमें से कौन-सी बात सही है यह तो श्री गांधी ही ठीक बता सकते हैं।

मैं एक तीसरा विकल्प सुझाता हूँ। मैंने न तो सत्याग्रहके अपने नियमोंकी व्याख्या करने में ढील बरती है और न ही मैं किसीसे छला गया हूँ। आप मेरी स्वीकारोक्तिमें से एक वाक्य पढना भूल गये हैं : "यह अनिवार्य है।" १९२० में आन्दोलनके प्रारम्भसे ही अहिंसाको एक नीतिके रूपमें स्वीकार किया गया है, सिद्धान्त के रूपमें नहीं। बम्बईमें अ० भा० कां० कमेटीकी बैठकमें पूना-प्रस्तावका निराकरण करने के सवालपर बोलते हुए मैंने कहा था[2] कि अधिकांश लोगोंके लिए अहिंसा मात्र एक नीति है। इसलिए कमजोरी तो आन्दोलनमें अंतर्निहित ही थी। यह नहीं भूलना चाहिए कि मैं देशकी राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अहिंसाके उपयोगका महान् प्रयोग कर रहा हूँ। मेरे लिए निस्सन्देह अहिंसा स्वयंमें एक साध्य है, हालांकि यह देशकी स्वाधीनता प्राप्त करने का एक साधन भी है। कांग्रेसियोंकी विशाल बहुसंख्याके लिए यह एक साधन है और साधन ही रहेगी। इसलिए यह बात खेदजनक होते हुए भी कमजोरी तो अन्तर्निहित ही है। आश्चर्य तो यह है कि इस कमजोरीके बावजूद २० वर्षके अनुभवने कांग्रेसी लोगोंको अहिंसाकी नीतिसे विलग नहीं किया है, हालांकि यदि कांग्रेस चाहे तो किसी भी समय अपनी इस नीतिमें परिवर्तन कर सकती है।

मैंने जो सूचना प्रदान की है उसको ध्यानमें रखते हुए आप कदाचित् यह स्वीकार करेंगे कि आपने मेरे और कांग्रेसियोंके विरुद्ध जो आरोप लगाया है वह टिक नहीं सकता।

हृदयसे आपका,

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१-गृह विभाग, पॉलि० १। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार

१. देखिए परिशिष्ट ६।

२. देखिए खण्ड ७३, पृ० ५-१४।

३१५. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
३१ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

हाँ, मैंने अन्तरंग रूपसे यह सन्देश भेजा था कि भूख-हड़ताल खत्म कर दी जानी चाहिए।[1] लेकिन यह समाचार बाहर कैसे चला गया, सो मैं नहीं जानता।

फारुकीने भेंटकी जो रिपोर्ट लिखी थी उसे मैंने प्रकाशित करने से मना किया, इसलिए वे मुझसे नाराज हो गये थे। उसके बदले मैंने उन्हें कुछ वाक्य लिखकर भेजे थे। वे उन्होंने वापस कर दिये। मेरी रिपोर्ट उन्हें विज्ञापन-जैसी लगी और उन्हें मुझसे फिर मिलनेमें कोई फायदा दिखाई नहीं दिया। लेकिन उन्होंने आज मुझे एक शिष्टतापूर्ण पत्र भेजा है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि आवश्यकता पड़ने पर वे मुझसे मिलेंगे।

इफ्तिखारने अपनी यात्राके बारेमें एक लम्बा और दिलचस्प पत्र मुझे भेजा है।

तुम्हारे बारेमें जो खबर है वह परेशान करनेवाली है। तुम अपनी कमजोरी दूर करो, वरना लौट जाओ।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

७२ वर्षके एक बूढ़ेके बारेमें यदि ऐसा कहा जा सके तो कहूँगा कि मेरी तबीयत असाधारण रूपसे अच्छी है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३९) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३४८ से भी

१. देखिए "तार : इफ्तिखारुद्दीनको", पृ० २०९।

३१६. पत्र : मीराबहनको

३१ जुलाई, १९४१

चि० मीरा,

इन्हें मैंने कल रात पुस्तकालयमें समाप्त किया। अन्ततः यह संग्रह अच्छा रहेगा।[1]

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८६) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९८८७ से भी

३१७. पत्र : लीलावती आसरको

३१ जुलाई, १९४१

चि० लीली,

तेरा पत्र मिला। सुशीलाको तेरे बारेमें कोई डर नहीं लगा। वह मानती है कि अगर तू ठीकसे खाये-पियेगी और बताई दवा लेगी, तो जरूर अच्छी हो जायेगी। कड़क चाय मत पीना। दूध बराबर पीना या फिर दही लेना। मुझे नियमपूर्वक खबर देती रहना। अगर ताकत न लौटे तो जरूर यहाँ आ जाना। [अध्ययनका] एक बरस खराब होना हो तो हम होने देंगे। अध्ययन तो तुझे हर हालतमें पूरा करना ही है। अभी तू जिन्हें नीरस विषय मान रही है, उनपर अधिकार प्राप्त कर लेने पर वे ही तुझे रोचक लगेंगे। बा बारम्बार तेरी याद किया करती है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मेरी तबीयत अच्छी है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०११०) से। सौजन्य : लीलावती आसर

१. देखिए "पत्र : मीराबहनको", पृ० १३६ और १३७ भी।

३१८. पत्र : पृथ्वीसिंहको

३१ जुलाई, १९४१

भाई पृथ्वीसिंह,

तुमारा खत किशोरलालभाई पर पढ़ा। तुमा[रा] खत मुझे मिल गया था। पढकर मुझे बहुत आनंद हुआ। कुछ लिखने जैसी नहि था इसलिये पहोंच तक न लिखी। तुमारा काम चल रहा है यह खुशीकी बात है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

गोपाल राव अच्छे होंगे। परीक्षा हुई?

सरदार पृथ्वीसिंह
अहिंसक व्यायाम संघ
रामबाग, मलाड, बम्बई

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६४९) से। सी० डब्ल्यू० २९६० से भी; सौजन्य : पृथ्वीसिंह

३१९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१ अगस्त, १९४१

चि० अमृत,

मेरे पास वक्त नहीं है। आज तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। कनु[1] राजकोट जा रहा है। मोतियाबिन्दके कारण उसकी माँ की एक आँख खराब हो गई है और दूसरीके खराब होनेका डर है। बेचारा!

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

प्रभा लौट आई है।

श्री राजकुमारी अमृतकौर
मैनरविल, शिमला

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४०) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३४९ से भी

१. नारणदास गांधीके पुत्र

३२०. पत्र : नारणदास गांधीको

१ अगस्त, १९४१

चि० नारणदास,

क्या तुम सन्न रह गये हो?[1] रह भी गये हो, तो तुम-जैसे व्यक्तिके लिए तो वह क्षणिक ही होगा। तुम अनासक्त हो, भक्त हो, श्रद्धालु हो, इसलिए जो भी आ पड़े, हँसते-हँसते सहन करोगे।

भाई नानालालके पास जो ११,००० रुपये आये हैं, भेज देंगे। वे मैं तुम्हारी थैलीमें डाल दूँगा। मुझे याद है, एक लाखका[2] अंक मैंने तुम्हारे पत्रसे लिया था, तुम्हारे वक्तव्यसे नहीं। लेकिन जो भी हो, ईश्वर हमारी लाज रखेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५८८ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

३२१. भाषण : खादी विद्यालयके उद्घाटनके अवसरपर

वर्धा
१ अगस्त, १९४१

हम सत्य और अहिंसा द्वारा विश्वका कल्याण करना चाहते हैं।

मैं चाहता हूँ कि आप, इस विद्यालयके विद्यार्थी, चरखा और खादीका वैज्ञानिक ढंगसे अध्ययन करें और नये आविष्कारों द्वारा उनमें सुधार करके गाँववालोंकी सेवा करें।

जिस तरह सूर्य ग्रहमण्डलका केन्द्र है, उसी तरह खादी हमारे आर्थिक अथवा ग्रामीण ढाँचेका केन्द्र है। सूर्यके बिना संसारका नाश हो जायेगा, उसी तरह चरखेके बिना, जो हमारा त्राता और अन्नदाता है, हम विफल हो जायेंगे।

यदि खादी स्थायी हो जाये, तो सब-कुछ ठीक हो जायेगा। खादीकी तरक्की और सुधारके लिए आप अपनी बुद्धि और हाथ दोनोंका उपयोग करें। खादीके इस मन्त्रका आविर्भाव उस समय हुआ जब मैं १९०८ में दक्षिण आफ्रिकामें था। उस समय स्वर्गीय मगनलाल गांधी भी मेरे साथ थे, जिन्होंने खादीकी तकनीकमें

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. देखिए "रेंटिया बारस", पृ० १५०।

सुधार करने के लिए अनेक प्रयोग किये थे। हम मशीनोंके विरुद्ध नहीं हैं, लेकिन हमें मशीनोंका सामना अपने खादी-शास्त्रमें नई-नई खोजें करके और गाँववालोंको रोटी और रोजी देकर करना होगा। आप अपने मन और बुद्धिको विज्ञानपरक बनाइए, जिससे कि आप विद्यार्थी लोग अपने देशकी बेहतरीके लिए हमेशा नई-नई चीजों की खोज करते रहें। हमारी भगवानसे यही प्रार्थना होनी चाहिए कि हम हिन्दुओं, मुसलमानों तथा सभी अन्य कौमोंकी सेवा करें। इस तरह भारतकी सेवा करते हुए हम विश्वकी सेवा कर सकेंगे, क्योंकि हमारा उद्देश्य शोषण, दमन और घृणाको समाप्त करना है। इसके लिए तपश्चर्याकी जरूरत है, जिससे हमारे ज्ञानमें अभिवृद्धि होगी।

भारतीयोंकी और बादमें मानव-मात्रकी सेवाकी कसौटीपर खरा उतरने के लिए हमें और ज्यादा परिश्रम करना होगा। जिस तरह सौरमण्डलकी निदेशक शक्ति सूर्य है, उसी तरह अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ और तालीमी संघकी केन्द्रीय शक्ति अथवा केन्द्र चरखा संघ है। इस विद्यालयकी स्थापनासे हम एक छोटी-सी शुरुआत कर रहे हैं, और यदि आप अपने त्याग, तपस्या, कष्ट-सहन तथा चारित्रिक शुद्धताके बलपर गरीब ग्रामवासियोंकी सेवा करने, उन्हें रोटी-कपड़ा मुहैया करने के लिए व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक रीतिसे चरखा-शास्त्रका अध्ययन करेंगे, तो इस छोटी-सी शुरुआतके बेहतर परिणाम हो सकते हैं और हमारे सपने पूरे हो सकेंगे। सच तो यह है कि इस तरह हम केवल भारतकी ही नहीं, बल्कि संसारकी भी सेवा करेंगे।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २-८-१९४१

३२२. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र खराब है! इस तरह अपनी बीमारी अथवा कमजोरीको छिपाने से क्या लाभ है? इससे तो परेशानी और बढ़ती है। यदि मेरे साथी मुझसे सत्यको छिपायें तो मैं चिन्तामुक्त नहीं हो सकता। चिन्तामुक्त होना तो मैं तभी सीख सकता हूँ जब मेरे वफादार साथी अपने सुख-दुःखका सच्चा अनुभव मेरे सामने रखें। जल्द चंगी और सशक्त हो जाओ।

अन्य लोगोंके पत्रोंपर न लिखने की तुम्हारी हिदायतोंको मैं समझता हूँ। तुमने जिस पत्रका जिक्र किया है उसके मैंने उस भागपर लिखने का ध्यान रखा था जिसे तुम आसानीसे काट सकती थी।

जमनालाल हर बार तुमसे बाजी ले जाते हैं। चलो, उन्हें जीतका सुख लेने दो।

देहरादूनके सम्बन्धमें तुम्हारी रिपोर्ट आह्लादकारी है। जो बात तुम मुझे पत्रोंमें नहीं बता सकती वह बात यहाँ आने पर भी नहीं बता सकोगी। तुम जानती ही हो कि पिछली बार तुम असफल रही थी। लेकिन इसकी मुझे परवाह नहीं। इसके प्रत्युत्तरमें यदि तुम यह कहो कि मैं तुम्हे कभी समय ही नहीं देता, तो तुम्हारा ऐसा कहना ठीक ही होगा। इसीका नाम जिन्दगी है। मैं जानता हूँ कि जो बात सचमुच बताने लायक है उसे तुम मुझे बताने से कभी चूकोगी नहीं। लेकिन सामान्यतः सचमुच बताने लायक बात लिखी जा सकती है, और इसमें देर नहीं करनी चाहिए।

यह रही शैलेनकी डायरी[1], या चाहे इसे कुछ भी कह लो। के० एस०।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४१) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५० से भी

३२३. पत्र : शान्तिकुमार न० मोरारजीको

२ अगस्त, १९४१

चि० शान्तिकुमार,

मैंने सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको लिखा है। मुझे तो कई उपाय सूझ रहे है। मैं तो यह समझता हूँ कि यह मामला[2] ठीक किया जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७३४) से। सौजन्य: शान्तिकुमार न० मोरारजी

३२४. पत्र : नारणदास गांधीको

सेवाग्राम
२ अगस्त, १९४१

चि० नारणदास,

कनैयो बहुत घबरा गया है। तुम उसे आश्वस्त अवश्य करना। मुझे उससे बहुत काम है; लेकिन अगर उसकी इच्छा वहाँ रहने की हो, अथवा तुम उसे वहाँ रखना जरूरी समझो, तो फिर मेरा विचार करने की जरूरत नहीं है। प्रारम्भसे ही मैंने अपना यह धर्म माना है कि जिसे मेरे साथ रहने की इच्छा हो उसके माध्यमसे जो

१. देखिए पृ० ५८, पा० टि० २।
२. भारत-बर्मा आप्रवास समझौता

काम बन सके, करूँ। अन्य किसी प्रकारसे सत्यका आग्रह असम्भव है। अन्य किसी रीतिसे ईश्वरदर्शन भी असम्भव है। गृहस्थाश्रमके त्यागमें भी यही भावना निहित है। इसलिए कनैयोका कल्याण देखना और तुम्हारी सुविधाका विचार करना सहज ही मेरा धर्म हो जाता है। बाकी सब तो कनैयो तुमसे कहेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५८९ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

३२५. पत्र: इन्द्रवदन दिव्येन्द्रको

२ अगस्त, १९४१

भाई इन्द्रवदन,

तुम्हारा पत्र मिला। दूधके बारेमें मेरी राय ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। लेकिन मैं ही जिस रायपर अमल नहीं कर सका, उस रायकी कीमत भी क्या? इसलिए फिलहाल मेरी रायको भूल जाओ और जितना पचे उतना गायका दूध और घी मजेमें खाना।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४६)से

३२६. पत्र: कुँवरजी खे० पारेखको

२ अगस्त, १९४१

चि० कुँवरजी,

इन सुझावों पर यथोचित अमल करना। उसने तुम्हारे बारेमें डॉ० जीवराज को भी लिखा है। तुम उनसे मिलोगे न? लेकिन पहले उनसे पूछ लेना, फिर जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस०.एन० ९७५१) से

३२७. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
३ अगस्त, १९४१

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला। समझमें नहीं आता डाक मिलने में यह अनियमितता क्यों है। तुम्हारे यहाँ ही कुछ गड़बड़ी है। लेकिन जिसका कोई इलाज न हो उसे सहन तो करना ही होगा।

खुर्शेदका इस तरह सार्वजनिक रूप से अपहरण[1] किया जाना बहुत भयंकर बात है। मैं नहीं जानता कि महिलाओंके दृष्टिकोणसे तुम्हारे संगठनको[2] इस मामलेको हाथमें लेना चाहिए या नहीं। तुम्हे इसपर सावधानीके साथ विचार करना चाहिए। और वह भी भारत रक्षा अध्यादेशके अन्तर्गत। कितना बड़ा झूठ है यह !

तुम्हारा बीमार होना मन को शान्ति नहीं देता। शिमलामें तुम्हारी हालत इससे पहले तो इतनी खराब कभी नहीं रही ?

तुम्हें कोशिश करनी चाहिए और पूर्णतया स्वस्थ हो जाना चाहिए। कहीं यह बात तो नहीं कि तुमपर बुढ़ापा आ रहा है ?

प्रोफेसर[3] कौन है ? मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ। सरनको नि.सन्देह जाने के लिए जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३५१ से भी

१. देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", पृ० २२८-२२ भी।

२. अखिल भारतीय महिला परिषद्

३. साधन-सूत्रमें इस शब्दका संक्षिप्त रूप देवनागरीमें है।

३२८. पत्र : रत्नमणि चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
३ अगस्त, १९४१

प्रिय रत्नमणि,

डॉ० दासके[1] सम्बन्धमें ब्योरेवार लिखकर तुमने अच्छा किया। उनकी मृत्युसे हमें भारी क्षति हुई है। हम तो केवल इतना ही कर सकते हैं कि देशके हित-साधनमें और भी तेजीसे जुट जायें। उनकी बूढ़ी माँको मेरी समवेदना पहुँचा दो।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

श्री रत्नमणि चटर्जी
जिला कांग्रेस कमेटी
जी० टी० रोड
पोस्ट ऑफिस श्रीरामपुर, जिला हुगली
बंगाल

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०२६) से। सी० डब्ल्यू० १०३४२ से भी; सौजन्य: रत्नमणि चटर्जी

३२९. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम
४ अगस्त, १९४१[2]

खुर्शेदबहन नौरोजी भारतके पितामह स्वर्गीय दादाभाई नौरोजीकी सबसे छोटी पोती हैं। अपनी अन्य बहनोंकी तरह उन्होंने भी अपना जीवन भारतकी, वस्तुतः

१. डॉ० आशुतोष दास, आई० एम० एस०, ने असहयोग आन्दोलनके दौरान स्थायी कमीशनसे त्यागपत्र दे दिया था और हुगली जिलेके एक गाँव हरिपालमें काला बाजारके उन्मूलनके लिए कार्य किया था। व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा करने पर उन्हें जेल जाना पड़ा और रिहा होनेके कुछ समय बाद ही मलेरियासे उनकी मृत्यु हो गई।

२. अ० भा० कां० कमेटी फाइल सं० १३६३, १९४१ में उपलब्ध इस वक्तव्यके मसौदेमें ३ अगस्त, १९४१ की तारीख दी गई है, लेकिन बॉम्बे क्रॉनिकल में प्रस्तुत वक्तव्य "वर्धा, ५ अगस्त" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

मानवताकी, सेवामें समर्पित कर दिया है। कुछ वर्ष पहले उन्हें लगा कि उन्हें सीमा प्रान्त जाकर पठानोंके बीच काम करना चाहिए तथा अहिंसा धर्मका प्रचार करना चाहिए। उन्होंने पिछले सविनय अवज्ञा आन्दोलनमें भी भाग लिया था। पिछली बार सीमा प्रान्त वे डकैती और अपहरणकी घटनाओंके सिलसिलेमें गई थीं। वे बहादुर और निर्भीक महिला हैं, इसलिए उन्होंने योजना बनाई कि यदि सम्भव हो सके तो कबायली इलाकेमें जाकर काम किया जाये और डाकुओंसे सम्पर्क स्थापित करके उन्हें सही रास्ते पर लाया जाये। उन्होंने कई महीने सीमा प्रान्तमें काम किया और वे सीमा पार करने के लिए सरकारकी अनुमति प्राप्त करनेकी कोशिश कर रही थी। उन्हें अनुमति नहीं मिली, हालाँकि वे जिन अधिकारियोंके सम्पर्कमें आईं उन्होंने उनकी योग्यता, पारदर्शी निश्छलता तथा सीमा प्रान्तमें उनकी गतिविधियोंमें किसी भी तरहका छिपाव न होने को स्वीकार किया। उनके पास अधिकारियोंके जो पत्र हैं उनसे यह बात स्पष्ट है। जब वे इन्तजार करते-करते थक गईं, तो उन्होंने सीमा प्रान्तकी सरकारको सीमा पार करने के अपने इरादेकी सूचना दी। लेकिन वे गिरफ्तार कर ली गईं, उनपर मुकदमा चलाया गया और उन्हें १०० रुपये जुर्माना अथवा जुर्माना न देने पर तीन महीनेकी जेलकी सजा दी गई। उन्होंने जेल जाना मंजूर किया — और कैदकी मियाद पूरी होने पर उन्हें सीमा प्रान्तसे निकालकर बम्बई द्वीपमें नजरबन्द कर दिया गया। उन्होंने सरकारके इस आदेशका विरोध किया और अधिकारियोंके साथ पत्र-व्यवहार किया। अधिकारियोंको लिखे उनके पत्र मैं नीचे उद्धृत कर रहा हूँ:

७८ नेपियन सी रोड, बम्बई
३१ मार्च, १९४१

सर रिचर्ड टॉटेनहम
भारत सरकारके अतिरिक्त सचिव
गृह विभाग, पॉलिटिकल (१)
नई दिल्ली

महोदय,

१८ फरवरी, १९४१ का भारत सरकार आदेश सं० ७५/७/४१ पॉलिटिकल (१) मुझे ४ मार्च, १९४१ को पेशावर सेन्ट्रल जेलसे रिहा होने से तुरन्त पहले दिया गया था। उसके सम्बन्धमें मुझे यह कहना है:

मेरा विचार है कि इस आदेशकी भाषा अस्पष्ट है और मैं जो कार्य कर रही थी उसे देखते हुए मुझपर लगाये गये प्रतिबन्ध अनुचित हैं। मैं आपके सामने कुछ तथ्य पेश कर रही हूँ।

४ दिसम्बर, १९४० को अपनी गिरफ्तारीसे पहले लगभग नौ महीनेसे मैं पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तके बन्नू जिलेमें काम कर रही थी और अहिंसाके आदर्शको लोगोंके दिलोंमें बैठाने की कोशिश कर रही थी। मैं गाँव-गाँव जाकर पीरों, मलिकों, खानों और डाकुओंतक से मिली। उनमें से बहुतोंने धीरजके

साथ मेरी बात सुनी, जिसके लिए मैं उनकी आभारी हूँ। मैंने उनसे कहा कि असहाय मर्दों, औरतों और बच्चोंका अपहरण अथवा उनकी हत्या करना कायरता और क्रूरता है। मैंने डाकुओं और कबायलियोंको यह समझाने की कोशिश की कि अपने साथी इन्सानोंकी हत्या करना अमानुषिकता है। मैंने गाँववालोंको इस बातके लिए तैयार करने की कोशिश की कि गाँवोंकी सामूहिक रक्षाकी जिम्मेदारी उनकी है। मैंने हिन्दुओंसे अनुरोध किया कि वे अधिक साहसका परिचय दें और अपने पठान पड़ोसियोंके साथ सहानुभूतिका एक जीवन्त सम्बन्ध स्थापित करनेका प्रयास करें। मैंने पठानोंसे अनुनय-विनय की कि वे दुर्बलोंकी रक्षा करने और अपने बन्धु-बान्धवोंतक की नृशंसताका विरोध करने की अपनी परम्परापर चलें। पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तके सम्बन्धित जिलेके सरकारी अधिकारियों द्वारा उपर्युक्त तथ्योंकी पुष्टि की जा सकती है।

अधिकारियोंको विधिवत सूचित करनेके बाद ४ दिसम्बर, १९४० को जब मैं कबायली इलाकेमें वालो तांगी जा रही थी तब मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। वालो तांगी मैं अपहरण किये गये कुछ हिन्दुओंको छुड़वाने के लिए जा रही थी, जिनमें एक स्त्री भी शामिल थी, और मेरा इरादा वहाँ कुछ समयतक और आवश्यकता पड़ने पर अपना उद्देश्य पूरा होने तक रुकने का था।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, सीमा प्रान्तके ग्रामीणोंके साथ मेरी निजी अथवा सार्वजनिक बातचीतके दौरान कम-से-कम एक गुप्तचर अधिकारी हमेशा मौजूद रहता था और मेरी सारी बातें सुनता था और सम्भवतः उनकी रिपोर्ट सम्बद्ध सरकारी विभागको दे दी जाती थी।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तमें मैंने जो भी कार्य किया अथवा जो-कुछ कहा उसका ब्योरा मैंने दे दिया है और मैं आपसे यह पूछना चाहूँगी कि इस सबको क्या किसी भी तरह युद्धके कारगर संचालनमें, ब्रिटिश भारतकी सुरक्षा में अथवा सार्वजनिक व्यवस्था बनाये रखने में बाधक माना जा सकता है।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तमें किये अपने कार्यको मैं तत्वतः लोकोपकारी मानती हूँ। मुझे इस बातका पूरा यकीन है कि मुझे मेरी उपरोक्त गतिविधियोंके कारण सीमा प्रान्तसे बहिष्कृत नहीं किया जा सकता था। यदि सरकारके पास इसके विपरीत जानकारी है तो उसे बिलकुल गुमराह किया गया है। जिस प्रमाणके आधारपर सरकारने मेरे विरुद्ध उपरोक्त आदेश जारी किया है, मुझे उसका खण्डन करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

क्या मैं इसका जल्दी उत्तर पाने की आशा कर सकती हूँ?

आपकी विश्वस्त,
(हस्ताक्षर) के० ए० डी० नौरोजी

सरकारी अधिकारियोंने खुर्शेदके इस प्रतिवादकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इसलिए उन्होंने, राहत न पाने की सूरतमें, नजरबन्दीके आदेशको तोड़ने का निश्चय किया और अधिकारियोंको निम्नलिखित नोटिस दिया :

प्रिय महोदय,

आपके पिछले पत्रके सम्बन्धमें मैं आपसे यह कहना चाहूँगी कि मैंने उस पत्रको ध्यानपूर्वक पढ़ा है और उसमें मुझे बम्बई द्वीपमें मेरी नजरबन्दीका तनिक भी औचित्य दिखाई नहीं दिया।

ब्रिटिश सरकार आज जिस तनावपूर्ण दौरसे गुजर रही है उसमें कुछ समयके लिए मुझे सीमा प्रान्तमें न जाने देने की बातको मैं समझ सकती हूँ। लेकिन मुझे इस तरह बम्बई द्वीपमें कैद रखने की बात मेरे गले नहीं उतरती। मैं इसे स्पष्ट अन्याय और बिलकुल अनावश्यक मानती हूँ और मेरी आत्मा इसके विरुद्ध विद्रोह करती है। इससे मेरी बुद्धिका अपमान होता है। इसलिए यदि प्रतिबन्धके आदेशको सीमा प्रान्ततक ही सीमित नहीं कर दिया जाता और मेरे घूमने-फिरने की स्वतन्त्रतामें अन्यथा कोई बाधा डाली जाती है और यदि सरकार आदेशमें ऐसा संशोधन करके, जिसकी कि प्रार्थना की गई है, मुझे ३० जूनतक उत्तर नहीं दे देती, तो मैं इस आदेशका पालन नहीं करूँगी।

आपकी विश्वस्त,

(हस्ताक्षर) के० ए० डी० नौरोजी

मेरा खयाल है कि सरकारको चूँकि अपनी इस कार्रवाई पर शर्म आई[1] इसलिए और शायद इसलिए भी कि उसने यह महसूस किया कि खुर्शेदबहनको इस तरह बम्बईमें नजरबन्द करना ऐसी धाँधलेबाजी है जो किसी तरहसे न्यायोचित नहीं ठहराई जा सकती, उसने आदेशमें ढील कर दी और नजरबन्दीके क्षेत्रको बढ़ाकर पूरी बम्बई प्रेसीडेंसी कर दिया।

उससे खुर्शेदबहनको कोई राहत नहीं मिली। सरकारी कार्रवाईमें उनके प्रति जो अविश्वास निहित था उसपर उन्हें एतराज था। मैंने यहाँ जो पत्र-व्यवहार दिया है उससे यह देखा जा सकता है कि वे सीमा प्रान्त न जाकर अधिकारियोंकी बात यथा-सम्भव मानने को तैयार थीं। लेकिन बम्बई प्रेसीडेंसी तक अपने-आपको सीमित रखने का विचार उनके लिए असह्य था। वे वर्धा जाकर मुझसे सलाह-मशविरा क्यों नहीं कर सकती अथवा कमला नेहरू अस्पतालके निरीक्षणके लिए — जिसकी कि वे अभी हाल तक एक सक्रिय न्यासी और मन्त्री थीं — इलाहाबाद क्यों नहीं जा सकती अथवा भारतके किसी अन्य भागको — जहाँ उनके अनेक मित्र हैं और जहाँ देशमें चल रहे

१. देखिए "पत्र : देवदास गांधीको", १३-८-१९४१।

बहुत-से रचनात्मक कार्योंमें उनकी सेवा बहुत मूल्यवान हो सकती है — यात्रा क्यों नहीं कर सकती, इसका कोई भी तो कारण दिखाई नहीं देता। इस तरह उनके साथ जो विचित्र व्यवहार किया जा रहा था उससे तंग आकर आखिर उन्होंने ३१ जुलाई, १९४१ को बम्बईके पुलिस कमिश्नरको नोटिस दिया कि यदि उन्हें स्वतन्त्र रहने दिया गया तो उनका इरादा पहली अगस्तको वर्धा जानेका है। तब पहली अगस्तकी सुबह, बिना किसी मुकदमेके, मैं तो कहूँगा कि उनका अपहरण करके, उन्हें यरवडा जेल पहुँचा दिया गया।

सरकारकी इस कार्रवाई पर मैं हैरान हूँ और यह कार्रवाई खुद वाइसरायकी परिषद्के तथाकथित विस्तार आदिकी बड़ी सटीक और महत्त्वपूर्ण आलोचना है। लोगोंको समझ लेना चाहिए कि खुर्शेदबहनके कार्यका युद्धके विरोधसे कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन बहुत कम लोगोंको यह मालूम है कि बहुत सारे व्यक्तियोंको उनपर कोई मुकदमा चलाये बिना गिरफ्तार कर लिया गया है और हिरासतमें रखा गया है, हालाँकि, जहाँतक मुझे मालूम है, उनके विरुद्ध कांग्रेसके अभियानके अन्तर्गत अथवा उससे बाहर रहते हुए युद्धका विरोध करनेका कोई आरोप नहीं है। उन्हें जिन कारणोंसे हिरासतमें रखा जा रहा है उनके बारेमें न तो वे लोग स्वयं कुछ जानते हैं और न जनताको ही कोई जानकारी है। क्या खुर्शेदबहनका मामला इस बातका सूचक है कि इस तरहके अन्य मामलोंमें सरकारने क्या किया है?

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४१, फाइल सं० ३/४२/४१–गृह विभाग, पॉलि० (१); सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार। **बॉम्बे क्रॉनिकल**, ६-८-१९४१ भी

३३०. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

वर्धागंज
४ अगस्त, १९४१

मैंने एक भेंटकी प्रेस रिपोर्ट पढ़ी है, जिसके बारेमें कहा गया है कि यह भेंट मैंने एक अमेरिकी पत्रिका 'लुक' को दी थी। यह बिलकुल मनगढ़न्त है। इससे पहले मैं इस पत्रिकाके नामतक से परिचित नहीं था। मेरा रुख वही है जो मैं कई बार बता चुका हूँ। कांग्रेस पूर्ण स्वतन्त्रतासे कम किसी भी चीजसे सन्तुष्ट नहीं होगी।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ५-८-१९४१

३३१. पत्र : अमृतकौरको

[४ अगस्त, १९४१][1]

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। इसके साथ तुम्हारे लिए एक पत्र है। तुम्हें इस लड़की की याद होगी।

फिलहाल तुम्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं है।

यदि जमनालाल इस महीने के मध्यमें वहाँसे रवाना हो जाते है तब तो तुम्हारे पास कोई काम नहीं रह जायेगा!

हाँ, तुम्हें सामान बाँधने और सामान्य सुगढ़ताके लिए अव्वल दर्जेका प्रमाण-पत्र दिया जा सकता है। लेकिन तुम्हें शारीरिक दृष्टिसे सामान्य रूपसे स्वस्थ होने का प्रमाणपत्र प्राप्त करना होगा। अभी तो परिवारके लोग तुम्हे इतनी नाजुक समझते हैं कि तुम्हारे साथ चाहे जैसा व्यवहार नहीं किया जा सकता।

शम्मीसे पूछना कि मक्खियोंसे कैसे निपटा जाये। इस समय तो वे एक बला बनी हुई है। यदि वर्षा लम्बे अरसे तक न हुई तो वे हमें खा जायेंगी। मैं चाहूँगा कि जबतक तुम कोई विशेष उपाय न ढूंढ़ लो, जो अचूक हो, तबतक मक्खियोंके खिलाफ लड़ाईमें हिस्सा न लो।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

वीरम्मा[2] व करिआप्पा कर्नाटक चले गये है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५२ से भी

१. डाककी मुहरपर से

२. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पृ० १९१-९२ भी।

३३२. पत्र : ना० र० मलकानीको

४ अगस्त, १९४१

प्रिय मलकानी,

तुमने मुझे लम्बी प्रतीक्षाके बाद पत्र भेजा है, लेकिन मैं विलम्बका कारण समझता हूँ।

मैं देखता हूँ कि तुम्हें ग्रामीणोंके साथ सम्बन्ध स्थापित करने में बहुत ज्यादा कठिनाई हो रही है। लेकिन यदि तुम्हारे पास सही ढंगके कार्यकर्त्ता हैं और यदि उनमें सच्ची लगन है तो तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

क्या तुम अपने औजार स्वयं बनाते हो? इसके लिए तुम्हें साबरमती अथवा नालवाड़ी पर निर्भर नहीं करना चाहिए। यदि हम दूरस्थ डिपो पर निर्भर रहेंगे तो हम अवश्य विफल होंगे। सफलताके लिए जितना ज्यादा हो सके उतना ज्यादा विकेन्द्रीकरणका होना आवश्यक है। ठीक इन्हीं कारणोंसे मैं चाहूँगा कि तुम खद्दर के स्थानीय उत्पादनपर अधिकाधिक निर्भर करो।

क्या मैंने तुमसे कभी क्वेटा जाने और बलूचिस्तान कांग्रेसको रचनात्मक कार्यके बारेमें सलाह देने के लिए कहा था? मौलवी अब्दुस्समद उसके अध्यक्ष अथवा मन्त्री हैं। मैंने उन्हें वचन दिया था कि मैं तुम्हें वहाँ जाने और कुछ दिन लगाने के लिए कहूँगा। मेरा खयाल है कि मैंने तुम्हें जल्दीमें लिखा इस आशयका एक पत्र भेजा था। लेकिन चूँकि तुमने उसका कोई जिक्र नहीं किया है, इसलिए पता नहीं उसका क्या हुआ।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९४०) से

३३३. पुर्जा: मीराबहनको

४ अगस्त, १९४१

इससे निम्नलिखित उद्धरण याद आता है: "उसके शत्रुओंको हतबुद्धि कर, उनकी कुटिल चालोंको व्यर्थ कर"।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८७) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८८२ से भी

३३४. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

वर्धागंज
५ अगस्त, १९४१

गुजरात जेल (पंजाब) से ४८ व्यक्तियोंने जो पत्र मुझे लिखा बताते हैं उसका सारांश मैंने समाचारपत्रोंमें पढ़ा है। सन्देशमें जो प्रश्न पूछा गया है वह यह है: "क्या कांग्रेसके किसी सदस्यके लिए गम्भीर और उत्तेजक स्थितिमें एक हिंसक डाकूका हिंसक साधनोंसे मुकाबला करना, और फिर भी कांग्रेसमें बने रहना सम्भव है?"

बेशक, यह सम्भव है, यहाँतक कि उन लोगोंका भी कांग्रेसमें बने रहना सम्भव है जो जान-बूझकर कांग्रेसका हर नियम भंग करते हैं। लेकिन यदि मुझसे कोई पूछे कि क्या ऐसे लोगोंको कांग्रेसमें रहना चाहिए, तो मैं पूरे जोरके साथ जवाब दूँगा — 'नहीं'। यह तो हुआ सार्वजनिक आचरणके सम्बन्धमें। व्यक्तिगत आचरणके लिए कांग्रेसमें किसी नियमका विधान नहीं किया गया है। कांग्रेस ऐसे किसी भी व्यक्तिके आचरणके सम्बन्धमें अपना निर्णय नहीं देगी, और उसे देना भी नहीं चाहिए, जो अपनी सम्पत्तिपर हाथ डालनेवाले लुटेरे अथवा अपनी लड़की का शील भंग करनेवाले व्यक्तिका ताकतसे मुकाबला करता है।

परन्तु, पूनाके कांग्रेस अधिवेशनमें जो प्रस्ताव पास किया गया था उसमें स्पष्ट रूपसे कहा गया है कि कांग्रेसने आत्मरक्षाके उद्देश्यसे जिन स्वयंसेवक संस्थाओंका गठन किया है अथवा जिनसे कांग्रेसी लोग सम्बद्ध हैं उन्हें अहिंसाका पालन करना होगा। लेकिन जो लोग इस सिद्धान्तको भंग करते हैं अथवा यह कहते हैं कि कांग्रेसियोंको ऐसी स्थितियोंमें हिंसाका प्रयोग करना चाहिए उन लोगोंको कांग्रेससे निकाल देना चाहिए या नहीं, यह एक भिन्न प्रश्न है।

इस मामलेमें मेरा निजी दृष्टिकोण स्पष्ट है। जरूरी नहीं कि मैं ऐसे लोगोंको कांग्रेससे निकाल दूँगा। दिल्ली कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षको लिखे मेरे पत्रको[1] गलत रूपसे पेश किया गया है या उसे समझने में गलती हुई है। उसमें मैंने जान-बूझकर कांग्रेससे निकालने के विरुद्ध सलाह दी है। मेरी हमेशा यह मान्यता रही है कि बिरले ही मामलोंमें ऐसी कार्रवाई की जानी चाहिए।

मैं जानता हूँ कि मैंने श्री मुन्शीको जो सलाह[2] दी है उसका अर्थ कुछ लोगों ने कांग्रेससे निकाला जाना लगाया है। श्री मुन्शीने जो कदम उठाया है वह मेरी दृष्टिमें एक महान आत्माके योग्य है। उन्होंने खुल्लमखुल्ला कोई कार्रवाई नहीं की थी। उनके मनमें सच्चा धर्म-संकोच था। उन्होंने मुझसे सलाह माँगी और मैंने उनके तथा कांग्रेसके हितमें उन्हें कांग्रेससे अलग हो जाने की सलाह दी। इसमें प्रच्छन्न रूपसे अथवा अप्रत्यक्ष ढंगसे भी दवाव डालने-जैसी कोई बात नहीं थी। कांग्रेससे उनका अलग होना सर्वथा स्वैच्छिक था और ऐसा उन्होंने विशुद्ध नैतिक मान्यताओंके कारण किया। मैंने उन्हें जो सलाह दी उसपर पश्चात्ताप करने-जैसी कोई बात नहीं है और ऐसी सलाह मैं ऐसे मामलोंमें निस्संकोच देता रहूँगा।

सन्देशके शेष भागपर विचार करने की कोई जरूरत नहीं है।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ६-८-१९४१। अ० भा० कां० कमेटी फाइल सं० १३६३, १९४१ भी; सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

३३५. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा
५ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने तुम्हें तुरन्त तार भेज दिया था। मेरा दृढ़ विश्वास है कि उन्हें[3] कुछ समयतक बिलकुल चुप रहना चाहिए। इस संयमसे उनकी वाणी और सुधरेगी। तुम सब कारण समझ लोगी।

१. ४ जुलाई, १९४१ के **हिन्दू** में उक्त पत्र इस प्रकार उद्धृत किया गया था: "यदि कांग्रेसका कोई भी चवन्नी-सदस्य प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपसे युद्ध-प्रयासमें भाग ले तो उसे कांग्रेसकी सदस्यतासे हटा देना चाहिए।" देखिए "पत्र: रघुनन्दन शरणको", पृ० १८० भी।

२. देखिए "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको", पृ० १२५-२७।

३. जमनालाल बजाजको

उन्हें हरिद्वार न जाने देकर भी तुमने ठीक ही किया। जो-कुछ भी हो, उन्हें हर हालतमें बराबर वहीं रहना चाहिए। और तुम पूरी सचाईके साथ कह सकती हो कि उन्हें वहाँकी-जैसी शान्ति, सुविधा, भोजनकी अच्छी और साफ व्यवस्था भी अन्यत्र उपलब्ध नहीं हो सकती। ईश्वर करे कि इन सब सुविधाओंके परिणामस्वरूप उनके तन और मनको स्थायी लाभ हो।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्चः]

शैलेनके बारेमें तुम्हारा कहना बिलकुल सही है।[1]

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५३ से भी

३३६. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

५ अगस्त, १९४१

प्रिय शैलेन,

मैंने संलग्न पत्र पढ़ लिया है। राजकुमारीने जो आलोचना की है वह बिलकुल सही है। उसने जो गलतियाँ गिनाई है वे अक्षम्य हैं। यदि तुमने गम्भीरतापूर्वक सुधारकी कोशिश नहीं की तो तुम कभी तरक्की नहीं कर सकोगे। तुम्हारी गलतियाँ पूरी तरह लापरवाहीके कारण हैं।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३४३) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१. देखिए अगला शीर्षक।

३३७. पत्र : शार्दूलसिंह कवीश्वरको

५ अगस्त, १९४१

प्रिय कवीश्वर,

तुम्हारा पत्र मिला।[1] मेरी शंकाएँ तो कायम हैं। परन्तु मैं हर समय तैयार और तत्पर हूँ, बशर्ते कि कोई सामान्य आधार हो।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३८. पत्र : वालजी गो० देसाईको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
५ अगस्त, १९४१

चि० वालजी,

मेरे हामी भर लेने के बाद तुम्हारे निर्णय[2] करने की बात कहाँ रह जाती है? लेकिन तुम जो निर्णय चाहते हो वह निर्णय देने में तो मेरी जान निकल जायेगी। मैं तो सारा मामला एकसाथ तय करना चाहता हूँ। दुर्गा वायु-परिवर्तनके लिए इस समय वलसाड़में अपने बहनोईके यहाँ है।

बापूके आशीर्वाद

प्रोफेसर वा० गो० देसाई
देवगिरि
पूना–४

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४९६) से। सौजन्य : वालजी गो० देसाई

१. शार्दूलसिंह कवीश्वरने मुहम्मद अली जिन्नाको लिखे अपने पत्रकी एक नकल गांधीजीको भेजी थी, जिसमें उन्होंने कांग्रेस और मुस्लिम लीगकी बातचीतके लिए कोई विधि सुझाई थी।

२. देखिए "पत्र : वालजी गो० देसाईको", पृ० ७५ और २०८।

३३९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
६ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

जिस बातके लिए तुम मेरी आलोचना करती हो वही काम तुमने किया है — पत्रके खाली हिस्सेपर लिख दिया है। तुलसीदासने ठीक ही कहा है:

समरथ कहुँ नहिं दोषु गुसाईं।[1]

हरिजन कल्याण-कार्यमें तुमने जो प्रगति की है उससे उल्लसित होकर तुम चाहो तो ऐसा कर सकती हो।

तुम्हारी रक्षा[2] [राखी] मिल गई है और कल उसका यथावत् उपयोग किया जायेगा। मदालसा बड़े पैमाने पर राखियाँ बाँटनेकी खूब तैयारियाँ कर रही है। वह राखीके लिए खास धागे और फूल बना रही है। रामकृष्ण ९ तारीखको रिहा होगा और जितनी जल्दी हो सके सत्याग्रह करके वापस जेल पहुँच जायेगा।

कनुने पत्र द्वारा सूचित किया है कि उसकी माँका ऑपरेशन सफल रहा।[3]

बरसात अभीतक शुरू नहीं हुई। इससे झुंझलाहट होती है। किसान बहुत चिन्तित हैं। एमरीके बारेमें तुम्हारी बात बिलकुल सच है। क्या तेंदुआ अपनी चित्तियाँ बदल सकता है?

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५४ से भी

१. रामचरितमानस, बालकाण्ड, १/६८/८
२. यह शब्द देवनागरीमें है।
३. देखिए पृ० २२२ भी।

३४०. पत्र : विजया म० पंचोलीको

६ अगस्त, १९४१

चि० विजया,

तू तो बहुत व्यस्त जान पड़ती है। नीरस पत्र लिखती है और वह भी देर-देर से। क्या बात है? राखी कल बाँधूंगा। तुम दोनोंकी तबीयत ठीक होगी। नानाभाई कैसे हैं? शाला कैसी चल रही है? बा मजेमें है। मेरी तबीयत ठीक है। कुसुम अभी यहीं है। प्रभावती १५ को आयेगी। अमतुल सलामने सब दाँत निकलवा दिये हैं। तबसे उसका दमा गायब हो गया है। हालाँकि बहुत-से नये घर बन गये हैं तिसपर भी आश्रम पूरा भरा हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१३८)से। सी० डब्ल्यू० ४६३०से भी; सौजन्य: विजयाबहन म० पंचोली

३४१. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

६ अगस्त, १९४१

भाई विट्ठलदास,

भाई जाजूजीने[1] तुम्हारा बजट मुझे देखनेके लिए भेजा था। मैंने तो बिना कुछ सोचे-विचारे सुझाव दिया था। चरखा संघके काममें तुम भी उतने ही डूबे हुए हो, जितने जाजूजी और मैं। अतः हम अपने-अपने दृष्टिकोण तुम्हारे सामने रखें और फिर तुम जो सुझाव दो उनसे सहमत हो जायें। सामान्य नियम तो यही है न कि ज्यों-ज्यों बिक्री बढ़ती है खर्च कम होता जाता है? अर्थात् या तो लागत कम हो जाती है अथवा लाभ बढ़ जाता है? अब चूंकि हमें लाभ नहीं चाहिए, इसलिए हमें कीमतें कम कर देनी चाहिए। लेकिन मैंने सोचा था कि तुम दुकानोंकी संख्या बढ़ा रहे हो इसलिए शुरूमें तो शायद खर्च बढ़ेगा, लेकिन अन्तमें तो कम हो ही जायेगा। अगर मेरा यह अनुमान ठीक हो तो तुम्हें मुझे बताना चाहिए कि खर्चमें कमी कबसे शुरू होनेकी सम्भावना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९८००) से

१. श्रीकृष्णदास जाजू

३४२. पत्र : नटवरलाल वेपारीको

६ अगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारा पत्र और उसके साथका साहित्य मिल गया है। इसका अध्ययन करने के बाद यदि कुछ लिखने-पूछने को हुआ तो लिखूंगा, पूछूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२२) से

३४३. शोक-सन्देश : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको[1]

वर्धा
७ अगस्त, १९४१

तुम्हारी क्षति मेरी भी क्षति है, वल्कि राष्ट्रकी या कहें संसारकी क्षति है। गुरुदेव एक संस्था बन गये थे। हम अपने आचरणसे उनके योग्य बनें। मैं तुम सब लोगोंके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूँ।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-८-१९४१

३४४. श्रद्धांजलि : रवीन्द्रनाथ ठाकुरको

७ अगस्त, १९४१

रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी मृत्युसे हमने न केवल अपने युगका महानतम कवि खोया है, वल्कि एक उत्कट राष्ट्रवादी भी खोया है, जो राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ मानवतावादी भी था। सार्वजनिक जीवनमें शायद ही कोई ऐसी प्रवृत्ति होगी जिसपर उन्होंने अपने सशक्त व्यक्तित्वकी छाप न छोड़ी हो। शान्तिनिकेतन और श्रीनिकेतन के रूपमें वे सारे राष्ट्रके लिए, वल्कि सारे विश्वके लिए, एक विरासत छोड़ गये

१. ७ अगस्तको रवीन्द्रनाथ ठाकुरके निधनपर

हूँ। भगवान उनकी आत्माको शान्ति प्रदान करे, और जिन लोगोंको वे शान्ति-निकेतनका भार सौंप गये हैं वे उसके अनुरूप उतरें।

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल। बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-८-१९४१ से भी

३४५. पत्र: के० ए० चिदम्बरमको[1]

सेवाग्राम
७ अगस्त, १९४१

आपके द्वारा रेखांकित अंश[2] बिलकुल झूठा है। लॉर्ड अर्विनके बारेमें कही गई बात[3] भी ऐसी ही है। हमारी मुलाकात विशुद्ध राजनीतिक थी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिकृतिसे: बॉम्बे क्रॉनिकल, २८-९-१९४१

१. यह पत्र उस पृष्ठके मध्यमें प्रतिकृति-रूपमें छपा था जिसमें के० ए० चिदम्बरमका यह लेख था: "ऑफवेज फ्रंट पेज न्यूज! टुडे, ऐज बिफोर, द महात्मा प्रोवाइड्स मटीरियल फॉर स्कूप्स — एंड होक्सेज!"

२. अपने लेखमें के० ए० चिदम्बरमने पिक्चर पोस्ट में प्रकाशित "कुछ कथित गांधी-अर्विन उपाख्यानों" का उल्लेख करते हुए उनमें से एकको उद्धृत भी किया था, जो इस प्रकार था: "वे (लॉर्ड अर्विन) भारत गये और वहाँ पाँच वर्ष रहे। वहाँ वे मोहनदास क० गांधीसे मिले। धार्मिक उत्साहकी दृष्टिसे वे उस क्षीणकाय भारतीय संतसे भी बढ़-चढ़कर थे। इसी धार्मिक उत्साहके कारण उन्होंने उनको मात दे दी। एक बार एक लम्बी मुलाकातके बाद, जिसमें महात्माजी इसी तरह मात खा गये थे, बाहर निकलने पर उन्होंने [अर्थात् गांधीजी ने] कहा: 'भला कोई ईसा मसीहसे भी तर्क कर सकता है।'"

३. के० ए० चिदम्बरमके लेखमें उसी सूत्रसे यह भी उद्धृत किया गया था: "गांधीजी बीच-बीचमें जो भूख-हड़ताल करते रहते हैं, उन्हींमें से एकके दौरान लॉर्ड हैलिफैक्स [जो पहले लॉर्ड अर्विन थे] ने बड़ी ही मार्मिक बात कही थी, 'गांधी अभी उस भाषामें बोल रहे हैं जिसे भारतीय समझते हैं। यदि मैं भी नई दिल्लीकी सरकारी इमारतोंकी ड्योढ़ीमें बैठ जाऊँ और जबतक भारतीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन सही रास्ते पर न आ जाये, तबतक कुछ न खाऊँ तो कुछ ही दिनोंमें यह झंझट खत्म हो जाये। अलबत्ता यह जरूर है कि ये चन्द दिन बीतने के पहले ही लन्दनके मेरे लिबरल, कंजरवेटिव और लेबर दलोंके सहयोगी मुझे ब्रिटेन वापस बुला लेंगे और वहाँ पहुँचते ही मुझे पागलखाने का रास्ता दिखायेंगे।'"

३४६. पत्र : अमृतकौरको

७ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

लखनऊसे मिला एक पत्र इसके साथ है।

शैलेनकी गलतियाँ यदि तुम पहले ही सुधार नही चुकी हो तो अब सुधारने की कोई जरूरत नही। मैंने उसकी भारी लापरवाहीके सम्बन्धमें उसे एक कड़ा पत्र लिखा है।[1]

मेरे पास हिन्दू-कानून समितिकी[2] रिपोर्ट नही है। लेकिन इसपर 'इंडियन सोशल रिफॉर्मर' में प्रकाशित दो लेख और कुछ अन्य समीक्षाएँ मैं पढ गया हूँ। मुझे यह एक अच्छी रिपोर्ट जान पड़ी। मैं नही जानता कि इस सारी कोशिशमे कुछ बननेवाला है या नही। (मैं यह पत्र व्यवधानोंके बीच लिख रहा हूँ।)

तुम्हारा पत्र चिन्तामें डालनेवाला है। वायु-परिवर्तनसे तुम्हें उतना फायदा नही हुआ है जितनी मुझे आशा थी। इसीलिए तुम्हे सन्देह है कि तुम इस महीनेके अन्ततक भी वापस आ सकोगी या नही। मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारा सन्देह निराधार है।

कनुकी जगह, जहाँतक कार्यालयके कार्यका प्रश्न है, लक्ष्मीदासने ले ली है और मालिशका काम धीरेन करता है।

अमतुल सलामकी तबीयत अच्छी है और वह ठीक तरहसे खाती है। हमारे बीच गर्मागर्मी तो होती है, लेकिन यह एक आम बात है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४६)से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३५५ से भी

१. देखिए पृ० २३७।

२. इस समितिकी नियुक्ति जनवरी, १९४१ में बी० एन० रावकी अध्यक्षतामें इस उद्देश्यसे की गई थी कि "(१९३८ के अधिनियम ११ द्वारा संशोधित) १९३७ के हिन्दू स्त्रियोंके सम्पत्ति-अधिकार अधिनियमकी, विशेष रूपसे पाँच गैर-सरकारी विधेयकोंके सन्दर्भमें, जाँच की जाये।" २६ जुलाईको नई दिल्लीसे प्रकाशित इसकी रिपोर्टमें "पुत्रीको पुत्र-वधूके बराबर हिस्सा देने की व्यवस्था अविलम्ब करने" की सिफारिश की गई थी। इसमें "कृषि-भूमिके सम्बन्धमें भी विधवाओंको सम्पत्तिके अधिकार दिलाने के लिए पूर्व-प्रभावी कानून बनाने का" सुझाव दिया गया था। समितिने यह सिफारिश की थी कि "क्रमशः हिन्दू कानूनोंकी एक पूरी संहिता तैयार की जाये" और इसकी शुरुआत उत्तराधिकार कानूनसे हो। हिन्दू कानूनोंको संहितावद्ध करने का काम समितिने ४ अगस्त, १९४१ को पूरा किया था।

३४७. पत्र : कोतवालको

७ अगस्त, १९४१

भाई कोतवाल,

तुम्हारा पत्र मिला। अगर तुम अधीर हो रहे हो, तो जरूर [जेल] जाओ। वैसे मेरी वर्त्तमान मनोवृत्ति अवश्य यह है कि जो अहिंसाका रहस्य समझते हैं, उन्हें रचनात्मक कार्योंमें जुटे रहना चाहिए। अन्तमें तो सबको जाने का मौका मिलेगा। 'अजमेर, नहीं'; यह तो जरूर भूलसे लिखा गया है।[1] यदि जाना ही हो तो अजमेर ही जाना और वहाँकी समितिकी अनुमति लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३६०१)से

३४८. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
८ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा हिन्दी पत्र मिला। आशा है कि शम्मीके नुस्खेसे तुम पूरी तरह स्वस्थ हो जाओगी। मुझे खुशी है कि जमनालालके स्वास्थ्यमें धीरे-धीरे सब तरहसे सुधार हो रहा है।

महादेव कब वापस आयेगा, यह कहा नहीं जा सकता। बम्बईका काम खत्म करके उसे अहमदाबाद जाना है।

सरदार यरवडामें अस्वस्थ चल रहे हैं। यह खेदकी बात है कि हम लोग जेलमें अच्छा स्वास्थ्य नहीं रख पाते।

कनुको आज बम्बई पहुँच जाना है। उसकी माताका ऑपरेशन हुआ था, जो सफल रहा है।

१. देखिए "पत्र : हरिभाऊ उपाध्यायको", पृ० २३८।

लो, अब मुलाकाती आ रहे है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४७) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३५६ से भी

३४९. पत्र : नटवरलाल वेपारीको

८ अगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारी रिपोर्ट पढ़ गया हूँ। देखता हूँ, तुम्हें खासी मेहनत करनी पड़ी है। जेबसे खर्च भी काफी किया लगता है। कागज और टाइपिंगपर ही कुछ कम खर्च नहीं हुआ होगा। यह खर्च तुम जरूर वसूल करना और अगर फीस लेना उचित जान पड़े तो वह भी लेना।

अगर रिपोर्टकी नकलें ज्यादा कराई हों तो एक भाई गोपालनको और एक भाई चन्द्रशंकरको भेजना। अगर तुम्हारे पास नकल तैयार न हो तो मैं यहाँ करा लूंगा। इसके लिए मेरे पास खूब सुविधा है।

तुमने कष्ट उठाया, इसके लिए तुम्हारा आभारी हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२३) से

३५०. पत्र : प्रभावतीको

८ अगस्त, १९४१

चि० प्रभा,

तेरा पत्र मिला। राजेन्द्रबाबूका समाचार दुःखद है। अपना काम निपटाकर ही आना। राजेन्द्रबाबूके लिए अगर रुकना पड़े तो रुक जाना। यहाँ आज ही बारिश हुई और सबकी चिन्ता मिटी। कंचनबहन बीमार पड़ गई है। बाकी सब कुशल है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६२) से

३५१. पत्र : नारणदास गांधीको

८ अगस्त, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारे पत्र मिले। तुमने अन्तिम निर्णय कर लिया, यह अच्छा किया। नानाभाई बड़े भले और उदार वृत्तिके व्यक्ति हैं। कनैयोके बारेमें समझा। जमनाकी तबीयत ठीक होगी। उसकी आँख साफ बच गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५९० से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

३५२. पत्र : विद्याबहनको

८ अगस्त, १९४१

चि० विद्या,

राखी मिली। बांधी। और कातो, अच्छा कातो, मजबूत कातो, बारीक कातो। धुनकी चलाओ। चर्खा शास्त्रका अभ्यास करो।

बापुके आशीर्वाद

श्री विद्यावहन
शान्ति निवास
सियालकोट सिटी
पंजाब

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८९४५)से

३५३. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
[९ अगस्त, १९४१][1]

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला। हाँ, तुम मक्खियोंको कुटियामें आने नहीं देना। शम्मीने जो सुझाव दिये हैं उनके लिए उसको धन्यवाद।[2]

देखता हूँ कि तुमने मुझे एक पार्सल भेजा है।

जाजूजी अभी-अभी आये हैं।

इसके साथ दो पत्र हैं।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४८)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५७ से भी

३५४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

९ अगस्त, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हें कष्ट उठाने पड़ रहे हैं, उसका मुझे दुःख है। आशा है कि तुम्हारी बेटी अब खतरेसे बाहर होगी।[3]

जहाँतक आभाका सवाल है, उसे तबतक तुम्हारे पास रहना चाहिए जबतक तुम्हें उसकी जरूरत है। उसे भेज सकनेकी स्थिति होते ही तुम सतीशबाबू या अन्नदासे कोई ऐसा व्यक्ति ढूंढ़नेको कहना जो उसे पहुँचा जाये। बेशक, उसका किराया मैं दूंगा।

१. डाककी मुहरपर से

२. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पृ० २३३ भी।

३. अमृतलाल चटर्जीकी तीसरी पुत्री अणिमाको टाइफाइड हो गया था।

बाँधना एक कठिन समस्या है। चित्तरंजन सेवा सदन[1] क्यों नहीं?

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३२०) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

३५५. पत्र: अब्दुल रहमानको

९ अगस्त, १९४१

प्रिय अ० र०,

बहुत-बहुत धन्यवाद। तुमने निश्चय ही स्पष्ट कर दिया है कि एस० का 'विल यू?' से क्या अभिप्राय है। अब मुझे बताओ कि क्या ऐसी घोषणा करनेका समय आ गया है, और यह घोषणा कौन करे और इसमें क्या कहा जाये।[2] मैंने यह प्रश्न मदद पानेके खयालसे पूछा है, क्योंकि उक्त प्रश्नोंके बारेमें मेरे सामने कुछ स्पष्ट नहीं है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३५६. पत्र: अन्नदाशंकर चौधरीको

सेवाग्राम
९ अगस्त, १९४१

प्रिय अन्नदा,

आपका पत्र मिला। परिवर्तन इसलिए करना पड़ा कि बंगाल शाखाके विरुद्ध कुछ आरोप थे, जिनका स्पष्टीकरण आवश्यक था। खादी प्रतिष्ठानका मामला बिलकुल अलग ढंगका है। उस समय प्रश्न यह था कि क्या उन्होंने दूसरोंकी अपेक्षा सस्ते दामोंपर खादी बेची। अगर उन्होंने ऐसा किया तो इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। बंगाल शाखा पर तो यह आरोप है कि उसने खादीके दामोंमें अनुचित

१. कलकत्ताका

२. अब्दुल रहमानने अपने ६ अगस्तके पत्रमें "सभी सदाशयी लोगोंके विचारार्थ एक 'एक पक्षीय वक्तव्य' स्वीकार किये जानेका" सुझाव दिया था।

वृद्धि करके उसे दूसरोंकी अपेक्षा महँगे भावपर बेचा। यह काफी गम्भीर बात है। वास्तवमें क्या हुआ, इसके बारेमें मैं स्वयं भी आश्वस्त होना चाहता हूँ। इन दोनों मामलोंमें अन्तर आप देख रहे है न? इसलिए जाँचका विषय इस प्रकार होना चाहिए :

'क्या १९३७ और १९३९ के बीच बंगाल शाखाने खादीके दामोंमें अनुचित वृद्धि की और उसे मुनासिबसे कही अधिक दामोंपर बेचा? इन सालोंमें कुल लाभ कितना होना चाहिए था और कितना हुआ? ऊँची कीमतोंका यदि कोई कारण है तो वह कारण, और लाभका उपयोग किस प्रकार किया गया, यह भी बताया जाना चाहिए।'

आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३५७. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको

[१० अगस्त, १९४१ या उसके पूर्व][1]

मुझे हैरानी होती है कि ऐसी बातें समाचारपत्रोंमें[2] प्रकाशित कैसे होती है, जब कि उनका कोई आधार ही नही है। मुझे मौलाना साहबकी ओरसे अथवा किसी अन्य कैदीकी ओरसे कोई पत्र नहीं मिला है; और न इस आशयके निवेदनोंको लेकर कोई सन्देशवाहक ही मेरे पास आया है।

यह पूछे जाने पर कि जेलोंमें पड़े हुए जो कांग्रेसी यह महसूस करते हैं कि देश और संसारकी बदली हुई स्थितिको ध्यानमें रखते हुए कांग्रेसकी नीतिपर पुर्नविचार किया जाना चाहिए उनकी स्थिति क्या है, गांधीजी ने कहा :

यदि उनका दृष्टिकोण बदल गया है और वे अपनी आस्था बदलना चाहते है तो वे निश्चय ही किसी भी समय वैसा कर सकते हैं। उनके ऐसा कहने-भरकी देर है, सरकार सहर्ष उनकी बात मानेगी।

मेरे यह पूछने पर कि क्या अभी हालमें देशमें अथवा देशसे बाहर ऐसी कोई बात नहीं हुई जिसके कारण सत्याग्रह आन्दोलन बन्द कर देना चाहिए, गांधीजी ने कहा :

जहाँतक मेरा सम्बन्ध है, ऐसी कोई बात नही हुई है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १२-८-१९४१

१. यह भेंट दिनांक "नागपुर, १० अगस्त" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

२. पत्र-प्रतिनिधिने महात्मा गांधीका ध्यान इस रिपोर्टकी ओर खींचा था कि "नैनी जेलके ४० कैदियोंने, जिनमें कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद भी शामिल हैं, उन्हें निवेदन भेजे हैं। इनमें उन्होंने गांधीजी से अनुरोध किया है कि वे बदली हुई अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिको ध्यानमें रखते हुए कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन करें।"

३५८. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१० अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र चिन्तित करनेवाला है। भला तुम्हें इतना सख्त सिरदर्द क्यों होता है? तुमने क्या किया था? तुम्हें अवश्य स्वस्थ और सबल होना चाहिए।

सेव पहुँच गये हैं।

अभी भी बारिश हो रही है।

कविवर की मृत्युसे जो स्थान रिक्त हो गया है उसे कभी भरा नहीं जा सकता। उनमें साधुता और प्रतिभाका अनूठा संगम था।

मुझे खुशी है कि जमनालालके स्वास्थ्यमें बराबर सुधार हो रहा है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६३७)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६४८५ से भी

३५९. पत्र : सिकन्दरको

१० अगस्त, १९४१

प्रिय सि०,

तुम्हारा उतावली-भरा पत्र मिला। जल्दीमें कोई कार्रवाई करने की जरूरत नहीं है। जल्दीका काम शैतानका। समय हमेशा सत्यका साथ देता है। तुम 'प्रैक्टिस' करो, इसमें कोई हर्ज नहीं है। लेकिन तुम्हें 'प्रैक्टिस' शान्तिसे करनी चाहिए, बहुत भाग-दौड़ नहीं करनी है।

राजकुमारी इस महीनेके खत्म होने से पहले तो नहीं लौटेगी। और तबका भी पक्का नहीं। उसका आना उसके स्वास्थ्यपर निर्भर करेगा। उसका पता है . . .।[1]

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ शब्द छूटे हुए हैं।

३६०. पत्र : शान्तिकुमार न० मोरारजीको

१० अगस्त, १९४१

चि० शान्तिकुमार,

तुम ठीक सामग्री भेज रहे हो। बर्माके लोग भी आनेवाले हैं। सबसे मिल लेनेके बाद ही मैं अपना मत प्रकट करूँ, यही ठीक लगता है। मुझे बर्मा समझौतेकी एक प्रति चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७३५)से। सौजन्य: शान्तिकुमार न० मोरारजी

३६१. पत्र : सुशीला गांधीको

१० अगस्त, १९४१

चि० सुशीला,

तेरा पत्र मिला। मेरीबहन[1] अभी मिलने नहीं आई। इस बार मैंने तुझे बराबर पत्र लिखे हैं, लेकिन डाक विभागकी लापरवाहीके बारेमें क्या किया जाये? मणिलाल तो आलसी है ही। लेकिन तेरा सत्संग भी अगर उसका आलस नहीं निकाल सका, तो वह किस कामका? या मणिलालके स्वभावमें आलस इतना समाया हुआ है कि सत्संग भी कुछ असर नहीं कर पाता?

किशोरलालभाई और गोमतीबहन फिलहाल यहीं रहते हैं। महादेवभाई दौरे पर हैं, इसलिए वे मेरी मदद कर रहे हैं।

बरसातकी यहाँ बहुत कमी थी, लेकिन अब बारिश हो रही है, इसलिए शायद इस साल फसल अच्छी हो।

सीता[2] तेरी मदद करती है, यह बात मुझे अच्छी लगी। अरुण[3] भी रास्ते पर आ जायेगा।

१. एफ० मेरी बार, जो उन दिनों दक्षिण आफ्रिकामें थीं।

२ और ३. सुशीला गांधीकी पुत्री व पुत्र

साथका पत्र ई० एम० पारेखको पहुँचा देना। उसका पता मेरे पास नही है। बाकी समाचार किशोरलालभाई देंगे।

दोनोंको

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९२१) से

३६२. पत्र: शारदाबहन गो० चोखावालाको

१० अगस्त, १९४१

चि० बबुड़ी,

चोखावालासे कहना कि उसने बिना सोचे-विचारे अपनी राय दी है। तेरा स्वास्थ्य तो जन्मसे ही खराब था। अगर तू सब-कुछ खाती-पीती रहती तो चोखावालासे शादी करने के लिए जिन्दा ही नहीं बचती। जो दूध, घी, फल और साग-भाजी खाता है, वह कमजोर रह ही नहीं सकता। अपने आसपास नजर घुमाकर देखे, तो [गोवर्धनदास] देखेगा कि जो बेशुमार लोग बीमार दिखाई देते हैं, वे सब तेल-मिर्च खानेवाले हैं। अस्पतालमें जाकर देखे तो उसे ऐसे ही लोगोंसे भरा पायेगा। इसलिए बचपनमें तो आनन्दको दूध, दही, फल, साग-भाजी और रोटीपर ही बढ़ने दे। बड़ा होने पर वह स्वयं अपनी रुचि बना लेगा। कूनेकी[1] पुस्तक खरीदने का प्रयत्न कर रहा हूँ। यदि वह व्यक्ति नहीं आता, तो तेरे लिए कुछ करनको नही रह जाता।

दोनोंको

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३५) से। सौजन्य: शारदाबहन गो० चोखावाला

१. एक प्रसिद्ध जर्मन चिकित्सा-शास्त्री

३६३. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
११ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने यह नहीं बताया कि तुम्हारा सिरदर्द दूर हो गया या नहीं और वह हुआ क्यों था। तुम्हारे जमनालालको एक सालतक बन्दी बनाये रखने में मुझे कोई एतराज नहीं, बशर्ते कि उस सारे समयमें तुम्हें भी उनके साथ न रहना पड़े। मैंने सुना है कि शिमलामें सबसे अच्छा मौसम सर्दीका होता है और सस्ता भी खूब होता है — किराया नाममात्र और सब्जियाँ और फल कौड़ियोंके मोल बिकते हैं। वालजी एक बार सर्दीके मौसममें शिमला गये थे और उन्हें वहाँ रहने से फायदा भी हुआ था।

[तुम्हारे] लिए एक और काम है। किसीसे पता लगाओ कि दीमकोंसे छुटकारा पाने के लिए क्या करना चाहिए? हमारे यहाँ तो उनका भारी प्रकोप है। अब तो उन्होंने मेरे स्नानघर पर भी हमला बोल दिया है और अगर उनके उत्पातको समय रहते नहीं रोका गया तो वे सारी जगह फैल जायेंगी।

कृषि-विभागके पास इसका अवश्य कोई इलाज होगा।

क्या मैंने तुम्हें यह नहीं बताया कि मालिशका काम धीरेन करता है और दफ्तरका काम लक्ष्मीदास करता है?

अमतुल सलामकी तबीयत बिलकुल ठीक है। उसका वजन सात पौण्ड बढ़ गया और वह सारा दिन सक्रिय रहती है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

क्या सेब तुम्हारे बागके हैं?

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४९) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३५८ से भी

३६४. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

११ अगस्त, १९४१

भाई मुन्शी,

तुम्हारा पत्र मिला। पत्र स्पष्ट है। अब चन्द्रवदनको लिखना आसान होगा। उसका पत्र मिलनेके पहले मुझे कुछ भी मालूम नहीं था। उसके पत्रके बाद तुम्हारा भाषण मैंने 'सोशल वेलफेयर' में पढ़ा था।

तुम्हें जब आना हो चले आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६५) से। सौजन्य: कन्हैयालाल मा० मुन्शी

३६५. पत्र : मणिबहन पटेलको

११ अगस्त, १९४१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला था। किशोरलालभाईने तो उसका जवाब दे ही दिया है। भानुमतीको ऐसा क्योंकर हुआ? डॉक्टर क्या कुछ भी नहीं कह सकते? बच्चेका जीना कठिन है। अगर जिया, तो भी शायद दुर्बलता रह ही जायेगी।

क्या बापूके[1] पास मेरे पत्र पहुँचे? जल्दी पहुँचे, इसके लिए मैंने तो दोहरी सावधानी बरती थी।

तेरे परेशान होनेका कोई भी तो कारण नहीं है। हर हालतमें जेल जाना धर्म थोड़े ही है। बाहर रहकर तू बापूका ही काम कर रही है। यदि, इस समय जेलमें जायेगी तो मनको झूठा सन्तोष देगी। जानेका समय आने पर तुझे एक क्षणके लिए भी नहीं रोकूँगा। फिलहाल तो जो गुजराती काम करना चाहें उन्हें तुझे काम देते रहना है।

मुझे पाँच पौंड सूखे अच्छे अंजीर भेजना।

वह व्याकरण मिल गया है।

महादेव आ गया होगा। अबतक कितना चन्दा हुआ? यहाँ ठीक चल रहा है।

[गुजरातीसे]

बापूके आशीर्वाद

बापुना पत्रो — ४: मणिबहेन पटेलने, पृ० १३०

१. वल्लभभाई पटेल

३६६. पत्र : पुरुषोत्तम का० जेराजाणीको

सेवाग्राम
११ अगस्त, १९४१

भाई काकुभाई,

खर्चके बारेमें तुम्हारा जवाब मिला। इससे ठीक-ठीक समझमें आता है। तुममें और विट्ठलदासमें मैं कोई भेद नहीं करता। यदि मैं तुम्हें लिखता हूँ तो इसमें वह भी शामिल होता है, और इसी तरह जब मैं उसे लिखता हूँ तो उसमें तुम भी आ जाते हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०८५१)से। सौजन्य: पुरुषोत्तम का० जेराजाणी

३६७. पत्र : ब्रह्मानन्दको

११ अगस्त, १९४१

भाई ब्रह्मानंदजी,

आप जिसमें विरोध पाते हैं सो विरोध नहि है। रोगकी बर्दास्त तो सबको करनी है। और रोगी होते हुए सेवा भी करें। मिल्टनने अंधापनमें अपनी कलमसे की, ऐसे हि सूरदासने। जो तंदुरस्त है वे शरीरसे, मनसे, आत्मासे करें।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री ब्रह्मानन्द 'बन्धु'
मार्फत बा० दयाराम
बोहरा मन्दिर
मुजफ्फरनगर, यू० पी०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७७६) से

३६८. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धा
१२ अगस्त, १९४१

१७ तारीखको गुरुदेवका श्राद्ध-दिवस है। जिन लोगोंके लिए श्राद्ध-कर्मका धार्मिक महत्त्व है, वे निश्चय ही उस दिन पूरा उपवास करेंगे अथवा फलाहार करेंगे और प्रार्थनामें लीन रहेंगे। प्रार्थना व्यक्तिगत रूपसे अथवा सामूहिक रूपसे भी की जा सकती है। गुरुदेवकी रचनाओं और जीवनमें मनुष्यको ऊपर उठानेवाला जो सन्देश है, उस सन्देशको हर शहर और हर गाँवमें जिन लोगोंने ग्रहण किया है वे सब अपनी सुविधानुसार किसी एक समय इकट्ठा होंगे और उनके उदात्त जीवनपर विचार करेंगे तथा देशकी सेवाके लिए अपनेको समर्पित करेंगे।

गुरुदेव शान्ति और सद्भावनाके पक्षधर थे। वे साम्प्रदायिक बन्धनोंको नहीं मानते थे। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि सभी वर्गोंके लोग इकट्ठे होकर यह पुण्य-दिवस मनायेंगे और साम्प्रदायिक सद्भावनाको बढ़ावा देंगे।

मैं सब लोगोंको यह भी याद दिलाना चाहूँगा कि दीनबन्धु-स्मारक कोषके लिए अभी अधिकांश पैसा इकट्ठा होना बाकी है। मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि दीनबन्धु-स्मारक अब गुरुदेव-स्मारक भी बन गया है। इसका सीधा-सादा कारण यह है कि स्मारकका सारा पैसा शान्तिनिकेतनके रख-रखाव और विस्तारपर ही खर्च किया जायेगा और शान्तिनिकेतनमें विश्वभारती और श्रीनिकेतन भी शामिल हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि गुरुदेवके लिए एक पृथक् और विशेष स्मारक नहीं बनाया जायेगा, लेकिन जबतक उस स्मारकको साकार नहीं कर दिया जाता जिसकी कल्पना स्वयं गुरुदेवने की थी, तबतक उनके किसी स्मारककी बात सोचना भी हास्यास्पद होगा। यदि कार्यकर्त्ता और संगठनकर्त्ता स्मारकके लिए चन्दा इकट्ठा करने और उसे सर्वश्री बच्छराज एंड कम्पनी, ५१ महात्मा गांधी रोड, बम्बईके पते पर भेजने का निश्चय कर लें तो यह इस पावन दिवसकी समुचित परिणति होगी।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १४-८-१९४१

३६९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१२ अगस्त, १९४१

चि० अमृत,

तुमने मुझे अच्छी खबर दी है। मुझे आशा है कि सुधार जारी रहेगा। गुरुदेवके बारेमें मैंने जो सन्देश[1] जारी किया है उसे देखना।

औंधके अप्पा[2] एक हफ्तेके लिए यहाँ आ रहे हैं। बर्माका शिष्टमण्डल १५ तारीखको आयेगा। और इस तरह दिन भरता जाता है। डॉ० श्यामाप्रसाद[3] चाहते हैं कि मैं कलकत्तामें गुरुदेवकी स्मृतिमें होनेवाली सभाका सभापतित्व करूँ। मैंने 'नाही' का तार भेज दिया है, क्योंकि पहले मुझे एन्ड्रयूज-स्मारकका कार्य समाप्त करना है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५०) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५९ से भी

३७०. पत्र : मिर्जा इस्माइलको

१२ अगस्त, १९४१

प्रिय सर मिर्जा,

मुझे आपका बहुत ही दिलचस्प प्रस्ताव मिला, जिसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। वह मुझे आकर्षित नहीं करता और इसका सीधा-सा कारण यह है कि मुझे यह विश्वास नहीं है कि ब्रिटिश सरकार उचित कार्रवाई करेगी। इसके अलावा, सरकार द्वारा बुलाये गये सम्मेलनोंमें शामिल होने का अर्थ ही यह होता है कि सम्मेलनमें भाग लेनेवाले लोग युद्ध-प्रयत्नोंमें सहायता देंगे। ऐसा मैं नहीं कर सकता, मुझे नहीं करना चाहिए।

सारे परिवारके लोगोंको मेरा स्नेह।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८४) से

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. अप्पासाहेब पंत
३. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, अ० भा० हिन्दू महासभाके अध्यक्ष

३७१. पत्र : अरुणचन्द्र गुहको

१२ अगस्त, १९४१

प्रिय अरुण बाबू,

मुझे आपका दिलचस्प पत्र मिला। आपकी अहिंसा-सम्बन्धी सीमाको मानने में मुझे कोई दिक्कत नहीं है। जब अहिंसापर ईमानदारीसे आचरण किया जाता है तो उसका स्वयमेव ही विस्तार हो जाता है। किन्तु मेरे लिए तो इतना ही काफी है कि आप साम्प्रदायिक झगड़ों आदिमें अहिंसाके उपयोगको स्वीकार करते हैं।

वर्त्तमान संघर्षकी आपकी व्याख्या बिलकुल सही है।

सब मित्रोंको अभिवादन-सहित,

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६६९) से

३७२. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

१२ अगस्त, १९४१

प्रिय कु [मारप्पा],

औद्योगीकरण पर तुम्हारा लेख[1] मेरी समझमें हलका है। तुमने मरे घोड़ेको हाँकने की कोशिश की है। हमें तो उद्योगवादके समाजीकरणका विरोध करना है। वे लोग अपनी बातकी पुष्टिमें सोवियत संघकी उपलब्धियोंका उदाहरण देते हैं। यदि तुम दिखा सको, तो तुम्हें आँकड़ोंकी मददसे यह दिखाना चाहिए कि हाथकी बनी चीजें शक्ति-चालित यन्त्रों द्वारा तैयार वस्तुओंसे बेहतर हैं। अपने लेखके अन्तिम अनुच्छेदोंमें तुमने इस दावेके औचित्यको लगभग स्वीकार भी किया है।

इसका उत्तर देने का कष्ट मत करना, किन्तु अगले अंकमें तुम इसपर चर्चा कर सकते हो।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५५) से

१. यह लेख "पब्लिक कॉस्ट्स ऑफ सेन्ट्रेलाइज्ड प्रोडक्शन" शीर्षकसे ग्राम उद्योग पत्रिका के अगस्त मासके अंकमें छपा था।

३७३. पत्र : भगवानदासको

१२ अगस्त, १९४१

प्रिय बाबूजी,

यह बड़ी बात है कि आप बच गये। ईश्वरकी अनुकम्पा ही है। मुझे पूरी आशा है कि आप अपने शरीरको पर्याप्त आराम देंगे।

आपका सुझाव मेरे लिए नई चीज नहीं है। लेकिन भावी सामाजिक व्यवस्थाका ढाँचा कौन तैयार करेगा? कांग्रेस पहलेसे ही इस कार्यको कर नहीं सकती, क्योंकि कांग्रेस एक ऐसी संस्था है जिसकी रायमें समय-समयपर अवश्य परिवर्तन होता रहेगा। यदि आपका कहना है कि मुझे यह कार्य करना चाहिए, तो मैं तो अ० भा० चरखा संघ, अ० भा० ग्रामोद्योग संघ और तालीमी संघके जरिये उसकी रूपरेखा प्रस्तुत कर ही चुका हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि फिलहाल आप अपने ऊपर किसी प्रकारका बोझ न डालें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७४. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

१२ अगस्त, १९४१

प्रिय भगिनि,

महादेव संकट निवारणके पैसे इकट्ठा कर रहा है। रामचंद्रनका १८ जुलाईका खत मैंने देखा नहिं है। भेजो और मैं लिखुंगा। अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९९) से। सी० डब्ल्यू० ३०९० से भी; सौजन्य : रामेश्वरी नेहरू

३७५. पत्र : हीरालाल शर्माको

१२ अगस्त, १९४१

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। मेरी गलतफहमी नहिं है। तुमने तो कहा हि है कि आखर तो मैं कहुं[1] सो सही होगा। यह काफी नहिं है। तुमारा अभिप्राय स्पष्ट नहिं है तो मेरा निर्णय निकम्मा माना जाय। द्रौपदीकी[2] भी हार्दिक सम्मति नहिं है तो भी यह दान दूषित समझा जाय। कोई त्याग वगैर वैरागके अचल नहिं रहता है। मैंने तो नैतिक बात उठाई है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३०२ और ३०३ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

३७६. पत्र : बैंक ऑफ नागपुर लि० के मैनेजरको

सेवाग्राम
१३ अगस्त, १९४१

मैनेजर
बैंक ऑफ नागपुर लिमिटेड
वर्धा

प्रिय महोदय,

सन्दर्भ : जलियाँवाला बाग स्मारक कोष

आपके बैंकमें इस कोषकी जो राशि सावधि जमाखातेमें है, आप उसकी अवधि कृपया समाप्तिकी तिथिसे तीन वर्षके लिए बढ़वा दीजिए। जैसी कि फोन पर आपसे बात हुई थी, यदि रकमको नियत तिथिसे पहले न निकाला गया तो ब्याजकी सालाना दर ४% होगी। यदि इसे एक वर्ष बाद निकाला गया तो ब्याजकी दर ३½% होगी और दो वर्षके बाद निकालने पर ३¾%। यदि इसे निश्चित

१. हीरालाल शर्माकी मृत्युके उपरान्त प्राकृतिक चिकित्सालयको बेचने से प्राप्त होनेवाले धनके उपयोगके विषयमें

२. हीरालाल शर्माकी पत्नी

अवधिसे पूर्व निकालना पड़े तो इसके लिए आपने कमसे-कम १० दिन पहले सूचना देनेको कहा है। इस शर्तका पालन किया जायेगा।

कृपया इसकी पुष्टि करके पावती भेजिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी
अध्यक्ष
जलियाँवाला बाग स्मारक कोष

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७७. पत्र : अमृतकौरको

१३ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

मैं आसानीसे अपराध स्वीकार कर सकता हूँ। अमतुल सलामके मामलेमें मैं जो-कुछ कहता और करता रहा, यदि उसमें मैं हमेशा सही ही होता तो उसका वैसा विकास न हुआ होता जैसा कि हुआ है। किन्तु जैसा मैंने तुम्हें दूसरे सन्दर्भमें बताया है, मैं लाइलाज नहीं हूँ। मैं सुधर सकता हूँ और सुधर रहा हूँ।

मैं अब तुम्हारे बारेमें समझ गया हूँ। मैं तुमसे सहमत हूँ कि जबतक तुम अपनी खोई शक्ति और वजन पुनः प्राप्त न कर लो, तबतक तुम्हें नहीं लौटना चाहिए। किन्तु ऐसा भी हो सकता है कि अन्ततः तुम ऐसा केवल यहाँ आकर ही कर सको। कारण, जाड़ेका मौसम यहाँ सदा अच्छा होता है। लेकिन मैं भविष्यकी चिन्ता नहीं करता।

कंचन बीमार थी; अब खतरेसे बाहर है।

मुझे अभी-अभी बुलका तार मिला है कि वह रिहा कर दी गई है, किन्तु उसने कहा है कि वह यहाँ नहीं आ सकती। इसके बारेमें मुझे कलतक अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त हो जायेगी।

इसके साथ तुम्हारे लिए एक पत्र है। तुम उसे बता देना कि अभीतक मुझे समय नहीं मिला है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५१) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३६० से भी

३७८. पत्र : सी० माधवन पिल्लैको

१३ अगस्त, १९४१

प्रिय मित्र,

मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैं काम-वासनासे मुक्त हो गया हूँ, लेकिन यह कह सकता हूँ कि मेरा उसपर नियन्त्रण हो गया है और आशा है कि प्रयास करते रहने से मैं इससे मुक्त हो जाऊँगा। पूर्ण ब्रह्मचर्य एक ऐसा लक्ष्य है जिसे शायद लाखोंमें कोई एक व्यक्ति प्राप्त कर पाता है। ईमानदारीसे व लगातार किये गये प्रयत्नमें ही सफलता निहित है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री अयरूर सी० माधवन पिल्लै
पेरूर, मांगदी
क्विलोन (त्रावणकोर)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २३०) से

३७९. पत्र : टी० पालनिवेलुको

१३ अगस्त, १९४१

प्रिय पालनिवेलु,

सत्यको केवल पवित्र जीवन व संसारके धर्मग्रन्थोंके श्रद्धापूर्ण अध्ययन द्वारा ही पाया जा सकता है।

मेरे पास आने की कोई आवश्यकता नहीं है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री टी० पालनिवेलु
मन्त्री, आर्य समाज
४६, पंडी रोड
विल्लुपुरम्

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०९१)से

३८०. पत्र : देवदास गांधीको

१३ अगस्त, १९४१

चि० देवदास,

तुझे 'शेम' (शर्म) समझ लेना चाहिए था। मैंने 'फॉर वेरी शेम' लिखाया था।[1]

खुर्शेदबहनके छूटने का तार अभी-अभी मिला। क्या हुआ, यह तो आगे मालूम होगा। इस लेखमें दो भूलें हैं। वह सरहदके उस पार नहीं गई थी। पहला हुक्म तब नहीं बदला गया जब उसने उसका प्रतिवाद किया बल्कि तब बदला गया जब उसने उसकी अवज्ञा करने का नोटिस दिया। लेकिन ऐसी भूलें हो ही जाती हैं। जल्दीमें पढ़ने में जो समझमें आता है वही लिखा जाता है।

जयकर-सम्बन्धी लेख ठीक है। 'न्यू स्टेट्समैन' वाला अच्छा है।

लक्ष्मी एक दिन भी यहाँ रह जाये तो मुझे अच्छा लगेगा। अब तो यहाँ मौसम काफी ठंडा हो गया है। बारिश हो गई, इससे बड़ा चैन मिला।

[भारत]-बर्मा समझौता बड़ा भारी धोखा है। तुझे उसका अध्ययन करना चाहिए और किसी विशेषज्ञसे उसपर विस्तारसे लिखवाना चाहिए। महादेव अभी भी बम्बईमें भिक्षा माँग रहा है।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४८) से

३८१. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१४ अगस्त, १९४१

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

बात यह है कि सेवाग्रामसे केवल एक ही बार डाक निकलती है और वह समय है शामको साढ़े चार बजे। उत्तर और पूर्वके लिए डाक वर्धासे अगले दिन सबेरे भेजी जाती है। लेकिन कभी-कभी मैं साढ़े चार बजेके बाद पत्र लिखता हूँ और

१. देखिए पृ० २३१।
२. महादेव देसाई सहायता कोषके लिए चन्दा इकट्ठा कर रहे थे।

उसे किसी विश्वसनीय व्यक्तिकी मार्फत भेजता हूँ। विश्वसनीय होने के बावजूद, हो सकता है, वह उसी दिन शामको डाकमें डालना भूल जाये। ऐसी हालतमें पत्र एक दिन देरसे पहुँचेगा। इस तरफ गड़बड़ीकी मुझे और कोई सम्भावना दिखाई नहीं देती। और यह भी याद रखो कि कभी-कभी तुम्हारी डाक भी इसी तरह मिलती है, दो पत्र एकसाथ मिलते हैं। इसलिए हम दोनोंको यह खुशीसे सहन करना चाहिए।

इस पत्रमें तुमने अपने बारेमें कुछ नहीं लिखा है। क्या इसका अर्थ यह हुआ कि सब-कुछ ठीक है?

बुलका पत्र आया है। यह नहीं लगता कि उसकी स्थिति पहलेसे अच्छी है। आदेश अभी भी वही है। लगता है कि सरकारका इरादा उसपर मुकदमा चला कर उसका जुर्म साबित करना है। उससे कहा गया है कि वह वर्धा जाने के लिए आवेदनपत्र दे। उसने तार द्वारा आवेदनपत्र भेजा है। देखें, क्या होता है।

सारंगधर दासका पत्र भेज रहा हूँ। मैंने इसकी एक नकल महादेवको भेजी है और नामोंका उल्लेख न करते हुए इसका उपयोग करने के लिए कहा है। तुम सारंगधर दासको पत्र लिखना। कदाचित् मैं भी उसे कुछ पंक्तियाँ लिखूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५२) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६१ से भी

३८२. पत्र: मदालसाको

१४ अगस्त, १९४१

तुम दोनों[1] ठहरे कवि! तिसपर यह भी सच है कि वह [श्रीमन्नारायण] कवि होने के बावजूद धरतीसे चिपका हुआ है, इसलिए अपने काममें मस्त रहता है। तू गगनविहारिणी है, इसलिए विचारोंमें मग्न रहती है। इसीलिए तू हमेशा नौकरोंसे असन्तुष्ट रहती है। जबतक यह असन्तोष रहेगा तबतक तू गृहिणीके रूपमें घरको कैसे शोभान्वित कर सकेगी? ले इतना लम्बा [आशीर्वाद]।[2]

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२०

१. मदालसा और उनके पति श्रीमन्नारायण
२. मदालसाबहनने कवितामें पत्र लिखकर गांधीजीसे आशीर्वाद माँगा था।

३८३. पत्र : जमनालाल बजाजको

१४ अगस्त, १९४१

चि० जमनालाल,

तुम्हारी तबीयत वहाँ सुधर रही जान पड़ती है। डॉ० मैंकलके कहने से मालूम होता है कि घुटनेकी तकलीफ तो बनी ही रहेगी। अगर उतने ही पर रुक जाये तो मुझे कोई हर्ज नजर नहीं आता। जबतक वहाँ मानसिक शान्ति नहीं मिले, तबतक न खिसकना।

[सर फ्रांसिस] वाइलीसे मिलने का आग्रह न करना। सहज ही उनसे भेंट हो जाये तो हर्ज नहीं; लेकिन यदि प्रयत्न करने से उनसे भेंट होती हो तो यह अच्छा नहीं।

रामकृष्णसे मिलकर बहुत सन्तोष हुआ। वह जेलका पूरा लाभ उठा रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२०) से

३८४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१४ अगस्त, १९४१

भाई वल्लभभाई,

कल तुम्हारा पत्र मिला। पत्र पाकर खुशी हुई, लेकिन पढ़कर दुःख हुआ। तुम्हारी तबीयत खराब होने के बारेमें महादेवने मुझे लिखा तो जरूर था, लेकिन तुम्हारे पत्रसे पता चलता है कि तुम्हारी तबीयत बहुत ज्यादा खराब है; और यदि अभी भी वैसी ही है तो डॉ० गिल्डरकी उपस्थिति किस काम की है? यदि वह तुम्हारी तबीयतको सुधार नहीं सकते तो तुम्हारी छुट्टी हो जायेगी।

मुझे स्वयं तो तुम्हारा फलोंके रसपर रहना पसन्द है। अँतड़ियोंमें यदि कुछ हुआ तो निकल जायेगा। अंगूर, मोसम्बी, अनार, अनन्नासका रस जितना पिया जा सके उतना पीने से अवश्य लाभ होना चाहिए। पुष्कल रस पीने से — करीब साठ औंस रस पीने से — कमजोरी अवश्य दूर होगी। इसके साथ-साथ यदि रातको तुम पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखो तो मुझे विश्वास है कि अवश्य लाभ होगा। बीमारीके

कारण तुम्हें रिहा करना पड़े, ऐसा अवसर नहीं आने देना चाहिए। मुझे बराबर समाचार लिखते रहना। अधिक नही तो पोस्टकार्ड अवश्य लिखना।

गुजरातके सेवकोंको कसौटी पर कसा जा रहा है। ये लोग ठीक-ठीक काम करते जान पड़ते हैं। महादेव भी खासा अनुभव प्राप्त कर रहा है। मुझे खास दिक्कत नहीं होती। किशोरलाल यहीं रहता है और वह बराबर मेरी मदद करता है। सामान्यतया मेरी तबीयत ठीक कही जा सकती है।

बा के शरीरमें काफी शक्ति आ गई है। शामको लगभग पौन मील चल लेती है। काम तो सारा दिन करती रहती ही है। ठीक खा लेती है। चिन्ता करने की तनिक भी जरूरत नही।

जमनालाल भी अच्छे हैं। शिमलाकी हवा खा रहे हैं। उनमें ताकत आती जा रही है। वे राजकुमारीके कैदी है। वह जो खिलाती है वही खाते हैं। रोज आठ मील घूमते है, शतरंज वगैरह खेलते हैं और मौज करते हैं। उन्हें मनपसन्द वातावरण मिल गया है।

जानकीबहन और मदालसा मेरे साथ ही है और मेरे साथ ही खाना खाती हैं। दोनों अच्छी है। जानकीबहन तो चार-पाँच मील दौड़ सकती हैं। मदालसाका सातवाँ महीना चल रहा है। उसके मुँहमें छाले हो गये थे, अब नहीं है। इस बार प्रसव निर्विघ्न होने की सम्भावना है।

गुरुदेवके चले जाने से दीनबन्धु स्मारक कोष जल्दसे-जल्द इकट्ठा करने का दायित्व मुझपर आ पड़ा है। जो ईश्वरकी मर्जी।

कुसुम [देसाई] फिलहाल यहीं है। थोड़ी-थोड़ी मेरी मदद करती है। एकाध महीना रहेगी, कदाचित् उससे भी ज्यादा रहे। यह बात मैंने उसपर छोड़ दी है।

तुम्हारे सब साथियोंको तथा तुम्हें

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २४९-५०

३८५. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१५ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। सारंगधर दासको लिखे अपने पत्रकी एक नकल मुझे तुम्हे भी भेजनी चाहिए थी। लेकिन क्या किया जाये? ऐसे काम जैसे किये जाने चाहिए, वैसे मैं नही कर पाता।

तुम्हारे सेब बहुत ही अच्छे हैं। बा को बेहद पसन्द आये हैं। कहने की जरूरत नहीं कि मुझे भी बहुत पसन्द आये। लेकिन इसका मतलब यह न समझना कि मैं और भेजने को कह रहा हूँ। शिमलामें सर्दियोंमें इस फलकी क्या कीमत होती है?

एक पूरी भीड़ अन्दर आ रही है। शिमलामें थोड़ा-बहुत चन्दा जरूर इकट्ठा करना। मै देखता हूँ कि यह पत्र तुम्हें अवसर[1] बीत जाने के बाद ही मिलेगा। अतः यह सुझाव मैं वापस लेता हूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५३) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३६२ से भी

१. यहाँ संकेत १७ अगस्तको रवीन्द्रनाथ ठाकुरका श्राद्ध-दिवस मनाये जाने की ओर है। देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", पृ० २५६।

३८६. पत्र : रेहाना तैयबजीको

१५ अगस्त, १९४१

बेटी,

आज उर्दूमें नहीं लिखूंगा। तू काकासाहबके पास है, यही उनकी आधी दवा हो गई। मनचाहा संग मिले, साथ ही मनपसन्द संगीत मिले, तो फिर और क्या चाहिए? अब काकासाहबको अच्छा करके ही तुम दोनों बहनें वहांसे खिसकना। फिर तो मैं पेट-भर खाखरा सरोजको[1] खिलाऊँगा और तुझे दूंगा एक थप्पड़।

बापूकी दुआ

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६८३)से

३८७. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

१५ अगस्त, १९४१

चि० काका,

तुम्हारी आधी दवा तो आराम और रेहानाका संगीत कर देगा। तनिक भी जल्दी नहीं करना। डॉक्टरके कहे अनुसार चलना। तुम्हारे सामने इस समय एक ही चिन्ता होनी चाहिए — अपनी तबीयत सुधारना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

साथका पत्र रेहानाके लिए है।[2]

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९४९)से

१. सरोज नानावटी

२. देखिए पिछला शीर्षक।

३८८. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१६ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

जहाँतक तुम्हारे अपने घरके सेबोंका प्रश्न है, तुम जब-जब चाहो भेज सकती हो। मैं उन्हें लगभग रोजाना लेता हूँ और बा भी लेती है। लेकिन बाजारसे खरीदकर भेजे गये सेबोंकी कीमत मुझे अवश्य बताओ।

मुझे खुशी है कि जमनालाल अपनी इच्छा पूरी कर सके। उन्हें जो ठोस लाभ हुआ है वह कभी नष्ट नहीं हो सकता।

तुम्हें यह जानकर दुःख होगा कि वल्लभभाईके मलाशयमें एक फोड़ा है और कैन्सरका सन्देह है। उनकी सेहत काफी गिर गई है।

तुम्हारे गठियेका क्या कारण है? यहाँ जो तकलीफ थी, क्या वही बढ़ गई है, या यह कोई नई तकलीफ है?

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६३ से भी

३८९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१७ अगस्त, १९४१

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला। आज श्राद्ध-दिवस है। हम सब व्यस्त हैं। तुम्हे अवश्य ही शीघ्र चंगा हो जाना चाहिए।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६४ से भी

३९०. पत्र : जमनालाल बजाजको

सेवाग्राम
१७ अगस्त, १९४१

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। यहाँ आ जाना। बादमें सीकर आदिके बारेमें विचार करेंगे। आज श्राद्धमें लगा हूँ। मृदु[1] आई हुई है, इसलिए अधिक नहीं लिखूंगा। ओम[2] और उसके पतिदेवको[3] आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२१) से

३९१. भेंट : यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडियाके प्रतिनिधिको[4]

वर्धागंज
१७ अगस्त, १९४१

अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन यदि निरस्त्रीकरणका सिद्धान्त अपना लें तो मैं उन्हें तत्काल अपनी हार्दिक बधाइयाँ भेजूंगा और इसमें मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। मैं इसे अहिंसाकी विजय कहूँगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १९-८-१९४१

१. मृदुला साराभाई

२ और ३. जमनालाल बजाजकी पुत्री उमा और राजनारायण अग्रवाल

४. यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडियाके प्रतिनिधिने गांधीजीसे पूछा था कि चर्चिल-रूजवेल्ट घोषणामें "राष्ट्रों द्वारा बल-प्रयोगका परित्याग करने और निरस्त्रीकरणके सिद्धान्तको अपनाने" के सम्बन्धमें जो धारा है उसके बारेमें उनकी क्या राय है। 'अटलांटिक चार्टर' के नामसे विख्यात यह घोषणा १४ अगस्त, १९४१ को अधिकृत रूपसे जारी की गई थी।

३९२. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम, वर्धा
१८ अगस्त, १९४१

प्रिय कुमारप्पा,

मैं तुम्हारा मसौदा सरसरी नजरसे पढ़ गया हूँ। पढ़नेमें ठीक लगता है। तुम उसे सब लोगोंमें घुमा सकते हो। लेकिन तुम मिलो, इसके पहले मैं इसे सावधानीपूर्वक पढ़ जाऊँगा।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५७)से

३९३. पत्र : अमृतकौरको

१८ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

डाकको लेकर तो सचमुच झुंझलाहट होती है। लेकिन गाँवके डाकघरका किया भी क्या जा सकता है?

दूसरी झुंझलानेवाली चीज है तुम्हारी ढुलमुल सेहत। तुम एकदम स्वस्थ महसूस क्यों नहीं करती? कहीं इसकी वजह यह तो नहीं है कि तुमने जमनालाल की देखभालमें अपनी शक्तिसे अधिक परिश्रम किया? तुम सबने — अर्थात् तुमने और तुम्हारे . . .[1]ने उनपर जो प्रेम बरसाया वे उसका बखान करते नहीं अघाते। यह विचार अभी-अभी मनमें आया और मैंने तुम्हें बता दिया। बहरहाल, अब तुम्हें पूर्णतया स्वस्थ हो जाना चाहिए।

आजका दिन बहुत शानदार रहा। हमारे यहाँ प्रार्थनाएँ हुईं, जिनमें गुरुदेवके गीत गाये गये; सबेरेकी प्रार्थनामें 'जीवन जखन'[2] सुशीलाने गाया और शामकी प्रार्थनामें प्रभाकरने 'आनन्द लोके'[3] गाया। प्रभाकर एक अच्छा गायक सिद्ध हो रहा है। हमने हर वयस्क व्यक्तिसे एक पैसा और जो लोग ज्यादा दे सकते थे उनसे ज्यादा पैसा इकट्ठा किया। आश्रमवासियोंके पास अपना कोई पैसा न होनेके

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छोड़ दिया गया है।
२ और ३. साधन-सूत्रमें ये शब्द हिन्दीमें हैं।

कारण उन्होंने एक घंटे सूत काता और उनमें से प्रत्येकको उस सूतका बाजारके भावपर एक पैसा मिला। मगनलालने २,५०० रुपये, जानकीबहनने ११० रुपये और सुशीलाने १० किस्तोंमें ५०० रुपये, अर्थात् अपने वेतनमें से ५० रुपये दिये। इस तरह सेवाग्राममें हमने अच्छी रकम इकट्ठी की है। आशादेवी चन्दा इकट्ठा करने और प्रार्थनाके लिए वर्धामें अन्यत्र भी गईं। मुझे अभी पूरा समाचार नहीं मिला है। लेकिन वहाँ भी स्थिति अच्छी रही।

वल्लभभाईकी हालत खराब है। तुमने खबर पढ़ी होगी। देखें, क्या होता है। मेरे मनपर यह एक भारी बोझ है।

मृदुला आज बम्बईके लिए रवाना हो रही है। वह अपनी छोटी-मोटी समस्याओं का समाधान करने के लिए आई है।

आज मैं तुम्हें ज्यादा समय नहीं दे सकूँगा। वहाँ इस बार खादीकी बिक्री कैसी है?

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५६) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६५ से भी

३९४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१८ अगस्त, १९४१

चि० कृ० चं०,

सबके हाल तुमारे जैसे है ऐसा समजो। फरक मात्राका ही है। तुमारे खाने की बारी (वही शब्द है क्या) निश्चित करनी चाहिये। और भोजनका माप। ऐसा कुछ अर्से तक होगा तो सब अच्छा हि हो जायगा। प्रयत्नके बाद परिणामके बारेमें निश्चित हो जाना।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४००) से

३९५. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
१९ अगस्त, १९४१

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

कितने आश्चर्यकी बात है कि इधर मैंने तुम्हें पत्र भेजा और उधर तुम्हारा आया। तुमने भी लगभग ऐसे ही अथवा इन्ही शब्दोंका प्रयोग किया है। अब तुम्हे अपनी बीमारीसे छुटकारा पा लेना है। यदि शम्मी और अन्य लोग तुम्हे छुट्टी दे दें और ऐसा समझें कि साधारण रहन-सहनवाले परिवेशमें सम्भवत: तुम अच्छी हो जाओगी, तो मैं सहर्ष अपनी परिचर्यासे तुम्हें स्वस्थ बना दूंगा। यदि सारी जिम्मेदारी मुझे सौंप दी जाये तो मुझे घबराहट नही होगी।

आज अधिक नहीं।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५७)से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३६६ से भी

३९६. पत्र : ताराचन्दको

१९ अगस्त, १९४१

प्रिय डॉ० ताराचन्द,

आपके चेकके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। इसे मैं दीनबन्धु-स्मारक कोषमें भेज रहा हूँ। यदि आपको इसका यह उपयोग ठीक न लगे तो मैं आसानीसे इसमे परिवर्तन कर सकता हूँ।

ढाका और अन्य स्थानोंपर होनेवाले भीषण दंगोंके कारण मैंने जान-बूझकर हिन्दीके मामलेमें कुछ नहीं किया है। मामला तो तय करना ही होगा, परन्तु आज मूल्य बदल गये हैं। आज जैसे आसार है उनसे मुझे लगता है, इस मामलेको टुकड़ों में नही सुलझाया जा सकता। मैंने अपने वक्तव्यका जो मसौदा तैयार किया था वह सुन्दरलालजी को खास पसन्द नही आया। इसी बीच, दंगोसे मुझे गहरा आघात

लगा और तुरन्त कार्रवाई करने का विचार मैंने स्थगित कर दिया, यद्यपि इस विषयमें मेरे विचार अब भी वही हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३९७. पत्र: इन्द्रवदन दिव्येन्द्रको

१९ अगस्त, १९४१

भाई इन्द्रवदन,

तुम्हारे भेजे लिफाफेकी खोज करने में समय नष्ट होगा; और फिर तुमने जो खर्च किया उससे एक पैसा ज्यादाका माल तुम्हें मिल रहा है। इसलिए तुम्हें कोई शिकायत भी नहीं होनी चाहिए। अगर हम अकेली गायकी ही सेवा करें, तो भैंस नष्ट नहीं होगी; लेकिन अगर अकेली भैंसकी ही सेवा करेंगे, तो भैंस और गाय दोनों नष्ट हो जायेंगी। गाय और भैंस दोनोंकी सेवा करने से भी दोनों नष्ट हो जायेंगी। संसारमें मुख्यतः गायका ही दूध काममें लाया जाता है। फिर, वैद्यकी दृष्टिसे भी गायका दूध अधिक हितकारी है।

मो० क० गांधीके ब० मा०

भाई इन्द्रवदन एन० दिव्येन्द्र
गुड्ज ऑफिस
साबरमती, बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२१)से

३९८. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

२० अगस्त, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुमने जो लिखा है, बिलकुल ठीक है। मैं तो घंटा बजने के साथ ही उठता हूँ। उस समय घड़ी देखता हूँ और उसके बीस मिनट बाद प्रार्थना शुरू करवाता हूँ।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४८६)से। सी० डब्ल्यू० ७१५२ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

३९९. पत्र : देवदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२० अगस्त, १९४१

चि० देवदास,

महादेवको लिखा तेरा पत्र पढ़ा। महादेव तो बम्बईमें फँस गया है।

मेरे खयालसे ऐसी खबर तुझे पक्की जाँच किये बिना प्रकाशित नहीं करनी चाहिए थी। और फिर प्रकाशित करने के बाद बिना आधारके उसकी आलोचना करना, यह तो दोषपूर्ण बात है। . . .[1] तुझे बचा नहीं सकेगा। और फिर तूने मुख्य न्यायाधीशका नाम दे दिया है। मुझे डर है, तू अपराधी सिद्ध होगा। शायद अच्छा यह होगा कि तू अदालतमें जाने से पहले माफीकी एक ऐसी टिप्पणी प्रकाशित कर दे कि तेरा संवाददाता अपनी खबरको सही सिद्ध नहीं कर सका। मेरी रायमें यह शोभनीय होगा या फिर अदालतमें अपना बचाव किये बिना माफी माँग ले। लेकिन यह सब तो मैं नैतिक तथा कानूनी दृष्टिसे लिख रहा हूँ। आखिर तो तू वही करना, जो सर तेजबहादुर या मुन्शी कहें। इस पत्रकी नकल और तेरा पत्र महादेव को भेज रहा हूँ। तूने हस्ताक्षर तो पूरे किये हैं, लेकिन न 'देवदास' पढ़ा जाता है, न 'गांधी'। सभ्य समाजका नियम तो यह है कि हस्ताक्षरके अक्षर भी मोतीके दानों-जैसे होने चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४२)से

१. यहाँ साधन-सूत्रमें एक शब्द अस्पष्ट है।

४००. तार : जमनालाल बजाजको

[२१ अगस्त, १९४१ या उसके पूर्व][1]

जमनालालजी
शिवालय, देहरादून

प्रसन्नता हुई। जितने समय चाहो रहो।[2]

बापू

[अंग्रेजीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २४२

४०१. पत्र : उत्तिमचन्द गंगारामको

सेवाग्राम
२१ अगस्त, १९४१

प्रिय उत्तिमचन्द,

मुझे सरकारी हुण्डियाँ मिल गई हैं, जिनमें ५०० रु० हैं। मैं ३½ प्रतिशत ब्याजवाली हुण्डियाँ (२०० रु०) हरिजन सेवक संघके लिए दे रहा हूँ और बाकीके ३०० रु० दीनबन्धु-स्मारकके लिए, क्योंकि मैं जानता हूँ कि गुरुदेवने यह रकम इस स्मारक-कोषको ही दे दी होती। आप जानते हैं कि इस कोषका उपयोग पूर्ण रूपसे शान्तिनिकेतनके लिए किया जानेवाला है।

ज्यामितिमें मेरी दिलचस्पी कभी कम नहीं होगी, और मैं आपका प्रथम 'विद्यार्थी' हूँगा। लेकिन इन दो त्रिभुजोंको ठीक-ठीक काटनेमें सफल हो पाऊँगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रके अनुसार यह तार जमनालाल बजाजको २१ अगस्तको मिला था।

२. जमनालाल बजाजने आनन्दमयी देवीके आश्रममें कुछ दिन और ठहरनेके लिए गांधीजीसे अनुमति माँगी थी। देखिए "पत्र : अमृतकौरको", पृ० २७९।

४०२. पत्र : जकातदारको

२१ अगस्त, १९४१

प्रिय जकातदार,

इस उम्रमें भी आपने इतना अच्छा कार्य किया है कि आपको फिरसे सविनय अवज्ञा करने की आवश्यकता नही है। यदि सरकार आपको आपकी किन्ही भी गति-विधियोंके कारण जेल भेज देती है तो वह अलग बात है।

मैं चाहूँगा कि आप अपने जिलेमें कांग्रेसका रचनात्मक कार्य करके अहिंसाके सिद्धान्तका प्रचार करें।

आशा करता हूँ कि आप ठीक होंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

४०३. पत्र : कंचन मु० शाहको

२१ अगस्त, १९४१

चि० कंचन,

इस पत्रसे तो तुझे सन्तोष होना चाहिए। तू वहाँ आरामसे पहुँच गई होगी। अब खान-पानमें सावधानी बरतना और अच्छी हो जाना। अपने अध्ययनकी व्यवस्था कर लेना। मुझे बराबर लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

'आत्मकथा' के बारेमें मैंने लिख दिया है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२७३) से। सी० डब्ल्यू० ७१५४ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

४०४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२१ अगस्त, १९४१

भाई वल्लभभाई,

मुझे तो पहले ही डर था कि तुम्हें छोड़ दिया जायेगा। वे भी क्या करें? अब तो बिलकुल अच्छे होकर ही काममें लगना। काम तो बहुत है। [तुम्हारा] ऑपरेशन होने तक मुझे चैन नहीं पड़ेगा। समाचार बराबर भिजवाते रहना। मेरा पत्र क्या वे लोग तुम्हें सचमुच देते थे?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५०

४०५. पत्र : नटवरलाल बेपारीको

२१ अगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। अभी तो मैं तुम्हें कष्ट नहीं दूंगा। अपनी रिपोर्टमें तुमने मुझे काफी सामग्री दे दी है। अभी भी कुछ बाकी हो, तो मुझे लिखना। खाता-बहियोंमें तुम प्रत्येक पृष्ठपर मुहर लगाओगे न? जहाँ काटपीट हो, वहाँ हस्ताक्षर ही कर दो, तो काफी होगा। वाउचरों पर नम्बर आदि तो होंगे ही। तो अब तुम सारे खाता-बही आदि नवजीवन कार्यालयको वापस भेज दो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२४) से

४०६. पत्र : अमृतकौरको

२१ अगस्त, १९४१

चि० अमृत,

आज तुम्हारा खत नहि है। आशा है कि कुछ बीमारीके कारण नहि होगा।

जमनालालजी को आनंदमयी देवीका आश्रम अच्छा लगा। वहां शांति भी मिली। मुझको तार दिया कि मैं वहां कुछ दिन ठहरने की इजाजत दूं। मैंने दी है।[1] ज०[2] से खूब बातें कीं, फलाहार भी किया, इंदूसे[3] मिला।

यहां सब कुछ ठीक है। सरदार रिहा हुए। आज फोनसे बात भी हूई। यह खत पढ़ने में तो दिक्कत नहि आई होगी। हिंदीमें भले लिखा न?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८८३) से। सी० डब्ल्यू० ४२५१ से भी; सौजन्य : अमृतकौर

४०७. पत्र : रामनारायण चौधरीको

२१ अगस्त, १९४१

चि० रामनारायण,

तुम्हारा खत तो अच्छा है ही; मर्यादासे बाहर नही जाना। अगर क्षणिक जोश कारण नही है तो त्याग टिकेगा।[4] अन्यथा ज्यादा कष्टका ही कारण होगा। बरसोंकी आदत बड़ी दृढ़ताके सिवा नहीं छूट सकती है। ईश्वर तुम्हें बल दे।

बापूके आशीर्वाद

बापू : मैंने क्या देखा, क्या समझा?, पृ० १४३-४४

१. देखिए पृ० २७६।

२. जवाहरलाल नेहरू

३. इन्दिरा नेहरू

४. रामनारायण चौधरीने भोजन, वस्त्र आदि पर होनेवाले पारिवारिक खर्चेमें कटौती करने का निश्चय किया था। उनके विचारसे ये खर्च आश्रमपर बोझ थे।

४०८. तार : जमनालाल बजाजको

वर्धागंज
२२ अगस्त, १९४१

जमनालालजी
शिवालय
रायपुर, देहरादून

महेश[1] ठीक है लेकिन निगरानीकी जरूरत है। मदालसाके लिए अच्छा साथी है। तुम्हें बहुत ज्यादा जरूरत न हो तो उसे रहने की अनुमति दो।

बापू

[अंग्रेजीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २४२

४०९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२३ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

साथमें तुम्हारे लिए दो पत्र हैं।

मैं देखता हूँ कि तुम बुखार और खाँसीसे कैसे जूझ रही हो। मेरी कामना है कि तुम्हें सफलता मिले।

तुम धर्म यश देवको लिखना कि अपने प्रति सच्चा होने के लिए उन्हें पहले अपनी शुद्धि करनी होगी।

सुशीला बम्बई जाते हुए दो दिनके लिए यहाँ रुकी। वह 'ड्यूटी लीव' पर है। उसे एनेस्थीसियामें[2] अधिक अनुभव प्राप्त करने के लिए बम्बई भेजा गया है। उसके पिछले अनुभवके बलपर वे लोग एक ऐसे कीमती यंत्रका उपयोग करने में सफल हुए जो बेकार पड़ा हुआ था।

१. महेशदत्त मिश्र
२. मरीजको ऑपरेशनसे पहले बेहोश करने का शास्त्र

कंचन कुछ महीनोंके लिए अपनी माँके पास गई है।

मैं पहले दीनबन्धु-स्मारकके लिए पैसा इकट्ठा करनेका काम पूरा कर रहा हूँ; यह स्मारक अंशतः [रवीन्द्रनाथ] ठाकुर-स्मारक भी है। मैं तुमसे उसके लिए समय आने पर सबसे ज्यादा चन्दा लूँगा। तुम देखती ही हो कि मैंने सुशीलासे ५०० रुपये लिये हैं; बेशक किस्तोंमें लिये हैं।[1]

हाँ, तुम स्प्रे (पिचकारीसे छिड़कने की दवा) भेज सकती हो। मैं देखता हूँ कि यह महँगा है, लेकिन यदि कीड़े-मकोड़ों पर प्रभावकारी सिद्ध हुआ तो बहुत महँगा नहीं है। मैंने तुमसे यह भी कहा था कि तुम महीनेमें दो बार सेब भेज सकती हो।

अब मुझे समाप्त करना चाहिए। ओह, मैं तो भूल ही गया। सरदारकी बीमारी तो कोरा वहम थी।[2] सात डाक्टरोंको पोलीपस (ट्यूमर) दिखाई नहीं दिया। इसलिए चिन्ता करनेका कोई कारण नहीं।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

पोलीपस [शब्द] में एक 'एल' होता है। यह गलती मैंने की थी।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५८) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३६७ से भी

४१०. पत्र : जी० रामचन्द्रनको

२३ अगस्त, १९४१

प्रिय रा[मचन्द्रन],

रामेश्वरी नेहरूको लिखा तुम्हारा पत्र मैंने अभी-अभी पढ़ा है। वे जानना चाहती हैं कि उसका क्या उत्तर दिया जाना चाहिए। दिल्लीमें संघकी[3] जरूरत निश्चय ही बहुत ज्यादा है। लेकिन तुम्हारा और सुन्दरमका[4] त्रावणकोरमें काम करना और भी ज्यादा जरूरी है। मुझे इस बातमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि

१. देखिए "पत्र : अमृतकौरको", पृ० २७१-७२।
२. देखिए "पत्र : अमृतकौरको", पृ० २६९।
३. हरिजन सेवक संघ
४. जी० रामचन्द्रनकी पत्नी

त्रावणकोरमें रहकर तुम हरिजन-कार्य ज्यादा अच्छी तरहसे कर सकोगे। इसलिए तुम्हारे पत्रसे उठनेवाले अन्य प्रश्नोंकी मैं कोई चर्चा नहीं करूँगा।

तुम दोनोंको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०००) से। सी० डब्ल्यू० ३०९८ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

४११. पत्र: रामेश्वरी नेहरूको

२३ अगस्त, १९४१

प्रिय भगिनि,

तुम्हारा खत आज मिला। साथमें रामचंद्रनको जो उत्तर[1] दिया है उसकी नकल भेजता हूं। अच्छा लगता है कि अच्छी हो।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०००) से। सी० डब्ल्यू० ३०९७ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

४१२. प्रस्तावना: 'ए डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस' के लिए[2]

सेवाग्राम
२४ अगस्त, १९४१

'ए डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस' पुस्तिकाकी रचना श्री रिचर्ड बी० ग्रेगने पश्चिमके उन लोगोंके मार्गदर्शनके लिए की है जो सत्याग्रहके सिद्धान्तका अनुसरण करना चाहते हैं। मैंने 'शान्तिवाद' शब्दका प्रयोग न करके सत्याग्रह शब्दका प्रयोग जान-बूझकर किया है। शान्तिवादके नामसे जो चीज जानी जाती है वह सत्याग्रह नहीं है। श्री ग्रेग अत्यन्त परिश्रमी और व्यवस्थित ढंगसे काम करनेवाले व्यक्ति हैं। भारतमें रहनेके कारण, और सो भी लगातार एक वर्षतक साबरमती आश्रममें रहनेके कारण, उन्हें सत्याग्रहका प्रत्यक्ष अनुभव है। उनकी पुस्तिका समयानुकूल है और इससे भारतके सत्याग्रहियोंको अवश्य मदद मिलेगी। कारण, हालांकि पुस्तिका ऐसे

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. यह प्रस्तावना उक्त पुस्तकके प्रथम भारतीय संस्करणके लिए लिखी गई थी, जिसे नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबादने प्रकाशित किया था।

ढंगसे लिखी गई है जो पश्चिमके लोगोंको आकर्षक लगे, तथापि इसमें जो विषय-वस्तु है वह पूर्व और पश्चिम दोनोंके सत्याग्रहियोंके लिए समान है। इसलिए भारतीय पाठकोंके लिए इस पुस्तिकाका एक सस्ता स्थानीय संस्करण इस आशासे प्रकाशित किया जा रहा है कि बड़ी संख्यामें लोग इसे पढ़ेंगे और इसमें लाभ उठायेंगे। भारतीय सत्याग्रहियोंके कन्धोंपर एक विशेष जिम्मेदारी है, क्योंकि श्री ग्रेगने भारतमें सत्याग्रहका जो प्रयोग देखा उसके आधारपर ही उन्होंने अपनी इस पुस्तिकाकी रचना की है। श्री ग्रेगकी यह निर्देशिका सुबद्ध नियमावलीके रूपमें चाहे कितनी ही प्रशंसनीय क्यों न हो, लेकिन अगर भारतका यह प्रयोग असफल रहता है तो यह भी अपने प्रयोजनमें निष्फल सिद्ध होगी।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
ए डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस

४१३. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धा
२४ अगस्त, १९४१

आव्रजनकी समस्याओंसे मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है तथा मैं दक्षिण आफ्रिकामें बीस वर्षोंतक रह चुका हूँ। इस कारण भारत-बर्मा आव्रजन समझौतेमें स्वभावतः मेरी बहुत रुचि है। इस समझौतेसे मुझे गहरा दुःख पहुँचा है। इस विषयपर जितनी भी लिखित सामग्री प्राप्त हो सकी मैंने एकत्र कर ली है। कोई राय बना सकने के लिए इसमें से जितना पढ़ना आवश्यक था, और मेरे पास उपलब्ध सीमित समयमें जितना सम्भव था, उतना मैंने पढ़ लिया है।

इस अध्ययनसे मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि यह एक दुर्भाग्यपूर्ण समझौता है।

यह समझौता घबराहटमें किया गया है और दण्डात्मक है। अखबारोंमें मुझे ऐसी कोई बात पढ़ने को नहीं मिली जिससे किसी प्रकारकी घबराहट पैदा होने का कोई सबब नजर आता हो, और न ऐसी कोई बात देखने को मिली जिससे बर्मामें रहनेवाले भारतीयोंके साथ किये गये कठोर दण्डात्मक बरतावका औचित्य सिद्ध होता हो।

बर्मामें रहने का अधिकार सिद्ध करने का जिम्मा हर मामलेमें भारतीय प्रवासी के ऊपर लाद दिया गया है। किसीको भी लगेगा कि कमसे-कम इतना तो किया ही जाना चाहिए था कि समझौतेके लागू होने की तारीखको जो भी भारतीय बर्मामें मौजूद थे, उन सभीको वहांके पूर्ण अधिवासीके रूपमें स्वाभाविक रूपसे मान्यता मिल जाती।

दक्षिण आफ्रिका तथा दूसरे देशोंके आव्रजन कानूनोंसे मैं परिचित हूँ। वहाँ जो भी प्रतिबन्ध लगाये गये कानून पास करके ही लगाये गये हैं और जनमतकी अभिव्यक्तिके लिए काफी समय देनेके बाद जब कानून बनाया गया है तब उससे भी पहले कानूनके मात्र प्रस्तावपर विचारोंकी अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त कालका अन्तराल दिया गया है।

लेकिन इस मामलेमें समझौतेको गोपनीयता और रहस्यके पर्देमें छिपाकर रखा गया, और अकस्मात ही जब जनतापर इसे प्रकट किया गया उस समय तक किसीको इसकी कोई भनक भी नहीं थी।

जब हम स्मरण करते हैं कि अभी कुछ वर्ष पहले तक बर्मा भारतका एक अभिन्न अंग था, तब तो यह सारी चीज और भी बीभत्स प्रतीत होती है।

क्या [भारत और बर्माका] विभाजन हो जाने से भारत ऐसा अस्पृश्य देश बन गया है कि बर्मामें रहनेवाले भारतीय निवासियोंको भारी दण्ड भोगना पड़े और अपराधियोंकी भाँति अनुमति-पत्र अपने पास रखना पड़े? इस अनुमति-पत्रको 'पासपोर्ट' और 'परमिट'-जैसे निर्दोष नाम देने से ही वह कुछ कम आपत्तिजनक नहीं हो जाता। 'पासपोर्ट' और 'परमिट' प्रणालीकी आवश्यकता स्पष्ट रूपसे सिद्ध कर दी जाये, तभी मैं इस व्यवस्थाके औचित्यको स्वीकार करनेको तैयार हो सकता हूँ। मैं बिलकुल नहीं मान सकता कि यह समझौता उस महान बर्मी राष्ट्रकी हृदयकी पुकारके उत्तरमें किया गया है जिसके साथ भारतवासियोंका कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ और जिसके साथ पश्चिमसे विदेशियोंके आगमनके बहुत पहलेसे ही भारतका सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है।

बर्मामें भारतीय या भारतमें बर्मी लोग कभी भी उस अर्थमें विदेशी नहीं हो सकते जिस अर्थमें कि पश्चिमके लोग विदेशी हैं। सैकड़ों वर्षोंसे बर्माके साथ उन्मुक्त व्यापार होता रहा है और भारतके लोग बर्मा जाते रहे हैं।

यह कठोर समझौता भारत और बर्मा दोनोंके लिए एक ऐसा कलंक है जिसके वे पात्र नहीं हैं।

यह समझौता निर्मम रूपसे यह याद दिलाता है कि भारत तथा बर्मा दोनों ब्रिटिश हुकूमतके पैरों तले दबे हुए हैं और यह भी कि भारत शासन अधिनियम (गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट) और बर्मा शासन अधिनियम (गवर्नमेंट ऑफ बर्मा ऐक्ट)ने दोनों देशोंके निवासियोंको कोई वास्तविक स्वतन्त्रता नहीं प्रदान की है। वे हमें पूर्ण विकासका कोई अवसर नहीं देते। मुझे यह आशंका है कि बर्माके प्रधानमन्त्रीको मेरा यह कथन पसन्द नहीं आयेगा। शायद उनके मतमें यह समझौता एक लोकप्रिय कानून हो। यदि वे अभीतक नहीं समझे हैं तो शीघ्र ही समझ जायेंगे कि यह बात गलत है और इस कदमको उठाकर उन्होंने अपने देशवासियोंकी सेवा नहीं की है बल्कि वे उन लोगोंके हाथोंमें खेल गये हैं जो बर्माका निर्द्वन्द्व शोषण करना चाहते हैं। मैं मानता हूँ कि बर्माके शोषणमें भारतीय लोग भी पश्चिमी लोगोंके साझीदार रहे हैं, किन्तु मौलिक अन्तर यह रहा है कि पश्चिमके लोग बन्दूकें लेकर बर्मा पहुँचे, जब कि भारतीय बर्मावासियोंकी दयापर आश्रित होकर गये, जैसे कि वे संसारके सभी भागोंमें गये हैं और हमेशा गये हैं।

बर्मा-वासियोंके सद्भावके बिना तो हम एक दिन भी बर्मामें नहीं टिक सकते। मैं बर्माके मन्त्रियों और बर्माकी जनतासे प्रार्थना करूँगा कि वे आव्रजनका नियमन तबतकके लिए रोक रखें जबतक कि हम दोनों ही देश ऐसा नियमन करने के लिए स्वतन्त्र और स्वाधीन नहीं हो जाते। मैं यह विश्वास सँजोय हूँ कि जब वह शुभ दिन आयेगा — क्योंकि आयेगा वह अवश्य — तब ये सब मामले अपने-आप सुलझ जायेंगे, क्योंकि तब हम दोनोंमें से कोई भी देश अपने नागरिक दूसरे देशपर थोपना नहीं चाहेगा।

किन्तु मैं प्रस्तुत विषयसे बहक गया। इस समय तो मेरा उद्देश्य यह सिद्ध करने का है कि यह समझौता अन्तर्राष्ट्रीय शिष्टाचारके प्रत्येक नियमका उल्लंघन करता है और इसलिए रद्द किया जाना चाहिए। यह समझौता करने के लिए किसी अंग्रेजके बदले एक भारतीयको भेजा[1] गया, यह तथ्य इस समझौतेको और भी अवांछनीय बना देता है। किसी अप्रिय कार्यको सम्पादित करने के लिए किसी भारतीयको आगे कर देना तो एक पुरानी सुपरिचित चाल है। और यह कहना भी अप्रासंगिक है कि इस समझौतेके पीछे [बर्माके] स्थानीय भारतीयोंकी सहमति थी। कारण, यह समझौता केवल उन्हीं व्यक्तियोंके लिए अपमानकारी नहीं है जिनके कि बर्मामें आर्थिक हित निहित हैं, बल्कि समूचे राष्ट्रका अपमान है। लेकिन यदि इन स्थानीय भारतीयोंकी राय प्रासंगिक भी हो तो भी इस बातका प्रमाण होना चाहिए कि यह राय कितनी व्यापक थी और उसका स्वरूप क्या था।

बेक्स्टर[2] रिपोर्टका, जिसने इस समझौतेकी भूमिका तैयार कर दी, अध्ययन करने पर मैं देखता हूँ कि उसमें कुछ भी ऐसा नहीं जिससे समझौतेका औचित्य सिद्ध हो सके। श्री बेक्स्टरके सम्मुख विचारणीय विषय ये थे:

निम्न विषयोंपर जानकारी प्राप्त करने के निमित्त जाँच की जायेगी:

१. भारतीय आव्रजनका परिमाण;

२. यह आव्रजन किस हदतक मौसमी और अस्थायी होता है, और किस हदतक स्थायी होता है;

३. भारतीय मुख्यतः किन धन्धोंमें नियुक्त किये जाते हैं और किस हदतक वे बेकार या आंशिक रूपसे बेकार रहते हैं;

४. क्या इन नियुक्तियोंमें भारतीयोंने बर्मियोंको अपदस्थ कर दिया है या क्या उनके स्थानपर बर्मी लोग काम सँभाल सकते हैं, इस बातकी जाँच इन धन्धोंके पूर्व-इतिहास और उनकी आर्थिक आवश्यकताओंको ध्यानमें रखकर की जाये;

१. सर गिरिजाशंकर वाजपेयी; देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पृ० २०८-२०९।

२. जेम्स बेक्स्टर बर्मा सरकारके वित्तीय सलाहकार थे। बर्मा सरकारने उन्हें और दो निर्धारकों — ऊ टिन-टुट तथा रतिलाल देसाई — को बर्मामें भारतीयोंके आव्रजनके प्रश्नका अध्ययन करने के लिए नियुक्त किया था। बेक्स्टरने अपनी रिपोर्ट बर्मा सरकारको अक्तूबर, १९४० में दी थी।

५. इन सब उपलब्ध आँकड़ों और दूसरे सम्बद्ध तथ्योंको नजरमें रखकर देखा जाये कि बर्मी लोगोंकी आवश्यकताओंके साथ भारतीय अप्रशिक्षित श्रमिकोंकी संख्याका तालमेल बिठाने की किसी व्यवस्थाकी आवश्यकता है या नहीं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह केवल एक तथ्य-शोधक आयोग था। आयोग ने जिस तथ्यका पता लगाया वह निम्नलिखित है:

> ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला जिससे यह प्रकट हो कि जिन नौकरियोंपर बर्मी लोग पहलेसे काम कर रहे थे उनसे भारतीयोंने उन्हें अपदस्थ किया हो।... अबतक भारतीय मजदूर बर्मी मजदूरोंके स्थानपर नियुक्त नहीं किये गये हैं, बल्कि उनके पूरक ही रहे हैं।

इससे तो स्पष्ट ही है कि बर्मामें भारतीयोंके आवागमनपर इस समझौतेके द्वारा लादे गये प्रतिबन्धोंका औचित्य सिद्ध नहीं होता। रिपोर्टमें दिये हुए सुझाव मुझे विचारणीय विषयोंके क्षेत्रसे बाहर प्रतीत होते हैं, इसलिए उनका कोई महत्त्व नहीं होना चाहिए। इसके साथ एक यह तथ्य भी जोड़ दीजिए कि निर्धारकोंके मतको रिपोर्टमें स्थान ही नहीं मिला। आयुक्तने उसको कोई महत्त्व बेशक न दिया हो, किन्तु उसका जिक्र तो रिपोर्टमें अवश्य आना चाहिए था।

अब मैं एक क्षण अधिनियमकी प्रासंगिक धाराओंकी भी जाँच करूँ। वे इस प्रकार हैं:

बर्मा सरकार अधिनियम, १९३५ की धारा ४४(३) में कहा गया है:

> इस धाराकी उपधारा (२)की व्यवस्थाएँ भारतमें बसी हुई ब्रिटिश प्रजा-पर और किसी भी भारतीय रियासतकी प्रजापर उसी प्रकार लागू होती हैं जिस प्रकार वे यूनाइटेड किंग्डम (ब्रिटेन) में बसी हुई ब्रिटिश प्रजापर लागू होती हैं, किन्तु उस उपधाराकी उक्त व्यवस्थामें जहाँ-जहाँ यूनाइटेड किंग्डम कहा गया है वहाँ-वहाँ ब्रिटिश भारत, या प्रसंगानुसार सम्बन्धित भारतीय रियासत कहा जायेगा:
>
> शर्त यही है कि इस उपधारामें उल्लिखित किसी बातका भारतमें रहने-वाली ब्रिटिश प्रजा या किसी भारतीय रियासतकी प्रजाके बर्मामें प्रवेशके अधिकारपर कानूनन लगाये हुए किसी प्रतिबन्धपर या ऐसे किसी व्यक्तिके बर्मा-प्रवेशकी शर्तके रूपमें कानूनन लगाये हुए प्रतिबन्धपर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

उसी अधिनियमकी धारा १३८ इस प्रकार है:

> सम्राट परिषदीय आदेश द्वारा निर्देश दे सकते हैं कि आदेशमें निर्दिष्ट प्रतिबन्ध उसीमें निर्दिष्ट कालके अन्तर्गत भारतीयोंके बर्मामें आप्रवासपर लागू किये जायें (ये प्रतिबन्ध इस अधिनियमके लागू होने से पहले ही बर्माके सपरि-षद् गवर्नर तथा भारतके सपरिषद् गवर्नर-जनरलके बीच तय किये हुए होंगे और इन्हें भारत-मन्त्रीका अनुमोदन भी प्राप्त होगा या, पारस्परिक सहमतिके

अभावमें, भारत-मन्त्री द्वारा ही निर्धारित होंगे), उनके अलावा कोई दूसरे प्रतिबन्ध लागू नहीं होंगे :

> शर्त यही है कि इस अधिनियमके लागू होने के बाद वर्माके गवर्नर और भारतके गवर्नर-जनरल या सपरिषद् गवर्नर-जनरलके बीच हुए किसी समझौते को कार्यान्वित करने के लिए सम्राट जिस रूपमें आवश्यक समझें सपरिषद् आदेश निकालकर पूर्वादेशमें कुछ परिवर्तन कर सकते हैं।

पहली धाराको समग्र रूपसे पढ़ने पर ऐसा कुछ भी प्रकट नहीं होता कि वर्तमान आवासी भारतीयोंके मामलेमें कोई दखल दिया जायेगा। दूसरी धारा निर्णायक है।

इस धाराके अनुसार [वर्माके] वर्तमान भारतीय प्रवासियोंपर समझौतेके द्वारा कोई प्रतिबन्ध थोपा नहीं जा सकता।

मुझे इस विषयमें कोई शंका नहीं है कि भारत-मन्त्रीको सपरिषद् आदेश नहीं निकालना चाहिए और उन्हें समझौते पर अपना अनुमोदन भी रोक लेना चाहिए। जो भी प्रतिबन्ध हो वह वर्माकी विधानसभा कानून बनाकर लगाये और ऐसा वह भारत सरकारके परामर्श और सहयोगसे ही करे।

समझौतेकी जाँच करते समय यह जान लेना भी समीचीन है कि अधिनियमके पारित होने के समय सम्राटके मन्त्रियोंने कैसी घोषणाएँ की थीं। तत्कालीन समन्वयन तथा प्रतिरक्षा मन्त्री सर टॉमस इंस्किपका इस विषयपर निम्नलिखित आश्वासन था :

> कोई व्यक्ति भारतमें रहनेवाली ब्रिटिश प्रजा या भारतीय रियासतोंकी प्रजाके बीच उनके बर्मा जाने पर भेदभाव करना नहीं चाहता, ठीक वैसे ही जैसे कि ब्रिटिश भारतमें जाते समय ब्रिटिश लोगोंमें भेदभाव नहीं किया जाता।

तत्कालीन अवर भारत-मन्त्री श्री बटलरने भी कॉमन्स सभामें कहा था :

> अकुशल भारतीय श्रमिकोंके विषयमें वर्माके गवर्नरसे कहा गया है कि वे बर्मामें इन श्रमिकोंके आप्रवासका नियमन करने के निमित्त भारतके गवर्नर-जनरलसे परामर्श करें। हम इस विषयपर कोई सामान्य नियम इस कारण नहीं बना सकते क्योंकि हमें अकुशल श्रमिकोंके मामलेमें यह विभेदीकरण तो करना है, किन्तु साथ ही सामान्यतः भारतीयोंके उन्मुक्त रूपसे बर्मा-प्रवेशको भी हम रोकना नहीं चाहते।

अदालतमें इस अधिनियमकी व्याख्या निर्धारित करने में ऐसी घोषणाओंको कोई मान्यता भले न हो, किन्तु राजनीतिक रूपमें उनका महत्त्व हुण्डीके समान ही है या होना चाहिए।

यह समझौता ऊपर उद्धृत की गई घोषणाओंका स्पष्ट अतिक्रमण है। मुझे प्रसन्नता है कि जिम्मेदार भारतीय जनमत खूब स्पष्ट शब्दोंमें समझौतेकी भर्त्सना कर रहा है।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २५-८-१९४१

४१४. पत्र : विजया म० पंचोलीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए
२४ अगस्त, १९४१

चि० विजया,

जूनागढ़से लिखा तेरा पत्र मिला। तुझमें अक्ल होती, तो तू जूनागढ़का विवरण लिख भेजती कि वहाँ क्या देखा, क्या सीखा, आदि-आदि। क्या नानाभाई तुझसे कभी नहीं पूछते कि कमाई हुई सारी अक्ल तूने कहीं सेवाग्राममें गँवा तो नहीं दी? मेरी तबीयत बहुत अच्छी है, वा की भी। मैंने तुझे लिखा था या नहीं कि प्रभावती और कुसुम फिलहाल यहीं हैं? राजकुमारी अभी भी शिमलामें है, और उसे बुखार और खाँसी है, इसलिए अभी जल्दी यहाँ नहीं आयेगी।

दोनोंको या तीनोंको(?)

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१४०)से। सी० डब्ल्यू० ४६३२ से भी; सौजन्य: विजया म० पंचोली

४१५. पत्र : देवदास गांधीको

२४ अगस्त, १९४१

चि० देवदास,

तेरा पत्र मिला। तूने ठीक तर्क किया है। जोखिम तो उठानी ही चाहिए। लेकिन सवाल यह है कि इसमें भी विवेक और मर्यादाकी आवश्यकता होती है। तूने और अधिक सूचना दी है इसके बावजूद तुझे मुख्य न्यायाधीशको लपेटनेका अधिकार नहीं मिल जाता। अन्य प्रकारसे भी तू उसका कड़ा विरोध कर सकता है। उस मजिस्ट्रेटने इसे जो स्वैच्छिक कहा, उसकी भी अच्छी तरह खबर ली जा सकती है। उस पंजाबीने जो किया उसपर विस्तारपूर्वक लिखा जा सकता है। यदि तू जोखिम उठानेमें अन्तिम सीमातक जाना चाहे तो उसमें मेरी सहमति होगी। किन्तु यहाँ मुझे तेरा मामला कमजोर नजर आता है। किन्तु यदि वकील लोग अनुमति दें तो तुझे तदनुसार करना चाहिए। मैं तेरे उत्साहपर तनिक भी पानी नहीं फेरना चाहता।

महादेव भी बम्बईसे तुझे लिखेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४३) से

४१६. पत्र : जमनालाल बजाजको

२४ अगस्त, १९४१

चि० जमनालाल,

तुम्हारे तारका जवाब दिया है; अब उसका जवाब भी आ गया। महेशके विषयमें निश्चिन्तता नहीं है। वर्षोंका रोग शान्त है; पर उसे जड़-मूलसे समाप्त हुआ नहीं मान सकते। वह विशेष खुराक आदि ले रहा है। उसे थकावट भी हो जाती है। ऐसी स्थितिमें उसे खास कामके बिना बाहर नहीं निकलना चाहिए। तुम्हें किसी मददकी जरूरत है क्या? है, तो किस तरहकी?

शान्ताको[1] वहाँ बुलाने में मुझे कोई सार दिखाई नहीं देता। अगर उसके हितके लिए है, तो तुम वहाँ पूरा अनुभव लो, उसके बाद उसे स्वतन्त्र रूपमें भेज दिया जायेगा। अगर [तुम्हें] उसकी सेवाकी जरूरत हो तो मुझे लगता है कि उस विषयमें संयम रखने से ही वहाँका पूरा लाभ मिल सकता है। यह मेरी निजी राय है। इतने पर भी तुम जैसा चाहोगे, वैसा मैं करूँगा। शान्तासे पूछना तो अभी बाकी है।

वल्लभभाई छूट गये हैं। उनको पोलीपस की बीमारी नहीं है। इसलिए उनको लेकर जो बहुत डर था, वह तो खत्म हुआ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२२)से

४१७. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

२४ अगस्त, १९४१

चि० बबुड़ी,

मुझे तो मालूम है कि साथ मिलकर रहने में जो आनन्द और जो सुभीता है, वह अकेले रहने में नहीं है। इसीलिए कहा गया है कि स्नेही जनोंकी भीड़ भी अच्छी। आनन्दके दस्तोंके लिए दूधमें एक चम्मच चूनेका पानी मिलाना चाहिए या सौंफका पानी। चूनेका पानी घरमें तैयार किया जा सकता है। कलईके चूनेमें ऊपरसे पानी उँड़ेलने से उसमें उफान आयेगा और बादमें आकाश जैसा निर्मल पानी ऊपर निथर आयेगा। इस निथरे पानीको शीशीमें भरकर रख लेना चाहिए और एक चम्मच दूधमें डालकर देना चाहिए। एक चम्मच सौंफ आठ आउन्स पानीमें उबालकर पानीको छान लेना चाहिए और उसको एक चम्मच दूधमें डालना

१. शान्ता रुइया

चाहिए। इस प्रकार एक वार चूनेका और एक वार सौंफका पानी देते रहना चाहिए। इससे लाभ अवश्य होगा। रोटी एक-दो दिन मत देना।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३६) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

४१८. पत्र : अद्वैतकुमार गोस्वामीको

२४ अगस्त, १९४१

भाई अद्वैतकुमार,

तुम्हारा खत मिला है। तुमको सलाह देना कठिन है। वगैर परिचयके क्या कह सकता हूं। फिर भी इतना तो स्पष्ट है कि तुम्हारे निश्चयवान् बनने के लिये सव छोड़कर कुछ अरसेके लिये कुछ ऐसा उद्यम करना चाहिये जिससे तुम्हारा खर्च अच्छी तरह निकल सके। जो मनुष्य अपना वोज अपने आप उठाता है और किसीको कष्ट नहिं देता है वह भी एक प्रकारकी देशसेवा करता है।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १४९) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

४१९. तार : जमनालाल बजाजको

वर्धा
२५ अगस्त, १९४१

सेठ जमनालालजी
शिवालय
रायपुर, देहरादून

शान्ताकी अपनी कोई इच्छा नहीं। आप जैसा चाहें वैसा करने को तैयार हैं। मेरी राय है कि उसे वहाँ वादमें भेजना ठीक रहेगा। क्या आपको किसी सेवाकी जरूरत है? कल [मैंने आपको] विस्तारसे लिखा[1] है।

वापू

[अंग्रेजीसे]
पाँचवें पुत्रको वापूके आशीर्वाद, पृ० २४३

१. देखिए पृ० २८९।

४२०. पत्र : अमृतकौरको

२५ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

आज तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया। इसलिए तुम देखोगी कि यह अनियमितता इकतरफा नहीं है। और यह तो नियमित अनियमितता है! लेकिन हमें भगवानका आभार मानना चाहिए कि और ज्यादा अनियमितता नहीं है अथवा हमें कैसी भी डाक-सेवा उपलब्ध है। आज जैसी डाक-व्यवस्था है वैसी पचास वर्ष पूर्व नहीं थी। राजकोट और पोरबन्दरके बीच हमें विशेष सन्देशवाहक भेजने पड़ते थे। इसलिए जब मुझे कोई पत्र मिलता है तो इतनेसे ही सन्तुष्ट हो जाता हूँ। अधिकारोंका परित्याग करने से विशेष सुखका अनुभव होता है।

अन्नपूर्णा मन्द ज्वरसे बिस्तरपर पड़ी है। कारण समझमें नहीं आता। आशा है, थोड़े दिनोंमें ज्वर उतर जायेगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५९) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६८ से भी

४२१. पत्र : चन्देलको

२५ अगस्त, १९४१

भाई चन्देल,

तुमने अपने कार्यका जो विवरण दिया है वह बहुत आकर्षक है। निःस्वार्थ भावसे किये गये कामका परिणाम हमेशा अच्छा होता है। जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं उनकी ओर ध्यान न दो, बल्कि उनके प्रति दया-भाव रखो और जब-कभी तुम्हें सेवा करने का मौका मिले तब उनकी मदद करने की भरसक चेष्टा करो, अर्थात् यदि वे बीमार पड़ जायें तो ठीक करने की कोशिश करो। घृणाको प्रेमसे और क्रोधको धैर्यसे जीतने का यही तरीका है। अपने प्रति कहे गये कटु वचनों का उत्तर हमें हमेशा मौन रहकर देना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[अंग्रेजीसे]

बापू – कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पॉण्डेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९५-९६

४२२. पत्र : वी० राघवय्याको

२५ अगस्त, १९४१

प्रिय राघवय्या[1],

आपका कहना ठीक है। एक बार सत्याग्रहमें भाग लेनेका निश्चय करनेके बाद आपका इस आधारपर उससे छुटकारा माँगना कोई वाजिब कारण नहीं है कि आप दूसरे काममें व्यस्त हैं। लेकिन यदि आप आग्रह करते तो मैं फिर भी आपको छूट दे सकता था। लेकिन आप-जैसे व्यक्तिके लिए कुछ समयके लिए सत्याग्रहकी सूचीसे अपना नाम वापस ले लेना ही अच्छा है। इससे आपपर कोई दोष नहीं आयेगा। लेकिन इसका निर्णय मैं आपपर ही छोड़ता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री वी० राघवय्या, बी० ए०, बी० एल०
नेल्लूर

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०४४७) से। सौजन्य: के० लिंग राजू

४२३. पत्र : सर्वपल्ली राधाकृष्णन्‌को

२५ अगस्त, १९४१

प्रिय सर रा[धाकृष्णन्],

आपका आग्रह टाल सकना असम्भव है। मेरे लिए आगामी २१ जनवरीकी तारीख आप अस्थायी तौरपर तय कर सकते हैं।[2] अबसे २१ जनवरीके बीच क्या-कुछ हो जाये, मैं खुद नहीं जानता। जबतक सम्भव हो, तबतक कृपया इसका प्रचार न करें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. एक कांग्रेसी तथा आदिवासी समाज-कल्याण कार्यकर्ता, जो वेनादि राघवय्याके नामसे प्रसिद्ध थे।

२. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके रजत-जयन्ती समारोहके लिए

४२४. पत्र : जमनालाल बजाजको

२५ अगस्त, १९४१

चि० जमनालाल,

इसके साथ शान्ताका पत्र है। वहाँ पहुँचते-पहुँचते अक्षर अस्पष्ट हो जायें और न पढ़े जायें तो पढ़नेकी तकलीफ मत उठाना। उसका सार मैंने आजके तारमें दिया है। शान्ताकी इच्छा नही है और अनिच्छा भी नही है। वह तो तुममें समा गई है। अर्थात्, जो तुम्हारी इच्छा वही उसकी इच्छा। यह है भी ठीक। इस कारण प्रश्न केवल उसके हितका रहता है। यदि तुम वहाँ बहुत अधिक समय रहनेवाले हो तो शान्ता वहाँ जाकर कुछ प्राप्त भी कर सकती है। मेरे खयालसे तो उसे वहाँ तुम्हारी अनुपस्थितिमें रहना चाहिए। कदाचित उसे वहाँ रहनेकी जरूरत भी न हो। भक्ति तो उसमें है। अब विचारणीय यह है कि वहाँका वातावरण उसे सक्रिय बनाता है या नही। वह इस जन्ममें तो किसी अन्यको गुरु बनानेवाली नही है। उसके गुरु तो तुम ही हो। इस कारण तुम्हें तो उसे आज्ञा ही देनी है। इस पत्र-व्यवहारमें ही तुम्हारा वहाँ रहनेका समय पूरा हो जायेगा। अगर तुम्हें वहाँ शान्ति मिलती हो, और जो चाहते हो वह मिल जाता हो, तो वहाँसे हटना नही। अगर वहाँ रहनेका निश्चय करो या और कुछ तय करो, लेकिन अगर शान्ताकी वहाँ उपस्थिति चाहते हो तो तार देना। मैं उसे रवाना कर दूँगा। तुम्हारे तारमें विचारके लिए अवकाश था। इस कारण ही तार भेजा और जवाब मँगवाया। महेश और शान्ता, दोनोंके विषयमें विचार करनेकी बात तो थी ही। इससे तो मैंने यही समझा कि दोनोंको उनकी खातिर बुलाया गया है, तुम्हारी सेवाकी खातिर नहीं। अगर बुलाने का हेतु सेवा ही हो तो इसपर अलग ढंगसे विचार किया जाना चाहिए।

आज सरदारके कोई खास समाचार नहीं हैं। आशा है कलका पत्र मिल गया होगा। मदालसा मजेमें है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२३)से

४२५. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

२५ अगस्त, १९४१

चि० काका,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अगर अगस्तके अन्ततक रोगमुक्त हो जाओ, तो बहुत अच्छा हो। लेकिन जल्दी बिलकुल मत करना। यदि तुम पूर्ण रूपसे स्वस्थ हो जाओगे, तो निश्चिन्त होकर काम कर सकोगे।

इलाहाबाद तो जरूर जाना। वहाँ जाने से पहले मेरे साथ चर्चा कर लेना।

अमृतलालने मुझसे कुछ नहीं कहा। अरे जो भूल न करे, वह भी क्या आदमी? चर्चिल क्या करता है? और मैं भी क्या करता हूँ? मुझे याद है कि देशबन्धु दासने मुझपर इसी शब्दकी वर्षा की थी। हम जब जानें, तब भूल सुधार कर आगे बढ़ें। फिर भूलें, फिर सुधारें। और अब तो रेहाना तुम्हारे पास है, वह हिम्मत बँधाती होगी। हाँ, यह बात जरूर है कि मैं तुम्हारे ऊपर कोई नई जिम्मेदारी नहीं लादूँगा।

सम्मेलनके[1] साथ सम्बन्ध कृत्रिम उपायोंसे नहीं टूटेगा। जब इसे टूटना होगा तब तो यह स्वमेव टूट जायेगा। हमारा प्रयत्न तो यह होना चाहिए कि यह सम्बन्ध टूटे नहीं। श्रीमनको[2] इलाहाबाद जरूर जाना पड़ेगा।

तुम प्रयाग जरूर जाना। वहाँ तुम बहुत-से काम सहज ही निपटा लोगे। लेकिन जाना बिलकुल स्वस्थ होकर ही।

रेहानासे कहना कि उसके दोनों पत्र मिल गये हैं। दोनों ही ऐसे हैं जिनका जवाब दिया जाना चाहिए, लेकिन मैं चुप्पी साधे रहूँगा। पत्रके द्वारा थप्पड़ मारने के बदले जब वह यहाँ आयेगी तब खुद ही उसे थप्पड़ लगाऊँगा; सरोजको भी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९५०)से

१. अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन

२. श्रीमन्नारायण

४२६. पत्र : नटवरलाल वेपारीको

२५ अगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

अब तुम्हारी ओरसे कोई नई सामग्री नहीं आनी चाहिए। अब जो रिपोर्ट भेजो, वह अन्तिम होनी चाहिए। दोनों पक्षोंमें से यदि कोई और कुछ कहना चाहे, तो वह अपना वक्तव्य सीधे मेरे पास भेजे। तुम्हारी रिपोर्ट मिल जाने के बाद मैं तुम्हें जिम्मेदारीसे मुक्त मानूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२५) से

४२७. पत्र : हीरालाल शर्माको

२५ अगस्त, १९४१

चि० शर्मा,

तुमारा १६ ता० का खत मिला है। आज तार मिला। तार क्यों? मैं कैसे तारसे उत्तर दूं? मेरा मतलब स्पष्ट था। जो वस्तु दे दी गई है उसमें से हम और हमारे आशा न रखें। द्रौपदीकी दलीलको स्थान नहिं है। तुमारा कहना ठीक है कि तुमारे परिश्रमका नतीजा यह न होना चाहिये कि उस वस्तुका दूसरा उपयोग न हो। इतना भय क्यों? अविश्वास क्यों? तुमारे कार्यमें रत रहो और सब अच्छा हि हो जायगा।

दा० सुशीलाकी[1] मदद तो हम ले सकेंगे। यह वर्ष उसके लिये कठिन है। एम० डी० की तैयारी कर रही है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३०३। प्यारेलाल पेपर्स भी; सौजन्य : प्यारेलाल

१. डॉ० सुशीला नैयर

४२८. पत्र : मीराबहनको

२६ अगस्त, १९४१

चि० मीरा,

ऋग्वेद यहाँ कल पहुँच जाना चाहिए।

अपनी बीमारीके बारेमें तुमने कुछ नहीं बताया। दवाका क्या असर हुआ? साथमें ईसबगोल भेज रहा हूँ। अगर तुमने कसकरा नहीं लिया हो तो ईसबगोलके बीजका आधा चम्मच जैसा-का-तैसा लो। निगलने के लिए ऊपर से पानी पी लो।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८८) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८८३ से भी

४२९. तार : श्रीनारायण जयनारायणको[1]

२७ अगस्त, १९४१

यदि प्रान्तीय अध्यक्ष सहमत हों तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. यह तार श्रीनारायण जयनारायणके २५ अगस्तके तारके जवाबमें था, जिसमें उन्होंने गांधीजी से अनुरोध किया था कि चिखली नगरपालिकाके अध्यक्षको अपना त्यागपत्र अस्थायी तौरपर वापस ले लेने की अनुमति प्रदान की जाये, क्योंकि काम अधूरा पड़ा है।

४३०. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा (सी० पी०) होते हुए
२७ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

बेशक मैंने अपने जीवनकालमें स्वराज देखने की आशा नहीं छोड़ी है।

तुम्हारे लौटने पर मैं इस बातका खयाल रखूंगा कि तुम्हारे सन्दूकको कोई क्षति न पहुँचे।

मुझे खुशी है कि तुम प्रकाशसे मिली और उसे आमन्त्रित किया। उसका विवाह अभी नहीं हुआ है। जिसका विवाह हुआ था वह तो सत्या है। प्रकाश बेतियामें है।

कुसुम आज जा रही है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके कामसे गोसीबहन यहाँ आई हुई हैं। केसकर[1] का पत्र साथमें है। नरेन्द्रदेवको[2] तुम जानती होगी। म० या जिसे तुम चाहो उसे लिखना और जो-कुछ किया जा सकता हो, करना।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६०) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३६९ से भी

१. बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर

२. कांग्रेस समाजवादी दलके नेता आचार्य नरेन्द्रदेव, जो उन दिनों जेलमें बहुत बीमार थे।

४३१. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

२७ अगस्त, १९४१

प्रिय शैलेन,

तुम तो कभी कुछ सीख ही नहीं सकते। "Encloser" गलत है; "Enclosures" होना चाहिए। "Newspaper" एक शब्द है, इसे अलग-अलग "news paper" नही लिखना चाहिए। "Hope you must have decided" नहीं, "Hope you have decided" होना चाहिए। कुछ तय नहीं हुआ है। कोशिश कर रहा हूँ। तुम्हें डायरी लिखना बन्द कर देना चाहिए। यह समय की बर्बादी है। तुम जो पुस्तक पढ़ रहे हो उसका आशय अपने शब्दोंमें लिख भेजो। शब्दकोष पास रखो।

तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च :]

परिचय परीक्षा[1] में धीरेन अच्छा रहा है। तुम्हें भी अपनी हिन्दी ठीक करनी चाहिए।

श्री शैलेन्द्रनाथ चटर्जी
प्रीमियर स्टोर्स सप्लाई कं०
सीताबर्ल्डी
नागपुर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३२१) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा आयोजित परीक्षा

४३२. पत्र : मार्गरेट जोन्सको

२७ अगस्त, १९४१

प्रिय कमला,

तुम्हारा पत्र मिला था। तुम्हारी बात ठीक है। स्थायी मूल्यकी चीजोंमें शहरके लोग रुचि नहीं लेंगे। मेरीके आने में विलम्बसे खीज होती है।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]
बापू – कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९६

४३३. पत्र : धीरूभाई भू० देसाईको

२७ अगस्त, १९४१

चि० धीरूभाई,

तेरे बारेमें मेरे पास काफी शिकायतें आई हैं। कहा जाता है, तू जहाँ-तहाँ कहता फिरता है कि यह लड़ाई अब बन्द होनी ही चाहिए, और हमें फिरसे शासन की बागडोर अपने हाथमें ले लेनी चाहिए, वगैरह, वगैरह। अगर यह बात सच हो तो मुझसे कहना चाहिए न? अगर तेरे ऐसे विचार हों तो उन्हें प्रकट करने में कोई दोष नहीं है। लेकिन यदि तेरे ऐसे विचार हों तो फिर तू बी० पी० सी० सी०[1] का अध्यक्ष कैसे रह सकता है? हाँ, एक शर्तपर रह सकता है – यदि बी० पी० सी० सी० के बहुमतके भी ऐसे ही विचार हों। लेकिन अगर ऐसा हो तब भी मुझे खबर तो मिलनी चाहिए। जैसा हो मुझे निःसंकोच लिख। अगर ईमानदारीसे हमारा कोई मत हो तो उसे छिपाने की कोई जरूरत नहीं है।

तुम दोनोंको

मूल गुजरातीसे : भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी

४३४. पत्र : बलवन्तसिंहको

२७ अगस्त, १९४१

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे मनमें खयाल यह रहना चाहिये कि यदि तुम्हारी तपश्चर्या शुद्ध होगी तो यहीं वापिस आ जाओगे।[1] कहीं भी रहो, उर्दूका अभ्यास नहीं छूटना चाहिये। हिन्दी अक्षर अच्छे बनाने चाहिये। खेती और गोपालनके शास्त्रका अभ्यास बढ़ाना।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें, पृ० २८९

४३५. पत्र : अमृतकौरको

२८ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

देखता हूँ कि वहाँ भी मैं तुम्हें काममें व्यस्त रख सकता हूँ। कल मैंने तुम्हारे पास नरेन्द्रदेवका मामला भेजा है। संलग्न कतरन[2] पढ़ लेना। इस सम्बन्धमें अगर कुछ कर सको तो करना। शायद तुम सबसे उपयुक्त माध्यम हो। सरूप[3] कुछ कर रही है। समाचारपत्रोंके विवरण इतने एकतरफा हैं कि सही बात मालूम करना कठिन हो गया है।

भारत और बर्माके वाहियात समझौते पर मैंने एक वक्तव्य[4] दिया है। पता नहीं, जो अखबार तुम्हें मिलते हैं उनमें वह प्रकाशित हुआ है या नहीं। वाजपेयीसे मिलो तो कहो कि इस राष्ट्रीय अपमानमें उनको शरीक देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ है। उनके पास अपनी सफाईमें कुछ कहने को हो तो मैं उसे जानना चाहूँगा। इस मामलेमें उनका जो हाथ है, उसके सम्बन्धमें मैंने बहुत थोड़ा कहा है।

सप्रेम,

बापू

१. गांधीजीके अनुरोधपर बलवन्तसिंहने सेवाग्राम आश्रम छोड़ देनेका फैसला किया था, क्योंकि वह अपने गुस्सेपर काबू पानेमें असमर्थ थे। लेकिन आखिरकार वे आश्रम छोड़कर नहीं गये।

२. यह उपलब्ध नहीं है।

३. विजयलक्ष्मी पण्डित

४. देखिए पृ० २८३-८७।

[पुनश्च :]

इतना डाक आने से पहले लिख चुका था। सेवाके लिए कोई जल्दी नहीं है। इजाजत तो मैंने दे दी है, लेकिन कोई अधिकार नहीं प्राप्त किया है।

शाहका पत्र साथमें भेज रहा हूँ।

जैसा ठीक लगे वैसा करना। उन्हें अपनी लड़ाई आप ही लड़ने देना शायद बेहतर होगा।

प्रभाकरको कल ज्वर था। अन्नपूर्णाको मन्द ज्वर रहता है।

बेशक, और बहुत-सी चीजोंकी तरह तुम्हारे हिज्जे भी पहलेसे बेहतर हैं। तुम्हारा स्वास्थ्य भी पहलेसे अच्छा होना चाहिए।

सप्रेम,

बापू

[पुनः पुनश्च :]

अभी-अभी मालूम हुआ है कि विषाणु और कीट-नाशक दवा रामदासने पहले ही मँगा ली थी। अतः अगर तुमने न मँगवाई हो तो रहने देना।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६१) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७० से भी

४३६. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

२८ अगस्त, १९४१

प्रिय शैलेन,

तुम्हें वापस तो आना ही है।[1] इसलिए जितनी जल्दी हो सके, आ जाओ।

हृदयसे तुम्हारा,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३२२) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१. गांधीजीके कहने पर शैलेन्द्रनाथ चटर्जी हिसाब-किताब रखनेका काम सीखने नागपुर गये थे।

४३७. पत्र : जी० एल० खानोलकरको

सेवाग्राम
२८ अगस्त, १९४१

प्रिय खानोलकर,

आपका तार मिला, और पत्र भी। मेरा विजयलक्ष्मीबहन व अन्य लोगोंसे पत्र-व्यवहार चल रहा है और मैं अपनी ओरसे हर सम्भव प्रयत्न कर रहा हूँ। आपको उस प्रकारके व्यवहारके बारेमें पता कैसे चला? या आप समाचारपत्रोंमें प्रकाशित खबरोंपर निर्भर कर रहे हैं? आपको जो भी जानकारी मिल सके, मेरे पास भेजते रहिए। कानपुरमें आप क्या कर रहे है?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

४३८. पत्र : नटवरलाल बेपारीको

२८ अगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारा २५ तारीखका पत्र आश्चर्यमें डालनेवाला है। तुम हिसाबकी जाँच करनेवाले के बदले शिकायत करनेवाले हो गये। तुम्हारे खिलाफ अगर मुझे शिकायतें मिलें भी, तो मैं उनकी जाँच थोड़े ही करनेवाला हूँ। मेरी नजरमें तो अपनी रिपोर्ट पेश करके तुम जिम्मेदारीसे बरी हो गये हो। सच तो यह है कि हिसाबकी जाँच करके तुमने उपकार किया है। तुम दुःखी क्यों होते हो? जो कागजात तुम्हारे पास हैं उनपर तुम जैसी चाहो वैसी टिप्पणी लिख सकते हो। यदि तुम्हें ठीक लगे तो कागजात वच्छराज कम्पनीको सौंप दो। या तुम कहो तो वे लोग किसी वकीलके यहाँ रख दें। नवजीवन कार्यालयको हिसाबकी बहियोंकी बार-बार जरूरत पड़ती रहती है। तुमने उन लोगों पर जो आरोप लगाया है, उसकी जाँच मैं करूँगा तो अवश्य, लेकिन मुझे स्वीकार करना चाहिए कि उनकी जाँच करने का जिम्मा मैंने नहीं लिया और न उनपर मुझे कोई सन्देह ही है। सबने चन्द्रशंकरके साथ मिलकर षड्यन्त्र किया है, यह सब मैं जल्दी नहीं मान सकता। तुम्हारी लिखी कुछ बातें मुझे विचित्र लगी हैं, लेकिन उनके लिए मैं तुम्हें दोष

नहीं देता। ईमानदारीसे जो तुम्हारी समझमें आया, वह तुमने लिखा है। अब मुझे इस सबमें से सत्यको खोज निकालना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२६) से

४३९. पत्र : हर्षदा दीवानजीको

२८ अगस्त, १९४१

चि० हर्षदा,

तुम्हारा पत्र और दस रुपयेका नोट, दोनों मिले। तुम्हारा नियम-पालन करने का ढंग बहुत अच्छा है। सूत मुझे भेजनेकी जरूरत तो है ही नहीं, बल्कि काकूभाईको न भेजो, तो भी कोई हर्ज नहीं। तुम उसे बेशक खरीद सकती हो। अतः तुम उसकी जितनी कीमत समझो, उतने पैसे भेज दो, तो यह काफी होगा।

चि० अभिमन्युकी आँटी बहुत अच्छी है। सूत महीन और एकसार लगता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९९५५) से

४४०. पत्र : शिवानन्दको

२८ अगस्त, १९४१

चि० शिवानन्द,

तुमने अच्छा विस्तृत पत्र लिखा है। फूलचन्दसे[1] कहना कि हिम्मत न हारे। मृत्युशय्या पर पड़े लोग उठ बैठे हैं, और हृष्ट-पुष्ट दिखाई देनेवाले लोग जमुहाई लेते-लेते कूच कर गये हैं। हम लोग नटके इशारे पर नाच रहे हैं, इसलिए समुचित प्रयत्न करने के बाद भी अगर जाना पड़ा तो हँसते-हँसते जाना चाहिए।

फूलचन्दने तो बहुत-कुछ किया है। यह वाक्य लिख ही रहा था कि मिलनेवाले लोग आ पहुँचे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० २८७२) से। सौजन्य : शारदा फूलचन्द शाह

१. फूलचन्द कस्तूरचन्द शाह

४४१. पत्र : लीलावती आसरको

२८ अगस्त, १९४१

चि० लीली,

तेरा पत्र मिला। मुझे लगता है कि तूने जो पत्र लिखा है वह अच्छा नहीं कहा जा सकता। और फिर उसे न्यासियोंको भेजने की क्या जरूरत थी? उसमें तेरा भी दोष तो था ही। नौकरोंके साथ छात्रोंका कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। अगर वे सौंफ नही देते, तो उससे क्या हुआ? और यदि तुझे चाय न मिले तो गम खाना चाहिए। ऐसी तुच्छ बातोंके लिए झगड़ने की शिक्षा भी क्या तूने यही पाई है? जो हो, तेरी तरफसे महादेवको तो माफी माँगनी ही पड़ी है।

और तेरा लिखाई-पढ़ाईके मामलेमें हिम्मत हारना भी ठीक नहीं है। वहाँ तो कोई गुलाम नही है। लेकिन हाँ, तू अपने व्यसन और अपने क्रोधकी गुलाम जरूर है। यह सब तुझे सुधार लेना चाहिए। लेकिन अगर तू यह किसी प्रकार सुधार ही न सकी, तो मैं समझता हूँ कि तेरा वहाँ रहना मुश्किल होगा। ईरानीकी चाय पीने की भी मनाही समझ, क्योंकि आदेश तो यह है कि चाय एक ही बार मिलेगी? महादेवभाईके पास ही जाकर धीरजके साथ उनसे अपने धर्मको समझ और उसका पालन कर।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३८२) से। सी० डब्ल्यू० ६६५७ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

४४२. पत्र : कंचन मु० शाहको

२८ अगस्त, १९४१

चि० कंचन,

तेरे कार्डका क्या यह मतलब है कि तेरे वहाँ जाने से खर्चका बोझ बढ़ गया है और इसलिए तुझे नहीं जाना चाहिए था? अगर ऐसा कुछ हो, तो यह मानने की कोई जरूरत नहीं है कि तुझे वहाँ रहना ही चाहिए। तू वापस भी आ सकती है, या फिर साबरमती या और कही भी जा सकती है। मुझे ब्योरेवार लिखना। आशा है, तेरी तबीयत ठीक रहती होगी। चौलाई या इसी तरहकी

कोई भाजी खाना। आशा है, फल तो तू खाती ही होगी। पाखाना साफ होना चाहिए। क्या वहाँ बारिश अच्छी हुई?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२७२) से। सी० डब्ल्यू० ७१५५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

४४३. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको

२९ अगस्त, १९४१

प्रिय प्रफुल्ल,

तुम्हारे पत्रका उत्तर देने में देर हुई है।

जिस खतरेकी आशंका थी, सरदारको वह नही है। क्षीण तो बहुत हो ही गये हैं और उन्हें अभी बराबर ठीक देख-रेख में रहना है।

किशोरलाल आश्रममें ही हैं। बस स्वस्थ ही हैं।

खान साहबने सारे दाँत निकलवा दिये। निकलवाना ही ठीक था।

राजेन बाबू अभी भी ठीक नही है। सितम्बरमें उनके यहाँ आने की उम्मीद है।

हाँ, डॉ० आशुतोष दासकी मृत्युका समाचार मिला था। मैंने एक समवेदना सन्देश[1] भी भेजा था। वे वास्तवमें एक महान और अच्छे राष्ट्र-सेवक थे। ऐसे दुःखद प्रसंग तो आते ही रहेंगे। हमें उन्हें सहना है। आश्रममें मलेरिया लगभग नहीं है। लेकिन जब-तब आश्रमवासियों पर ज्वरका प्रकोप होता रहता है। यह कैसा ज्वर है, मालूम नहीं है। ठीक शुश्रूषासे ज्वर दूर हो जाता है।

आशा है, तुम सब ठीक-ठाक होगे।

तुम्हारा,
बापू
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७८२) से

१. देखिए "पत्र : रत्नमणि चटर्जीको", पृ० २२८।

४४४. पत्र : नारणदास गांधीको

सेवाग्राम
२९ अगस्त, १९४१

चि० नारणदास,

तुम बहुत दिन जियो और खूब सेवा करो। मैं जाजूजीको वहाँ भेजूंगा। तुम तो जानते ही हो, वे साधु पुरुष हैं। चरखा संघके प्राण हैं। वे बड़े वकील थे, किन्तु आज फकीरकी तरह रहते हैं।

वह तुम्हें एक हफ्ता देंगे। यदि इससे कममें काम चला सको तो देखना। मुझे तारीख वगैरह लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५९१ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

४४५. पत्र : अमृतकौरको

२९ अगस्त, १९४१

चि० अमृत,

आज मैंने अ० भा० ग्रामोद्योग संघकी एक बैठक रखी थी। अभी-अभी खत्म हुई है, शामके लगभग साढ़े चार बजे। आशा है अब तुम काफी बेहतर होगी।

सप्रेम,

बापू

श्री राजकुमारी अमृतकौर
मैनरविल
शिमला

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७१ से भी

४४६. गुरुदेव

सर्वोदय सर्वके उदयके लिए है। गुरुदेव भी हिन्दुस्तानकी सेवाकी मारफत सारे जगत्‌की सेवा करना चाहते थे। और सेवा करते-करते चले गये। चले गये — लेकिन प्रयोग अधूरा है। उनका शरीर ही गया है। उनकी आत्मा तो अमर है, जैसे हम सबकी है। और इस अर्थमें न कोई मरता है, न जन्मता है। गुरुदेव विशेष अर्थमें जिन्दा हैं। उनकी प्रवृत्तियाँ ऐसी व्यापक थी और प्राय. सभी ऐसी पारमार्थिक थी कि उनकी मारफत वे अमर रहेंगे। शान्तिनिकेतन, श्रीनिकेतन, विश्वभारती — ये सब एक ही कृतिके नाम हैं। वे गुरुदेवका प्राण थी। उन्हींके लिए ही दीनबन्धु गये और बादमें गुरुदेव। लेकिन गुरुदेव आज कहीं भी विराजमान हों, वहींसे वे अपनी कृतिको देख रहे हैं। उसीको स्थिर रखने में हम यथाशक्ति हिस्सा ले, यही सच्ची श्रद्धांजलि है।

सेवाग्राम, ३० अगस्त, १९४१

सर्वोदय, सितम्बर, १९४१

४४७. तार : जमनालाल बजाजको

वर्धागंज
३० अगस्त, १९४१

सेठ जमनालालजी
मार्फत हरनन्दराय सूरजमल
कनखल

सबकी ओरसे माताजी का स्वागत है।[1]

बापू

[अंग्रेजीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २४७

१. अपने २६ अगस्त, १९४१ के पत्रमें जमनालाल बजाजने सुझाव दिया था कि आनन्दमयी देवीको गांधीजी से मिलने के लिए वर्धा आने को निमन्त्रित किया जाये।

४४८. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

३० अगस्त, १९४१

प्रिय कु[मारप्पा],

तुम तो जल्दबाजी कर रहे हो। जब तुम अपने सौ वर्ष पूरे कर लोगे और तबकी उम्रको देखते हुए तुम्हारा रक्तचाप सीमासे अधिक नहीं बढ़ेगा, तब तुम पुरस्कारके अधिकारी बनोगे।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५८)से

४४९. पत्र : लीलावती आसरको

३० अगस्त, १९४१

चि० लीली,

तेरा पत्र मिला। तिलोत्तमाको लिखा तेरा पत्र अच्छा है। आशा है, वहां सब ठीक हो गया होगा। देखना, अब ऐसी भूल मत करना। इस बातका ध्यान रखना जरूरी है कि तू वहां मुफ्त रहती है। जब तेरा अपमान हो ही जाये तो उसका उत्तर किसीका अपमान करना नहीं, बल्कि उस संस्थाका त्याग ही हो सकता है। लेकिन ऐसा तो वहां होता ही नहीं। परोपकारी संस्थामें ऐसा हो नहीं सकता। अपना सच्चा अपमान तो हम स्वयं ही करते हैं।

अगर तेरा मन शान्त हो गया हो तो यहां आनेकी जल्दी मत करना। थोड़ी-सी आवश्यक मदद लेकर अपनी पढ़ाई पक्की कर ले और उसमें होशियार बन जा।

प्यारेलाल छूटकर आ गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३८३) से। सी० डब्ल्यू० ६६५८ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

४५०. प्रस्तावना : 'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस' के लिए

यह मात्र एक संयोग है कि 'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस' पर लिखे ये लेख पुस्तिकाके रूपमें रिचर्ड ग्रेगकी 'एडिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस'[1] के साथ-साथ प्रकाशित किये जा रहे हैं। अहिंसा-भक्तोंको दोनोंको साथ-साथ पढ़ना चाहिए। किशोरलाल मशरूवाला रिचर्ड ग्रेगकी ही तरह अहिंसा शास्त्रके गम्भीर अध्येता हैं। यद्यपि उनका पालन-पोषण ही उस आस्थाकी गोदमें हुआ है, फिर भी वे किसी चीजको आँख वन्द करके कभी स्वीकार नही करते। वे उसीमें विश्वास करते हैं जिसकी सचाईको वे परख चुके होते हैं। इस तरह अहिंसाको उन्होंने वहुत सोच-समझकर अपनाया है। अपने जीवन और व्यवहार द्वारा राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और घरेलू आदि विभिन्न क्षेत्रोंमें वे इसकी प्रभावकारिता सिद्ध कर चुके हैं। इसलिए उनके लेखोंका अपना अलग महत्त्व है। जो अहिंसामें विश्वास करता है उसके विश्वासको वनाये रखने में ये उसकी मदद करेंगे, और जो ईमानदार हैं पर जिन्हें अहिंसामे सन्देह है उनके सन्देहको ये दूर करेंगे।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम, ३१ अगस्त, १९४१

[अंग्रेजीसे]
प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस

४५१. एक कूट समस्या

जिसका मन शास्त्रीय है वह किसी वस्तुकी सत्यता या यथार्थताको मान नहीं लेगा, उसे अपने लिए सिद्ध करेगा। ऐसा करके वह अपनी वुद्धिका विकास करेगा और वस्तुकी शक्तिका ज्ञान हासिल करेगा। सेव क्यों नीचे गिरता है, वृक्षसे छूटते ही क्यों ऊँचे नही चला जाता? कहते हैं कि यह प्रश्न न्यूटनके मनमें उपस्थित हुआ और उसने गुरुत्वाकर्षणकी शोध की। पृथ्वी थाली-आकारकी क्यों? स्थिर क्यों? ऐसे प्रश्नोंपर से गैलीलीयोने कहा कि पृथ्वी तो नारंगी-जैसी गोल है, और अपनी धुरी पर घूमती है। ऐसी-ऐसी शोधोंमें से महान परिणाम पैदा हुए हैं।

१. गांधीजी द्वारा लिखी इस पुस्तिकाकी प्रस्तावनाके लिए देखिए पृ० २८२-८३।

ठीक इसी तरहका मानस खादी-सेवकका होना चाहिए। न्यूटन या गैलीलीयो के सामने दरिद्रनारायण नही था और न दरिद्रनारायणकी सेवाका प्रश्न था; उनके सामने एक सात्त्विक कौतूहल था। खादी-सेवकके सामने तो भूखसे पीड़ित करोड़ों लोगोंकी भूख काटनेका प्रश्न है। इसलिए उनका मानस तो अत्यन्त शास्त्रीय होना चाहिए।

खादी क्यों? स्वदेशी मिलका कपड़ा क्यों नहीं, विदेशी भी क्यों नही? रुईका कपड़ा क्यों? रेशमका क्यों नहीं? सनका क्यों नही, ऊनका क्यों नही? चरखा क्यों? तकली क्यों नहीं? ऐसे प्रश्नोंसे मैं पन्ने-के-पन्ने भर सकता हूँ, लेकिन यहाँ मेरा मतलब सब शक्य प्रश्न उठानेका नहीं है।

एक ही प्रश्नका मैं इसमें स्पर्श-मात्र करना चाहता हूँ। माना कि हिन्दुस्तान में किसी कारणवश मिलें नहीं चलती है या नही चल सकती है। माना कि बाहर से किसी भी प्रकारके कपड़े नही आ सकते है, तो क्या आज हम हिन्दुस्तानियोंको काफी खादी दे सकते हैं? किसी-न-किसी तरह दे सकनेसे तो हमको सन्तोष नहीं होगा। ऐसा तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीने किया, और उसके पहले भी कुछ अंशमें होता था। उस जमानेमें कमसे-कम दाममें सूत कातने एवं बुननेके लिए लोग मजबूर किये जाते थे। इस प्रथाका नाम बेगार था। दुःखके साथ कबूल करना होगा कि बेगार बहुत पुरानी प्रथा है। यह ब्रिटिशने दाखिल नहीं की है। बेगारसे शायद अब भी खादी पैदा हो सके, लेकिन ऐसे निर्दय कामके लिए खादी-सेवक थोड़े ही तैयार किये जा सकते है। हमारा मतलब तो यह है कि कत्तिनोंको कमसे-कम इतना दाम मिले, जिससे आठ घण्टेकी मेहनतके बाद वे आरोग्यके लिए आवश्यक हो ऐसी खुराक, पहननेके लिए आवश्यक हो इतने वस्त्र, सुखसे रहा जा सके ऐसे घर, तथा अन्य आवश्यकताएँ, जो सुखी घरमें होती है, प्राप्त कर सकें। इस शर्तसे सिर्फ खादी नहीं चल सकती है ऐसा उत्तर मिले तो हमें नम्रतासे खादीकी मर्यादा कबूल करनी होगी। अपनी प्रवृत्तिको भी मर्यादित करना होगा।

मैं यहाँ अपना मंतव्य रख दूं। मैंने खादीको अपनाया है, इस दृष्टिसे कि खादीमें उपर्युक्त शक्ति है। इस मंतव्यके लिए मै अकाट्य प्रमाण नहीं दे सकता हूँ। मेरे बहुत-से कामोंका आरम्भ विश्वाससे कहो या अन्तःप्रेरणासे हुआ है। लेकिन वे प्रेरणासे ही चलाये नहीं हैं, उनका प्रचार करते-करते मैंने अपने विश्वासके आधार ढूंढ़े हैं। बुद्धिके प्रयोग जितने कर सकता था, किये हैं, और अब भी करता हूँ और साथियों से कराता हूँ। प्रस्तुत प्रश्नका अन्त नही मिला है, शायद कभी न मिले। मै जानता हूँ कि प्रश्न कठिन है, कूट समस्या है। इसमें गणित शास्त्रके ज्ञानकी तो आवश्यकता है ही, साथ ही अर्थशास्त्रकी, मनुष्य स्वभावके ज्ञानकी, उसमें भी हिन्दुस्तानीके स्वभावकी, ऐसे ही नीति शास्त्रकी भी आवश्यकता है। सिर्फ गणित द्वारा सिद्ध करने से काम सिद्ध नही हो सकता है। केवल अर्थशास्त्रियोंके सम्मत होनेसे भी अर्थ-सिद्धि नही हो सकती, क्योंकि अपने अचूक सिद्धान्तको हम नही छोड़ सकते हैं। जबर्दस्तीसे हम खादीको व्यापक बनाना नही चाहते हैं। लोगोंकी मान्यता, आदत

आदिको वदलकर ही हम अपना काम करना चाहते हैं। इसलिए सर्व-दृष्टिसे हमारी शोध जारी रहनी चाहिए।

इस कठिन समस्याको हल करनेमें सब खादी-सेवक परिश्रम उठावें।

आज तो इतना ही।

खादी जगत, अगस्त १९४१

४५२. पत्र : अमृतकौरको

३१ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

मैं शायद तुम्हें लिख चुका हूँ कि मुझे तुम्हारे स्वास्थ्यकी चिन्ता नहीं होती। तुम ठीक-ठाक चल रही हो, यह मैं जानता हूँ। मैंने मनको इस बातके लिए समझा लिया है कि तुम्हारे लौटनेमें अनिश्चित कालका विलम्ब हो सकता है। इस समय तो मुझे खुशी ही है कि तुम यहाँ नहीं हो। बड़ी सख्त और ऊमस-भरी गर्मी पड़ रही है। तुम तो जानती ही हो कि पानी बरसनेके बाद क्या हाल होता है। इस तेज धूपकी जरूरत फसलोंको तो है, लेकिन तुम्हें कमसे-कम नहीं।

तुम्हारा भेजा सेब आज खाया। बहुत अच्छा था।

पी० अभी बम्बई जायेगा और वहाँसे दिल्ली लौटकर सविनय अवज्ञामें भाग लेगा। इस बीच उसका 'कुरान'का ज्ञान स्पष्ट ही बढ़ा है। क्या तुम उर्दू-लेखनका अभ्यास नियमसे कर रही हो? अगर नहीं कर रही हो तो शुरू कर देना चाहिए।

अ[मतुल]स[लाम] बहुत ठीक है और रसोई आदिका काम करती है। अन्नपूर्णाको अभी मन्द ज्वरसे छुटकारा नहीं मिला।

लीगके प्रस्तावों[1] पर मैंने विचार नहीं किया है।

लेकिन तुमने जो आलोचना की है उससे मैं सहमत हूँ। हाँ, सत्यमूर्तिने बड़ा अविवेकपूर्ण काम किया।[2]

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६३) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७२ से भी

१. मुस्लिम लीगकी कार्य-समितिने, जिसका अधिवेशन २६ अगस्त, १९४१ को समाप्त हुआ था, वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद् और राष्ट्रीय रक्षा परिषद्में मुसलमानोंके शामिल किये जाने, देश की राजनीतिक और साम्प्रदायिक स्थिति, भारत-बर्मा समझौते और बिहार शरीफके दंगोंके विषयमें प्रस्ताव पास किये थे। समितिने वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्के मनोनीत सदस्य सर सुल्तान

४५३. पत्र : फरीद अन्सारीको

सेवाग्राम
३१ अगस्त, १९४१

प्रिय फरीद,

ब्रजकृष्णकी पाद-टिप्पणीके साथ तुम्हारा पत्र मिला।

मैंने सत्यवतीको सेवाग्राम आनेको लिखा है। कोई उत्तर नहीं मिला है।

जमनालालजी स्वास्थ्य-लाभ करने के लिए राजकुमारीके घर गये थे। आजकल वे देहरादूनके समीप आनन्दमयी देवीके आश्रममें हैं। वे २१ सितम्बर तक लौट आयेंगे। वे ठीक हैं।

राधाबहन उत्तीर्ण हो गई है, वह अच्छी है और रोग-निदानके रूपमें अनुभव प्राप्त कर रही है।

सरदार तात्कालिक खतरेसे तो बाहर हो गये हैं, किन्तु अभी पूर्ण रूपसे संकट-मुक्त नहीं हुए हैं। चिन्ताका कोई कारण नहीं है।

बाकी तुम जानते ही हो।

सभीको मेरा अभिवादन।

सप्रेम,

बापू
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

३१ अगस्त, १९४१

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। फिलहाल मैं तुमसे पत्रकी आशा नहीं रखता। यदि तुम अपनेको विनयपूर्वक डॉक्टरोंके पंजेमें से मुक्त कर सको और यहाँ आ सको तो मुझे

अहमदसे, और राष्ट्रीय रक्षा परिषद्के सदस्यों — छतारीके नवाब साहब तथा बेगम शाहनवाजसे दस दिनके अन्दर अपने-अपने पदोंसे त्यागपत्र देनेके लिए कहा था।

२. केन्द्रीय विधान-सभामें कांग्रेस पार्टीके उपनेता एस० सत्यमूर्तिने २७ अगस्तको मद्रासकी एक सभामें यह विचार व्यक्त किया था कि कांग्रेसको प्रान्तोंमें फिरसे सरकारमें शामिल हो जाना चाहिए।

अच्छा लगेगा। मैं मानता हूँ कि तुम्हारी आँतोंको मिट्टी वगैरहके उपचार और भोजनमें हेरफेर करके अच्छा किया जा सकता है। आयुर्वेद पर मेरा बहुत विश्वास नहीं जमता। वैद्य पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं करते। उनकी कुछ दवाइयाँ असर करती हैं, परन्तु मुझे ऐसा नहीं लगता कि वे यह जानते हों कि दवाइयाँ कैसे काम करती हैं, आदि। ये तो मेरे तर्क हैं। तुम्हें जिससे सन्तोष हो वही करना। मैंने तो सिर्फ अपना विचार बताया है। किसी भी तरह अच्छा अवश्य हो जाना चाहिए। मैं तुम्हें एक घंटा पाखानेमें तो हरगिज नहीं बैठने दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५१

४५५. पत्र : मणिबहन पटेलको

३१ अगस्त, १९४१

चि० मणि,

मैंने तुझे जान-बूझकर नहीं लिखा था। फिलहाल मैं तुझे जेल भेजना नहीं चाहता। समय आने पर तो मैं तुझे अवश्य भेजूँगा। बाहर रहते हुए भी तू काम तो करती ही है। तुझे भेजने का समय निश्चय ही आयेगा। फिलहाल तो निश्चित भावसे सेवा करती रहना और अपना स्वास्थ्य सुधार लेना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
६८, मरीन ड्राइव
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १३१

४५६. पत्र : इन्दिरा नेहरूको

३१ अगस्त, १९४१

चि० इन्दु,

तेरा खत मिलने से मुझे बहूत खुशी हुई। तेरी तवीयतकी तो मुझे खबर मिलती रही है। अच्छा है यहांकी हवासे कुछ नुकसान नहि हुआ है, कुछ फायदा हि हुआ है न?

लखनउ जहलके बारेमें मैं भी तजवीज तो कर रहा हूं। देखें क्या नतीजा आता है। पापूके[1] बारेमें क्या हुआ मुझे बतायगी।

तू कितने दफे मिलती है?

राजा[2] और कृष्णाको[3] मेरे आशीर्वाद। उनके बच्चे अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९८०३) से। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४५७. तार : शिवानन्दको

१ सितम्बर, १९४१

शिवानन्द
वढ़वान

मेरी समवेदना तुम्हारे साथ है। फूलचन्दकी मृत्युसे हमने एक अत्यन्त बहादुर और उत्कृष्ट कार्यकर्त्ता खो दिया है। अल्पवय होने पर भी उसने योग्य मृत्यु प्राप्त की। शारदाको[4] और तुम्हें, जो उसके निकट थे, फूलचन्दके कार्यको आगे वढ़ाना है।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३४४) से। सौजन्य: शिवानन्द

१. जवाहरलाल नेहरू

२ और ३. जवाहरलाल नेहरूके बहनोई गुणोत्तम हठीसिंह और उनकी पत्नी

४. फूलचन्द कस्तूरचन्द शाहकी पत्नी

४५८. पत्र : अमृतकौरको

१ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा हिन्दीमें लिखा सुन्दर पत्र मिला।

महिलाओंकी सभा तुम शिमलामें ही क्यों नहीं करती? उसमें भाग लेने वाली अधिकांश महिलाएँ धनी परिवारोंसे है, है न? किन्तु यह बहुत महत्त्वपूर्ण न हो तो बेहतर यह होगा कि यह सभा तुम्हारी अनुपस्थितिमें हो। सभा तुम्हारी उपस्थितिमें हुई तो उससे तुमपर श्रम तो पड़ेगा।

सत्यमूर्तिको लिखे अपने पत्रकी प्रतिलिपि भेज रहा हूँ। पढ़नेके बाद नष्ट कर देना।

मैं नहीं चाहता कि तुम मूडीको लिखो। जो-कुछ तुम कर चुकी हो, वह काफी है। सरूप और कृपलानी स्लोनसे[1] मिल चुके हैं। उन्हें कुछ सन्तोष भी प्राप्त हुआ है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

रथीका[2] पत्र अच्छा है। मैंने तुम्हें साथ न ले जाकर अच्छा ही किया। अब तुम्हें सहायतार्थ वहाँ जानेका कोई अवसर ढूंढ़ना चाहिए। लेकिन इसके बारेमें बादमें।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६४) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७३ से भी

१. टेनंट स्लोन, संयुक्त प्रान्तके गवर्नरके सलाहकार

२. रवीन्द्रनाथ ठाकुरके पुत्र रथीन्द्रनाथ ठाकुर

४५९. पत्र : भगवानजी पु० पंड्याको

१ सितम्बर, १९४१

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र आदिसे अन्ततक पढ़ गया। मेरे ऊपर उसका कोई असर नहीं हुआ। तुमने अपनी आँखोंसे कुछ नहीं देखा है। सब सुनी हुई बातें हैं। इसके आधारपर अपने साथीके ऊपर सन्देह नहीं किया जा सकता। यदि ल० भाई चरित्र-हीन होते, तो उनकी पोल कब-की खुल गई होती। और वे इतने आदमियोंको साथ लेकर न चल सकते। ऐसे आदमी सतत उद्योग नहीं कर सकते। वैसे मैंने ल० भाईसे बात तो की ही है। वे सब बातोंसे इनकार करते हैं। अतः जबतक कोई प्रत्यक्ष प्रमाण न मिले, तबतक मैं तो उनपर विश्वास करनेको कहता हूँ। मुझे यदि कोई कुछ लिखना चाहे तो लिख सकता है। तुम स्वभावसे वहमी तो हो ही। प्रमाणोंकी छानबीन तुम नहीं कर सकते। फिर भी मैं तुम्हारा पत्र नरहरि के पास भेज रहा हूँ। जो आवश्यक होगा सो वह करेगा।[1] अन्तमें, अहिंसाकी यह माँग होती है कि हम अन्ततक विश्वास रखें और श्रद्धा रखें कि पाप सदा ही छिपा नहीं रह सकता।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३९४) से। सौजन्य : भगवानजी पु० पंड्या

४६०. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

१ सितम्बर, १९४१

चि० नरहरि,

ये साथके कागज फुर्सतसे पढ़ना, और कुछ करना जरूरी हो तो करना। भगवानजीका पत्र पढ़कर उन्हें लौटा देना। उन्होंने जो नाम दिये हैं, उनमें से यदि किसीसे मिलनेकी जरूरत समझो तो मिलना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२४) से

१. देखिए अगला शीर्षक।

४६१. पत्र : डॉ० नाथूभाई पटेलको

१ सितम्बर, १९४१

भाई नाथूभाई,

तुम अपनी गुजरातीके लिए शरमाते क्यों हो? हम सब एक ही नावके मुसाफिर हैं। चाहे जैसी क्यों न लिखते हों, लेकिन अपनी मातृभाषा हमे प्यारी ही लगनी चाहिए।

तुमने मुझे अच्छी खबर दी और बात भी ठीकसे समझाई। मुझे आशा तो है कि सरदारको समझाने-भरका तुम्हारा काम मैं कर दूंगा। लेकिन पहले एक बार तुम उन्हें बिस्तरसे उठाकर खड़ा करो। तुम सब डाक्टरोंके वहां होते हुए वे पाखानेमें एक घंटा क्यों बैठे रहते हैं? यह तो मौतको न्योता देने-जैसा हुआ।

यह तो जानते हो न कि दुर्गा पूरी तरह अच्छी नहीं हुई? उसे डकार आती है और पाँवोंमें दर्द रहता है। अभी तो वह अहमदाबादमें है। शायद तुम्हें मालूम न हो, इसलिए तुम्हारी जानकारीके लिए यह लिखा है।

महादेव तो अच्छा हो ही जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५७) से। सौजन्य : डॉ० नाथूभाई पटेल

४६२. पत्र : एफ० मेरी बारको

२ सितम्बर, १९४१

चि० मेरी[1],

आखिर तुम आ ही गई। और अब तुम्हारे आने के बाद ऐसा महसूस हो रहा है कि तुम कभी भारतसे गई ही नहीं थी। तुम्हारे सेवाग्राम आने की मैं धीरजके साथ प्रतीक्षा करूँगा। मुझे आशा है कि दक्षिण आफ्रिकाकी यात्रामें तुम्हारे शरीरको लाभ हुआ होगा।

सप्रेम,

बापू

१. सम्बोधन देवनागरी लिपिमें है।

[पुनश्च :]

मैं कमलाको यह बताना भूल गया था कि रेडक्रॉस आदिके बारेमें उसका दृष्टिकोण सही था। तुम बता देना। उसके स्वास्थ्यके बारेमें तुम्हारा कहना ठीक है। गलती उसीकी है। वह अपने आवश्यक आहारका प्रबन्ध बड़ी आसानीसे कर सकती है।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०८२)से। सी० डब्ल्यू० ३४१२ से भी; सौजन्य: एफ० मेरी बार

४६३. पत्र : के० बी० मेननको

सेवाग्राम
२ सितम्बर, १९४१

प्रिय मेनन,

तुम्हारे दो पत्र मिले। मैं तुम्हारे लिए कुछ भेजने की कोशिश करूँगा। ठक्कर बापा तो तुम्हारे मार्ग-दर्शनके लिए वहाँ है ही। इसलिए मैं जयनारायणजी के मामलेमें कोई चिन्ता नहीं कर रहा।[1]

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

४६४. पत्र : वल्लभराम वैद्यको

२ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लभराम,

तुम अच्छा अनुभव प्राप्त कर रहे हो। उसके परिणामस्वरूप तुम्हारे हाथसे जनताकी शुभ सेवा हो।

श्री वल्लभराम वैद्य
बिड़ला भवन
डाकखाना – उत्तर काशी
जिला – टिहरी गढ़वाल

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २९१५) से। सौजन्य: वल्लभराम वैद्य

१. देखिए "पत्र: के० बी० मेननको", पृ० ४२।

४६५. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

२ सितम्बर, १९४१

भाई मुन्शी,

तुम्हारा पत्र मिला। चि० सरला[1] चली आये।

तुमने अच्छा दौरा किया। मैंने सब तो नही पढ़ा, लेकिन एक अन्दाज हो गया है। तुमने बंगालकी स्थितिका जैसा विवरण दिया है, बरसोंसे वैसी ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६६) से। सौजन्य : क० मा० मुन्शी

४६६. पत्र : उमादेवी अग्रवालको

२ सितम्बर, १९४१

चि० ओम,

आखर में खत लिखने की तकलीफ उठाई सही। अब तो काकाजी[2] आ हि जायेंगे। और कितना और कैसा नया अनुभव लेकर। तेरी जगह ऐसा वर्णन देती है कि दिल चाहता है कि मेरे सब मरीजोंको तेरे पास भेज दूं। सिर्फ जानकी देवी और मदालसा नहिं? क्यों?

दोनोंको

बापुके आशीर्वाद

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३४४-४५

१. क० मा० मुन्शीकी ज्येष्ठ पुत्री सरला शेठ, जो बम्बई उच्च न्यायालयकी सॉलिसिटर थीं।
२. जमनालाल बजाज, उमादेवीके पिता

४६७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२ सितम्बर, १९४१

चि० कृ० चं०,

२५ वर्ष पहलेका स्वरूप कल्पनामें तो देख हि सकते हो। मैं कमरेमें पड़ा रहता हूं और सेवा लेता हूं। उसके बदलेमें ज्यादातर शारीरिक काम करता था औ[र] सब प्रवृत्तिमें शामील रहता था। एक फरक था। जहां मैं काम करता था वहां प्रायः सब आ जाते थे।[1]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०१) से

४६८. पत्र : पोखराजको

२ सितम्बर, १९४१

भाई पोखराजजी,

दा० हसनने आप पर खत भेजा है। मैंने पढ़ा। मेरी दृष्टिसे अब कोई वजह नहीं है कि कागज कमिशनर साहबसे न मंगवाया जाय। अगर काउन्सिलकी इजाजतकी आवश्यकता मानी जाय तो लेनी चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६९. पत्र : जुगलकिशोर बिड़लाको

सेवाग्राम
२ सितम्बर, १९४१

भाई जुगलकिशोरजी,

तुम्हारा मीठा खत मिला है। मैं समझता हूं फिर भी कुछ रहता है। खास आने की आवश्यकता नहीं है। फुरसत मिलने से आ जाओगे। सब शुभ काममें मेरे आशीर्वाद तो हैं ही।

बापुके आशीर्वाद

सेठ जुगलकिशोर बिड़ला
८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. आगेका अंश उपलब्ध नहीं है।

४७०. पत्र : जयनारायण व्यासको

२ सितम्बर, १९४१

भाई जयनारायण,

तुम्हारा पत्र मिला है। जो नीति ब्रिटिश हदमें अख्तियार की है वही देशी राज्योंमें भी [करनी][1] चाहिए ऐसा नियम न माना जाय। मेरी निजी राय तो है ही कि जो अहिंसा नीतिका पालन करना चाहते हों वे चालू झंझटोंमें न पड़े।[2]

बापूके आशीर्वाद

जयनारायणजी व्यास
ब्रह्मपुरी
जोधपुर, मेवाड़

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७१. पत्र : अमृतकौरको

२/३ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

अब मैंने तुम्हारे लिए काम भेजना आरम्भ कर दिया है। तुम तो जानती ही हो कि रतलाम रियासतने प्रजा परिषद्के कुछ सदस्योंको ऐसी सजाएँ दी हैं जिनका औचित्य किसी तरह सिद्ध नहीं किया जा सकता। जिन्हें सजा दी गई है, वे महत्त्वपूर्ण लोग हैं। वहाँ किसीको जानती हो क्या? अगर इसके सम्बन्धमें कोई सामग्री चाहिए तो वह भेजी जा सकती है। न जानती हो तो तुम्हें चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं है।

सप्रेम,

बापू

१. साधन-सूत्रमें यहाँ जगह खाली है।

२. जयनारायण व्यासने गांधीजी से पूछा था कि जोधपुर सरकार द्वारा हवाई हमलेसे बचावके लिए बनाई गई सलाहकार-समितिमें उन्हें शामिल होना चाहिए अथवा नहीं।

[पुनश्च :]

तुम्हारा हिन्दीमें लिखा पत्र मिला। [तुम्हारे यहांसे] जो सेव आये उनमें से हरएक अलग-अलग कागजमें नहीं लिपटा हुआ था। ऐसा क्या नहीं होना चाहिए था?

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३७४ से भी

४७२. पत्र : शारदा फू० शाहको

३ सितम्बर, १९४१

चि० शारदा,

मैंने तार[1] तो दिया है। मैं फूलचन्दको भूल नहीं पाता। लगता है, उनकी आत्मा मेरे आसपास रम रही है। अब तूने क्या सोचा है? तू शोक मनाने में एक क्षण भी मत गँवाना। फूलचन्द जो काम छोड़ गये हैं, उसे कैसे चलाया और बढ़ाया जाये, यही विचारणीय है। और यह याद रखना कि जब यहाँ आने की इच्छा हो, तब निस्संकोच चली आना और सब हाल-चाल लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० २८७३) से। सौजन्य: शारदा फूलचन्द शाह

४७३. पत्र : मणिबहन पटेलको

सेवाग्राम
३ सितम्बर, १९४१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने सारा ब्योरा भेजकर ठीक किया। मैंने कल जस्सावाला[2]-का पत्र भेजा है। उसके अनुसार मैं तो तुरन्त इलाज शुरू कर देने का आग्रह करूँगा। तबीयत बहुत गिर जाने के बाद इलाज बेकार भी जा सकता है। डॉ० नाथूभाईसे चर्चा कर लेने की मैं तो जरूरत महसूस करता हूँ।

मुझे पूरे समाचार देती रहना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४: मणिबहेन पटेलने, पृ० १३१

१. देखिए "तार: शिवानन्दको", पृ० ३१४।
२. बम्बईके एक प्राकृतिक चिकित्सक

४७४. पत्र : अमृतकौरको

४ सितम्बर, १९४१

चि० अमृत,

मियाँ इफ्तिखारुद्दीन यहीं हैं, मुंशीजी की लड़की सरला और अन्य लोग भी यहीं हैं। यह पत्र सिर्फ यह बताने के लिए भेज रहा हूँ कि तुम्हारा पत्र मिल गया और यहाँ सब ठीक है। शेष कल।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६६) से ; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७५ से भी

४७५. पत्र : सच्चिदानन्द करकलको

४ सितम्बर, १९४१

प्रिय सच्चिदानन्द,

निस्सन्देह तुम और दूसरे विद्यार्थी मुझसे मार्ग-दर्शन . . .।[1] तुम जबर-दस्तीके आगे झुकने से साफ इनकार कर सकते हो और उसका जो परिणाम हो उसे खुशी-खुशी झेल सकते हो। तुम्हें क्षमा-याचनाकी मांग करके कांग्रेसके अपमानपर अपना रोष प्रकट करना चाहिए। . . . जबतक वह शिक्षक क्षमा-याचना न करे उसकी कक्षामें प्रवेश . . .।[2] लेकिन याद रखो कि हर आलोचना अपमान नहीं होती। कोई सरकार-भक्त अगर कहे कि कांग्रेसके विरोधके बावजूद ब्रिटिश काफिला आगे बढ़ता जा रहा है, तो इसमें कोई आपत्तिजनक बात न होगी।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री सच्चिदानन्द करकल
मकान नं० ५०२०, क्रिश्चियन कॉलोनी
सेटिलमेंट
हुबली

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८८०७) से

१ और २. इन दोनों पंक्तियोंमें कुछ शब्द अस्पष्ट हैं।

४७६. पत्र : भगवानजी पु० पंड्याको

४ सितम्बर, १९४१

चि० भगवानजी,

तुम्हारा दूसरा पत्र मिला। मैं मामला दबाना नहीं चाहता। तुम जानते हो कि मैंने अपने सगे बेटेका मामला भी नहीं दबाया। तो फिर ल० का क्यों दबाऊँगा? लेकिन जैसे मणिलालके खिलाफ देवदासके सबूत देने पर भी मैंने नहीं माना था, वैसे ही ल० के खिलाफ भी एकाएक नहीं मानूंगा। देवदासने प्रत्यक्ष नहीं देखा था, जैसे तुमने नहीं देखा। अन्तमें, मेरे असीम विश्वासने ही मणिलालको पिघलाया और उसने सब कबूल कर लिया। वैसा ही ल० के मामलेमें क्यों नहीं हो सकता? ल० ने अपने विगत जीवनकी बातें नहीं छिपाईं, तो अब क्यों छिपायेगा और छिपाने से उसे क्या मिलेगा? फिर भी, मैं असम्भव कुछ नहीं मानता, और इसलिए तुम्हारी बात सुनने को तैयार हूँ। लेकिन तुम्हें प्रमाणोंकी जाँच करना सीखना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३९५) से। सौजन्य : भगवानजी पु० पंड्या

४७७. पत्र : पुरातन बुचको

४ सितम्बर, १९४१

चि० पुरातन,

भाई भगवानजीने तेरी डायरीमें से दादाके विरुद्ध उद्धरण भेजे हैं। भगवानजीने भयंकर आरोप लगाये हैं, अथवा वे उन आरोपोंके वाहक बने हैं। इस सम्बन्धमें तू क्या जानता और क्या सोचता है, यह बताना। यह पत्र तू भाई भगवानजीको दिखा सकता है।

आशा है, तुम दोनों स्वस्थ होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८३) से

४७८. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

४ सितम्बर, १९४१

चि० अमृतलाल,

तुम भाग्यवान हो। किसीसे सेवा कराये बिना पिताजी आखिरी नींदमें सो गये, इसमें शोक करने की गुंजाइश नहीं है। उनका चेहरा मेरी आँखोंके सामने तैर रहा है। वे बड़े पुण्यशाली थे। माँको सान्त्वना देना और कामकाज करके जल्दी वापस लौटना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८०२) से

४७९. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुंशीको

५ सितम्बर, १९४१

भाई मुंशी,

चि० सरला कल आरामसे यहाँ पहुँच गई। मैं कल ही तुम्हें लिखना चाहता था, लेकिन फिर इतने सारे लोग एक साथ मिलने आ गये कि समय ही नहीं मिला। सरला यथा नाम तथा गुण है। वह सबके साथ हिल-मिल गई है। आशा है, वह कमसे कम बुधवार तक तो रहेगी। तुममें से कोई उसकी तनिक भी चिन्ता मत करना।

इस पत्रके साथ सतीश कालेलकरका पत्र[1] है। उसके पिछले पत्रमें से मैंने वे उद्धरण निकाल लिये हैं जिनका सम्बन्ध तुमसे है। मूल पत्र नित्यक्रमके अनुसार महादेव आदिको भेज दिया गया है। यह सोचकर कि पत्र तुम्हें देखना चाहिए, मैंने चि० सतीशकी अनुमति माँगी, और साथका पत्र उसके जवाबमें है। यह पत्र तो केवल तुमसे ही सम्बन्धित है, इसलिए जैसा-का-तैसा भेज रहा हूँ। इस पत्रके आधारपर यदि मुझे कुछ लिखने लायक हो, तो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

१. सतीश कालेलकरने क० मा० मुंशीके बनारसके भाषणके बारेमें शिकायत की थी; देखिए "पत्र: कन्हैयालाल मा० मुंशीको", ११-९-१९४१।

[पुनश्च :]

सतीशके पत्रका उद्धरण कल भेजूंगा क्योंकि कनैयो, जिसके पास उक्त पत्र है, वर्धा गया है और यह पत्र मैं रोकना नही चाहता।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६७) से। सौजन्य: कन्हैयालाल मा० मुंशी

४८०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

५ सितम्बर, १९४१

चि० कृ० च०,

निर्मलसिंहको जाने देने में गलती तो हुई। लेकिन ऐसी गलतीयां हुआ करेगी। सुधारने की तत्परता रहती है यह संतोषकी बात है।

पारनेरकर सैलनको ले सकते हैं। उनको बराबर सिखाना होगा।

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०२) से

४८१. पत्र : अमृतकौरको

दुबारा नहीं देखा

५ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

मौनके दौरान यह पत्र लिख रहा हूँ, यानी रातके भोजन और डाक निकलने से पहले।

मुझे न एगथाका कोई पत्र मिला है और न हेनरीका[1]। लेकिन मैंने एक पत्रिकामें हेनरीका वह लेख देखा जिसमें उसने चोट की है। मेरे मनमें आया कि उसे उसकी भूल बता दूं। यदि तुम लेख देखना चाहो तो मैं तुम्हें भेज सकता हूँ। हेनरीका पता मालूम न होने से मैंने एगथाको लिखा।

हैदराबादवाला निमन्त्रण अस्वीकार करके तुमने ठीक किया। दूसरे निमन्त्रणोंको अस्वीकार करके भी ठीक ही करोगी। मैंने तुम्हारे पास वह इसलिए भेजा था कि तुम उसे देखकर जवाब दे सको। अस्वीकार तो तुम्हें करना ही था। कोई भी काम हाथमें लेने से पहले तुम्हें बिलकुल चंगा हो जाना है। अब भी तुम अच्छा काम कर रही हो।

१. हेनरी सॉलोमन लियन पोलक, जो फीनिक्समें गांधीजी के साथ रहे और दक्षिण आफ्रिकामें भारतीय आन्दोलनके उत्कट समर्थक थे। देखिए "पत्र: मिर्जा इस्माइलको", ५-१०-१९४१ भी।

तुम्हें उस पुस्तिकाकी याद होगी जिसमें पाकिस्तान-सम्बन्धी लाहौर प्रस्ताव[1] छपा था। पुस्तकालयमें उसकी दो प्रतियाँ मिली हैं।

मैं अनिष्टकी आशंका करके नहीं चलता। इसलिए जबतक वह घटित ही न हो जाये — और ऐसा नहीं होने दिया जायेगा — तबतक तुम्हारे प्रश्नका उत्तर स्थगित कर रहा हूँ। क्या यह उत्तर — अगर यह उत्तर है तो — सन्तोषप्रद है? तुम्हें अपना प्रश्न तो याद है न?

फिलहाल नरेन्द्रदेव के बारेमें तुम्हें कुछ नहीं करना है। मैं पूछताछ करूँगा। देहरादून प्रस्तावके बारेमें मैं कुछ नहीं जानता।

जयप्रकाश नारायणको अस्वस्थताके कारण किसी और जेलमें भेजने की दरख्वास्त प्रभावतीने की थी। जयप्रकाश अस्वस्थ हैं यह तो सब जानते ही हैं। मगर उसकी दरख्वास्त तुरन्त रद्द कर दी गई। अधिकारीगण कोई काम इसीलिए करनेवाले नहीं हैं कि वह काम सही है। वे तो केवल दबावके आगे झुकते हैं — ऐसे दबावके आगे जो हिंसाकी सीमातक जाता हो। हम 'रामायण' के उस प्रकरणपर पहुँच गये हैं जिसमें नारदके मोहका वर्णन है। वे मोहमें इसीलिए पड़े क्योंकि उन्हें सही रास्ते पर लाना था। सत्य ही, ईश्वर जिसका विनाश करना चाहता है उसका विवेक पहले हर लेता है।

रतलामके बारेमें तार आया है, जो साथमें भेज रहा हूँ। उस मामलेके बारेमें तो तुम्हें लिख ही चुका हूँ।[2]

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

साथमें आन्ध्रसे प्राप्त एक पत्रकी नकल भी भेज रहा हूँ, इसलिए नहीं कि इस सिलसिलेमें जरूर कार्रवाई की जाये, बल्कि तुम्हारी जानकारीके लिए और समय आने पर इस जानकारीका उपयोग किया जा सके इसलिए।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६७७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६४८६ से भी

१. यह प्रस्ताव अखिल भारतीय मुस्लिम लीग द्वारा २३ मार्च, १९४० को पास किया गया था। देखिए खण्ड ७१, परिशिष्ट ८।

२. देखिए "पत्र: अमृतकौरको" पृ० ३२१।

४८२. भेंट : हरि विष्णु कामथको[1]

सेवाग्राम
५ सितम्बर, १९४१

प्र० : लड़ाईमें रूसके शामिल हो जाने से क्या युद्धका स्वरूप बदल गया है और उसके प्रति भारतके रुखमें परिवर्तन आया है?

उ० : रूसके शामिल होने से युद्धके स्वरूपमें कोई ठोस परिवर्तन नहीं हुआ है। रूसपर हमला हुआ, इसलिए उसके प्रति मौखिक सहानुभूति प्रकट करना बुरा नहीं है, लेकिन जबतक हम इस सहानुभूतिको कार्यरूपमें परिणत नहीं कर सकते, यह निष्प्रयोजन है। रूस पूर्णतः दोषमुक्त नहीं है, क्योंकि उसने साम्राज्यवादी ताकतसे गठबन्धन किया है; भले ही यह गठबन्धन उसने महज अपने अस्तित्वको बनाये रखने के लिए ही किया हो। जवाहरलालजी, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिके अन्तरंग अध्येता रहे हैं। आज अगर वे जेलमें न होते और अपने विचार व्यक्त करने के लिए स्वतन्त्र होते, तो इस विषयमें वे जो राय जाहिर करते उसे मैं निश्चय ही महत्त्वपूर्ण मानता।

प्र० : महात्माजी, क्या आपको यह सम्भव दिखता है कि अटलांटिक घोषणा-पत्रसे दुनियामें एक नवीन अहिंसक समाज-व्यवस्थाका उदय हो सकता है?

उ० : नहीं, मैं नहीं समझता कि अटलांटिक घोषणापत्रसे दुनियामें मेरी कल्पनाकी नवीन अहिंसक समाज-व्यवस्थाका उदय हो सकता है।

प्र० : वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्में श्री अणे[2] तथा श्री नलिनीरंजन सरकार[3]-जैसे कांग्रेसियोंके शामिल होने के बारेमें आपकी क्या राय है?

उ० : श्री अणे और नलिनीबाबू-जैसे कांग्रेसियों द्वारा सरकारी पद स्वीकार किया जाना मैं ठीक नहीं मानता। उनके इस आचरणसे ब्रिटिश सरकारको अमेरिकामें यह प्रचार करने का साधन मिल गया है कि अब भारतको सन्तुष्ट हो जाना चाहिए, क्योंकि प्रसिद्ध भूतपूर्व कांग्रेसी भी वाइसरायकी परिषद्में शामिल हो गये हैं।

प्र० : सत्याग्रह आन्दोलन जिस ढंगसे चल रहा है, क्या आप उससे सन्तुष्ट हैं? १९३० के आन्दोलनसे[4] यह किन बातोंमें भिन्न है? क्या सरकारको परेशानी

१. भेंटका यह विवरण हरि विष्णु कामथने, जो अ० भा० फॉरवर्ड ब्लाकके संयोजन मन्त्री थे, तैयार किया था और गांधीजी ने कुछ स्थलोंपर उसमें सुधार किया था।

२. माधव श्रीहरि अणे, जिनको परिषद्में प्रवासी भारतीयोंके मामलेका जिम्मा सौंपा गया था।

३. इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और भूमि-सम्बन्धी मामलोंका जिम्मा सौंपा गया था।

४. दाँडी-कूच और नमक सत्याग्रह

में न डालने की नीतिका कोई राजनीतिक मूल्य या महत्त्व है? यदि सरकार वाणीकी स्वतन्त्रता दे दे तो आपका रुख क्या होगा? क्या निकट भविष्यमें संघर्षके जोर पकड़ने की सम्भावना है?

उ० : सत्याग्रह आन्दोलन जिस ढंगसे चल रहा है, उससे मुझे पूरा सन्तोष है। यह ठीक है कि १९३० के आन्दोलनमें सरकारपर जितना जोर डाला गया था उतना जोर इस आन्दोलनमें नहीं डाला जा रहा है, लेकिन आजके आन्दोलनसे उस आन्दोलनका स्वरूप भिन्न था। लेकिन मुख्य बात यह है कि संघर्ष जारी है। यह अपने-आपमें एक काफी बड़ा नैतिक दबाव है, जिसकी वजहसे अमेरिकामें ब्रिटिश सरकारकी स्थिति अब बहुत सुखद नहीं दिखती। सरकारको परेशानीमें न डालने की नीति अहिंसाका तर्कसंगत परिणाम है, और इस लिहाजसे एक राजनीतिक आवश्यकता भी है। लेकिन मेरी उदारताके बदले ब्रिटिश सरकार उदारता बरतेगी, इसकी उम्मीद मैं नहीं करता। सरकार वाणीकी स्वतन्त्रताके अधिकारको स्वीकार करेगी, इसकी सम्भावना नहीं है, लेकिन अगर उसने ईमानदारीके साथ ऐसा किया तो मुझे आन्दोलनको समाप्त करना ही होगा। अहिंसक वाणीकी स्वतन्त्रताके सच-मुच स्वीकार कर लिये जाने का मतलब यह होगा कि स्वतन्त्रताकी दिशामें एक बहुत बड़ा कदम उठाया गया है। जबतक युद्ध चल रहा है तबतक आन्दोलनमें तेजी आने की सम्भावना नहीं है। अगर जरूरी हुआ तो युद्ध समाप्त होने पर तेजी लाई जायेगी।

प्र० : स्थानीय किसान और मजदूर संघर्षोंके प्रति आपका क्या दृष्टिकोण है?

उ० : अपनी न्यायोचित माँगें पूरी करवाने के लिए किसानों और मजदूरों द्वारा चलाये गये सभी स्थानीय संघर्षोंके प्रति मेरी सहानुभूति है और इस तरहके संघर्षोंसे सरकार किसी परेशानीमें नहीं पड़ सकती। यह देखते हुए कि मैं खुद कभी ऐसे संघर्षोंका प्रवर्त्तक रहा हूँ, मेरा दृष्टिकोण इससे भिन्न हो भी नहीं सकता।

प्र० : कांग्रेसके संविधानमें "अहिंसा" शब्दका जिक्र नहीं है। इस बातको ध्यानमें रखते हुए अहिंसक आचरणके सम्बन्धमें कांग्रेसी लोगोंका क्या कर्त्तव्य है?

उ० : "अहिंसा" शब्दका जिक्र यद्यपि कांग्रेसके संविधानमें नहीं है, तथापि प्रस्तावोंमें तो इसका जिक्र है। अहिंसा पर कांग्रेसके पूर्ण अधिवेशनका कोई प्रस्ताव भले ही न हो, लेकिन जबतक अ० भा० कां० कमेटीके प्रस्तावमें कांग्रेसका पूर्ण अधिवेशन कोई संशोधन या परिवर्तन नहीं करता, तबतक कांग्रेसियोंसे मैं यही अपेक्षा रखूँगा कि वे उस प्रस्तावका पालन करते रहें।

प्र० : हाल में ही आचार्य कृपलानीने सरदार शार्दूलसिंह कवीशरके एक प्रश्नके उत्तरमें कहा कि फॉरवर्ड ब्लॉक कांग्रेस संगठनका भाग नहीं है। कृपलानीके इस कथनसे अनेक कांग्रेसियोंके मनमें बड़ी उलझन और गलतफहमी पैदा हो गई है। मैं खुद यह मानता हूँ कि कांग्रेसमें फॉरवर्ड ब्लॉकको स्थिति वही है जो कांग्रेस समाजवादी दलकी है। क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि इस विषयमें आपकी क्या राय है?

उ० : यद्यपि कांग्रेस संविधान कांग्रेस संगठनके अन्दर अलग-अलग गुटोंको स्वीकार नहीं करता, तथापि यदि इस तरहके गुटोंका कांग्रेसके संकल्प और उसकी नीतिसे कोई विरोध न हो तो इन गुटोंमें निष्ठा रखनेवाले कांग्रेसियोंको व्यक्तिगत हैसियतसे कांग्रेसमें रहने का पूरा अधिकार है। मैंने इस बातपर कभी जोर नहीं दिया कि जो कांग्रेसी अहिंसाकी मेरी परिभाषाका अनुमोदन नहीं करते उन्हें कांग्रेस छोड़ देनी चाहिए। जिस रूपमें फॉरवर्ड ब्लॉक कांग्रेसका अंग नहीं है उसी रूपमें कांग्रेस समाजवादी दल भी उसका अंग नहीं है। इन दोनोंमें से कोई कांग्रेस संगठनका अंग है, इस तरहका कोई उल्लेख कांग्रेस संविधानमें नहीं है। जहाँतक कांग्रेस संगठनका भाग होने की बात है, फॉरवर्ड ब्लॉक और कांग्रेस समाजवादी दल, दोनोंकी स्थिति एक-जैसी है।

प्र० : महात्माजी, क्या इस बातमें आपकी पूरी श्रद्धा है कि हमारा भाग्य ईश्वरीय शक्ति द्वारा निर्धारित होता है?

उ० : हाँ, भारत और विश्वके भाग्यको दिशा देनेवाली कोई ईश्वरीय शक्ति है, इस बातमें मेरी पूरी श्रद्धा है। यही वह जीवन्त श्रद्धा है जो आजकी संकटकी घड़ीमें मुझे सम्बल प्रदान करती है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ५-११-१९४१

४८३. पत्र : सारंगधर दासको

सेवाग्राम, वर्धा
६ सितम्बर, १९४१

प्रिय सारंगधर दास,

राजकुमारी शिमलामें विश्राम कर रही है। अक्तूबरसे पहले वह नहीं आयेगी। उसको लिखा आपका पत्र एक करुणाजनक गाथा है।

मेरी राय तो इस प्रकार है। जिन लोगोंके बयानोंका आपने अनुवाद किया है उन्हें अहिंसाकी कार्य-पद्धतिका कोई बोध नहीं था। यदि उनमें अहिंसा-जन्य साहस होता तो वे इस तरह जान बचाकर भाग न आते, बल्कि या तो प्रतिशोधमें अपना हाथ उठाये बिना अपने ऊपर प्रहार करनेवाले तथाकथित पुलिसके लोगोंका हृदय-परिवर्तन करते अथवा वहीं मर मिटते। इसका मतलब उच्चतम कोटिकी अहिंसा होता। और यह दीर्घ कालके प्रशिक्षणके बिना प्राप्त नहीं होती। यह बहुत कम देखने को मिलती है। लेकिन यदि कोई ऐसा साहस न दिखा सके तो उसे कायरताका व्यवहार भी तो नहीं करना चाहिए। आक्रमणकारीके प्रहारका अपनी पूरी शक्तिसे उत्तर देने का न केवल हमें अधिकार है, बल्कि यह हमारा कर्त्तव्य भी है। इसके लिए भी बड़े साहसकी जरूरत है। मैंने लोगोंको सफलतापूर्वक इसका

परिचय देते देखा है। विरोधी कितना प्रबल है, इसकी परवाह नहीं होनी चाहिए। प्रतिरोधमें मृत्यु भी हो सकती है। पाशविक और अपमानजनक व्यवहारको बर्दाश्त करने की अपेक्षा यह रास्ता बहुत अच्छा है। इस तरहकी आत्म-रक्षा कार्यकर्ताओंके लिए निषिद्ध नहीं है। अपने सम्मानकी रक्षा करना मनुष्यका सहज अधिकार और अनिवार्य कर्त्तव्य है। यदि कोई अहिंसक रीतिसे उसकी रक्षा करना जानता हो तो उस तरह रक्षा करे अन्यथा हिंसक रीतिसे करे। और कोई रास्ता नहीं है। जो हिंसक रीतिसे अपने सम्मानकी रक्षा कर सकता है वह शीघ्र ही अहिंसाका गुण भी सीख ले सकता है। लेकिन यह तो मैं प्रसंगवश कह गया हूँ। मेरी सलाह स्पष्ट और सुनिश्चित है। मुझे समय-समयपर जो बयान भेजे गये हैं वे अगर सच हैं तो यही निष्कर्ष निकलता है कि उड़ीसामें इस तरहकी मारा-मारी बहुत अधिक हो रही है। यदि आपने मेरी सलाहको हृदयंगम कर लिया है तो आप तरीकेसे और विचारपूर्वक उसके अनुसार काम करेंगे। कैसे काम करना है, इसके एक सुविचारित कार्यक्रमके साथ आप चाहें तो इस पत्रको भी प्रकाशित कर सकते हैं। आप घोषणापत्रका मसौदा स्वीकृतिके लिए मेरे पास भेज सकते हैं या इस सम्बन्धमें आवश्यक कारंवाई करने से पूर्व आप जब चाहें, विचार-विमर्श करने के लिए मेरे पास आ सकते हैं। यह प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०४४३) से। सौजन्य : उड़ीसा सरकार

४८४. पत्र : एस० एम० मसूरकरको

६ सितम्बर, १९४१

प्रिय मसूरकर,

यदि वे कागजात जिनका आपने पिछले महीनेकी २६ तारीखके अपने पत्रमें जिक्र किया है मुझे मिल जायें तो मैं उन्हें गौरसे पढ़ने की कोशिश करूंगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८५. पत्र : अमृतकौरको

७ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

कल तुम्हें प्रमाके पत्रसे ही सन्तोष करना पड़ा। लेकिन उसके पत्र मेरे बहुत ही छोटे पत्रोंके अभावकी पूर्ति ही नहीं करते, बल्कि उससे भी कुछ ज्यादा ही देते हैं। और फिर वह लिखती भी अच्छा है।

बावलोकी[1] चिट्ठी साथमें है।

अब यहाँ गरमी पड़नेवाली नहीं है। जब-तब पानी बरस जाता है। आकाश पर बादल छाये रहते हैं।

मीरा अपनी नई कुटियामें प्रसन्न है। वह दीवारोंकी कलात्मक सजावट कर रही है — केवल शुद्ध-पवित्र उपादानोंसे।

महादेव ठीक हो गया है, लेकिन अभी कमजोर है। उसे अहमदाबादमें ही रहना है।

जाजूजीको नारणदासके पास जाना है। बुल मेरी बात उतनी आसानीसे नहीं मानती जितनी तुम। उसे भेजकर मुझे बड़ी खुशी होती। लेकिन उसका मन सीमा प्रान्तके काममें लगा है। उसने जैसी स्वतन्त्रता माँगी थी वैसी उसे मिल जाये तो जिस तरहका काम तुम सुझा रही हो, उसे हाथमें लेने के लिए उसे राजी किया जा सकता है।

मैं तुम्हें 'सर्वोदय'[2] जरूर भेजूँगा।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

११ का घंटा बज रहा है।

डाक मिलनेके बाद :

तुम्हारा पत्र मिला। इस सप्ताह मेरा वजन एक पौंड कम हुआ है। अगर तुम मुझसे आगे निकल जाओ — जो मुश्किल लगता है — तो यह तुम्हारी कामयाबी होगी।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६७) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७६ से भी

१. महादेव देसाईके पुत्र, नारायण देसाई

२. काका कालेलकर और दादा धर्माधिकारी द्वारा सम्पादित, गांधी सेवा संघकी हिन्दी मासिक पत्रिका

४८६. पत्र : मिर्जा इस्माइलको

७ सितम्बर, १९४१

प्रिय सर मिर्जा,

अगर किसीने आपको पहले ही यह[1] न भेज दिया हो तो अब आपके मनोरंजनके लिए भेज रहा हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८५)से

४८७. पत्र : पुरातन बुचको

७ सितम्बर, १९४१

चि० पुरातन,

तुझे जब आना हो आ जाना। वसुमतीबहनसे कहना, उसका पत्र मिल गया है। वह अपना कार्यक्रम आनन्दसे पूरा करे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तेरा पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई।

पुरातन बुच
हरिजन आश्रम
साबरमती

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८४) से

१. उपलब्ध नहीं है।

४८८. पत्र : कुँवरजी खे० पारेखको

७ सितम्बर, १९४१

चि० कुँवरजी,

मैंने सुशीलाबहनको लिखा है। डॉ० मेहताने मुझे सन्देशा भेजा था, और अब तुम्हारा पत्र मिला। हाँ, सँभलकर चलने की जरूरत तो है ही; और अगर ऐसा किया तो कुछ नहीं होगा। दावत, त्योहारोंके मिष्टान्न आदिसे बचना चाहिए। खुली हवामें रहना चाहिए और इतना परिश्रम नही करना चाहिए कि थकावट मालूम हो। फल और सागभाजी बराबर खाते रहना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

श्री कुँवरजी खेतसी
झंडू फार्मेसी
दादर
बम्बई–१४

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७५०) से। सी० डब्ल्यू० ७२९ से भी; सौजन्य: नवजीवन ट्रस्ट

४८९. पत्र : कंचन मु० शाहको

[७ सितम्बर, १९४१][1]

चि० कंचन,

साथके पत्रमें सचाई कितनी है, यह मैं नहीं जानता। मु[न्नालाल]का कहना है कि यह सीधा-सादा स्पष्ट सत्य है। लेकिन अगर ऐसा न भी हो तो भी हमारे बीच यह करार तो है ही कि तुझे किसी तरह बुरा नहीं मानना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

क्या तू मंजुलाबहनसे अपने स्वास्थ्यकी जाँच करायेगी?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२७१) से। सी० डब्ल्यू० ७१५६ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

१. डाककी मुहरसे

४९०. पत्र : धीरूभाई भू० देसाईको

सेवाग्राम, वर्धा
७ सितम्बर, १९४१

चि० धीरूभाई,

तेरा पत्र मिला। खरा है। मुझे सन्तोष हुआ। अन्य जो बातें मैंने सुनी हैं, उनकी मुझे कोई परवाह नहीं। उस सम्बन्धमें मैं समय मिलने पर लिखूंगा।

भूलाभाईकी तबीयतके बारेमें तूने कुछ नहीं लिखा। उम्मीद है, प्रसन्न होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९१. सन्देश : अहमदाबादके लोगोंको[1]

सेवाग्राम
८ सितम्बर, १९४१

जितना ज्यादा सोचता हूँ उतना ही मुझे विश्वास होता जाता है कि चरखा गरीबोंका उद्धारक है। चरखेकी खूबी इस तथ्यमें निहित है कि यदि महिलाएँ और १२ वर्षसे कम उम्रके बच्चे रोज अपना कुछ समय खादी-उत्पादनके कार्यमें लगायें तो भारत अपनी जरूरतका पूरा कपड़ा बना सकता है।

अगर ऐसा प्रयोग अहमदाबादमें छोटे पैमानेपर शुरू किया जाये तो भी मुझे विश्वास है कि मेरे कथनमें छिपे सत्यका प्रचुर प्रमाण सामने आ जायेगा।

मो० क० गांधी

[गुजरातीसे]
गुजरात समाचार, १८-९-१९४१; बॉम्बे क्रॉनिकल, १९-९-१९४१ भी

१. यह सन्देश गांधीजी के जन्म-दिवसके अवसरपर भेजा गया था, जो विक्रम संवत्‌के अनुसार १८ सितम्बरको था।

४९२. पत्र : अमृतकौरको

८ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

कल तुम्हारे नाम दो पत्र आये थे, जिन्हें तुम्हारे मौजूदा पतेपर भेज दिया था। आशा है, मिल गये होंगे।

तुम्हारी खाँसी ठीक होने में काफी लम्बा समय ले रही है। क्या बहुत ज्यादा बोलती हो? कुछ दिनोंका पूर्ण मौनव्रत नही रख सकती क्या? जादूकी तरह असर करेगा। रतलामके कागजात पढ़ने में बोझिल हैं। जबतक बहुत जरूरी नही समझूंगा, उन्हें तुम्हारे पास भेजकर तुम्हें क्लेश नही दूंगा।

सेवोंको कोई नुकसान नही पहुँचा था। अगर वे कागजमें लिपटे होते तो शायद अधिक ताजे रह सकते थे। खैर, उनकी चिन्ता मत करने लगना।

बाकी प्रभा लिखेगी। मैं अस्पतालवाले कमरेमें हूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६८) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७७ से भी

४९३. पत्र : डॉ० बी० सी० लागूको

८ सितम्बर, १९४१

प्रिय लागू,

पत्रके लिए धन्यवाद। लक्ष्मीबाई खुशीसे प्रेमाबाईके साथ ठहर सकती है। इससे उसे जो तंगी होगी वह बर्दाश्त कर लेगी। बिच्छूके डंककी दवाका प्रयोग कर रहा हूँ। एक मामलेमें प्रयोग किया है। उसमें तो वह कारगर साबित हुई लगती है।

तुम्हारा,
बापू

डॉ० बी० सी० लागू
रामनिवास
लक्ष्मी रोड, नारायण पेठ
पूना–२

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३७५) से

४९४. पत्र : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

८ सितम्बर, १९४१

प्रिय रथी,

तुम्हारे तारके उत्तरमें मैंने तार[1] भेज दिया था, इसीलिए तुम्हारे इसी १ तारीखके पत्रकी प्राप्ति स्वीकार करने में देर की है। अगर तुम और दूसरे लोग मुझे विश्वभारतीका अध्यक्ष बनाना चाहते हो, तो मुझे तुम्हारे साथ योजनाकी चर्चा करनी होगी। तुम सबोंके साथ मेरी भी हार्दिक इच्छा यही है कि तीनों संस्थाओं[2] को गुरुदेवकी गरिमाके अनुरूप बनाये रखा जाये। अभी तो मैं पाँच लाखकी राशि पूरी करने के लिए देशका दौरा करने की बात गम्भीरतासे सोच रहा हूँ — यानी यदि मेरी अपीलपर[3] यह राशि एकत्र न हो सकी तो। शान्तिनिकेतनको सीधे जो-कुछ भेजा गया है, उसकी एक सूची मुझे भेजो।

सप्रेम,

मो० क० गांधी

श्री रथीन्द्रनाथ ठाकुर
शान्तिनिकेतन
बंगाल

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७५२) से

१. यह उपलब्ध नहीं है।
२. विश्वभारती, शान्तिनिकेतन और श्रीनिकेतन
३. देखिए पृ० २५६।

४९५. पत्र : भगवानजी पु० पंड्याको

८ सितम्बर, १९४१

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। भाई पुरातनका पत्र भी मिला। उसे इस वातका दुःख है कि तुमने उसकी पाँच वर्ष पहलेकी टिप्पणी विना उसकी अनुमतिके भेज दी। उसका अब, अर्थात् पाँच वर्षके अनुभवके वाद, स्पष्ट मत है कि दादा विलकुल निर्दोष और भोले हैं। भाई पुरातनकी मान्यता है कि दादाके विरुद्ध यह अभियोग कुछ हरिजनोंका षड्यन्त्र है। मैं भी यही समझता हूँ। इन लोगोंने इतने कष्ट सहे हैं कि ये अपना मनुष्यत्व खो वैठे हैं। वैसे यह सवपर लागू नहीं होता। यह सब सहन करने पर ही हमारा निस्तार होगा। लेकिन सहन करते हुए उनकी वातोंमें आकर किसीपर सन्देह भी नहीं करना चाहिए।

नरहरिका उलाहना समझमें आता है। यह तो स्पष्ट है कि तुम सवूत इकट्ठा कर रहे हो। ऐसा करने से लोगों में कानाफूसी तो होगी ही। इससे वातावरण दूषित होगा। फिर तुम अपने कार्यक्षेत्रको अलग भूल रहे हो। इससे तुम्हारे कार्यमें अवश्य रुकावट आयेगी। तुम आश्रमके किसी भी आदमीके पहरेदार क्यों वनते हो? इतना ही वहुत है कि तुम, मैं और हम सब अपने-अपने पहरेदार हो जायें। देखरेखका काम नरहरिका है। जिसे शिकायत करनी हो, वह उससे करे। तुम्हें तो अपने कान वन्द कर लेने चाहिए। मेरे पास तीन वन्दरोंकी एक सुन्दर मूर्ति है। वह मेरे सामने ही रहती है। उसमें एक बन्दरके तीन स्वरूप हैं। उस वन्दरके कान, मुँह और आँखें वन्द हैं। उससे शिक्षा यह मिलती है कि किसीके दोष सुने न जायें, देखे न जायें, कहे न जायें। इसका मूल तो जापानमें हजारों वर्ष पुराने एक ऊँचे स्तम्भपर खुदा हुआ है। इस उपदेशको हमें अपने हृदयमें खोद लेना चाहिए।

जव तुम आओगे, तव तुम्हारी सुनूंगा। फिलहाल मैं किसीको वुलानेको तैयार नहीं हूँ। मेरा मन यदि थोड़ा भी डिगेगा तभी तो मैं दूसरोंको वुलाऊँगा। लेकिन यदि नरहरिको दृढ़ विश्वास हो तो मैं उसकी उपेक्षा करके कोई जाँच नहीं करूँगा। तुम नरहरिकी सम्मतिसे चाहो तो यहाँ १५ दिन या अधिक भी रह सकते हो। लेकिन नीमूकी खातिर खास तौरपर आने या रहनेकी जरूरत नहीं है। उसे किसी-न-किसीका साथ मिल जायेगा।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३९६)से। सौजन्य: भगवानजी पु० पंड्या

४९६. पत्र : नारणदास गांधीको

सेवाग्राम
८ सितम्बर, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारा १ तारीखका पत्र मिला। 'रेंटिया-बारस' के लिए मैं तुम्हें श्री जाजूजी का नाम तो भेज चुका हूँ। वह पत्र तुम्हें कब-का मिल गया होगा।[1] इसी कारण जाजूजी के अन्य कार्यक्रम स्थगित कर दिये गये हैं। वे तुम्हें आठ या दस दिन देने को तैयार रहेंगे। अब तो तुम्हारी ओरसे मुझे उनका कार्यक्रम मिलना चाहिए।

छगनलाल[2] यहाँ एक दिन रह गया। [रकम] पूरी करने का आश्वासन तो दे गया है। जरूरत पड़ी तो वह रंगून तक जायेगा। तुम्हारे यहाँ बारिश होने की खबर अखबारमें है। क्या अच्छी वर्षा हुई?

मेरा अविश्वास तो भाई प्रभाशंकरके[3] प्रति है, लेकिन चम्पा[4] भी तो उसमें सम्मिलित मानी जायेगी न? वह बेचारी तो वही करेगी जो भाई प्रभाशंकर कहेंगे और यह स्वाभाविक भी है। मैंने तो यहाँतक जमा लिया था कि जब मगनभाई[5] यहाँ हों, तभी वह आयें। अब तो महादेव दिल्लीमें है, और अक्तूबरमें लौटेगा। कुछ दिन यहाँ रहकर २० के आसपास रंगून जाने की सोचता है। तुम्हारा पत्र बादमें मिला। जाजूजीवाली खबर इसके साथ ही है। यह ठीक होगा कि मेरा सन्देश जाजूजी के साथ भेजा जाये। अभी भेजना तो बहुत जल्दी होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५४३ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. देखिए "पत्र : नारणदास गांधीको", पृ० ३०२।
२. डॉ० प्राणजीवनदास मेहताके पुत्र
३. चम्पाके पिता;
४. डॉ० प्राणजीवनदास मेहताके पुत्र रतिलाल मेहताकी पत्नी
५. मगनलाल, प्राणजीवनदास मेहताके कनिष्ठ पुत्र

४९७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

८ सितम्बर, १९४१

चि० कृ० चं०,

विकार मनमें आते हैं उसका अर्थ यह हुआ कि मन खाली है और कुदरतको खालीपनकी नफरत है। इसलिए जब मन राम-नामसे या उसके कामसे खाली है तो शैतान कब्जा लेता है। इसीमें जब विकार चढ़ाई करे तब और विकारोंको रोकने का एक हि तरीका है। राम-नाम रटण और रामका काम। इसमें हार होती ही नहिं। जबतक जीत न मिले, मात्रा बढ़ाते रहना। अन्य कोई उपाय है हि नहिं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०३) से

४९८. पुर्जा : रामनारायण चौधरीको

८ सितम्बर, १९४१

चि० रामनारायण,

अंजनाका[1] मैंने सुना था। दुःख हुआ[2] लेकि(न) गभराहट-जैसी कुछ नहीं। आज प्रार्थनाके बाद शीघ्र मौन खुलेगा। तब हम तीन बैठ जायंगे। एकान्त ही होगा। घूमने के समय बात करना ठीक नहीं होगा।

बापूके आशीर्वाद

बापू : मैंने क्या देखा, क्या समझा?, पृ० १६७

१. रामनारायण चौधरीकी पत्नी

२. रामनारायण चौधरीका स्वास्थ्य अचानक गिर जानेकी बात सुनकर

४९९. पुर्जा : रामनारायण चौधरीको[1]

[८ सितम्बर, १९४१][2]

फजरमें

दूध ३० तोला

१ मोसंबी

११ बजे

एक केला

एक तोला घी

२० तोलेके कटोरेमें आरामसे जा सके इतनी भाजी

दस ग्रेनसे अधिक नमक नहीं

भाजीमें लींबू डाल सकते हो।

२ बजे भूख लगे तो ३० तोला छाछ और २० ग्रेन सोडा और मोसंबी एक

५-२० को

३० तोला दूध

२० तोलेके कटोरेमें भाजी

ककड़ी मिले तब पाँच तोला ककड़ी कच्ची

एक मोसंबी

रातको बहुत भूख तो एक केला। केला लेकर बराबर चबाकर लेना या मेश करके। यह ज्यादामें-ज्यादा है। तीन दिन दस्त न आये तो ऐनीमा लेना। मुझको रोजका हिसाब देना। अब तो रोज-के-रोज क्योंकि कुछ परिवर्तन करना पड़े तो करुं। लिखके भेजो।

बापू : मैंने क्या देखा, क्या समझा?, पृ० १६७-६८

१ और २. यह तय हुआ था कि रामनारायण चौधरीको नालवाड़ी जाने से पहले सेवाग्राममें ही गांधीजी के इस नुस्खेकी आजमाइश करनी चाहिए, जो इस तारीखके पुर्जेके साथ प्राप्त हुआ था; देखिए पिछला शीर्षक।

५००. पत्र : एम० जी० भावेको

सेवाग्राम
९ सितम्बर, १९४१

प्रिय भावेजी[1],

आपका पत्र[2] मिला। मेरी तो वही राय[3] है जो पहले थी। हर चीजमें मैं साम्प्रदायिकताके एकदम खिलाफ हूँ, लेकिन खेल-कूदमें तो और अधिक।

आप मेरी इस रायका जो भी उपयोग चाहें कर सकते हैं। कृपया इससे अधिक और कुछ करने के लिए मुझसे न कहें। मेरे पास समय नहीं है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५०१. पत्र : आर० कृष्णमूर्तिको

सेवाग्राम, वर्धा (सी० पी०)
१० सितम्बर, १९४१

प्रिय कृष्णमूर्ति[4],

मुझे आपका यह सुझाव पसन्द आया कि नेतागण मिलकर अपना एक सुविचारित निर्णय[5] पेश करें। आप जनताका नाम लेते हैं, लेकिन बात अपनी कहते

१. मन्त्री, महाराष्ट्र क्रिकेट एसोशिएशन

२. एम० जी० भावेने अपने २६ अगस्त, १९४१ के पत्रमें साम्प्रदायिकतापर आधारित क्रिकेटके खेल और इसमें हिन्दुओंके हिस्सा लेने के विषयमें गांधीजीकी राय माँगी थी।

३. देखिए खण्ड ७३, पृ० २२९-३०।

४. मद्रासकी साप्ताहिक तमिल पत्रिका कल्किके संस्थापक और सम्पादक

५. श्री आर० कृष्णमूर्तिने गांधीजीको अपने एक सम्पादकीय लेखका अंग्रेजी अनुवाद भेजा था, जिसमें युद्धकी समाप्तितक स्वतन्त्रता-आन्दोलनसे अलग रहने के गांधीजी के निर्णयपर जनसाधारणमें व्याप्त निराशाको व्यक्त किया गया था। लेखमें राष्ट्रीय नेताओंसे इस बातकी जोरदार माँग की गई थी कि वे गांधीजी से संघर्षको पुनर्जीवित करने का अनुरोध करें।

हैं। क्या जनता मूक नहीं है? रही आपके सुझावकी बात, तो मैं यन्त्रवत् तो कुछ नहीं कर सकता। ईश्वरकी जो इच्छा होगी, वही होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
कल्कि, २६-१०-१९७५ में प्रकाशित प्रतिकृतिसे

५०२. पत्र : अमृतकौरको

१० सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

शुद्ध हिन्दीमें लिखा तुम्हारा पत्र मिला।

सरोजिनी[1] कल चली गई — हमेशाकी तरह उल्लासपूर्ण। उनकी बातें दिलचस्प तो थीं; लेकिन कुछ बतानेवाली नहीं। और वे नई बात बता भी क्या सकती थीं?

सरूप अभी यहीं है। कल इलाहाबादके लिए रवाना होगी। उसीसे पता चला कि ज०[2] और र०[3] ठीक हैं। वह खुद कुछ कमजोर हो गई है, लेकिन वैसे ठीक-ठाक है।

अन्नपूर्णा पहलेसे अच्छी है। राजेनबाबू आज ही सपत्नीक आये हैं। मेरी अभी मुलाकात नहीं हो पाई है। वे वर्धामें आराम कर रहे हैं। वे अभी कमजोर तो हैं, लेकिन वैसे ठीक हैं।

महादेव अहमदाबादका काम निबटाये बिना यहाँ नहीं आयेगा।

वे लोग चाहते हैं कि मैं तुम्हें १ अक्तूबरको अलवर भेजूँ। मैंने साफ मना कर दिया है। तुम्हारी तबीयत ठीक होती तो मैं तुम्हें जरूर भेजता। लेकिन तुम कब पूरी तरह स्वस्थ होगी, कहना मुश्किल है। वापस आते समय किसीको अपने साथ लेती आओ तो अच्छा होगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६९) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७८ से भी

१. सरोजिनी नायडू
२. जवाहरलाल नेहरू
३. रणजीत पण्डित

५०३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

१० सितम्बर, १९४१

प्रिय कु[मारप्पा],

यह सुझाव झवेरभाईका है। क्या यह तुम्हें व्यावहारिक और आवश्यक लगता है? झ० से बात कर लेना।

मलाईका[1] जो विश्लेषण तुमने भेजा है, वह गलत जान पड़ता है। मैं पूछ-ताछ कर रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५९) से

५०४. पत्र : कन्हैयालाल वैद्यको[2]

१० सितम्बर, १९४१

मैं परदेके पीछे यथाशक्ति यथासंभव कार्य कर रहा हूं।

बापु

मूल पत्रसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह शब्द देवनागरीमें है।

२. गांधीजीने प्रस्तुत पत्र कन्हैयालाल वैद्यके ७ तारीखके पत्रपर ही लिखा था, जिसमें जेलके कष्टों की रिपोर्ट थी।

५०५. पत्र : टी० एस० चोकलिंगम्को

११ सितम्बर, १९४१

प्रिय चोकलिंगम्[1],

आपको यहाँ आने का कष्ट नहीं देना चाहूँगा, क्योंकि डॉ० सुब्बारायन खुद आ रहे हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री टी० एस० चोकलिंगम्
'दिनमणि'
१०० माउण्ट रोड
मद्रास

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० २९७६) से। सौजन्य: टी० एस० चोकलिंगम्

५०६. पत्र : अमृतकौरको

११ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तो अभी तुम बिलकुल ठीक नहीं हो पाई हो। यह मुँहका गठिया क्या होता है? यह तुम्हें होना ही क्यों चाहिए? कोई ज्यादा गम्भीर वजह होगी। तुम दिल्लीके हार्डिंग कॉलेज अस्पतालमें पूरी तरह अपनी जाँच-इलाज करवा लो तो कितनी अच्छी बात हो। लेकिन शायद शम्मी नहीं मानेंगे। दूसरा सुझाव मैं बम्बईका दूंगा। सरदारका इलाज एक होमियोपैथ कर रहा है और वे पहलेसे अच्छे हैं। मुख्य चीज है ठीक होना।

तुम्हारे शिष्योंके दो पत्र साथ भेज रहा हूँ।

शैलेन वापस आ गया, क्या यह बात मैंने तुम्हें बताई थी? मैंने उसे हिन्दी और चरखेमें लगा दिया है। उसने नागपुरमें अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाया। वह पहलेसे अधिक अनुशासित हो गया है।

१. मद्रासके तमिल दैनिक दिनमणि के सम्पादक

सेवोंके बारेमें मैं जरूर पूछताछ करूँगा।

अन्नपूर्णा डॉ० डेविडसे जाँच कराने के लिए नागपुर गई है।

राजेन्द्रबाबू अभी सेवाग्राम नहीं आये हैं।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७०) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३७९ से भी

५०७. पत्र : जी० रामचन्द्ररावको

११ सितम्बर, १९४१

प्रिय मित्र,

नास्तिकताका अर्थ अपने अस्तित्वको अस्वीकार करना है। इसके प्रचारमें अबतक कोई सफल नहीं हुआ है। आपको जो सफलता मिली है वह इसलिए कि आपने अपने आसपासके लोगोंकी शुद्ध सेवा की है।[1] खेद है कि मैं आपको यहाँ आने को निमन्त्रित नहीं कर सकता। मेरे पास बातचीतके लिए समय नहीं है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
एन एथीस्ट विद गांधी, पृ० २६

१. जी० रामचन्द्ररावने लिखा था: "एक सालतक मैंने नास्तिकतावादी दृष्टिकोणसे अस्पृश्यताकी समस्याको हल करनेकी कोशिश की है।... नास्तिकतावादी दृष्टिकोण मुख्यतः इस बातमें निहित रहा है कि यह हिन्दू, मुसलमान और ईसाई-जैसे साम्प्रदायिक बिल्लोंको अस्वीकार करता है।... अबतक हमारा कार्यक्रम व्यवस्थित ढंगसे समय-समयपर विभिन्न धर्मों के लोगोंके सहभोजके आयोजनतक सीमित रहा है।... गाँवके वातावरणमें, जहाँ जाति-बन्धन बड़े कठोर हैं, खुलेआम विभिन्न धर्मोंके लोगोंके सहभोजका आयोजन आसान नहीं है। फिर भी हम इसमें सफल होते हैं, क्योंकि नास्तिकतावादी दृष्टिकोणके फलस्वरूप लोगोंमें विश्वनागरिकताकी भावना पैदा होती है।..."

५०८. पत्र : अतुलानन्द चक्रवर्तीको

११ सितम्बर, १९४१

प्रिय अतुलानन्द,

मुझे लगता है जो रास्ता तुमने चुना है वह तुम्हें अकेले तय करना है। तुम निश्चित मानो कि अगर कोई संस्था बनाने से प्रयोजन सिद्ध होता, तो मैंने अवश्य बनाई होती। एक बार कोशिश की भी गई, लेकिन फिर छोड़ देनी पड़ी। लेकिन मैं तुम्हारा विश्वास डिगाना नही चाहता। तुम डटे रहो।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री अतुलानन्द चक्रवर्ती
पी० १४८, जनक रोड
पी० ६ रासविहारी एवेन्यू
कलकत्ता

मूल अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी०डब्ल्यू० १४८३)से। सौजन्य : ए० के० सेन

५०९. पत्र : नलिनीरंजन सरकारको

११ सितम्बर, १९४१

प्रिय नलिनी बाबू,

मुझे स्वीकार करना होगा कि आपके सरकारी पद स्वीकार करने की बात सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैं तो बस आशा ही कर सकता हूँ कि आपकी आशाएँ फलीभूत हों। आप जब भी लेना चाहें, मेरी सलाह आपको सदैव सुलभ होगी आपके पत्रसे पता चलता है कि यद्यपि प्रतिबन्ध हटा लिया गया है, पर आपने कांग्रेसमें पुनः प्रवेश नही किया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१०. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुंशीको

११ सितम्बर, १९४१

भाई मुंशी,

तुम्हारा लम्बा पत्र पढ़ गया। मैं तुम्हारी व्यथा समझ सकता हूँ। लेकिन यह तुम्हें आगे ही ले जायेगी। अगर पहले तुम्हें मेरा सहारा था, तो आज भी तुम उससे वंचित नहीं हो। अनेक लोग तो यही समझते हैं न?

मैं यह विचार तुम्हारे मनमें से निकाल देना चाहता हूँ कि दूसरे राष्ट्रोंकी मददके बिना हमारा काम नहीं चलेगा।[1] चीन, रूस और इंग्लैडके उदाहरण हम पर लागू नहीं हो सकते। चीन स्वतन्त्र होने के बाद जापानसे जूझने के लिए दूसरोंकी मदद चाहता है। रूस और इंग्लैड तो स्वतन्त्र है ही। स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने पर हम चाहे हजारोंसे मदद माँगें, लेकिन तभी, जब हमने शस्त्रोंके बलसे स्वतन्त्रता प्राप्त की हो। अहिंसासे प्राप्त स्वतन्त्रताको किसी मददकी अपेक्षा नहीं होगी, अथवा होगी तो सारे जगत्से मददकी होगी। यह सब इतना स्पष्ट है कि तुम्हें समझने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए। लेकिन अगर हो, तो केवल इसी प्रश्नका निराकरण करने के लिए समय निकालकर आ जाओ। यह प्रश्न बहुत महत्त्वका है। जिस सन्दर्भमें तुमने ये शब्द[2] कहे उसमें तो ये बिलकुल उचित नहीं लगते। पाकिस्तान-सम्बन्धी लड़ाई दो भाइयोंके बीचकी लड़ाई है। उस लड़ाईमें एक भाई दूसरेसे हार जाये, यह समझमें आता है, लेकिन किसी तीसरेकी मदद लेकर जो जीतेगा वह खुद गुलाम बनेगा और दूसरेको भी गुलाम बनायेगा। आज अंग्रेज किसकी मदद कर रहे हैं? वर्तमान स्थितिमें पाकिस्तानको अस्तित्व ही कहाँ है? इसके विपरीत, अखण्ड हिन्दुस्तानका[3] अस्तित्व कमसे-कम कल्पनामें तो है। उस कल्पनाको सत्य करने का

१. क० मा० मुंशीने लिखा था: "भारतकी राष्ट्रीयता और एकताकी रक्षाके लिए किसी विदेशी ताकतकी मदद स्वीकार करने में मैं कोई हेठी नहीं मानता — वह ताकत आज ब्रिटेन हो सकता है, और कौन जाने युद्धके बाद कौन हो। चीन क्या कर रहा है? क्या रूस विदेशी सहायता नहीं ले रहा है? क्या इंग्लैंड भी यही नहीं कर रहा है?"

२. तात्पर्य क० मा० मुंशीके बनारसके भाषणसे है, जिसमें उन्होंने कहा था: "विभाजनको रोकने के लिए देशके कोने-कोने से लोग आयेंगे। अगर जरूरत हुई तो हम किसी मित्र देशकी मदद माँगेंगे। अगर जरूरत हुई तो हम विश्व जनमतके समक्ष उपस्थित होंगे और उससे अपनी मदद करने और एक ऐसे संकटको रोकने के लिए कहेंगे जो ४० करोड़ आदमियोंके जीवनको नष्ट कर देगा।"

३. क० मा० मुंशीने 'अखण्ड हिन्दुस्तान फ्रंट' नामक आन्दोलन चलाया था। उन्होंने अपने पत्रमें लिखा था: "मैं तो आकाश में उड़नेवाला एक कण-मात्र हूँ, जब कि आप (गांधीजी) सौर-मण्डलके सूर्य हैं।"

प्रयत्न करनेवाला चाहे आकाशमें उड़नेवाला एक कण ही हो, फिर भी वह उड़ तो रहा है। उसकी कल्पना उसे ऊँचा उठा रही है, नीचे नहीं गिरा रही। व्यक्ति-स्वातन्त्र्यके अपने भावके बूते वह आकाशमें जगमगा रहा है। उसे किसकी मदद की जरूरत है? और फिर यदि सारे कण एकत्र हो जायें, अर्थात् अपने व्यक्तित्वको पहचानें, तो वे ही आकाश हो जायेंगे। क्या तुम बिना कणोंके आकाशकी कल्पना कर सकते हो? अतः अखण्ड हिन्दुस्तानके लिए लड़ने को कटिबद्ध तुम तो किसीसे मदद लेने का विचार मनमें ला ही नहीं सकते। यह तुम्हें शोभा नहीं देगा। यह तुम्हारे परिपक्व विचारोंको धुँधला कर देता है। अब और लिखना तो समय नष्ट करना होगा। लेकिन 'विशेषु किं बहुना?'

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

चि० सरलाको उसके भागीदारोंकी ओरसे जवाब नहीं मिला, इसलिए वह कुछ खिन्न रहती है। तुम उन लोगोंकी तरफसे कह रहे हो या तुम दोनोंकी तरफसे? अगर भागीदारोंकी तरफसे न कहा हो, तो हो सके तो उनसे पूछकर अनुमति भेजना। अगर उन्हें अड़चन हो और अनुमति न दे सकें, तो सरला तुरन्त वापस चली आयेगी।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६८) से। सौजन्य : कन्हैयालाल मा० मुंशी

५११. पत्र : सरस्वती गांधीको

११ सितम्बर, १९४१

चि० सुरू[1],

तेरा खत मिला। तू दीर्घायुषी बन और शुद्ध सेविका बन, यह तुझे बा के और मेरे आशीर्वाद। कुछ-न-कुछ व्याधि तो शरीरके साथ रहती है, उसे सहन करना पड़ता है। कोई रोज तो मिलेंगे।

बापुके आशीर्वाद

चि० सुरू
[मार्फत] श्री कान्ति गांधी
देवराज मोहल्ला
मैसूर[2]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१८१) से। सी० डब्ल्यू० ३४५५ से भी; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी।

१. हरिलाल गांधीके पुत्र कान्तिलाल गांधीकी पत्नी
२. पता सी० डब्ल्यू० प्रतिसे लिया गया है। यह रोमन लिपिमें था।

५१२. भेंट : 'हिन्दू'के प्रतिनिधिको

वर्धागंज
११ सितम्बर, १९४१

मैंने आज गांधीजी से भेंट की और श्री चर्चिलने हाउस ऑफ कॉमन्समें दिये हालके ही अपने भाषणमें भारतके विषयमें जो-कुछ कहा था उसके बारेमें उनसे कुछ प्रश्न पूछे।[1] गांधीजी ने किसी भी प्रश्नका उत्तर देने से इनकार कर दिया। तब मैंने उनसे पूछा: "देखता हूँ, आप मेरे पूछे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और संगत प्रश्नोंके उत्तर देने को भी तैयार नहीं हैं। क्या आप सोचते हैं कि भारतकी स्वतन्त्रताके जिस ध्येयके लिए कांग्रेस संघर्ष कर रही है, उसमें आपकी चुप्पी किसी तरह सहायक होगी?" उत्तरमें गांधीजी ने कहा:

अगर मैं ऐसा न मानता तो आपके कुछ कहे बिना ही मैंने एक वक्तव्य जारी कर दिया होता। लेकिन मेरा हार्दिक विश्वास है कि मेरा मौन मेरे मुँहसे निकले किन्हीं भी शब्दोंसे कहीं अधिक मुखर है। अन्ततः शब्दोंका कोई महत्त्व नहीं होता, कार्यका ही महत्त्व होता है। मेरा कार्य समग्र भारतके — और अगर आप कहना चाहें तो कह सकते हैं कि — समस्त विश्वके सामने है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १२-९-१९४१। सी० डब्ल्यू० ४०७५ से भी; सौजन्य: अमृतकौर

१. ९ सितम्बर, १९४१ को अपने भाषणमें चर्चिलने कहा था: "भारत, बर्मा या ब्रिटिश साम्राज्यके दूसरे भागोंमें संवैधानिक शासनके विकासके सम्बन्धमें अपनी नीति बनाते हुए सरकारने समय-समय पर जो वक्तव्य जारी किये हैं उनमें इस संयुक्त घोषणासे कोई अन्तर नहीं आता। अगस्त १९४० की घोषणामें हमने यह वचन दिया है कि हम विभिन्न जातियोंके ब्रिटिश राष्ट्रकुलमें स्वतन्त्र और बराबरीके साझेदारका दर्जा हासिल करने में भारतकी सहायता करेंगे, लेकिन निःसन्देह भारतके साथ हमारे दीर्घ सम्बन्धसे जो दायित्व हमपर आये हैं और वहाँके विभिन्न धर्मों और जातियोंके लोगों तथा अलग-अलग हितोंके प्रति हमारी जो जिम्मेदारियाँ हैं उन्हें निभाने का खयाल तो रखना ही पड़ेगा।"

५१३. पत्र : अमृतकौरको

१२ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

बायें हाथसे लिखा तुम्हारा पत्र मिला। कैसी दुःखद बात है कि तुम अपने दाहिने हाथसे काम नही ले सकती! कलवाली सलाह आज फिर दोहरा रहा हूँ। इलाजके लिए दिल्ली चली जाओ, या यही आ जाओ। यहाँ ठीक नही हुई तो तुम्हें बम्बई भेजा जा सकता है। मेरा निश्चित मत है कि शिमला इस समय तुम्हारे लिए अनुकूल जगह नही है।

तुम जो-कुछ भी करो, उसमें शम्मीका हार्दिक सहयोग जरूर होना चाहिए। कुटिया रहने लायक बन गई है। दीवारोंका काम पूरा किया जा रहा है। लेकिन रहने योग्य बन चुकी है।

म[हादेव] कुछ दिन और बाहर रहेगा।

तार द्वारा सूचित करना कि क्या तय किया।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७१) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३८० से भी

५१४. पुर्जा : मुन्नालाल गं० शाहको

१२ सितम्बर, १९४१

अब तो लिखकर जवाब देनेकी जरूरत नहीं है न? हाँ, तो लिखनेको तैयार हूँ।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नक़ल (जी० एन० ८६४३) से

५१५. पत्र : मृदुला साराभाईको

सेवाग्राम, वर्धा
१२ सितम्बर, १९४१

चि० मृदु,

तेरे एक प्रश्नका उत्तर देना तो मैं भूल ही गया था। आज सवेरे अचानक याद आ गया।

आन्दोलन[1] शुरू हुआ था १८ अक्तूबरको और जवाहरलाल पकड़े गये ३१ अक्तूबरको। दिवस मनानेमें मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है। कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण दिवस ही मनाया जाना चाहिए जिसका लोगोंपर गहरा प्रभाव पड़े। दिवस मनाने का उपक्रम बहुत मामूली चीज हो गई है। जनताकी ओरसे उसका उत्तर भी वैसा ही मिलता है। ऐसी स्थितिमें दिवस मनानेकी मेरी हिम्मत नहीं होती। यदि तू किसी ऐसे कार्यक्रमका सुझाव दे सके जो करोड़ों लोगोंका हृदय छू सके तो उसमें मैं अपनी सहमति अवश्य दूंगा। सत्याग्रह-दिवस और जवाहरलालके पकड़े जाने का दिन, दोनों अलग-अलग हैं। इस बारेमें ठीक विचार करके तू रास्ता दिखा। महादेव के साथ और यदि हो सके तो सरदारके साथ, सलाह-मशविरा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१२ सितम्बर, १९४१

भाई घनश्यामदास,

हनुमानप्रसादजी का खत म० के मार्फत परसों मिला।

किस्सा दु:खद है। स्पष्ट अभिप्राय है कि जो गलतीयां हुई है उसका पूर्ण स्वीकार करके हि राघवदासजी[2] अपनी दुर्बलताको दूर [कर] सकते हैं। सिवाय ऐसी शुद्धिके उनके हाथसे हानि ही हो सकती है। वे सज्जन है इसलिये तो बिना स्वीकार ज्यादा हानि होगी। सज्जनताकी एक निशानी तो यह है कि गलतीका पूर्ण स्वीकार सारे जगत्के पास किया जाय। सत्याग्रहीके लिये तो दूसरा चारा हि नहीं

१. व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन

२. बाबा राघवदास, उत्तर प्रदेशके एक प्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ता

है। इसलिये प्रथम कर्तव्य यह है कि कोई अच्छा सत्पुरुष उनसे मिले। तुमारे तरफ से कटीग मिली थी।

बापुके आशीर्वाद

मूल (सी० डब्ल्यू० ८०४७) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

५१७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१२ सितम्बर, १९४१

चि० कृष्णचंद्र,

हमारी त्रूटीयांको बरदाश्त दूसरे करते है ऐसे हि हम भी करें। इसका यह अर्थ कभी न किया जाय कि हम किसीको जान-बूझकर नियमोंका भंग करने दें। दो चीजमें फरक है न?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०४) से

५१८. पत्र : अमृतकौरको

१३ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। शुभ समाचार मालूम हुआ। फिर भी तुम्हें शिमलासे तो निकल ही पड़ना चाहिए। मैं ऐसा ही सोचता हूँ। सुशीला भी कहती है कि गठियाके रोगियोंके लिए शिमला आदि ठंडी जगहें ठीक नहीं हैं। वह बम्बईके पक्षमें भी बहुत अधिक नहीं है।

हमेशाकी तरह इस बार भी तुम्हारी बात ठीक थी। पहले भेजे गये सेब कागजोंमें लिपटे थे। प्रभाने उन्हें अच्छी तरह पैक किया हुआ देखा था। काममें खामख्वाह की दखलन्दाजी करने की आदतवाले किसी व्यक्तिने कागज उतार दिये। अगली बार भेजे गये सेबोंकी संख्या भी लिखना।

बुलको सरकारसे इस आशयका उत्तर मिला है कि अगर वह सीमा प्रान्त और कबायली क्षेत्रमें प्रवेश न करने का वचन दे तो उसे स्वतन्त्र रहने दिया जायेगा। वह लिखने जा रही है कि वह इस तरह का कोई वचन देने को तैयार नहीं है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३८१ से भी

५१९. पत्र : अमृतकौरको

१४ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

सुशीला कल आई और आज ही चली गई। प्रभा अपनी माँके अन्धविश्वासका तकाजा पूरा करने दो-तीन दिनोंके लिए उनके पास गई है। उसके भाईके यहाँ बच्चा हुआ है। उसीके किसी संस्कारमें शामिल होने गई है। २३ को वापस आ जायेगी। अन्नपूर्णा इलाजके लिए सुशीलाके साथ गई है। तपेदिकका शक था, लेकिन डॉ० डेविड कहते हैं कि तपेदिकके कोई लक्षण नहीं हैं। लेकिन उसे हलका बुखार रहता है और वह कमजोर भी हो गई है।

दो शिष्टमण्डल मुझसे मिलने आये हुए हैं। एकमें अल्लाबख्श[1] और सिधवा[2] हैं। दूसरा बर्मासे आया है।

मुंशीकी बेटी सरला कुछ दिनोंके लिए यहाँ आई है। उसने प्रभाकी जगह ले ली है। बहुत अच्छी लड़की है। भारतकी तीन महिला वकीलोंमें से एक है। लेकिन उसकी रुचियाँ बहुत सादी हैं और उसने यहाँ सभीसे दोस्ती कर ली है। कुछ दिन मेरे साथ बिताने के लिए आई है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

तुम्हारा पत्र मिला। श्री हेनकॉक २७ सितम्बरकी शाम ४ बजे[3] मिल सकते हैं। तुम बेहतर हो, यह जानकर खुशी हुई।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७३) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३८२ से भी

१. सिन्धके मुख्य मन्त्री

२. सिन्ध कांग्रेस विधायक दलके नेता आर० के० सिधवा

३. देखिए "पत्र : अमृतकौरको", २५-९-१९४१ भी।

५२०. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

१४ सितम्बर, १९४१

चि० काका,

रेहानाके जाने के बाद तुम्हारी चिट्ठी मिली। भारतीय भाषा संघकी ओरसे कन्नड़में 'नवनीत' प्रकाशित करने में मुझे कोई हर्ज नहीं मालूम होता। उसके सदस्यों से सम्मति प्राप्त कर लेना। क्या तुम 'नवनीत' में कन्नड़के लेखोंका हिन्दी पाठ नही देना चाहोगे?

सम्मेलनमें जो प्रस्ताव रखना जरूरी समझो, उनका मसौदा तैयार कर लो। राजेन्द्र बाबूसे मिलो। मुझसे जो मदद चाहिए सो लो। पुस्तक वापस भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९५१) से

५२१. पत्र : मनु सूबेदारको

सेवाग्राम
१४ सितम्बर, १९४१

भाई सूबेदार,[1]

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे खयालसे तुम फिर फँस गये। कायदे-आजमने एक भी बात निश्चयपूर्वक नहीं कही। उन्हें दो राष्ट्रोंकी बात सिद्ध करनी है और देशका बँटवारा कराना है। यदि कोई दो भाइयोंको अलग करना चाहे तो जैसे उसकी बात नहीं सुनी जाती, वैसा ही इस मामलेमें भी है।

कांग्रेसपर लगाये गये इलजाम झूठे साबित हो चुके हैं, और यदि न हुए हों तो वे पंचके सामने रखे जा सकते हैं।

सरकार और कांग्रेसके बीच रहकर जहाँसे ज्यादा मिल सके, वहाँसे ज्यादा लेकर आगे बढ़ने की नीति जबतक वे बरतते रहेंगे, तबतक समझौता होना असम्भव समझना चाहिए। इस नीतिसे कभी सन्तोष मिल ही नहीं सकता।

१. बम्बईके एक अर्थशास्त्री

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि सिन्ध, ढाका और अहमदाबादके दंगे केवल कांग्रेसको दबाने के लिए थे। फिर भी मैं उनकी उपेक्षा करने को तैयार हूँ। अर्थात् झगड़ेकी जितनी बातें हैं वे सब पंचके सामने रख दी जायें। मेरा खयाल है कि इसके सिवा कुछ नहीं हो सकता।

यह भी याद रखो कि सारे प्रश्नोंका अन्तिम निबटारा लोग अपने-आप कर लेंगे और हम सब बीचमें लटकते ही रह जायेंगे। इसलिए मेरी तो सलाह है कि तुम इस झमेलेसे अपना हाथ खींच लो या फिर कुछ मौलिक सिद्धान्तोंको लेकर बात करो। यदि तुम एक बातपर भी डटे रहे तो इतना ही काफी होगा। जबतक वे आपसमें ही समझौतेका निश्चय न करें, तबतक कोई बात नहीं हो सकती।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५२-५३

५२२. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१४ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने सूबेदारको जो उत्तर[1] भेजा है उसकी नकल भेज रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि वह समझ जायेगा। हमें तो सभी तरहके और हर तरह की योग्यतावाले आदमियोंसे यथासम्भव जितना लिया जा सके उतना काम लेना है न?

फिलहाल तुम किसी तरहकी चिन्ता मत करना। तुम्हारी तबीयत बिलकुल सुधर जानी चाहिए। यदि तुम होमियोपैथीसे अच्छे हो जाओगे तो मेरा उसपर कुछ विश्वास जम जायेगा। मेरा उसपर कभी विश्वास बैठा ही नहीं। मैंने एक मामला उसके जानकारको सौंपा था, परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। तारा[2] का मामला सौंपा था। पर यह तो यों ही लिख दिया है। मैं तो चाहता हूँ कि तुमको होमियोपैथीसे लाभ हो। मैंने इसकी तारीफ तो बहुत सुनी है। दास[3] उसमें विश्वास रखते थे, मोतीलालजी और गुरुदेवका भी विश्वास था। अपने लक्ष्मीदास भी तो उसीमें भरोसा रखते हैं न? परन्तु अन्तमें सब एलोपैथीके द्वारपर आ खड़े होते

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. तारा मशरूवाला
३. चित्तरंजन दास

हैं। यह सब मैंने व्यर्थ ही लिख दिया है, परन्तु जाने देता हूँ। हमें तो कामसे मतलब है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मैरीन ड्राइव
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५१-५२

५२३. पत्र : अमृतकौरको

१५ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी यह राय और भी दृढ़ होती जा रही है कि तुम्हें शिमला छोड़ देना चाहिए और यदि तुम्हें भरोसा हो और शम्मी पूरी तरह सहमत हों तो कहीं और भेजी जानेसे पहले तुम्हें यहाँ आ जाना चाहिए। मैं अपने मनमें यह खुशफहमी पाले हुए हूँ कि सम्भवतः मेरे साथ रहने-भरसे ही तुम स्वस्थ हो जाओगी! मेरी बातपर विचार करो और अगर तुम्हारे मनको यह स्वीकार हो तो इस सुझावपर शम्मीके साथ तटस्थ भावसे चर्चा करके फैसला करो। अगर यहाँ आना तय करती हो तो जल्दी आ जाओ। यहाँ आओ तो अपने साथ किसीको मददके लिए लेती आओ। अपनी तबीयतका हाल और अपना फैसला तारसे सूचित करो।

के० की किताबको खुदपर भार मत बनने दो। ज्यादा समय लगे तो भी चिन्ता मत करना।

मुंशीकी बेटी अभी यहीं है। बहुत ही अच्छी, बड़ी मेहनती और बच्चोंसे प्यार करनेवाली लड़की है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७४) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३८३ से भी

५२४. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको

१५ सितम्बर, १९४१

प्रिय प्रफुल्ल,

सरदार होमियोपैथिक इलाज करवा रहे हैं। पहलेसे कुछ बेहतर महसूस करते हैं। लेकिन उन्हें अपना ध्यान रखना होगा। उनकी आँतोंमें मरोड़ उठती है। राजेन बाबू यहीं हैं। वे पहलेसे ठीक हैं, हालाँकि कमजोरी अब भी है। बुखारसे छुटकारा पा गये हैं।

सुरेशके बारेमें सुनकर दुःख हुआ। आशा है, वह जल्दी ठीक हो जायेगा। उसे अपना ध्यान रखना चाहिए।

सबको मेरी ओरसे प्रेम।

सप्रेम,

बापू
(मो० क० गांधी)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७८३) से

५२५. पत्र : इकबालकृष्ण कपूरको

सेवाग्राम
१५ सितम्बर, १९४१

प्रिय कपूर,

मैं समझता हूँ, तुम्हारा मामला स्पष्ट है। आदेश अपमानजनक है।[1] तुम आदेशकी अवज्ञा संघर्षके सत्याग्रहीकी तरह नहीं, बल्कि एक व्यक्तिकी हैसियतसे करो, जो तथाकथित स्वतन्त्रताकी अपेक्षा अपने आत्मसम्मानको अधिक मूल्यवान समझता है। इसलिए किसी आम निर्देशकी आवश्यकता नहीं है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन नेशनल कांग्रेस, जिल्द २, पृ० २७५

१. दो महीनेकी कैदसे रिहा होनेके बाद इकबालकृष्ण कपूरको इस आशयका निर्देश मिला था कि वे "अपनी गतिविधियाँ कोतवाली पुलिस स्टेशनकी सीमातक ही सीमित रखें, हफ्तेमें एक बार कोतवाली पुलिस स्टेशनमें हाजिरी दें और कांग्रेसकी सत्याग्रह आन्दोलन-सम्बन्धी प्रवृत्तियोंसे अलग रहें।"

५२६. पत्र : शौकत उस्मानीको

१५ सितम्बर, १९४१

प्रिय शौकत उस्मानी,[1]

मुझे खुशी है कि तुम अहिंसाके प्रति आकर्षित हो रहे हो। अहिंसाकी भावना हमें बुरेसे-बुरे व्यक्तिसे भी घृणा करने से रोकती है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२७. पत्र : हरिलाल मा० रंगूनवालाको

१५ सितम्बर, १९४१

भाई हरिलाल,

जेलसे तुम्हारा पत्र आया था। उसका जवाब मैं दे चुका हूँ। अब जेलसे बाहर आने के बादका पत्र मिला। तुम रंगूनके बहिष्कारकी चिन्ता नहीं करते, यह अच्छा है। फिलहाल उसे चलने दो। जब बम्बई आफिस तुम्हें बुलाये तो फिर जेल चले जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४३) से

५२८. पत्र : विष्णुनारायणको

१५ सितम्बर, १९४१

भाई विष्णुनारायण,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें खादी [का उपयोग करने] की मनाही नही की गई है। केवल अपना मत व्यक्त किया है। "ड्रिल क्लाथ" के उपयोगका हुक्म नही दिया गया, उसे काममें लाने की आजादी दी गई है। इसलिए मेरी सलाह है कि तुम "ड्रिल क्लाथ" के भावकी खादी प्राप्त करके खादीकी वर्दियाँ बनवाओ। मजबूत खादी खरीदना। यदि तुम चपरासियोंमें रुचि उत्पन्न कर सको, तो कोई अड़चन नहीं

१. प्रिजनर्स कैम्प, बड़ौदाके सेक्रेटरी

होगी। उनके साथ जबरदस्ती न की जाये। अनिवार्य कर्तव्यके रूपमें उनपर खादी न लादी जाये, बल्कि उनमें खादीके प्रति प्रेम उत्पन्न किया जाये। अगर वे कातेंगे, तो खादी सस्ती भी पड़ेगी। यदि तुम्हारा थोड़ा खर्च भी हो जाये तो उस खर्चको बर्दाश्त करके भी ऐसा करो, ताकि चपरासी लोग खुशीसे खादी पहनने लगें।

जबतक बैंकके लिए तुम्हारी सेवाका मूल्य है, तबतक तुम्हारे लिए परेशानी की कोई सम्भावना नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

'सर्वोदय' के लिए कागज जुटानेकी कोशिश हो रही है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० १९३२७) से

५२९. पत्र : पृथ्वीसिंहको

१५ सितम्बर, १९४१

भाई पृथ्वीसिंह,

तुमारा खत और मुसाफरीका बयान पढ़ गया। अनुभव अच्छे मिले। मुझे खबर है कि अहिंसामें श्रद्धा बहूत पतली है। अगर दृढ़ होती तो आज हम बहूत उंचे होते। मैं नहिं मानता हूं कि भाषणोंसे ज्यादा काम हो सकता है। अमृतकी शक्तिका ख्याल उसके गुणोंके वर्णनसे थोड़े हि आनेवाला है। वह तो उसका पान करनेसे या किसीको पान करते हुए और उसका असर देखनेसे हि आ सकता है। इसका मतलब यह नहिं है कि भाषण होना हि नहिं चाहिये?

अच्छेमें-अच्छे हि विद्यार्थी लेनेका तुमारा निर्णय मुझे अच्छा लगा है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६५०) से। सी० डब्ल्यू० २९६१ से भी; सौजन्य : पृथ्वीसिंह

५३०. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
१६ सितम्बर, १९४१

अपने कलके पत्रके उत्तरमें मैं गुरुवारको तार पानेकी आशा कर रहा हूँ। यह पत्र आनेवाली डाकसे पहले लिख रहा हूँ।

साथके कागजके[1] बारेमें क्या तुम कुछ बता सकती हो? जाजूजी चरखा सप्ताहके सिलसिलेमें राजकोट गये हैं।

कल रात संयुक्त प्रान्तका एक भूतपूर्व कैदी (सत्याग्रही) मुझसे मिलने आया। वह तपेदिकसे पीड़ित है। बेचारे चिमनलालसे उसे यहाँसे हटाते नहीं बना। उसने बरामदेमें ही उसके लिए बिस्तरका इन्तजाम करवा दिया। उसकी दशा बड़ी करुण है। उसका इलाज करना कठिन है। इस तरहके अप्रत्याशित आगन्तुकोंसे संस्थाके कामोंमें कठिनाई पैदा हो जाती है। सौभाग्यसे ऐसी नाजुक घड़ियोंमें कार्यकर्ता स्थितिके अनुरूप कार्य करते हैं और इस तरह मेरे लिए ऐसी कठिनाइयोंका सामना करना आसान हो जाता है।

आज मुझे अल्ला बख्श और सिधवासे मिलना है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

देवदास अपना मुकदमा[2] बड़ी मर्दानगीसे लड़ रहा है। तुम्हारा पत्र आ गया है। बेशक, शम्मी जो-कुछ कहते हैं उसे तो मानना ही है।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७६) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३५७ से भी

१. यह उपलब्ध नहीं है।
२. देखिए पृ० २७५ और २८८।

५३१. पत्र : शान्तिकुमार न० मोरारजीको

१६ सितम्बर, १९४१

चि० शान्तिकुमार,

मेरी निश्चित राय है कि ब्रह्मदेश [बर्मा] में रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंको दो सरकारोंके बीच हुए इस समझौतेका सख्त विरोध करना चाहिए। इसमें डरने की कोई जरूरत नहीं है। हमारा ब्रह्मदेशके लोगोंसे कोई झगड़ा नहीं है। उन लोगोंकी कृपाके भरोसे ही हम उनके यहाँ रह सकते हैं। लेकिन उनकी इच्छाका पता कौन लगाये? और कैसे लगाया जाये, इसका भी निर्णय कौन करे?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७३६) से। सौजन्य : शान्तिकुमार न० मोरारजी

५३२. पत्र : कन्हैयालाल वैद्यको

१६ सितम्बर, १९४१

भाई कन्हैयालाल,

तुम्हारा खत मिला। बात दुःखद है। मेरे तरफसे पैसेके बारेमें कुछ आशा न रखी जाये।[१] मैं मेरी मर्यादामें रहकर और मेरे ढंगसे प्रयत्न करता हूँ। आज तो मेरा प्रयत्न सब परदेमें ही हो सकता है। सत्याग्रहका अनुकरण जो करते हैं उनको दुःखको बरदाश्त करना ही है। उसीमें दुःखका निवारण भी है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गिरफ्तार सत्याग्रहियोंकी ओरसे मुकदमा लड़नेके लिए कन्हैयालाल वैद्यने गांधीजी से पैसोंकी माँग की थी।

५३३. पत्र : अमृतकौरको

१७ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

यह कागज तो बड़ा खराब है। इसके दोनों ओर नहीं लिखा जा सकता।

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा मामूली दवाएँ लेना स्वीकार करना तुम्हारे विनम्र स्वभावके अनुरूप ही है। वहाँ भी भेंट-मुलाकातका काम बन्द रखना।

आज तुम्हारा सेब लिया। यह किस्म पिछले सेबों-जैसी अच्छी नहीं है। बा ने मुझे बताया कि एक सेब तो खराब और पिलपिला हो गया था। इसे खरीदने-वालेकी शिकायत मत समझना। केवल तुम्हारी जानकारीके लिए लिख दिया।

हमारा कमरा नये सिरेसे बन रहा है। बरामदेवाले छज्जेको उस द्वार पर लगाया जा रहा है जिसमें से बरसातका पानी आ जाता है। जिस बरामदेमें हम सोते थे उसे बढ़ाया जा रहा है। लगता है, घर-निर्माणका सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा। फिर भी, भीड़ बढ़ती ही जा रही है। इस भीड़को कैसे रोका जाये, यह एक गम्भीर प्रश्न बना हुआ है।

गाँवमें खूब चरखा-कार्य होने जा रहा है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७७) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३८६ से भी

५३४. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

१७ सितम्बर, १९४१

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। कमलककड़ी और इलायची तो प्रसिद्ध पौष्टिक आहार है। यदि इससे तेरी समस्या हल हो जाती हो तो अच्छा है। खान-पानमें सावधानी मुख्य चीज है। यहाँ बीमारी तो खास नहीं है। ठीक चल रहा है। भीड़ खूब है। टाइफाइड होने का तो डर ही यहाँसे जाता रहा है, क्योंकि ठीक देख-भालसे सब केस अच्छे हो गये हैं। तुझे वहाँ अच्छी शिक्षा मिल रही है। सबके साथ दूधमें शक्करकी तरह घुल-मिल जाना। प्रभावती चली गई। २३ को वापस आयेगी।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३७) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

५३५. पत्र : देवदास गांधीको

१७ सितम्बर, १९४१

चि० देवदास,

तेरा तार मिला। तेरा केस ठीक चल रहा है। मैं सब पढ़ता हूँ। शिवजी भी मुझे खबर देता रहता है। जज भी विचित्र है। लेकिन जो सबूत तुझे मिले हैं, अगर उन्हें तू पेश कर सका तो सब ठीक ही होगा। लेकिन हमारे आदमियोंमें इतनी कमजोरी आ गई है कि उन्हें मुकरने में देर नहीं लगती। लेकिन तेरा केस बिलकुल सच्चा है, इसलिए मैं माने लेता हूँ कि ईश्वर अच्छा ही करेगा। बा चिन्ता करती है। मैंने उसे समझाया तो है कि जेल जाना तो हम लोगोंका पेशा हो गया है, इसलिए जेलसे तो डरना ही नहीं चाहिए। एक दृष्टिसे तो मुझे लगता है कि तुझे वहाँ कुछ आराम मिल जायेगा। लेकिन फिलहाल मुझे लगता नहीं कि तुझे जेल होगी। हाँ, यदि तेरे साथी ही मिट्टीके माधो निकल जायें, तो बात दूसरी है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

यह लिखा चुकने के बाद तेरा तार मिला। तू डटकर जूझना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१३९) से

५३६. पत्र : लक्ष्मी गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा
१७ सितम्बर, १९४१

चि० लक्ष्मी,

तू तो घमराहटमें नहिं पड़ी होगी। जो होनेका सो होगा ही। तुफानीको पति बनाया तो तुफानमें से तू कैसे नीकल सकती है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २१३९) से

५३७. पत्र : सुरेन्द्रनाथ सरखेलको

[१७ सितम्बर, १९४१ के पश्चात्][1]

भाई सुरेन्द्र,

तुम्हारा खत मिला। मेरी एक ही सलाह। जो सत्य हो वही कोरटको कहो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३८. जिसे हर कोई कर सकता है

बालकों और स्त्रियोंके लिए मैंने एक पैगाम भेजा था[2], जिसका मतलब इस प्रकार था : "बारह साल तकके बालक और सारी स्त्रियाँ अपने फालतू समयके कुछ घंटे रोजाना कताई और खादी प्रक्रियाके लिए दें तो काफी खादी तैयार हो सकती है।" इस कथनको सिद्ध करने के लिए कृष्णदास गांधीसे मैंने कुछ हिसाब करवाया है, जिसे सार रूपमें नीचे देता हूँ।

१. सुरेन्द्रनाथ सरखेलका पत्र जेल-अधिकारियोंने १७ सितम्बर, १९४१ को गांधीजी को भेजा था। यह पत्र गांधीजी ने उसीके जवाबमें लिखा था।

२. देखिए पृ० ३३५।

सन् १९३१ में जो मर्दुमशुमारी हुई थी उसमें हिन्दुस्तानकी आबादी करीब ३५ करोड़की पाई गई थी। ८ से १२ सालतक की आयुके बालक करीब ४।। करोड़ थे। तथा १२ सालसे अधिक आयुकी लड़कियाँ और स्त्रियाँ मिलकर करीब ११ करोड़ थी। यदि बालक-वर्ग रोजाना ४ घंटे ओटने, धुनने व कातने में दे तथा स्त्री-वर्ग ओटने, धुनने, कातने व बुनने में ४ घंटे दे, तो काफी खादी तैयार हो सकती है। हिसाब करके ऐसा बतलाया जा सकता है कि बालक रोजाना ९० लाख वर्गगज खादीके लायक १० से १२ अंकका सूत तैयार कर सकते है, जब कि औरतें यह ९० लाख वर्गगज कपड़ा बुनने के अतिरिक्त प्रतिदिन २ करोड़ वर्गगजकी २० अंककी खादी तैयार कर सकती हैं। कपास ओटने से लेकर २० अंकका एक वर्गगज कपड़ा तैयार करने में एक व्यक्तिका १८ घंटेका काम माना गया है। आधा घंटा ओटने में, दो घंटे धुनने में, बारह घंटे कताईमें, एक घंटा सूत खोलने में, एक घंटा ताना करने, मांडी लगाने और ताना जोड़ने में एवं डेढ़ घंटा प्रत्यक्ष बुनने में लगेगा। इस प्रकार यह १८ घंटेका कुल हिसाब होता है। यह हिसाब सामान्य मनुष्यकी सामान्य शक्तिका ही लगाया गया है। कुशलता हासिल की जाये तो यही काम केवल पन्द्रह घंटेमें हो सकता है। मामूली हिसाबसे इतने बालक और कत्तिनें मिलकर पूरे साल-भरमें कुशलताके हिसाबसे केवल ३०० दिनोंमें ४ घंटे काम करके देशके हरएक व्यक्तिके लिए करीब ३० वर्गगज खादी पैदा कर सकती हैं।

इस हिसाबको प्रकाशित करने का मेरा हेतु तो यह है कि कोई भी संस्था प्रयोग करके इसे सिद्ध कर सकती है। कोई भी कुटुम्ब अपने घरमें ही चरखा और करघा चलाकर अल्प प्रयाससे ही अपना कपड़ा तैयार कर सकता है। मान लीजिए कि एक संस्थामें ३५ आदमी हैं। उसमें ८ से १२ सालके ४ बच्चे है तथा १३ सालसे बड़ी ११ स्त्रियाँ हैं। पुरुष-वर्ग सारा-का-सारा अन्य प्रवृत्तियोंमें रुका है। ११ में से १० स्त्रियाँ रोजाना ४ घंटे और बालक रोजाना ३ से ४ घंटे ओटना, धुनना, कातना व बुनना आदि सब कामोंको सुविधानुसार कर लेते हैं। उन १० में से एक स्त्री ४ बालकोंकी सहायता और उनका सूत बुनने का काम कर लेती है। शेष ९ स्त्रियाँ ओटाईसे बुनाईतक का काम करती हैं। प्रारम्भमें दिये गये हिसाबके अनुसार, ४ बालक और एक स्त्री मिलकर रोजाना १० से १२ अंकका कमसे-कम ३/४ वर्गगज और ९ स्त्रियाँ रोजाना २० अंकका २ वर्गगज कपड़ा आसानीसे पैदा कर लेंगी। सालमें ३०० दिनके हिसाबसे २२५ वर्गगज मोटा व ६०० वर्गगज महीन कपड़ा पैदा कर लेंगी। इस प्रकार ८२५ वर्गगज कपड़ा ३५ व्यक्तियोंके लिए तैयार होगा। अर्थात् प्रति व्यक्तिको २३।। गज कपड़ा मिलेगा। कुशलता हासिल करने पर प्रति व्यक्ति पीछे उन्हें २७।। वर्गगज कपड़ा मिल सकेगा।

यह याद रहे कि आजके संशोधित नये चरखे व धुनकियोंका उपयोग किया जाये तो इससे भी कम समयमें इतना कपड़ा पैदा हो सकता है। अगर घर-घरमें चरखा एवं करघा चले तो अल्प प्रयासमें हम अपना कपड़ा तैयार कर सकते हैं। ऐसा करने से कितना संतोष पैदा हो सकता है, जीवनपर उसका कितना प्रभाव

पड़ सकता है और लोगोंमें कितना उत्साह फैल सकता है, इसकी तो आज हम कल्पना-मात्र ही कर सकते हैं। लेकिन उसका अनुभव प्रत्येक मनुष्य अपने लिए तुरन्त कर सकता है।

सेवाग्राम, चरखा द्वादशी, १८ सितम्बर, १९४१

खादी-जगत्, सितम्बर, १९४१

५३९. सिपाहियोंके लिए कम्बल

यह अच्छी बात है कि अहिंसाके पुजारी बहुत सूक्ष्म प्रश्न खड़े करते हैं। यह आदत तारीफके लायक है। इसीसे आदमी आगे बढ़ता है। लेकिन एक शर्त है। ऐसा न होना चाहिए कि दूधमें पड़े कणके कारण दूध तो फेंक दें और हर घड़ी जो जहर पीते रहें उसकी परवाह तक न करें। ऐसे प्रश्नोंसे वे ही फायदा उठा सकते हैं जो बड़ी बातोंमें सावधान रहते हैं, और भलीभाँति सिद्धान्तको अमलमें लाते हैं।

सूक्ष्म प्रश्न यह है कि जिस खादी भंडारमें कम्बल बिकते है वहाँसे फौजके सिपाहियोंके लिए कम्बल खरीदे गये। मुझसे भंडारवालो ने पूछा, "क्या इस तरह कम्बल बेच सकते है?" मैंने उत्तर दिया, "बेच सकते हैं।" अगर ऐसा कर सकते हैं तो हम अहिंसक लोग हिंसक युद्धमें सहायता नही देते? एक तरह सिर्फ सिद्धान्त में देखें तो ऐसा उत्तर देना पड़ेगा कि "सहायता देते हैं।" और ऐसा उत्तर दें तो हम हिन्दुस्तानमें या जिस मुल्कमें युद्ध चलता हो वहाँ नही रह सकते। क्योंकि हम जो खाते हैं उससे भी लड़ाईमें मदद देते है। रेलके सफरसे भी देते हैं। डाक भेजते है तो भी देते है। शायद ही कोई ऐसा काम हो जिससे हम ऐसी मदद देने से बच सकें। सरकारी सिक्केके इस्तेमालमें भी मदद होती है। बात यह है कि अहिंसा-जैसे बुलन्द सिद्धान्तका सम्पूर्ण पालन कोई देहधारी कर ही नहीं सकता। युक्लिडकी रेखा लीजिए। उसकी हस्ती कल्पनामें ही है। सूक्ष्म रेखा भी कागजपर खीचें तो भी उसमें कुछ-न-कुछ चौड़ाई होगी ही। इसलिए व्यवहारमें सूक्ष्म रेखा खीचकर हम अपना काम चलाते है। सब सीधी दीवारें युक्लिडके सिद्धान्तके मुताबिक टेढ़ी हैं। लेकिन हजारों वर्ष खड़ी रहती हैं।

ठीक यही बात अहिंसाके सिद्धान्तकी है। जहाँतक हो सके हम उसे अमलमें लावें।

कम्बल बेचने की मनाही करना मेरे लिए आसान था। लाखोंकी बिक्रीमें कुछ हजारकी बिक्रीकी क्या कीमत हो सकती है? लेकिन मेरी मनाही मेरे लिए शर्म की बात हो जाती। क्योंकि अपनी सच्ची रायको छिपाकर ही मै मनाही कर सकता था। मै कहाँ मनाही की हद बाँधूं? मै चावल-दालका व्यापारी होकर सिपाहियोंको चावल-दाल न बेचूँ? गंधी होकर, कुनैन या अन्य दवाइयाँ न बेचूँ? न बेचूँ, तो क्यों नही? मेरी अहिंसा मुझे ऐसे व्यापारके लिए बाध्य करती है? मै

ग्राहककी जात-पाँत खोजकर मर्यादा बाँधूं? उत्तर मिलता है कि मेरा व्यापार अगर समाजका पोषक है, हिंसक नहीं है, तो मुझे उसे करने में ग्राहकोंकी जात-पाँतकी खोज करने का अधिकार नहीं है। अर्थात् सिपाहीको भी अपने व्यापारकी वस्तु बेचना मेरा धर्म है।

सेवाग्राम, १८ सितम्बर, १९४१

खादी-जगत्, सितम्बर, १९४१

५४०. अप्रमाणित खादी

जो मनुष्य अप्रमाणित खादी लेता है वह खादीका क्षेत्र नहीं जानता। खादी की कल्पना केवल दरिद्रनारायणका दारिद्र्य टालने के लिए है। जो वस्तु सचमुच इस घोर दारिद्र्यको टाल सकती है, वही हिन्दुस्तानकी माली हालत दुरुस्त कर सकती है। इसीलिए अन्तमें हिन्दुस्तानको आजादी दिला सकती है। ऐसी विचारधारामें से खादीकी महिमा बढ़ी है। अगर करोड़ोंका दारिद्र्य खादीसे मिटना है तो खादीपर पूरा अंकुश किसी संस्था या राज्य-सत्ताका होना चाहिए। क्योंकि करोड़ों कत्तिनें जो पेटका खड्डा भरना चाहती हैं, वे बेचारी तो एक पैसेके लिए भी आठ घंटे कातेंगी। ऐसे सूतसे पैदा की हुई खादी भी हाथसे तो बनी कही जा सकती है। लेकिन ऐसी खादी पहनकर हम दरिद्रनारायणकी तो सेवा नहीं करते। इसलिए चरखा संघने कत्तिनोंकी मजदूरी एकदम बढ़ाई है। इसी तरह दूसरे कारीगरोंकी भी माली हालत दुरुस्त करने की कोशिश हो रही है।

अब जो अप्रमाणित खादी बेचते हैं वे लोग खादीके कारीगरोंकी चोरी करते हैं। ऐसी खादी लेना चोरीका माल लेना हुआ। यह तो अत्याचार है। इसलिए चरखा संघ तो ऐसे व्यापारियोंसे भी विनती करता है कि वे लोग खादीके व्यापारको छोड़कर कोई दूसरा व्यापार करें। और जनतासे यह प्रार्थना है कि वह चरखा संघके भंडार या चरखा संघने जिनको प्रमाणपत्र दिया है वहींसे खादी लें।

मुझे आशा है कि इतनी सादी बात सब खादी पहननेवाले मान लेंगे। सस्ती हो या महँगी, जो खादी चरखा संघकी मार्फत मिल सके वही खादी मानी जाये।

सेवाग्राम, १८ सितम्बर, १९४१

खादी-जगत्, सितम्बर, १९४१

५४१. पत्र : अमृतकौरको

१८ सितम्बर, १९४१

चि० अमृत,

यह सिर्फ यह बताने को लिख रहा हूँ कि तुम मेरे विचारोंमें हो। मुझे जो-कुछ कहना था, कह चुका हूँ। अब तुम कैसे ठीक हो सकती हो, यह तो तुम्ही जानो। पुस्तक महमूद खाँ को भेज रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७८) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३८७ से भी

५४२. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुंशीको

१८ सितम्बर, १९४१

भाई मुंशी,

तुम्हारा और लीलावती, दोनोंके पत्र मिले थे। आज तार मिला। चि० सरलाने परसों पत्र लिखा था। अबतक तो वह तुम्हें मिल गया होगा।

फिलहाल तो तुम्हें त्याग-पत्र देने की जरूरत नहीं है। मैंने राजेन्द्र बाबू तथा कृपलानी, दोनोंके साथ चर्चा की। दोनोंकी राय है कि अभी तो बिलकुल जरूरत नहीं है। मैं किसीको जरा भी अँगुली उठाने का मौका नही दूंगा। मुझे तो इसका बिलकुल खयाल ही नही आया था। तुमने मुझे लिखकर अच्छा ही किया।

सरलाके साथ जब-तब बातचीत करता रहा हूँ। बहुत समय तो मैं नही निकाल पाता, लेकिन सवेरे घूमते हुए अकसर आगे बढ़कर हम लोग बातें करते हैं। वह खूब हिल-मिल गई है। प्रार्थनामें भी रुचि लेती है। मेरी मदद भी करती है। लेकिन यह सब तो जब वह मिलेगी, तब तुम्हें सुनायेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६९) से। सौजन्य : कन्हैयालाल मा० मुंशी

५४३. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
१८ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। अब तो होमियोपैथीका इलाज पूरा कर लेना ही ठीक है। यदि उसमें थोड़ा समय लगे तो भले लगे। जब उससे फायदा होता नजर आ हो रहा है तो तुम्हें तबतक धीरज रखना ही चाहिए।

. . .[1] से मिले, यह ठीक हुआ। उनका कुछ ठिकाना नहीं दीखता। वालजी का भी कुछ पता नहीं चलता। बहुत भरमा गये हैं। मैं मानता हूँ कि वे भी ठिकाने आ ही जायेंगे।

लीलावतीका मामला मैं समझ गया। जब तुमने उसका मामला हाथमें ले लिया है तो मैं क्यों चिन्ता करूँ? तुम्हें मैं उसकी चिन्तामें डालना नहीं चाहता था, हालाँकि वह मेहनती और चंचल है। पास हो जाये तो अच्छा है। वह कुछ थक गई है। आशा है, भानुमती[2] ठीक होगी। क्या लड़की[3] चली ही जायेगी? क्या भूलाभाई मुक्त हो गये? वे बहुत दुर्बल हो गये लगते हैं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५३-५४

५४४. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको

१८ सितम्बर, १९४१

चि० अन्नपूर्णा,

तेरा पत्र मिला। तू वहाँ अच्छी तन्दुरुस्त हो जा। यह तो मैं जानता ही था कि तू सबसे हिल-मिल जायेगी। तू ऐसी तो है ही नहीं कि किसीपर भार बनकर रहे। मैं यह जानता हूँ कि तू वहाँ रहते हुए सेवा तो करेगी ही। वहाँ की आबोहवा तुझे जरूर माफिक आयेगी। वेडछी पत्र लिखती रहना। और मुझे तो नियमपूर्वक जरूर लिखना। कुछ पढ़ती रहना। हिन्दी सीखना। उर्दू भी सीखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४२८) से

१. साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।
२ और ३. डाह्याभाई व० पटेलकी दूसरी पत्नी और पुत्री

५४५. भाषण: गांधी जयन्ती समारोहमें

सेवाग्राम
[१८][1] सितम्बर, १९४१

खादीका उत्पादन करके सेवाग्राम कपड़ोंके मामलेमें स्वावलम्बी बन जाये और ग्रामवासी अपनी जरूरतकी चीजोंका उत्पादन स्वयं करें, यही मेरी कामना है।

शिक्षा और सेवा-कार्य साथ-साथ चलना चाहिए। मुझे प्रसन्नता है कि खादी विद्यालयमें ये दोनों कार्य हो रहे हैं। यह चीज विश्वविद्यालयोंमें दिये जानेवाले प्रशिक्षणसे भिन्न है।

गांधीजी ने ग्रामवासियोंसे पूर्ण स्वच्छता और शुचिता लाने की ओर अधिकाधिक ध्यान देने का आग्रह किया। उन्होंने यह याद दिलाते हुए कि खादी गरीबोंकी उद्धारक है, लोगोंसे विशेषतया खादीकी दिशामें और अधिक रचनात्मक कार्य करने की अपील की।[3]

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २२-९-१९४१

५४६. पत्र: प्राणकृष्ण पढ़ियारीको

[१९ सितम्बर, १९४१ के पूर्व][3]

तुमने कोई उत्साह भंग करनेवाली जानकारी नहीं दी है।[4] जन्म लेनेवाले सभी जीवित नहीं रहते। मुझे इसी बातकी प्रसन्नता है कि कमसे-कम कुछ लोग अपने धर्मपर आरूढ़ रहेंगे। मेरे लिए यही उत्साहका पर्याप्त आधार है। दगा करनेवाले लोग अगर मन्त्रिमण्डल बना लें तो उससे हमें कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। कमजोर लोग हमसे अलग हो गये, इससे हमारी शक्ति बढ़ेगी ही।

दुबेको[5] त्यागपत्र[6] देने की जरूरत नहीं है, क्योंकि उसने सविनय अवज्ञा न करने के बहुत उचित कारण बताये हैं।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २०-९-१९४१

१. साधन-सूत्रमें "१९ सितम्बर" लिखा है, जो स्पष्ट ही भूल है, क्योंकि विक्रम संवत्के अनुसार गांधीजी का जन्म-दिन १८ सितम्बरको ही मनाया गया था।

२. इस अवसरपर आयोजित सामूहिक कताई यज्ञमें गांधीजी ने भी भाग लिया।

३. यह रिपोर्ट दिनांक "कटक, १९ सितम्बर, १९४१" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

४. उत्कल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष प्राणकृष्ण पढ़ियारीने गांधीजी को उड़ीसामें एक संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनाने के लिए चल रही सरगर्मीकी सूचना भेजी थी।

५. उड़ीसाके एक भूतपूर्व मन्त्री बोधराम दुबे

६. प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और अ० भा० कां० कमेटीसे

५४७. पत्र : अमृतकौरको

१९ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम तो नियमित उतार-चढ़ावके दौरसे गुजर रही हो। हमें चलने को बराबर समतल धरातल ही मिले, यह जरूरी नहीं है। किसी-न-किसी दिन तुम पूरी तरह मुक्त हो जाओगी।

इस बारके सेब घटिया किस्मके हैं। देखने में बहुत उम्दा लगते हैं। लेकिन उनके कुछ हिस्से खराब हो चुके हैं। इसके लिए किसीको डाँटना मत। अगली बार किसी और किस्मके सेब भेजना। और महीनेमें एक ही बार भेजा करो। जल्दी ही संतरे मिलने लगेंगे; फिर सेबकी जरूरत नहीं होगी।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

सिन्धके प्रधान मन्त्री अभी यहीं हैं। प्रेमा तीन दिनके अन्दर फिर जेल जायेगी।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६७८) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६४८७ से भी

५४८. पत्र नरहरि द्वा० परीखको

१९ सितम्बर, १९४१

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे तो वह बिलकुल ठीक लगता है। भाई भगवानजी से कहना, उनका पत्र भी मिल गया है। उन्हें वहाँसे मुक्त होकर यहाँ आ जाना चाहिए। उन्हें किसी काममें लगाने के बारेमें मैं देख लूँगा। यदि वे रहना चाहेंगे तो यहाँ उनकी जरूरत है। यह पत्र भाई भगवानजीको पढ़वा देना और उन्हें रवाना करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२५) से

५४९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
१९ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

खानबहादुर (अल्ला बख्श) के साथ मेरी जी-भरकर बातें हुई हैं। अब वे कराची जा रहे हैं। वहाँसे मौलानाके पास जायेंगे। मेरा तो दृढ़ मत है कि कांग्रेसको असेम्बलीसे निकल जाना चाहिए। खानबहादुरको भी, यदि वे कांग्रेसके हों तो, ऐसा ही करना चाहिए। सिन्धमें कांग्रेस लड़ाईमें मदद दे और दूसरी जगह न दे, इसका प्रभाव बहुत बुरा होगा — और हो भी रहा है। इस स्थितिको बनाये रखने से न तो देशका कोई लाभ है, न सिन्धका और न हिन्दुओं या मुसलमानोंका। गलत कदमसे किसे लाभ हो सकता है? यदि लड़ाई न हो, तो भी मेरा मत तो यही है कि कांग्रेस सिन्धकी असेम्बलीसे बाहर निकल आये। परन्तु यह बात इस समय गौण है। तुम चाहोगे तो इस बातपर विस्तारसे चर्चा कर लेंगे। अभी तो मैंने अपने मनकी बात तुम्हें बता दी है, ताकि तुम खानबहादुरको अच्छी तरह समझ सको। खानबहादुरका कहना है कि मेरी बात उनके गले उतर गई है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५४

५५०. पत्र : अमृतकौरको

२० सितम्बर, १९४१

चि० अमृत,

आज तो इतना ही लिख सकता हूँ। राजेन्द्र बाबूके यहाँ आनेके बाद आज ही उन्हें कुछ समय दे पाया हूँ। यहाँके बीमार लोग ठीक हो रहे हैं। आश्रम अब भी भरा हुआ है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७९) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३८८ से भी

५५१. पत्र: पृथ्वीसिंहको

२० सितम्बर, १९४१

भाई पृथ्वीसिंह,

तुम्हारा खत अच्छा है, प्रश्न भी अच्छा है। खादीके अभावमें किसीका दोष मैं नहि मानता हूं। सब अपनी शक्तिके अनुकूल कामं करते है। खादीकी समस्या कठिन है। जो लोग खादीमय नहि थे वे भी कुछ-न-कुछ तो खादी लेते हि है। सबसे ज्यादा खादीकी खपत मुंबईमें है। खादी धर्म है न? धर्म-मात्र कठिन वस्तु है। इतना कहकर मैं इतना कहूं कि मैं जो उसका प्रणेता हूं उसकी तपश्चर्या संपूर्ण नहि है। उसका मुझे दुःख नहि है। मैंने यथाशक्ति किया है। लेकिन अखंड चर्खा की बात जो तुमने लिखी वह कहां छोटी वात है? ऐसे साधक भी पड़े है ना? कोई रोज तो खादी सर्वव्यापक होगी हि।

अब रूसकी बात। हम कुछ नहि कर सकते हैं। तीनोंमें मैं बहूत फरक नहि पाता हूं। यह ठीक है कि रूसमें लोगोंके लिये काफी काम हूआ है। यह संहार हो रहा है उससे मेरे रूंवाटे खड़े नहि होते हैं। भागवतमें यादवास्थलीकी बात लिखी है वह भले काल्पनिक हो लेकिन हकिकतमें सही है। जब-जब जगत्‌में हिंसा बढ़ जाती है तब-तब यादवास्थलीका होना हि है। इसीमें से अहिंसाका जन्म होगा, अगर कोई सच्चे अहिंसक होंगे तो। मेरा विश्वास है कि हम हैं। अहिंसाका जन्म कैसे होगा, सो तो मैं नहीं कह सकता। यह शक्ति हि अवर्णनीय है। उसके परिणामसे हि उसका परिचय हमें मिलता है। उसका नियंता ईश्वर हि है। मेरी शांति और मेरी स्थिरता इस विश्वासपर निर्भर है। देखो रूसने क्या किया? एक समय जर्मनीका सहारा लिया, अब इंग्लांडका। अगर रूस पडा तो क्या करेगा, उस बारेमें कौन कुछ कह सकता है? अहिंसाकी दृष्टिसे तो हम आज इस संहारके साक्षी हि रह सकते हैं। हां, मौका मिलने पर बलीदान करने की हमारी तैयारी होनी चाहिये।

अहिंसक व्यायामपर किशोरलालभाई कुछ लिखेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६५१) से। सी० डब्ल्यू० २९६२ से भी; सौजन्य: पृथ्वीसिंह

५५२. पत्र : अमृतकौरको

२१ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

हिन्दी में लिखा तुम्हारा शानदार पत्र मिला। शानदार कहने का कारण तुम्हारी अविकल हिन्दी है।

साथमें दो पत्र भेज रहा हूँ।

जमनालाल कल आये। बहुत क्षीण हो गये हैं। नैनीतालसे आते समय भी उन्हें ज्वर था।

हाँ, तुमने जो-कुछ बताया है वह बुरा नहीं है। लेकिन जबतक तुम वहाँ से आने लायक नही हो जाती, मैं सन्तुष्ट होनेवाला नही हूँ। हर आदमी पूछता है कि तुम कब लौट रही हो और तुम्हे क्या हुआ है। जिस इलाजसे तुम्हें इतना फायदा हो रहा है, उसे जारी रखना ठीक ही है।

कहने की जरूरत नही कि तुम कही और नही जाओगी।

मैं तुम्हें यह बताना भूल गया कि तुम्हारी कलम मैंने मीराको दे दी है। वह कोई ऐसी कलम चाहती थी जो कभी रुके नही। उसका काम बड़ा नाजुक है। उसका कमरा तो मन्दिर बन गया है। चारों वेद उसकी मेजकी शोभा बढ़ाते हैं। जिस दीवारसे लगाकर मेज रखी है उसपर दो कमलके[1] चित्रों पर 'ओम्' अंकित है। कमल भी उसीने चित्रित किये है। अल्ला बख्शसे मैंने कह दिया है कि अगर उन्हें कांग्रेसके समर्थनके सहारे रहना है तो मन्त्रिमण्डल छोड़ देना चाहिए। लेकिन वैसा उन्हें तभी करना चाहिए जब वे मौलानाको स्थितिकी वास्तविकताकी प्रतीति करा सकें। उन्होंने कहा कि वे मेरा दृष्टिकोण समझ गये हैं। देखें, क्या होता है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८०) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३८९ से भी

१. साधन-सूत्रमें यह शब्द देवनागरी लिपिमें ही दिया गया है।

५५३. पत्र : विजया म० पंचोलीको

२१ सितम्बर, १९४१

चि० विजया,

तू बहुत लोभी है। दो लकीरें तो लिखती है और जल्दी जवाब माँगती है। यह जल्दी हुआ न? अभी-अभी तेरा कार्ड मिला। विवरणवाला तेरा जवाब मिला था। उसका जवाब भी दिया था, ऐसा मुझे याद है। अब तू जल्दी आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१४१) से। सी० डब्ल्यू० ४६३३ से भी; सौजन्य: विजया म० पंचोली

५५४. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको

२१ सितम्बर, १९४१

चि० अन्नपूर्णा,

तेरी पुर्जियाँ मिलीं। तू वेडछी कमसे-कम एक कार्ड तो बराबर लिखती रहना। तुझे बिलकुल स्वस्थ होकर आना है। भूख वगैरह ठीक लगती है, इसलिए तू झट-पट अच्छी हो जायेगी। यहाँ एक चरखा २४ घण्टे चलता है और २ अक्तूबरतक चलेगा। जमनालालजी आज आ गये हैं। थोड़े दुबले हो गये लगते हैं। फूलचन्दभाई की विधवा शारदाबहन और शिवानन्द आ गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ४९२९) से

५५५. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

२१ सितम्बर, १९४१

भाई घनश्यामदास,

तुम्हारा खत मिला। जबतक प्रकृति बिलकुल अच्छी न हो जाय वहांसे नहिं हटना।

मेरे खतका अर्थ अपने पर ले लिया सो तो अच्छा हि है। मैं तो मेरे और दूसरोंके अनुभवसे जानता हूं कि गलतीका स्वीकारसे हमको बहूत लाभ होता है। उसमें शुद्ध व्यवहार है। जैसे चोपड़े[1] रखने में गलती होती है तो उसे सुधारकर हि आगे बढ़ते हैं, ठीक ऐसे ही नैतिक चोपड़ेमें है।

बापुके आशीर्वाद

मूल (सी० डब्ल्यू० ८०४८) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

५५६. पत्र : सत्यवतीको

सेवाग्राम
२१ सितम्बर, १९४१

चि० सत्यवती,

तू कहती है लेकिन सचमुच आना नही चाहती।

रूस और पोलांडके बीचमें कितना फरक और किस परिस्थितिमें रूसके बारेमें लिखा जायं? रूस कोई छोटी ताकत नही है। रूसके कामकी किम्मत मेरे पास नहीं है, ऐसा नहीं। लेकिन अब जो चल रहा है उसे मै नही समझता हूं और जो मैं न समजू उसमें क्या कहूं? अगर हम अपने हेतुमें सफल होंगे तो रूसको और सबको मदद दे सकेंगे। वह समयके लिये हम सब महेनत करें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. हिसाबकी बही

५५७. पत्र : अमृतकौरको

२२ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। जहाँतक मुझे याद है, मैंने एक दिन भी नागा नही किया है। पत्र मिलने में गड़बड़ क्यों होती है, यह मैं नहीं बता सकता। तुम्हें विश्वास करना चाहिए कि मैंने लिखा है। और जब तुम्हें एक दिनमें दो पत्र मिलते हैं, तो तुम्हारे विश्वासकी पुष्टि हो जाती है।

जमनालालजी तुम्हारे आतिथ्य और स्नेहका गुण-गान करते अघाते नहीं। तुम्हारे घरके पाँच-छह जनोंकी, जिनमें तोफा[1] भी एक है, सेवामें लगे तीस नौकरोंका वर्णन वे खूब मजा लेकर करते हैं।

महादेव दुर्गा और बाबलोके साथ यहाँ २७ को आयेगा।

१ अक्तूबरको उसे अलवर पहुँचना है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

मैंने न तो अजन्ता देखी है और न एलोरा। सर अकबरसे[2] कहना उन्होंने मुझे कभी बुलाया ही नहीं। और अब मेरे वहाँ जाने से क्या लाभ होगा?

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८१) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३९० से भी

१. अमृतकौरका कुत्ता

२. सर अकबर हैदरी, हैदराबाद (दक्षिण) की कार्यकारिणी परिषद्के अध्यक्ष, १९३७-४१; बादमें वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्के (सूचना व प्रसारण) सदस्य

५५८. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

२२ सितम्बर, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हें बुखारसे छुटकारा मिल गया है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। आशा है, अब उससे मुक्त रहोगे। यह भी आशा करता हूँ कि तुम्हारी पत्नी और पुत्र बुखारसे पूरी तरह छुटकारा पा लेंगे।

जहाँतक विद्याश्रमका सम्बन्ध है, मैं अन्नदासे पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ। धीरेन्द्रकी योग्यता मैं जानता हूँ। अखिल भारतीय चरखा संघके विरोधमें वह कुछ नहीं करेगा। बेशक, वह जब भी चाहे, आ सकता है।

आभा जब चाहे तब आ सकती है। अगर वह आ जाती है और अपनी योग्यता सिद्ध कर देती है तो मैं उसे विवाह करनेके लिए तैयार करूँगा। मैं उसके और कनुके बीच दीवार खड़ी नहीं करूँगा। यदि वह आती है तो मैं उसके साथ आनेके लिए कोई आदमी ढूँढ सकता हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३२३) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

५५९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
२२ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारी गाड़ी अभी पटरीपर आई नहीं दीखती। मैं चाहता हूँ कि यदि पन्द्रह दिनमें निश्चयपूर्वक कुछ न कहा जा सके तो तुम यहाँ आ जाओ। अगर तुम्हारी स्थिति आने-जाने लायक हो गई हो तो थोड़े दिन यहाँ रह जाओ। यह भी ठीक होगा। तुम्हें जो पसन्द हो वही करो। राजेन्द्र बाबू दिनों-दिन अच्छे होते जा रहे हैं। अब वे रोज आते हैं।

महादेवका पत्र साथमें है। इसे वहाँसे जहाँ भेजना हो, भेज देना।

प्रेमा कंटक तुमसे मिली होगी। उसका काम अच्छी तरह चल रहा है।

अल्ला बख्शका क्या हुआ? मुझे तो विश्वास है कि कांग्रेसको हाथ खींच लेना चाहिए। राजेन्द्र बाबूको इसमें कुछ शक है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२: सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५५

५६०. पत्र: मूलशंकरको

२२ सितम्बर, १९४१

भाई मूलशंकर,

तुम्हारा किया अंग्रेजी सारांश मैं बहुत जल्दीमें पढ़ गया। ठीक लगा। अलबत्ता, इसे और संक्षिप्त किया जा सकता था। ३१ वें अनुच्छेदमें जो कहा गया है वैसा तो मैं नहीं कह सकता। मैं ऐसा कह सकता हूँ कि "सैकड़ों और हजारों गांधी निकलेंगे"। "मैं पैदा करूँगा", ये उद्गार मेरे मुँहसे नहीं निकलने चाहिए।

सिद्धान्तोंके कोई अपवाद नहीं होते। दो और दो चार ही होते हैं। मैंने अगर थोड़ी-सी भी भूल की हो तो वह भूल ही कही जायेगी। आपद्-धर्म जैसी अलग चीज क्यों? हाँ, ऐसे समयमें यदि कोई व्यक्ति भूल करता है तो वह क्षम्य मानी जा सकती है। युधिष्ठिरने जरा-सा झूठ बोला था कि उनका रथचक्र जमीनपर आ गया। जो लोग अहिंसाका पालन नहीं कर सकते वे लोग कायर बनने के स्थानपर हिंसासे काम लें, ऐसा कहकर मैं कोई अपवाद नहीं सुझाता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५६१. पत्र : कन्हैयालाल वैद्यको

२२ सितम्बर, १९४१

भाई कन्हैयालाल,

तुमारे सब खत मैं ध्यानसे पढ़ लेता हूं। तुम्हारे वकील कौन है? कोई वकील सेवाभावसे काम करने को तैयार नही है? अपील तो रतलाममें ही होगी? किसको होगी? न्याय मिलने की आशा है? इस अन्यायको पहूचने की[1] कोई कुंजी मिलनी चाहिये।

मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६२. पत्र : अमृतकौरको

२३ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अपना नाम दे सकती हो। आज इतना ही।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८३) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३९२ से भी

५६३. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

२३ सितम्बर, १९४१

चि० काका,

तुम जो लिख रहे हो, वह विचारणीय तो है। मैंने विचार किया भी, और अन्तमें इस निर्णयपर पहुँचा हूँ कि जमनालालजी की शक्तिका पूर्ण विकास तो गो-सेवामें ही हो सकता है। गोसेवा संघके होते हुए भी यह काम उपेक्षित रहा है। न तो हम कोई विशेषज्ञ जुटा सके और न द्रव्य जुटा सके। हाँ, क्षेत्र तैयार कर सके हैं। लेकिन यह काम तभी हो सकता है, जब एक अनुभवी व्यक्ति इसके लिए अपनेको समर्पित कर दे।

१. के निराकरणकी

हरिजन-कार्य रास्तेपर आ गया है, और आता जा रहा है। जो-कुछ हो रहा है, वह आवश्यक है। अन्तमें समस्याका हल तो हरिजनोंकी जागृतिसे ही होगा।

सनातनियोंमें भी काम तो हो ही रहा है, यद्यपि यह सच है कि उसका ढिंढोरा नहीं पीटा जाता। चूँकि जमनालालजी स्वयं चुस्त हरिजन-सेवक हैं, इसलिए वे गोसेवा करते हुए भी अनेक सनातनियोंको पिघला सकेंगे। अन्तमें, साथका पत्र[1] पढ़ोगे तो इस प्रश्नपर अधिक प्रकाश पड़ेगा। पत्र वापस भेज देना। एक विशेष कारण भी है। ज[मनालाल] अधिक पवित्र होना चाहते हैं। वे विचारोंकी पवित्रता के भूखे हैं। सम्भव है, उनकी यह भूख गोसेवासे तृप्त हो जाये, क्योंकि गाय हरिजनोंकी अपेक्षा भी अधिक मूक प्राणी है। यदि हम उसकी सेवा न करें, तो भी वह विद्रोह नहीं करेगी, बस मर जायेगी। और हरिजनोंको तो हम विद्रोह करना सिखा रहे हैं। यों हम न भी सिखायें तो और लोग सिखाने को तैयार हैं ही। तुम्हें याद है, भारतीय परिषदमें[2] अब्दुल हक साहबने प्रस्ताव रखा था कि हिन्दी-हिन्दुस्तानीके बदले हिन्दी-उर्दूको अपनाना चाहिए। प्रस्ताव अगर यह नहीं था, तो क्या था?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९५२) से

५६४. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

२३ सितम्बर, १९४१

भाई विट्ठलदास,

तुम्हारा अंग्रेजी पत्र जब जाजूजी के पास आया तभी मैंने सोचा था कि तुम्हें लिखूं, लेकिन लिख नहीं सका। अब तुम्हारा गुजराती पत्र मिला।

तुमने अंग्रेजीमें क्यों लिखा? अंग्रेजीमें हम अपना हृदय कभी उँडेल ही नहीं सकते। जवाहरलाल-जैसे उँडेल सकते हैं, क्योंकि उन्होंने तो बचपनसे अंग्रेजी सीखी है और इंग्लैंडमें सीखी है। खैर, होगा।

तुम्हारी विचार-सरणीमें कहीं दोष है। अगर हमें जगह-जगह अनेक भण्डार खोलने हों, तो निश्चित रूपसे हमें एक आदमीसे ही काम लेना पड़ेगा। उसके साथ दूसरा आदमी नहीं रखा जा सकता। लगता है, तुम्हें गाँवोंके भण्डारोंका अनुभव नहीं है। बेचारे गाँवके भण्डारी मदद कहाँसे प्राप्त करें? वे कहीं जाते हैं तो ताला लगाकर ही जाते हैं। यदि उनमें से किसीके लड़का होता है तो उसे छोड़ जाता है, किन्तु

१. यह उपलब्ध नहीं है।

२. अखिल भारतीय साहित्य परिषद्

यह अलग बात है। दक्षिण आफ्रिकामें हमारे लोग और यहूदी हजारों भण्डार चलाते हैं। उनमें एक ही आदमी होता है और एक ही आदमी पुसाता भी है। बहुधा ये लोग भण्डारके पीछे ही रहते हैं। यदि कहीं कामसे जाते हैं, तो भण्डार बन्द करके ही जाते हैं। मुश्किलसे पाँच सौ का तो माल होता है, उसमें नौकर कहाँसे पुसायेगा? फिर, हम तो नवयुगके, अहिंसक युगके स्वप्न देख रहे हैं न? हम नियमानुसार ही भण्डार खुले रखेंगे। सवेरेके ६ बजेसे रातके १२ बजे तक खुले नहीं रखेंगे। इंग्लैंडमें भण्डार नियमानुसार ही बन्द होते हैं। हम स्वेच्छासे ऐसा करें। अंग्रेज तो यहाँ भी वैसा करते ही हैं। लेकिन वे चाहे जो करें, हमें तो अहिंसा-धर्मका अवलम्बन करते हुए अपने कामकी व्यवस्था करनी चाहिए। इसलिए हमारा तो इसी दृष्टिसे सारी व्यवस्था करना उचित है।

मैं मानता हूँ कि हमें स्थानका भी विचार करना चाहिए।

मैं तुम्हारी यह बात मानता हूँ कि विक्रय की कला उत्पादनकी कलासे अलग है। और जिस प्रकार खादी-उत्पादनकी कला सामान्य उत्पादन-कलासे भिन्न है, उसी प्रकार खादी-विक्रयकी कला भी सामान्यसे भिन्न है। इसपर विचार करना तो हम टालते ही आये हैं। हमने इसपर छुटपुट ढंगसे विचार किया है, लेकिन वह काफी नहीं है। लेकिन जब जागे तभी सवेरा। खादी-जगत्को मैं इसपर विचार करने को प्रेरित कर रहा हूँ।

हमारा काम एक आदमीके नियन्त्रणमें नहीं चलता, लेकिन हमारे कामने अभी पूरी तरह संस्थाका रूप नहीं लिया है। इसका कारण यह है कि हमने आदमी तैयार नहीं किये। उनके लिए हमने कोई शाला नहीं खोली। अब खोली[1] है। देखें, यह क्या करती है।

तुम्हारे पत्रका स्वर यह था कि इस प्रश्नपर कौन्सिलको विचार करना चाहिए। मेरी मान्यता है कि अभी कौन्सिल द्वारा विचार करने का समय नहीं आया। पहले तो तुम्हें, जाजूजी को और मुझे विचार करना चाहिए। अन्तमें तो कौन्सिलको विचार करना ही होगा।

जाजूजी ने अपने विचार प्रकट किये, इसपर अंग्रेजी [पत्र] में तुमने जो आपत्ति व्यक्त की, मुझे बिलकुल अनुचित लगी। मन्त्री अगर मन्त्रीका काम करेगा, तो उसे लोगोंका मार्ग-दर्शन करना ही पड़ेगा। उनका मार्ग-दर्शन तुम्हें पसन्द नहीं आया, यह अलग बात है। किन्तु जबतक हम किसीको मन्त्रीके रूपमें स्वीकार करते हैं, तबतक वह मार्ग-दर्शन तो अवश्य करेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९८०१) से

१. सेवाग्रामका खादी विद्यालय

५६५. पत्र : अमृतकौरको

२४ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

कल मैंने बड़ी जल्दीमें एक पुर्जा लिख भेजा था। डाक आने से पहलेके समयका उपयोग कर रहा हूँ।

फिर सुनाई पड़ा है कि नरेन्द्रदेवका स्वास्थ्य दिनों-दिन बिगड़ता जा रहा है। अगर इससे कुछ फायदा समझो तो फिर लिख सकती हो। मैं सरूपको भी लिख रहा हूँ कि वह जो भी कर सकती है करे।

यह लिख चुकने के बाद उनकी रिहाईकी खबर मिली है।[1]

१०० रुपयेकी रसीद भी भेज रहा हूँ। यह राशि एन्ड्रयूज-स्मारकमें जायेगी।

अगर तुम पूर्णतः रोग-मुक्त घोषित कर दी जाओ तो बहुत अच्छा होगा।

विनीत भाव गुण भी है और दुर्गुण भी। परिस्थितिके अनुसार ही यह तय किया जा सकता है कि वह कब गुण है और कब दुर्गुण। तुम्हारा समाधान हुआ?

मैंने तुम्हें लिखा था कि जमनालालजी की तबीयत ठीक नहीं दिखती। उन्हें भी ऐसा ही लगता है। नैनीतालकी यात्राने उन्हें झँझोड़ दिया।

हाँ, तुम्हारी परिषद् द्वारा कोई गाँव हाथमें लिये जाने के बारेमें तुमने मुझे लिखा था। देखें, शायद कोई इस कामके लिए मिल जाये। तुम्हारे लौटने पर इस सम्बन्धमें बातचीत करेंगे।

कुटिया और बढ़ाई जा रही है।

'खादी-जगत्' प्रेसमें है। महाराजाके आदेशकी खबर अगले महीने ही छप सकती है, सो छप जायेगी।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

प्यारेलाल आज या परसों तक आ जायेगा। प्रभा आ गई है। विजया कुछ दिनों के लिए आयेगी; वसुमती भी। रामदासकी बदली नागपुरको हो गई है। इसलिए नीमू और बच्चे भी कुछ दिनोंके लिए आयेंगे। इस तरह आश्रम भरा रहेगा। एक-दो नये सदस्य भी आये हैं।

यहाँ सब स्वस्थ हैं।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३९१ से भी

१. नरेन्द्रदेवको बिना शर्त २३ सितम्बरको रिहा कर दिया गया था।

५६६. पत्र : सारंगधर दासको

वर्धा, सेवाग्राम
२४ सितम्बर, १९४१

प्रिय सारंगधर दास,

मेरा पत्र[1] अपनी सुविधानुसार जब प्रकाशित करना ठीक लगे तब करो। यह तो वह है जिसकी मदद सुविचारित योजनाके साथ करनी है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०४४४) से। सौजन्य : उड़ीसा सरकार

५६७. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको

२४ सितम्बर, १९४१

चि० अन्नपूर्णा,

तू हिम्मत मत हार। यदि तेरा बुखार पूरी तरह नही गया, तो उसकी क्या चिन्ता? बुखार तो आखिर जायेगा ही। उसका सही कारण समझमें नही आया, इसलिए देर हो रही है। तू वहाँ की आबहवामें जरूर अच्छी हो जायेगी। और यह बात मन में बैठा ले कि तू किसीपर भार-रूप तो होगी ही नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४३०) से

१. देखिए "पत्र: सारंगधर दासको", पृ० ३३०-३१।

५६८. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२४ सितम्बर, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुम जो लिख रहे हो, वह विचारणीय है। सुझाव मेरे पास भेजना।

लक्ष्मीबाईने सुरगाँवका विवरण दिया है। हम जो करेंगे, पूरी तरह विचार करके करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४८४) से। सी० डब्ल्यू० ७१५७ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

५६९. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुंशीको

२४ सितम्बर, १९४१

भाई मुंशी,

चि० सरला आज जा रही है। उसे भेजते दुःख हो रहा है और यहाँसे जाते उसका भी मन भारी है। उसका यहाँ सबसे, बच्चोंके साथ भी, खूब प्रेम हो गया है। केवल तुम्हारे और मेरे सन्तोषके लिए सरला चन्द्रवदनसे अपना सम्बन्ध तोड़ लेगी, लेकिन तोड़ेगी ईमानदारीके साथ। ऐसा करना अपने-आपमें उसका धर्म है, यह बात उसके गले नहीं उतरी है। जल्दी उतर जाये, ऐसा भी नहीं है। मेरी इच्छा चन्द्रवदनको यहाँ बुलाने की है, लेकिन तभी जब तुम दोनोंकी सहमति हो। सरलाके साथ और भी बहुत-सी बातें हुई हैं। वे सब तुमसे कहने की अनुमति उसने दे दी है। जब तुम दोनों अथवा अकेले आओगे, तब कहूँगा। सरलाकी जब भी यहाँ आने की इच्छा हो, तो उसे प्रोत्साहित करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६७०) से। सौजन्य : कन्हैयालाल मा० मुंशी

५७०. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२४ सितम्बर, १९४१

चि० नरहरि,

तुम्हारे रक्तचापकी बात मुझसे चिमनलालने कही। यह तुम्हारे लिए चेतावनी है। तुम्हें आरामकी जरूरत है। यदि तुम कहीं जाकर छिप जाओ, तो फिर जैसे-के-तैसे हो जाओगे। चेतावनीकी उपेक्षा मत करना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

महादेवको कुछ नहीं लिखता, क्योंकि वह तो वहाँसे चल दिया होगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२६) से

५७१. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

२४ सितम्बर, १९४१

चि० काका,

मेरा विचार भी वही है जो तुम्हारा है, किन्तु निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता। दूसरे पक्षको सुनने के बाद मुझे विचार बदलना भी पड़ सकता है। तुम्हें भी अपना मन उन्मुक्त रखना चाहिए। उस समय हमें जो उचित जान पड़ेगा सो करेंगे। सक्सेनाके लिखने से जरा भी डरने की जरूरत नहीं है। तुम खुशीसे सबसे ४ को आने का अनुरोध करो। यह ज्यादा अच्छा होगा कि जिनकी उपस्थिति आवश्यक समझो, उनसे पहले पूछ लो। ऐसे दो लोग जमनालालजी और राजेन्द्र बाबू तो होंगे न! सत्यनारायणको[1] खास तौरपर बुलाने की जरूरत मैं नहीं समझता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९५३) से

१. मो० सत्यनारायण

५७२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२४ सितम्बर, १९४१

चि० कृ० चं०,

केले दाक्तर इ० के लिये मंगाना होगा। लीबु बंध करना ठीक नहि होगा। भात या खीचडी देना पड़ेगा। दूधकी मात्रा कम की जाय। गुड़ दलीयामें हि। दाक्तर इ० को देना होगा। दूसरा सोच-विचारकर करना चाहिये। केले थोड़े तो मंगाना होगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

ताडगुड बारेमें गजाननसे पूछो।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०५) से

५७३. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धागंज
२४ सितम्बर, १९४१

मुझे मालूम हुआ है कि अप्रमाणित विक्रेता चरखा-सप्ताहके लिए हुण्डियाँ जारी कर रहे हैं। यह सर्वथा अनधिकृत और खादीको नुकसान पहुँचानेवाला काम है। जनतासे मेरा अनुरोध है कि वह खादीके अनधिकृत विक्रेताओंसे सावधान रहे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २५-९-१९४१

५७४. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

२५ सितम्बर, १९४१

बिड़ला
अमृतनिवास
मसूरी

मुझे लगता है कि सरकारको[1] आमन्त्रित करना ठीक नहीं होगा।

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७८६४) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

५७५. पत्र : अमृतकौरको

२५ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

याद नहीं आ रहा कि मैंने तुम्हें श्री हेनकॉकके बारेमें लिखा था नहीं।[2] जैसा कि तुमने लिखा है, वे अक्तूबरमें आ सकते हैं। आशा है, वे २७ को ही नहीं आ धमकेंगे। मैंने उनसे भेंटका वह समय रद्द करके दूसरोंको दे दिया है।

राजा साहबके बारेमें सुनकर दुःख हुआ। लूट-खसोटपर रोक लगाकर तुम बिलकुल ठीक काम करोगी। मैं जानता हूँ, यह सब कितना कठिन है। निश्चय ही उनकी मृत्यु उनके लिए मुक्ति होगी और तुम लोगोंके लिए भी, जो उनके कष्टोंके असहाय दर्शक बनकर रह गये हैं।

हालांकि यहाँसे डाक निर्धारित समयपर निकल जाती है, फिर भी जाहिर है, तुम्हें एक साथ दो पत्र मिलते हैं।

मेरी तबीयत असाधारण रूपसे अच्छी चल रही है।

अक्तूबरके मध्यमें मैं एन्ड्रयूज-स्मारकके सिलसिलेमें यहाँसे निकलना चाहता हूँ। अभीतक कुछ निश्चित नहीं है, लेकिन विचार कर रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८४) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३९३ से भी

1. नलिनीरंजन सरकारको; देखिए "पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको", पृ० ३९१।
2. देखिए पृ० ३५४।

५७६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
२५ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

नानीबहन झवेरी चल बसीं। विश्वास नही होता, परन्तु यह ईश्वरीय कार्य है, जिसे हम समझ नहीं सकते।

मै अल्लाबख्शके बारेमें समझ गया। मैंने तो उनसे कह ही दिया है कि हमें मौलानाके निर्णयको अवश्य स्वीकार करना है। परन्तु साथ-साथ यह भी कह दिया है कि यदि वे खुद छोड़ने का औचित्य समझ गये हों, तो वही बात मौलानाको समझाकर अपना पद छोड़ दें और कांग्रेसके साथ वनवास भोगें। इसमें तो वचन-भंगका या दूसरा कोई दोष नही होता। परन्तु इस बातको जाने दो। जब तुम आओगे तब इसके गुण-दोषपर थोड़ी चर्चा कर लेंगे। सिन्धके विषयमें मेरी राय नई नही है। परन्तु दृढ़तर बनी है और सब प्रान्तोंके बारेमें लागू होती है। मुझे कोई जल्दी नही है। हममें से अधिकांश उसे स्वीकार कर लें तभी उसपर अमल किया जा सकता है। "अधिकांश" में मौलाना भी आ जाते हैं।

तुम्हारे स्वास्थ्यके लिए होमियोपैथी जितना मर्यादित समय माँगे, उतना उसे अवश्य दो। हजीराके पानीकी ख्याति तो मैंने सुनी है, किन्तु देवलालीका मुझे पता नहीं। सम्भवतः हजीरा तुम्हें अनुकूल आ जाये। वैसे प्राकृतिक चिकित्सा तो है ही। परन्तु पहले हम मिलकर कुछ विचार-विमर्श अवश्य कर लें।

उस छोटी लड़कीकी बीमारी तो लम्बी ही खिंचती जा रही है। मणिबहनके पत्रसे मालूम होता है कि शायद बच भी जाये। राजेन्द्र बाबू ठीक हैं। जमनालालजी के बारेमें यह तो नहीं कहा जा सकता कि उनकी समस्या सुलझ गई।

भूलाभाई अच्छे हो जायें तो ठीक हो।

मैं मणिको अलगसे पत्र नहीं लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मैं देख रहा हूँ कि दीनबन्धु-स्मारकके लिए मुझे प्रवास करना पड़ेगा। अक्तूबरके मध्यमें शुरू करने की इच्छा है।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५५-५६

५७७. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

२५ सितम्बर, १९४१

भाई घनश्यामदास,

मैं सरकारकी बात तो भूल हि गया। आज तार[1] दिया है सो समयपर पहूंचा होगा। मेरा विश्वास है कि उनको बुलानेसे हमको नुकसान है और उनको भी। उनका शुद्ध प्रेम है तो वह रहेगा हि। जनता उनका सरकारी पद स्वीकार नहीं समझेगी। इसलिए हर प्रकारसे अच्छा होगा यदि वे जाहरी प्रतिष्ठाका स्वीकार न करे और अपना कारोबारको प्रजाकी दृष्टिसे सुशोभित करें। हम सबकी सहाय लेते हैं यह सही है, लेकिन उसमें भी मर्यादा तो रहती हि है।

तुमारा स्वास्थ्य अच्छा होता होगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

दीनबन्धु-स्मारकके लिये मुसाफरी करनी होगी। अक्टोबरके मध्यमें शरू करने का इरादा है। क्या दिल्ली — पिलानीसे शरू किया जाय?

बापु

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०४९) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

५७८. पत्र : प्रभावती जकातदारको

२५ सितम्बर, १९४१

चि० प्रभावती,

जकातदारजी को तो मैं अंग्रेजीमें लिखता हूं। तुमको तो हिन्दीमें ही लिखू। पिताजी की स्थितिका सुनकर दुःख होता है। तुम्हारी बहादुरीके लिये धन्यवाद। तुमने जो धन-संग्रह किया है उसका उपयोग दिल चाहे ऐसा करो। यहांसे रुपये मिलने के बारेमें तुम्हारे यहां आने पर विचार करेंगे। मेरी आशा है कि तुम्हारा कारोबार सुशोभित होगा और दफ्तरका काम व्यवस्थित कर सकोगी।

बापुके आशीर्वाद

प्रभावतीबाई जकातदार
चेरमन, लोकल बोर्ड
भंडारा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

1. देखिए पृ० ३८९।

५७९. पत्र : अमृतकौरको

[२६ सितम्बर, १९४१][1]

प्रिय पगली,

साथमें दो पत्र भेज रहा हूँ। शिक्षा बोर्डमें अपनी नामजदगी तुम्हें स्वीकार कर लेनी चाहिए।

आशा है, राजाङ्काण्डका निस्तार हो रहा होगा।

महादेव निश्चित रूपसे कल आ रहा है, लेकिन फिर २९ को ही अलवरको प्रस्थान कर जायेगा। आश्रममें भीड़ बढ़ती ही जा रही है। रोकना मेरे बसका नही है।

तुम्हें यह तो बताया ही नहीं कि सुरेन्द्र गिरफ्तार कर लिया गया और वर्धा में उसपर मुकदमा चलाया जा रहा है।

यहाँ सब ठीक है।

आशा है; तुम १५ अक्तूबर तक यहाँ आ जाओगी। मैं चाहता हूँ कि मेरी अनुपस्थितिमें तुम यहाँ रहो।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

प्यारेलाल कल आ गया।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८५) से। सौजन्य : अमृतकौर

१. साधन-सूत्र में "२४-९-४१" है, जो किसी और की लिखावटमें है। स्पष्ट ही यह भूल है, क्योंकि डाककी मुहर "२६-९-४१" की है। यह बात एक पिछले पत्रमें महादेव देसाईके अगले दिन आने की सम्भावनाका जिक्र होने से भी सिद्ध हो जाती है; देखिए पृ० ३७८।

५८०. पत्र : गुलाम रसूल कुरैशीको

२६ सितम्बर, १९४१

चि० कुरैशी,

तुम्हारा पत्र मिला। वहाँ चरखेका काम खूब चलता है, यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई। कानजीभाईका[1] पान-सेवन कैसा चल रहा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०७७१) से। सौजन्य: गुलाम रसूल कुरैशी

५८१. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
२६ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने कल जो लिखा था उससे मेरा विचार तो तुमने जान लिया होगा। यहाँ उतनी गरमी नहीं है जितनी तुम समझते हो। रात तो सुन्दर होती ही है। बँगलेमें[2] मच्छर तो जरूर हैं। अगर तुम सेवाग्राममें रहो और आकाशके नीचे सोओ तो मच्छर तंग नहीं करेंगे। और सब सुविधाएँ तो हैं ही। इसलिए यदि दो-तीन दिन यहाँ बिताओ तो अच्छा हो। देवलालीकी बात मुझे जँच नहीं रही है। हजीरा तो प्रसिद्ध है ही।

सत्यमूर्त्ति लिखते हैं कि असेम्बलीमें जानेकी अनुमति मिलनी चाहिए। मुझे तो यह पसन्द नहीं है। तुम अपनी राय बताना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५७

१. कन्हैयालाल देसाई
२. वर्धामें जमनालाल बजाजका निवास-स्थान

५८२. पत्र : शान्तिकुमार न० मोरारजीको

२६ सितम्बर, १९४१

चि० शान्तिकुमार,

मैंने ब्रह्मदेश (बर्मा)के प्रधान-मन्त्रीको अपना वक्तव्य[1] भेजा था और अपना मत भी व्यक्त किया था। उनकी ओरसे मीठा जवाब मिला है। और उन्होंने मुझे भारतीय शिष्ट-मण्डलके सामने दिये गये अपने दो भाषणोंकी प्रतियाँ भी भेजी हैं। वे पत्र तो तुमने देखे होंगे। मुझे लगता है कि यदि वहाँ भी हमारे कार्यकर्ता हों, तो कुछ जरूर हो सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७३७) से। सौजन्य: शान्तिकुमार न० मोरारजी

५८३. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

२६ सितम्बर, १९४१

भाई घनश्यामदास,

तुम्हारा खत मिला। मैं तुमारी योजनासे सम्मत हूं। ऐसी ६ संस्था होगी तो उसका असर अच्छा होना हि चाहिए। मैं यह भी मानता हूं कि आज हम मॅट्रिक्युलेशनको छोड़ नहिं सकते हैं। साथ-साथ मेरा अभिप्राय है कि हमारा अभ्यास-क्रम ऐसा होना चाहिए कि जो लड़के हाई स्कूल तक हि जायं उनका अभ्यास पर्याप्त हो और उसको अभ्यासके बाद धंधा या नौकरी मिल सके। मुख्य बात तो यहि है कि मुझे वस्तु पसंद है और आरंभ हो सकता है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

तबीयतके बारेमें। व्यायाम जितना शरीर आरामसे कबूल कर सके इतना हि रखा जाय।

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०५०) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

1. भारत-बर्मा समझौतेके बारेमें; देखिए पृ० २८३-८७।

५८४. पत्र : अमृतकौरको[1]

सेवाग्राम
२७ सितम्बर, १९४१

आज समय है नही। एक खत भेजता हूं। मिसीस कजिन्सका[2] खत वापस करता हूं।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ४२५२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८८४ से भी

५८५. पत्र : अमृतकौरको

२८ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा छोटा-सा पुर्जा मिला। तुम्हारे तीनों प्रश्नोंका उत्तर दे चुका हूँ। तुम्हें रवीन्द्रनाथ ठाकुर महिला स्मारक-समिति और शिक्षा बोर्डमें शामिल हो जाना चाहिए। हेनकॉक ११ अक्तूबरको शाम ४ बजे भेंट कर सकते हैं। मैंने कोई निश्चित तारीख नही दी थी। मुझे खुशी है कि तुम्हारी तबीयतमें निश्चित तौरपर सुधार हो रहा है।

सेब मिल गये हैं। अभी चखे नहीं हैं। महीनेमें एक बार ही भेजा करो। इतनेसे खुश हो जाओगी, ऐसी उम्मीद है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८६) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३९५ से भी

---

१. प्रभावतीने २७ सितम्बर, १९४१ को अमृतकौरके नाम जो पत्र लिखा था उसीपर पुनश्चके रूपमें यह पत्र लिखा गया था।

२ मार्गरेट कजिन्स

५८६. पत्र : सर रॉबर्ट ई० हॉलैण्डको

२८ सितम्बर, १९४१

प्रिय रॉबर्ट,

बिदा होते समय आपने जो पत्र मुझे लिखा उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। निश्चय ही आपकी टिप्पणी और समय-समयपर आपके पत्रोंकी प्रतीक्षा रहेगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर आर० ई० हॉलैण्ड
११८० ड्रमण्ड
कैनेडा

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६६७) से

५८७. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

२८ सितम्बर, १९४१

प्रिय कु०,

ऐसा लगता है, तुमने शंकरलालको कुछ लिखा है। कारण जो भी हो, उनका स्वास्थ्य अचानक बहुत बिगड़ गया है। इसलिए उनसे पत्र-व्यवहार बिलकुल बन्द कर दो।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५६) से

५८८. पत्र : मगनलाल प्रा० मेहताको

२८ सितम्बर, १९४१

चि० मगनलाल,

तेरे अनुत्तीर्ण होनेकी बात मुझे परसों ही अनायास मालूम हुई। तू एक ही विषयमे अनुत्तीर्ण नही हुआ। इससे मालूम होता है कि तुझमें कानूनको समझनेकी बुद्धि नहीं है। ऐसा बहुतोंके साथ होता है। ऐसे अनेक महापुरुष हो गये हैं जिनमें कुछ क्षमताएँ नही थी। सभी लोग गणितके पण्डित नही हो सकते। जिसमें जैसी क्षमता हो, वह उसीका अनुकरण करे। इसलिए मेरा अब तुझसे आग्रह है कि तू परीक्षा पास करनेका लोभ छोड़ दे और केवल व्यापारमें मगन रह। कानूनका जो-कुछ थोड़ा ज्ञान हजम हो गया होगा, वह तेरे पास बना रहेगा। मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि तू अपना अंग्रेजीका ज्ञान पक्का कर ले। लेकिन अगर तू उससे घबराता हो, तो उसके लिए भी मेरा आग्रह नही है। मेरी तो यह भी इच्छा है कि किसी कुशल अध्यापकसे तेरी सब प्रकारकी परीक्षा कराऊँ, और वह तुझे जो विषय सीखनेके योग्य ठहराये, उसके लिए तू तैयार हो जाये। फिर मेरी यह भी इच्छा है कि तू यहाँ जल्दी आ जा और बच्चोंको रंगून ले जा। उमि तो रंगूनकी ही रट लगाये रहती है। अब वह सेवाग्राम से ऊब गई है। और अप्पाको तो शुरूसे ही यहाँ अच्छा नहीं लगा। ऐसी स्थितिमें बच्चोंकी उन्नति नही होगी। इसलिए सब प्रकारसे मेरा तो सुझाव है कि तू यहाँ आ जा, सलाह-मशविरा कर और रंगून चला जा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१९) से। सौजन्य: मंजुला म० मेहता

५८९. पत्र : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

२९ सितम्बर, १९४१

प्रिय रथी,

तुम्हारा १४ तारीखका पत्र मिल गया था।

डॉ० अवनीन्द्र बाबूके[1] चुने जानेसे मुझे प्रसन्नता हुई। मेरी बधाई उनतक पहुँचा दो। यदि इस दायित्वसे बचनेकी कोई सूरत न होती तभी मैं इसे स्वीकार करता। इस उम्रमें स्वाभाविक इच्छा अपना बोझ बढ़ानेके बजाय कम करनेकी होती है।

जबतक पाँच लाख इकट्ठे नही हो जाते, मैं चैनसे नही बैठ सकता। जहाँ तक बनेगा, यात्रासे बचनेकी कोशिश करूँगा, लेकिन पूरी राशि इकट्ठी न हुई तो उससे बचनेकी हिम्मत नही कर सकता। यह तो गुरुदेव और दीनबन्धुकी पावन स्मृतिके प्रति मेरा कर्तव्य है।

यहाँ आनेकी फुरसत निकाल पाओगे तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २२९२) से

५९०. पत्र : अमृतकौरको

२९ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। कपूरथला की शर्तोंको हम खुशी-खुशी स्वीकार कर सकते हैं। अगर कोई ठीक ढंगका स्थानीय आदमी मिल जाये तो वहाँ भण्डार खोल सकती हो। रियासत अपनी जरूरतकी खादी आप ही क्यों [न][2] तैयार करे? मैं समझता हूँ कि इसके लिए ठीक वातावरण नहीं है।

जमनालालजी ठीक चल रहे हैं, किन्तु मनसे अब भी दुर्बल हैं। गो-सेवा संघ के रूपमें उन्होंने अपने सिरपर बहुत बड़ा बोझ ले लिया है। आज प्रारम्भिक बैठक चल रही है। मुझे कलकी बैठकमें शामिल होना है। क्या तुम शामिल होना चाहोगी?

१. विश्वभारतीके अध्यक्ष

२. लेटर्स टु राजकुमारी अमृतकौर के अनुसार

यह भी खास तौरसे स्त्रियोंका ही काम है। वह कातती है, दुहती है, जनती है और घर-गृहस्थी चलाती है। लड़कीके लिए 'दुहिता' शब्दका भी तो प्रयोग होता है।

तुम्हारे नामसे यहाँ आये दो पैकेट तुम्हारे पतेपर भेज दिये हैं। बुलका पत्र नष्ट कर दिया है। उसने दूसरा पत्र लिखा है। मैं समझता हूँ, मामला अनुकूल ढंगसे निबट जायेगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६७९) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६४८८ से भी

५९१. पत्र : हिन्दू महासभा, शिमोगाके मन्त्रीको

२९ सितम्बर, १९४१

मन्त्री
हिन्दू महासभा
शिमोगा, मैसूर राज्य

प्रिय मन्त्री महोदय,

आपके हस्ताक्षर पढ़े नहीं जा सके।

मैं जानता हूँ कि गणपति उत्सवके जुलूसोंमें राष्ट्रीय झण्डेका प्रयोग किया जाता रहा है।

मन्दिरोंपर राष्ट्रीय झण्डा फहराना गलत है।

कांग्रेस राष्ट्रीय संस्था है, क्योंकि जाति और धर्मके भेद-भावके बिना इसके द्वार सबके लिए खुले हैं। हिन्दू धर्मोत्सवोंसे कांग्रेसका उतना ही कम या ज्यादा सरोकार है जितना कि किसी अन्य धर्मके उत्सवसे।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८३९) से

५९२. पत्र : जीवराजको

२९ सितम्बर, १९४१

जहाँतक खुद मेरा सम्बन्ध है, मेरी यह प्रतीति दिन-दिन बढ़ती जाती है कि जमीन-जायदाद रखना एक झंझट और बोझ है। यात्राकी इच्छा रखनेवालोंके पास जितना कम सामान हो उतना ही अच्छा, और मैं अपने गैर-जरूरी सामानसे छुटकारा पाना चाहता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे। सौजन्य: नारायण देसाई

५९३. पत्र : देवदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा
२९ सितम्बर, १९४१

चि० देवदास,

तेरे बारेमें रोज पढ़ता रहता हूँ। चीफ जस्टिसने तेरा खूब विज्ञापन किया। सर तेजने तेरी ठीक ही तारीफ की है। तेरे कुछ जवाब बड़े चुटीले थे। शिवनाथभाई तेरे बारेमें खबरें देते रहते हैं। उसपर तूने खूब जादू किया है। बा तेरे बारेमें सब सुनती रहती है। मुन्नालाल रुचिपूर्वक सुनाता है। अब उसे [तुझे] जेल हो जाने का डर नहीं रहा।

बापूके आशीर्वाद

श्री देवदास गांधी
हिन्दुस्तान टाइम्स बिल्डिंग
नई दिल्ली

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४१) से

५९४. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको

२९ सितम्बर, १९४१

चि० अन्नपूर्णा,

तुझमें विश्वास आता जा रहा है, यह बड़ी बात है। मेरी इच्छा है कि तू बिलकुल अच्छी हो जाये। वहाँ रहते तू नई बातें तो सीखती ही रहना। आशा है, दादीजी का भार तो हलका करती ही होगी। काम शुरू करने की जल्दी मत करना। यहाँ सब ठीक चल रहा है। तेरी याद तो बराबर आती रहती है।

नानीबहन झवेरी एकाएक हृदयकी गति बन्द हो जाने से स्वर्ग सिधार गईं। वे महान् सेविका थी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४३१) से

५९५. पत्र : धीरूभाई भू० देसाईको

२९ सितम्बर, १९४१

चि० धीरूभाई,

तेरा पत्र मिला। पिताजी से कहना कि वे मुझे लिखने का विचार तक मनमें न लायें। जब वे स्वस्थ हो जायें, तब पत्र लिखने के बजाय यहाँ आयें। इस बीच मैं लिखता रहूँगा, यही पर्याप्त है।

अपने अध्यक्ष-पदसे त्यागपत्र देने के बारेमें तूने लिखा था। मैं उत्तर नहीं दे पाया था। मेरा भी यही खयाल है कि इस समय तेरा त्यागपत्र दे देना ही ठीक होगा। तेरे बाद किसे नियुक्त किया जाये, इसके बारेमें तू तनिक पिताजी से और सरदारसे भी पूछना। दोनों जिस व्यक्तिका नाम सुझायें, वह लिख भेजना।

किसी शर्माके बारेमें तेरे पास कोई शिकायत आई होगी। उसकी नकल मुझे भी मिली है। वह क्या है सो मुझे बताना और उसके बारेमें जो ठीक हो सो करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१६. उधारीसे बचो

मैं जानता हूँ कि क्या खादीमें और क्या अन्य वस्तुओंमें ज्यादा बिक्रीके लालचसे हम उधार माल बेचते हैं और पीछे नुकसान उठाते हैं। दक्षिण अफ्रीकामें वकालत करते हुए मैं अपने सैकड़ों व्यापारी मुवक्किलोंका हिसाब देखा करता था। वे लोग डूबनेवाली उधारीके लिए २५ प्रतिशतकी पहलेसे ही गुंजाइश छोड़ रखते थे। इसका परिणाम यह होता था कि वे लोग नफा बहुत चढ़ाते थे। इनमें कुछ तो दिवालियेपनके शिकार होते थे। 'इंडियन ओपिनियन', 'नवजीवन', 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' चलाते हुए मैंने देखा कि उधार न बेचने से हम नुकसानसे बच गये। इसका ग्राहकोंकी संख्यापर भी कोई बुरा असर नहीं हुआ। इसके सिवाय एक प्रत्यक्ष लाभ यह हुआ कि जो लोग इन अखबारोंकी कद्र करते थे वे ही इन्हें खरीदते थे। लेकिन खादी और अन्य प्रकारके व्यापारके बीच कोई मुकाबिला भी नही हो सकता। खादी केवल पारमार्थिक वस्तु है। जो करोड़ों भूखों मरते हैं उनकी सेवाका प्रश्न खादीमें भरा है। ऐसी खादीको हम उधार क्यों बेचें?

इसलिए मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि हम खादी किसी भी हालतमें किसीको भी उधार न दें। इसपर दृढ़ताके साथ अमल करने से हम बहुत-से फिजूल खर्चोंसे बचकर खादोको कुछ सस्ता भी कर सकेंगे। साथ ही ग्राहकोंको पूर्ण संतोष भी दे सकेंगे।

चरखा संघका सामान्य नियम है कि उसके मातहत किसी भी भंडारसे उधार माल न दिया जाये। मुझे डर है कि सब लोग इसका सौ फी सदी पालन नहीं कर सके। मेरा अभिप्राय तो यह है कि जिस नियमकी आवश्यकता हमारी बुद्धि महसूस नही कर सकती, उस नियमके ऐलान द्वारा हम पूरा लाभ भी नहीं उठा सकते। अतः मुझे उम्मीद है कि उधार न देने की नोति सब खादी-सेवक अच्छी तरहसे समझ लें, और समझकर उसका अच्छी तरह पालन करें।

खादी जगत्, सितम्बर, १९४१

५९७. पत्र : विजयलक्ष्मी पण्डितको

सेवाग्राम, वर्धा
३० सितम्बर, १९४१

चि० सरुप,

तेरा खत मिला। वाइस-चैन्सेलरीका समझा।

लखनऊ जेलके बारे में लोग कुछ भी कहे, जो हुआ सो ठीक हि हुआ है। लोगोंकी शिकायत होती हि रहेगी। उसकी बरदाश्त करें।

चुनार जेलके कागज कुछ देखनेमें नहिं आये। शायद तू भेजना भूल गई। जो कुछ हो मेरा वही अभिप्राय है जो दूसरी जेलोंके बारेमें। भूख हड़ताल तब हि हो जब स्वमान-हानि होती है। शुद्ध आंदोलनसे काफी कम हो सकता है। भूख हड़तालकी मर्यादा बराबर समझ लेनी चाहिये। थोड़े और कैदी छुटने पर मैं जरूर उनको बुला लूंगा।

शायद ५ तारीखको महादेव भी देहरा[दून] जायगा।

अब तेरे सब प्रश्नके उत्तर हो गये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९८. एक पुर्जा

३० सितम्बर, १९४१

बीबी सुलतानाको मैंने मेरा सूत दिया है। उसे वह बेचेगी और उससे जो पैसे मिलेंगे वह दीनबंधु मेमोरियलमें दिये जायेंगे।

मो० क० गांधी

महात्मा, खण्ड ६, पृ० ४८-४९ के बीच प्रकाशित उर्दू पुर्जेकी प्रतिकृतिसे

५९९. भाषण: गोसेवा संघकी सभामें

नालवाड़ी
३० सितम्बर, १९४१

आप अपना विधान सादा और छोटा बनावें और उसमें अनेक प्रकारके सदस्य न रखें। एक ही प्रकारके सदस्य रखें। पेट्रन तो होने ही नहीं चाहिए। जो दान देनेवाले हैं वे नामके लिए नहीं देंगे। कुछ तो अपना नाम जाहिर करना भी नहीं चाहेंगे। गुप्त दान ही देंगे।

भिन्न-भिन्न प्रकारके सदस्य रखने से कुछ लाभ नही होगा। जो सदस्य रहेंगे, उन्हें कोई अधिकार तो होगा हो नहीं। हम अधिकार नहीं, सेवा चाहते हैं। वे प्रत्यक्ष सेवा करनेवाले होंगे। ऐसे दस-बीस सदस्योंसे भी हमारा काम चल सकता है। सिर्फ गायका दूध, घी आदि और मृत पशुका चर्म काममें लेने की शर्तें हरएक सदस्यके लिए अनिवार्य होनी चाहिए। उसमें ढीलापन नहीं चलेगा। संघके कार्यके लिए एक छोटी-सी समिति नियुक्त की जाये।

दक्षिण आफ्रिकामें हीं मेरा यह मत बन गया था कि हमें भैंसके दूध-घीका मोह छोड़ना होगा। गायकी रक्षासे भैंसकी भी रक्षा हो जाती है। भैंसका दूध सब लोग छोड़ेंगे, ऐसी आशा नही की जा सकती। लेकिन गायके दूधके बारेमें यह डर है। इसलिए यदि हम गोरक्षा नहीं करेंगे, तो गाय और भैंस दोनोंका नाश हो जायेगा।

हम लोगोंमें एक दोष है। वैसे तो वह मनुष्य-मात्रमें पाया जाता है, किन्तु हम हिन्दुस्तानियोंमें अधिक मात्रामें है। वह यह कि जो चीज आसानीसे मिल जाती है, उसे हम जल्द अपना लेते हैं और जिसे पाने में कठिनाई होती है, उसे छोड़ देते हैं। खादी, ग्राम उद्योग आदि संस्थाओंमें लोग आराम, सस्तापन और सुविधा खोजते हैं। भैंसका दूध सस्ता और मीठा रहता है, इसलिए लोग उसे ज्यादा पसंद करते हैं।

हमारे यहाँ वैदिक कालसे ही गायकी महिमा गाई गई है, भैंसकी नहीं। अगर गायको वह स्थान न दिया जाता, तो उसका नाश ही हो जाता और उसके साथ भैंसका भी। हिन्दुस्तानमें गाय और भैंसका अनुपात क्या है, इसके आँकड़े मैंने देखे हैं। दोनोंकी बहुतायत है। लेकिन भैंस या गाय एक की भी दशा अच्छी नहीं है। जबतक ग्वालेको गाय या भैंससे पैसे मिलते हैं, तबतक वह उन्हें रखता है और बादमें कसाईके हाथ बेच देता है। इनको बचाने के लिए गोरक्षावाले गाय या भैंसको खरीद लेते है। इस तरह जो पैसे मिलते हैं, उनसे कसाई दूसरे जानवर खरीदते हैं। इससे कुछ गायें भले बच जायें। लेकिन गोवंशका तो नाश

ही है। इसलिए सही इलाज यह है कि जो गाय बिक गई हो, उसे हम भूल जायें और गायकी नस्ल सुधारने में, गायकी कीमत बढ़ाने में, तथा गोपालोंको उनका धर्म सिखाने में पैसे खर्च करें।

कोई ऐसी शंका न करें कि भैंसके दूध-घीका सभी लोग त्याग करें, तो भैंसका तो नाश ही हो जायेगा। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, ऐसा होनेकी कम सम्भावना है। लेकिन ऐसा हो भी जाये, तो कोई हानि नहीं होगी। भैंस जंगली जानवर हो जायेगी। असल बात यह है कि बचाना हो तो गायको ही बचाया जा सकता है। उसके साथ-साथ भैंस भी बच जायेगी, क्योंकि हमारे लिए दोनोंका दूध उपयोगी है। लेकिन शास्त्रीय पद्धति छोड़कर सभी लोग गो-रक्षाके नामपर मनमाने ढंगसे काम करने लगें, तो दोनोंका नाश निश्चित है, जैसा कि हमारे देशमें और चीजोंका नाश हुआ है। उन सब चीजोंके नाशमें हमारे अज्ञान का ही सबसे बड़ा हिस्सा था। इसलिए गोसेवा-धर्मका ज्ञानपूर्वक पालन करनेसे पशुओंके प्रति अपना धर्म हम समझेंगे और उसका पालन भी कर सकेंगे। गोपालन की जड़में हमें मनुष्येतर जीवोंके प्रति अपने धर्मका ज्ञान प्राप्त होता है। लेकिन गोसेवा नाममात्रकी ही रही है, इसलिए हम सब उस धर्मको भूलते जा रहे हैं।

हिसाबकी दृष्टिसे देखें तो दुनियाके ढोरोंके करीब एक चौथाई ढोर हिन्दुस्तानमें होंगे। लेकिन यहाँके लोगोंकी जितनी बुरी हालत है, उतनी ही बुरी हालत यहाँके ढोरोंकी भी है।

गोसेवकको गायका ही दूध-घी लेना चाहिए, बकरीका नहीं। मैं तो लाचार होकर बकरीका दूध पीता हूँ। लेकिन गोसेवा संघके सदस्यको गायका ही दूध-घी और मृत गाय-भैंसका ही चमड़ा इस्तेमाल करना चाहिए।

जहाँ गाय-भैंसका इतना संहार होता है, वहाँ मरे हुए बकरेका चमड़ा तो कहाँसे मिल सकता है? आज तक तो मानव-जातिने माना है कि बकरा कतल होनेके लिए ही पैदा होता है। आज दशहरा है। कलकत्तेमें आज बकरोंकी बलि कालीके चरणोंमें चढ़ाई गई होगी।

घीका प्रश्न धनिकोंके लिए कठिन नहीं होना चाहिए। जिस प्रकार वे लवंडर, कोलनवाटर, टूथब्रश साथमें रखते हैं, उसी प्रकार उन्हें अपने साथ गायका घी भी रखना चाहिए। नहीं तो वे गोसेवाका नाम छोड़ दें। घीका प्रश्न जितना आसान है, उतना दूधका नहीं है। अल्मोड़ेमें पैसे देकर भी गायका दूध नहीं मिलता। उड़ीसामें भी वही स्थिति है। दूधका मावा पानीमें घोलकर उसका दूध बनाया जा सकता है। हॉलिक्सका पाउडर अच्छी चीज है, वह पचनेमें हल्का होता है। इसलिए हम उसका उपयोग करते हैं। लेकिन हम उसी प्रकारका पाउडर यहीं क्यों न बनाएँ? इस विषयका शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करके हमें यहीं पाउडर बनाना चाहिए, जिससे हिमालयकी चोटीपर भी गायका दूध मिल सके।

जमनालालजी का स्वास्थ्य इतना अच्छा नहीं है कि मैं उन्हें फिरसे जेल जानेकी इजाजत दूँ। अगर वे वहाँ जाकर बीमार हो गये, तो मैं उसे बरदाश्त नहीं करूँगा। यह लड़ाई तो लम्बी चलनेवाली है। जब मौका आयेगा मैं खुद उनसे

कहूँगा कि उठो, जेलमें चले जाओ। लेकिन उन्हें जेलमें न भेजने का ही मेरा आज का धर्म है। तब वे क्या करें? उन्होंने दो-तीन बातें मेरे सामने रखी — हरिजन, खादी, गोसेवा आदि। उनमें गोसेवाको मैंने पसन्द किया। शुरूसे ही इसमें जमनालालजी का हाथ रहा है और जो काम आज तक हुआ है, वह निष्फल नहीं गया। फिर भी वह मेरी मति और प्रकृतिके अनुसार चल रहा था। अब वह जमनालालजी की रायसे चलेगा।

गोरक्षा तो मूक प्राणियोंकी सेवा है। आज हरिजन दुर्बल हैं। लेकिन वे कल बलवान हो सकते हैं और अपने-आप प्रगति कर सकते हैं। क्योंकि मनुष्यकी सब शक्तियाँ उनमें मौजूद हैं। अगर कल हरिजन उठकर मंदिरोंका कब्जा ले लें तो मैं खुशीसे नाचूंगा। लेकिन गायमें वह शक्ति नहीं है। उसे खिलाओ-पिलाओ तो वह हृष्ट-पुष्ट होगी। फिर भी वह आपके अधीन ही होगी। आप उसे मारें-पीटें, कतल करें तो भी वह आपके खिलाफ बगावत नही कर सकेगी। तब उसकी रक्षा करनेवाला कौन है? जमनालालजी की आध्यात्मिक तृष्णा गोमाताकी सेवासे तृप्त होगी। इस विचारसे मैंने यह कार्य उनके ऊपर पूरी तरह छोड़ दिया है। इसमें वे अपनी सफल व्यापारीकी दृष्टि भी लगायेंगे और पारमार्थिक दृष्टि भी।

गोरक्षाका काम बहुत भारी है। उसके लिए शान्त चित्तसे जिन्होंने इस शास्त्रका अध्ययन किया है, ऐसे लोगोंका संग्रह करना होगा। जहाँसे माँग आवे, वहाँ हम निपुण गोसेवक भेज सकें, ऐसा दल हमारे पास हो जाना चाहिए। स्वामी आनन्द आना चाहते हैं, तो आ जायें; लेकिन वे थानामे बैठे-बैठे भी कार्य कर सकते हैं। वे अपनी सेवाका क्षेत्र निश्चित कर लें और उसी क्षेत्रमें अपनी शक्ति लगायें। इस प्रकार हिन्दुस्तानका नक्शा सामने रखकर छोटे-छोटे दस या सौ क्षेत्र बनाये जा सकते हैं और हरएक क्षेत्रका आदमी अपना हिसाब भेज सकता है। हिन्दुस्तानमें आज कई गोशालाएँ हैं। उनका निरीक्षण होना चाहिए, उनकी सुव्यवस्था होनी चाहिए। अगर किसी स्थानसे निष्णात सेवकके लिए माँग आये, तो वैसा सेवक भेजने की हमारी तैयारी होनी चाहिए।

गो-सेवक बनने के लिए पवित्र आदमीकी जरूरत है। सिर्फ होशियार आदमी वह काम नही कर सकता। इस कार्यके लिए दौरा करने की जरूरत मेरी समझमें नही आती। एक ही स्थानमें बैठकर काफी काम हो सकता है। वर्धामें जितने दूध पीनेवाले मिलें, उनको गायका दूध पिलायें। इतना तो अभीसे कर सकते हैं।

सर्वोदय, दिसम्बर, १९४१

६०० . पत्र : अमृतकौरको

३० सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

यह पत्र विलम्ब-शुल्कके साथ जायेगा। तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। जिन दो दिनोंका तुमने उल्लेख किया है उनमें भी मैं चूका नहीं हूँ। लेकिन यहाँकी डाक तो विचित्र है। ये ग्राम्य जीवनकी असुविधाएँ हैं। इन्हें मैं हँसते-हँसते सह लेता हूँ।

सम्मेलनकी प्रवृत्तियाँ तुम्हें कभी ठीक नहीं लगीं, इसलिए तुम्हारा उसे कुछ न देना बिलकुल सही है। मैंने तो पहले ही अपने अलग कारणोंसे 'ना' कर दिया है।

सुमनके[1] बारेमें क्या-कुछ किया जा सकता है,[2] मैं देखूँगा। वे जाजूजीको लिखें।

अगर मैं बाहर गया तो चाहूँगा कि तुम सेवाग्रामकी देख-रेख करो। लेकिन यह तभी हो सकता है जब तुम पूर्ण स्वस्थ हो जाओ। अगर स्वस्थ न हो पाओ तब तो मेरे लौटने तक बखूबी वहीं बनी रह सकती हो। यह बात पूरी तरह तुम्हारी मर्जीपर छोड़ दूँगा।[3] अगर गया भी तो मैं नहीं समझता कि बीस दिनमें या महीने-भरमें भी दौरा पूरा कर पाऊँगा। बहुत-कुछ मेरे स्वास्थ्य और निमन्त्रणों पर निर्भर करेगा।

तुम्हारी कलम मैंने मीराको सदाके लिए नहीं दे दी है।[4] उसे मैंने बता दिया था कि कलम तुम्हारी है और मेरे रैकमें तुम उसे सिर्फ मेरे लिखनेके लिए ही छोड़ गई हो। लेकिन उस समय मेरे पास और कोई कलम थी नहीं। तुम्हारे लौटने पर उसके लिए कोई और इन्तजाम कर देंगे और वह कलम वापस ले लेंगे। अभी मैं लीलावतीकी कलम और जो कलम मीराने लौटा दी है उसका इस्तेमाल कर रहा हूँ।

मैं नालवाड़ीमें नये गो-सेवा संघकी बैठकमें शामिल हुआ था।[5] जमनालालजी के कारण बैठक बहुत अच्छी और ठीक कामकाजी ढंगकी रही। ठीक समयपर आरम्भ हुई और ठीक समयपर समाप्त हो गई।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५७ से भी

१. हिन्दी कवि रामनाथ 'सुमन'

२ और ३. साधन-सूत्रमें इस वाक्यमें एक शब्द अस्पष्ट है, जिसे लेटर्स टु राजकुमारी अमृतकौर के आधारपर भरकर अनुवाद किया गया है।

४. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पृ० ३७५।

५. देखिए पिछला शीर्षक।

६०१. पत्र : अमृतकौरको

१ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

आज सुबह एक लम्बा पत्र विलम्ब-शुल्क चुकाकर तुम्हें भेजा है। वह कल रात लिखा था।

तुम्हारा छोटा-सा पुर्जा आज मिला। तो तुम्हें तीन पत्र एक साथ मिले। उनसे तुम्हें अपने सभी प्रश्नोंके उत्तर मिल गये होंगे। हेनकॉकको ११ को मिलनेका समय दे दिया है। अब उन्होंने लम्बा तार भेजकर कहा है कि उनके समाचार-पत्र के लिए तार द्वारा एक सन्देश भेज दूं। इतना सब मैं कैसे कर सकता हूँ? मैं कोशिश कर रहा हूँ।

साथमें एक पत्र भेज रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८८) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३९७ से भी

६०२. एक पत्र[1]

[१ अक्तूबर, १९४१][2]

प्रिय बहन,

आपके लड़केने तारसे आपकी बीमारीकी सूचना भेजी है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप उसके रिहा किये जाने पर जोर नहीं दे रही हैं। ईश्वर आपको शान्ति दे और आप स्वस्थ हो जायें। हमारी नहीं, परमात्माकी जो इच्छा होगी, वही होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३३२) से। सौजन्य: मैसूर सरकार

१. यह और अगला शीर्षक नई दिल्लीमें १९६९-७० में आयोजित गांधी-दर्शनके मैसूर मण्डपमें प्रदर्शित किये गये थे।

२. देखिए अगला शीर्षक।

६०३. पत्र : दोड्डमतीको

१ अक्तूबर, १९४१

प्रिय दोड्डमती,

तुम्हारा तार मिल गया था। तुम्हारा फैसला जानकर मुझे खुशी हुई। मैंने तुम्हारी माँको लिखा है। ईश्वरकी उनपर अनुकम्पा हो।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३३१) से। सौजन्य: मैसूर सरकार

६०४. पत्र : तैयबुल्लाको

१ अक्तूबर, १९४१

प्रिय तैयबुल्ला,

आपका और शर्माका पत्र पाकर खुशी हुई। कोई-न-कोई असम जायेगा। आप दोनोंको और जो आपके साथ हों उन सबको मेरा अभिवादन।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२) से

६०५. सन्देश : देशी राज्योंकी जनताको

१ अक्तूबर, १९४१

देशी नरेशों और जनताके पारस्परिक सम्बन्धोंके विषयमें मेरे विचार दृढ़ और सुनिश्चित हैं। मेरा निश्चित मत है कि युद्धकी गौरवमय संज्ञासे अभिहित इस क्रूर नरसंहारके बाद संसारमें अनिवार्य रूपसे जो नई व्यवस्था कायम होगी उसमें देशी नरेशोंका अस्तित्व तभी कायम रह पायेगा जब वे जनताके ऐसे सच्चे सेवक बन जायेंगे जिनकी शक्तिका स्रोत तलवार नहीं, बल्कि जनताका स्नेह और सहमति होगी।

चूँकि मेरा यह निश्चित विचार है, इसलिए देशी राज्योंकी जनताको मेरी सलाह है कि वह धीरजसे काम लेना सीखे और लगनके साथ चुपचाप रचनात्मक कार्य करते रहकर अपनेको उन दायित्वोंको सँभालने के लिए तैयार करे जो, उसके चाहे-अनचाहे, उसपर आयेंगे ही।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह जान-बूझकर किये जानेवाले उन घोर अत्याचारोंको, जिनकी इतनी सारी खबरें मुझे सुनने को मिल रही हैं, सिर झुकाकर स्वीकार कर ले। पीड़ितोंका कर्तव्य है कि उनसे जैसे बने वैसे वे इन अत्याचारोंका विरोध करें। मैं जो एकमात्र श्रेष्ठ तरीका जानता हूँ वह है अहिंसा का तरीका, जिसका दूसरा नाम जागरूकताके साथ और विचारपूर्वक किया जाने-वाला कष्ट-सहन है। लेकिन मेरे ध्यानमें ऐसे मामले भी आये हैं जिनमें इक्के-दुक्के लोगोंको सताया गया है और उनका घोर अपमान किया गया है। अगर यह सच हो और सताये गये लोग अहिंसाके मार्गसे अनभिज्ञ हों, तो वे अपनी समस्त हिंसात्मक शक्तिका प्रयोग करके अत्याचारोंका विरोध करें और यदि अपमान और अत्याचारके प्रतिरोधके प्रयत्नमें उन्हें अपने प्राणोंकी बलि देनी पड़े तो वह भी दें। जिस प्रकार किसी चूहे द्वारा किसी खूँखार बिल्लीका प्रतिरोध लगभग अहिंसा माना जायेगा, उसी प्रकार वह हिंसात्मक प्रतिरोध भी अहिंसाकी कोटिमें ही रखा जायेगा। यह कहते हुए मेरे मनमें सशस्त्र अत्याचारियों द्वारा सताये जा रहे एक निहत्थे आदमीका चित्र है। कोई शरीरसे चाहे जितना दुर्बल हो, यदि उसमें प्रतिरोधका संकल्प और बहादुरीके साथ मर मिटने की शक्ति है, तो उसे प्रतिकूलसे-प्रतिकूल परिस्थितिमें भी अपनेको असहाय महसूस करने की जरूरत नहीं है।

मैं चाहूँगा कि देशी नरेश मेरे इस दावेको मान लें कि मैं उनका सच्चा मित्र हूँ। और सच्चे मित्रके नाते मैं उनसे कहना चाहूँगा कि तलवारकी व्यर्थताको समझ लेना ही कालके इंगितको पहचानना है। बाइबिलकी उक्ति है: "तलवारका सहारा लेनेवाले व्यक्तिका अन्त तलवारसे होना निश्चित है।" इस उक्ति की सचाई प्रत्याशित समयसे पूर्व ही सिद्ध होने जा रही है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ३-१०-१९४१

६०६. तार : मथुरादास त्रिकमजीको[1]

२ अक्तूबर, १९४१[2]

मथुरादास त्रिकमजी
होमी विला
पंचगनी

जमनालालजी कल रवाना हो रहे हैं। तुमसे रविवारको मिलेंगे। ईश्वरकी इच्छा ही हमारे लिए विधान है। तारसे हाल सूचित करो।

बापू

[अंग्रेजीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २४८

६०७. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२ अक्तूबर, १९४१

मेरी रायमें तुम मौतके पंजेसे छूटे हो। मेरे मनमें तो यह डर बैठ गया था कि तुम बचोगे नहीं। अब तो तुम बच ही गये न? चिन्ता किसी बातकी मत करना। बम्बईको फिर बैंक बेमें डूबना हो, तो भले डूब जाये।[3] जनकपुरी जल रही थी और जनकका जब रोआँ भी नहीं हिला, तो हम जनकसे पीछे क्यों रहें? उनसे तो हमें ऊँचे उठना चाहिए न? यह कैसे होगा, सो तो भगवान् जाने। लेकिन उनके जैसा बनने का रास्ता तो वे दिखा ही गये हैं।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० १८१

१. मथुरादास त्रिकमजी गम्भीर रूपसे बीमार थे; देखिए अगला शीर्षक।
२. बापुनी प्रसादी के अनुसार
३. मथुरादास त्रिकमजी बम्बईके मेयर थे।

६०८. पत्र : तारामती म० त्रिकमजीको[1]

सेवाग्राम
२ अक्तूबर, १९४१

तुमपर चिन्ताका बड़ा भार आ पड़ा है। जमनालालजी वहाँ जा रहे हैं। एक-दो दिन रहेंगे। मथुरादाससे कहना, बापू सारे दिन तुम्हारी याद करते रहते हैं। वह धीरज धरे, ईश्वरका ध्यान करे और घबराये नहीं। और तुम तो बिलकुल मत घबराना। जीवन-मरण ईश्वरके हाथ है। लेकिन जबतक प्राण हैं तबतक सेवा है, और तबतक नाम-जप है।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० १८१

६०९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
२ अक्तूबर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

अब तो तुम आनेकी तैयारी कर रहे होगे। मथुरादास बहुत बीमार हो गये हैं। किसीको उनके पास भेज दो तो अच्छा हो। मैंने राधाको तो लिखा है। जमनालालजी को भेजने का विचार कर रहा हूँ। आशा है, तुम्हारा ठीक चल रहा होगा। गोसेवा संघकी हालमें स्थापना हुई है। जमनालालजी के लिए यह नई साधना है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

जमनालालजी कल रवाना होंगे। वहाँ होते हुए मथुरादासके पास जायेंगे।

तुम्हारा पत्र मिला। महादेवको दूसरे दर्जेमें ही सफर कराना पड़ेगा। एन्ड्रयूज [स्मारक कोष] का काम कैसा चल रहा है?

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५७

१. मथुरादास त्रिकमजीकी पत्नी

६१०. पत्र : मदालसाको

२ अक्तूबर, १९४१

चि० मदालसा,

आशा है, तू आनन्दपूर्वक होगी। यदि कोई उलझन हो तो मुझे लिखना। डाक्टर दासके लिए वहाँ जाना और काम करना लगभग असम्भव हो गया है। आशा है कि अब कुछ बहुत करने को नहीं रह गया होगा। खान-पानमें सावधानी बरतना। दाल, मसाले और घीमें बनी हुई चीजें मत खाना। स्वादकी चिन्ता बादमें करना। फिलहाल तो शिशुकी खातिर संयमका ही पालन करना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२१

६११. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

२ अक्तूबर, १९४१

चि० मणिलाल और सुशीला,

लगता है, मेरी बहनके साथ भेजा पत्र तुम्हें नहीं मिलेगा। वह सेन्सरके पास है। शायद देरसे मिले, तो कह नहीं सकता।

इस समय तो सब अनियमित हो गया है। और भी अधिक अनियमित होगा। आश्चर्यकी बात तो यह है कि इतनी भी नियमितता बनी हुई है। जहाँ रोज हजारों की हत्या हो रही है, वहाँ हमारी छोटी-मोटी अड़चनोंकी कोई कीमत ही नहीं है।

हम दोनोंकी तबीयत अच्छी है।

अब तो रामदास हमारा पड़ोसी हो गया है। फिलहाल तो शान्त मालूम होता है। तबीयत भी पहलेसे कुछ अच्छी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९२२) से

६१२. पत्र : पृथ्वीसिंहको

२ अक्टबर, १९४१

भाई पृथ्वीसिंह,

पत्र मिला। अहिंसाका जन्म तो मनुष्य-जातिके साथ हि हूआ। हिटलर भी अपनेंको तो नहिं मारता है। यह अहिंसा है अगरच बहूत थोडी। चूंकि अहिंसा आत्मा का स्वभाव है इसलिए या तो हम परेशान होकर पालन करेगा अथवा स्वेच्छासे, जैसे हम करन की कोशोश करते हैं। इतना समझो की जो सिद्ध करना है उसके मुकाबलेमें हमारा प्रयत्न मीं समुद्रके बिंदु-समान हैं। लेकिन बिंदु भी समुद्रका गुण रखता है इसलिये छोटो बात नहिं है। बाकी तो आओगे तब।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६५२) से। सी० डब्ल्यू० २९६३ से भी; सौजन्य : पृथ्वीसिंह

६१३. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको[1]

२ अक्टूबर, १९४१

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारी धोती पहनी है। खुश रहो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४८४) से

१. यह ब्रजकृष्ण चाँदीवालाके नाम लिखे प्रभावतीके पत्रमें ही नीचे लिख दिया गया है।

६१४. पत्र : जमनालाल बजाजको

२ अक्टूबर, १९४१

चि० जमनालाल,

खत मिला। मुझे लगता है कि फिरोज़[1] तुम्हारे साथ हि जाना अच्छा होगा। वह खुद रहना चाहे तो मुझे कुछ हरज नहिं है। कल आओगे तो अधिक बात कर सकेंगे।

मदालसा ठीक होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२४) से

६१५. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

२ अक्टूबर, १९४१

भाई घनश्यामदास,

तुमारा खत मिला। जमनालाल सब तुमपर छोड़ते है। वह मानते है कि मुझको दूसरी जगह भी ले जाना होगा। मैं अमदाबाद नहिं जाना चाहता हूं। जाउंगा अगर वहांसे निमंत्रण आवेगा तो। मुझको वहीं ले जाना चाहिये जिधर पैसे मिल सकें। ज० मानते है कि यह मौसम है जब धनिक लोग अपने घर रहते है। मेरा कोई आग्रह है नहिं कि मैं इस महिनेके मध्यमें हि शरू करू या दिल्ली पिलानी से। जो उचित हो वही किया जाय। महादेवसे मिलोगे, उसके साथ मशिवरा करके निर्णय किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०५१) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. फीरोज गांधी, जो अगले दिन आनेवाले थे।

६१६. भाषण: गांधी जयन्ती सभामें

२ अक्तूबर, १९४१

कोई काम चाहे जितना छोटा और तुच्छ हो, यदि वह सेवा-भावसे और लाभकी आशा न रखते हुए किया जाये तो ईश्वरकी दृष्टिमें बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। उदाहरणके लिए, अगर भंगीका काम निःस्वार्थ भावसे और सेवा-वृत्तिसे किया जाये तो वह बहुत अधिक मूल्यवान है।

गांधीजी ने श्रोताओंसे गो-रक्षाके काममें, उपेक्षावश दिन-दिन नष्ट होते जा रहे गोवंशकी रक्षामें सहायता देने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, अगर इस बुराईको समय रहते नहीं रोका गया तो देशके कृषि-धनके लिए इसका परिणाम बड़ा गम्भीर होगा।

अन्तमें उन्होंने उनसे चरखे और कताईका विकास करनेका अनुरोध किया।

मैं अपनी जयन्तीको कोई महत्त्व नहीं देता। इसके बजाय मैं इसे "चरखा-जयन्ती" कहता हूँ।

गांधीजी ने ग्रामवासियोंसे कहा कि अगर आप पसन्द करें तो मैं हर रात प्रार्थनाके लिए आपके बीच आ सकता हूँ, क्योंकि इससे आपके साथ हमारा सम्पर्क बढ़ेगा; लेकिन आपको समयकी पाबन्दी रखनी पड़ेगी और नियमित रूपसे प्रार्थना करनी पड़ेगी।[1]

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ३-१०-१९४१

६१७. तार: रघुनन्दन शरणको[2]

[२ अक्तूबर, १९४१ या उसके पश्चात्][3]

कामना है यह अस्पताल गरीबोंकी सेवा करे।

मूल अंग्रेजीसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. गांधीजी ने ग्रामवासियोंको उनके द्वारा प्रदर्शित सबसे अच्छी गायोंके लिए पुरस्कार दिये।

२ और ३. यह रघुनन्दन शरणके २ अक्तूबर, १९४१ के उस तारके उत्तरमें था जिसमें उन्होंने लोक सेवक संघ द्वारा खोले जानेवाले धर्मार्थ आयुर्वेदिक अस्पतालके उद्घाटनके अवसरपर गांधीजी से आशीर्वाद माँगा था।

६१८. पत्र : अमृतकौरको

३ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं फिर कहता हूँ कि तुम्हें नामजदगी[1] स्वीकार कर लेनी चाहिए।

मेरा दौरेपर निकलना अनिश्चित है, यह मैं तुम्हें लिख ही चुका हूँ। मैं इस बातसे सहमत हूँ कि अगर तुम पूरी तरह स्वस्थ नही हो जाती, या स्वस्थ हो जाने पर भी, यदि शिमलाकी आबोहवा तुम्हारे अनुकूल जान पड़ती हो, तो मैं जबतक दौरेसे लौट न आऊँ तबतक तुम वहीं बनी रहो। बल्कि अगर तुम्हें लगे कि वहाँ रहने से लाभ हो रहा है, तो पूरी तरह स्वस्थ होने तक तुम्हें वहीं रहना चाहिए।

प्या० का मुकदमा आज सुबह खत्म हुआ। फैसला तीसरे पहर सुनाया जायेगा। मदालसाके लड़का हुआ है। सब प्रसन्न हैं।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८९) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३९८ से भी

६१९. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

३ अक्टूबर, १९४१[2]

चि० अम्बुजम्,[3]

तुम्हारे चेकका उपयोग दीनबन्धु-स्मारकके लिए कर रहा हूँ। किची और उनकी पत्नीके बारेमें अच्छी खबर पाकर खुशी हुई। माँसे मैंने जबरदस्त बहादुरीके सिवा और किसी बातकी उम्मीद भी नही की थी। सेवाग्रामका मौसम अच्छा रहा है। तुम यहाँ जो सन्दूक छोड़ गई थी, उसके बारेमें पूछताछ कर रहा हूँ।

१. शिक्षा बोर्डकी सदस्याके रूपमें; देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पृ० ३९२।
२ और ३. देवनागरी लिपिमें हैं।

मैंने वह सन्दूक तभी बम्बई भेज दिया था और उसके बाद उसके बारेमें भूल गया। तुमने याद दिलाकर अच्छा किया।

सप्रेम,

बापू

श्री अम्बुजम्माल
९६, मोब्रेज रोड
आलवार पेठ[1]
मद्रास

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६१७) से। सौजन्य: एस० अम्बुजम्माल

६२०. पत्र: मीराबहनको

३ अक्तूबर, १९४१

चि० मीरा,

तुम्हें कल शनिवारको शाम ५ बजे मोड़पर पहुँचना है। वहाँ एक ताँगा खड़ा मिलेगा, जो तुम्हें मदालसाके पास पहुँचा देगा।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च:]

ज्यादा अच्छा यही होगा कि तुम ५ बजे यहाँ आ जाओ और राजेन बाबूके साथ चली जाओ।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८९) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८८४ से भी

१. तमिल लिपिमें

६२१. पुर्जा : आनन्द तो० हिंगोरानीको

[३ अक्तूबर, १९४१][1]

तुम्हें किसी भी बातपर दुःखी न होने की कला सीखनी है। इसका मतलब हुआ आनन्दकी अनुभूतिका अभाव। तुम मनकी इस समस्थितिको जितना अधिक साधोगे, सेवा करने में उतने ही सक्षम बनोगे।

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

६२२. पत्र : मदालसाको

३ अक्तूबर, १९४१

चि० मदालसा,

कल तुझे पत्र लिखने के बाद तेरा पत्र मिला। अब तो तेरे पत्रका उत्तर देने की जरूरत नहीं है। तूने अच्छी बहादुरी दिखाई।[2] डॉक्टर तुझे देखने जा रहा है। मुझे तो क्षमा कर देगी न? तुझे यहाँ आकर दर्शन देने हैं। प्रसन्न रहना। अपने खान-पानका खूब ध्यान रखना। जो डॉक्टर वहाँ जा रहा है वह आकर मुझे सब बतायेगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२१

१. आनन्द तो० हिंगोरानीने इसपर यही तारीख दर्ज की है।

२. मदालसाके पहले प्रसवके समय आरम्भमें कुछ आशंका पैदा हो गई थी, पर बादमें सब ठीक हो गया।

६२३. तार: हितैषी औषधालयके मालिकको

[३ अक्तूबर, १९४१ या उसके पश्चात्][1]

धन्यवाद। आशीर्वाद।

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६२४. पत्र: डी० डी० साठ्येको

४ अक्तूबर, १९४१

प्रिय डॉ० साठ्ये,

आपके पत्रके लिए अनेक धन्यवाद।

आपके सुझाव मेरे ध्यानमें हैं। मैं विचार कर रहा हूँ कि सम्भव क्या होगा। लोग जो देते हैं, मैं तो वही ले सकता हूँ।

छोटूभाईके सुझावोंपर अमल नहीं किया जा सकता। हमें टोलियाँ बनाने की आवश्यकता नहीं है, जैसा कि उन्होंने सुझाया है। हरएकको न्यूनतम परीक्षणमें खरा उतरना होगा। दिवाकरका सुझाव भी व्यावहारिक नहीं है। कुछ जिलोंमें लोग अधिक देंगे, कुछमें कम। यह तो एक स्वैच्छिक कार्य है। यदि केवल सच्चे पुरुष और महिलाएँ ही इस कार्यके लिए जायें, तो फिर उनकी संख्या चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, मुझे पूर्ण सन्तोष होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

मूल अंग्रेजीसे: डी० डी० साठ्ये पेपर्स। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. हितैषी औषधालयके मालिकका यह तार ३ अक्तूबर, १९४१ का था जिसके उत्तरमें गांधीजी ने यह तार भेजा था।

६२५. पत्र : आर० अच्युतन्‌को

४ अक्तूबर, १९४१

प्रिय अच्युतन्‌,

तुम्हारा साफगोई-भरा पत्र पाकर खुशी हुई। बहुत-सी गलतफहमी सिर्फ अज्ञानके कारण पैदा होती है। सभीको मेरा अभिवादन कहना।

तुम्हारा,
बापू
(मो० क० गांधी)

श्री आर० अच्युतन्‌
विद्यार्थी बन्दी, सेन्ट्रल जेल
राजामुंद्री, आन्ध्र

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८५१) से

६२६. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
४ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

फिर दर्द हुआ। मैं समझता हूँ कि यदि हम इसे पोषण देना बन्द कर दें तो इसके आने-जाने का सिलसिला आखिर अपने-आप ही चुक जायेगा। प्रकृतिका तरीका तो यही है। और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इसीपर चल रही हो। तले हुए कतले और इस तरहकी दूसरी चीजें नहीं लेनी हैं।

बाइबिलकी इस व्याख्याके बारेमें तुमने मुझे नहीं बताया था। लेकिन मैं बहुत-से सेवन्थ-डे एडवेन्टिस्टोंसे मिल चुका हूँ। इसलिए उसके उत्साहको मैं समझ सकता हूँ।

तुम्हारे गो-सेवा संघमें शामिल होने के औचित्यपर हम चर्चा करेंगे।

जरूरी हो जाने पर तुम, बेशक, शिक्षा बोर्डसे त्यागपत्र दे सकती हो।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९०) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३९९ से भी

६२७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

४ अक्तूबर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

अब तो हम जल्दी ही मिलेंगे। फिर भी यह एक बात लिखता हूँ। मणिबहन लिखती है कि . . .[1] मजदूरोंके विरुद्ध मालिकोंकी तरफसे एक मुकदमेमें खड़े होंगे। यह ऐसी बात है जिसपर विश्वास नहीं किया जा सकता। फिर भी मणि ऐसी भूल कैसे कर सकती है? इसलिए पहले तो मैंने . . .[2]को लिखने की सोची। फिर सोचा कि तुम्हारे वहाँ मौजूद रहते हुए मेरे लिखने की क्या जरूरत है? तुम्हीं इसका निबटारा कर सकते हो। मणिकी बात ठीक हो तो . . .[3]को बुलाकर तुम कहना कि यदि वे खड़े हों तो मजदूरोंकी तरफसे हों। मालिकोंकी तरफसे तो वे खड़े हो ही नहीं सकते। दूसरी बात यह भी है कि जहाँतक मैं समझता हूँ . . .[4] वकालतके धन्धेमें नहीं पड़ेंगे। उन्होंने तो देशसेवाका व्रत लिया है। कोई खास मुकदमा आ जाये तो ले भी लें। परन्तु यदि वे अन्य वकीलोंकी तरह प्रैक्टिस शुरू कर देंगे तब तो बहुत निन्दाके पात्र बन जायेंगे। मेरे दिमागमें यह बात साफ है कि वे प्रैक्टिसमें हरगिज नहीं पड़ेंगे। नैतिक दृष्टिसे अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए वे कांग्रेससे निकले हैं। इसके सिवा तो वे कांग्रेसके ही हैं। मैंने सोचा था कि वे उससे निकलकर मेरी तरह ज्यादा कांग्रेसी बन गये होंगे। मुझे वे सरल, हृदयकी बात समझनेवाले; त्याग-वृत्तिवाले और अपनी भूल सुधारनेवाले प्रतीत हुए हैं। यदि तुमपर भी ऐसी ही छाप पड़ी हो तो तुम उन्हें बुलाकर यह स्पष्ट कर दो। उनके प्रति हमारा व्यवहार यह मानकर हो कि वे कांग्रेसी हैं।

एक बात और। तुम जानते हो कि मौलाना चाहते हैं कि . . .[5] विधान सभासे हट जायें। मैं यह जरूरी नहीं समझता। राजेन्द्रबाबूने जरूरी नहीं समझा, प्रोफेसरने[6] नहीं समझा, और मैं समझता हूँ कि तुमने भी जरूरी नहीं समझा। क्या यह ठीक है? क्या इसमें सुधारकी जरूरत है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

क्या तुम जानते हो कि मदालसाके लड़का हुआ है? वह सकुशल है।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५८-५९

१ से ५: साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिये गये हैं।

६. जे० बी० कृपलानी

६२८. पुर्जा : नारणदास गांधीको

४ अक्तूबर, १९४१

मुझे तो यह छोटा और चुस्त मसौदा[1] अच्छा लगता है। लेकिन तुम सब लोगोंकी सम्मति लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/३) से

६२९. पत्र : नारणदास गांधीको

४ अक्तूबर, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। इससे पहलेका पत्र भी मिला था। तुम्हारा संविधान मुझे ठीक लगता है। इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। मेरी स्वीकृति भी उसीमें है।[2]

वहाँ का कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। धीरू बड़े कामका सिद्ध हुआ। शायद २ अक्तूबर तक तुम लाखकी संख्यातक पहुँच गये होगे। वैसे होता वही है जो भगवान्‌की इच्छा होती है। कनैयो कल अपना फोटोग्राफीका प्रशिक्षण पूरा करने कलकत्ता चला गया। शायद आभा उसके साथ आये। सब उसके पितापर छोड़ दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५९३ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. काठियावाड़ खादी बोर्डके संविधानका

२. देखिए पिछला शीर्षक।

६३०. पत्र : अमृतकौरको

५ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। चाहे कुछ भी हो जाये, तुम सेवाग्रामकी रहोगी। और चाहे तुम सेवाग्राममें रहो या कहीं और, सेवा तो करती ही रहोगी। इसलिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। सेवाग्राममें बीमार हो जाने की सम्भावनाके बारेमें तुम्हारे मनमें जो घबराहट है उसे छोड़ दो। मैंने तय किया है कि चिन्ता नहीं करनी है, या इतनी कम करनी है जितनी समझ लो कि बा या रामसरन दासके[1] बारेमें मैं करता हूँ।

यहाँ सब ठीक है।

कलसे मौसममें ठिठुरन होनी शुरू हो गई है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९१) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७४०० से भी

६३१. पत्र : मिर्जा इस्माइलको

५ अक्तूबर, १९४१

प्रिय सर मिर्जा,

आपका पिछले महीनेकी २८ का पत्र मिला। उससे पहलेका भी मिल गया था। दोनोंके लिए धन्यवाद!

पोलकके पत्रकी नकल बड़ी महत्त्वपूर्ण है। इधर भारतीय मामलोंके प्रति उसका रुख कुछ विचित्र हो गया है। उसके इस रुखके पीछे पूरी ईमानदारी है, महज इसीलिए इसे कुछ कम दुर्भाग्यपूर्ण नहीं माना जा सकता। जिस बातको वह बिलकुल अवास्तविक मानता है वह हमारे लिए सर्वथा वास्तविक है। पाकिस्तानकी बात अवास्तविक भले हो, लेकिन मैं उसे खतरनाक मानता हूँ। वैसे वह इतनी वास्तविक है कि उसे मामूली बात समझकर उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। हो

१. देखिए खण्ड ७५, "पत्र: अमृतकौरको", पृ० १।

सकता है, सविनय अवज्ञा भी अवास्तविक हो, किन्तु कोई इसे अवास्तविक कहे तो मैं उसका बुरा तो मानूँगा ही। सर तेज बहादुरका क्रोध अवास्तविक नहीं है। वह भारतकी मनःस्थितिका द्योतक है। मैं तो ऐसे किसी आदमीको नहीं जानता जो इस युद्धको भारतका युद्ध मानता हो। राजनीतिक दृष्टिसे जागरूक भारतीयोंकी भावनाकी पूर्ण उपेक्षा एक खतरनाक वास्तविकता है।

पोलककी तरह मैं भी हृदयसे यह कामना कर सकता हूँ कि ईश्वर आपको दोनों समुदायोंके बीच शान्ति-सौहार्द स्थापित करनेका साधन बनाये। पोलक इस बातको, जिसे वह पहले उतनी ही अच्छी तरह जानता था जितनी अच्छी तरह मैं जानता हूँ, भूल गया है कि देशी नरेश स्वतन्त्र नही है। उनकी अपनी कोई इच्छा नही है। ब्रिटेनकी इच्छा ही उनकी इच्छा है। उनकी अपनी कोई पद-प्रतिष्ठा नहीं है। जो पद-प्रतिष्ठा है वह वही है जो ब्रिटेन उनको समय-समयपर देता है। हमसे कोई ऐसा समझौता करने की बात कहना जिसमें देशी नरेश भी शरीक हों, लगभग यह कहने के समान है कि उसमें अंग्रेज भी शरीक हो।

अगर आपको लगे कि यह पत्र पोलकको भेजने से कोई लाभ होगा तो उसे भेज दीजिएगा। मैंने तो पोलकके विचारोंके सम्बन्धमें सिर्फ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी है — भले ही महज इस कारण कि मुझे उसके पत्रकी नकल भेजकर आपने जो सौजन्य दिखाया उसकी यही माँग थी।

आशा है, मेरी लिखावट पढ़नेमें आपको कठिनाई नही होगी।

आपको और आपके परिवारको अभिवादनपूर्वक,

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८६) से

६३२. पत्र : एल० कृष्णस्वामी भारतीको

५ अक्तूबर, १९४१

प्रिय कृष्णस्वामी,

तुम्हारा विस्तृत पत्र पाकर खुशी हुई।[1]

जिन परिस्थितियोंका तुमने जिक्र किया है, उनको देखते हुए सबसे समझदारीकी बात यही होगी कि तुम सत्याग्रहियोंकी सूचीमें से अपना नाम कटवा लो। इससे तुम्हारी प्रतिष्ठापर तनिक भी आँच नहीं आयेगी। इस लम्बे संघर्षमें हर ईमानदार पुरुष या स्त्रीको पर्याप्त अवसर मिलेगा। अगर तुम एक वैज्ञानिकके जैसा

१. कृष्णस्वामी भारती तभी जेलसे रिहा हुए थे। अपने २७ सितम्बर, १९४१ के पत्रमें उन्होंने लिखा था कि पारिवारिक परिस्थितियोंके कारण वे निकट भविष्यमें अपने को फिर गिरफ्तारीके लिए पेश करने में असमर्थ हैं।

उत्साह लेकर रचनात्मक कार्यक्रममें जुट जाओ तो मैं पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाऊँगा। इस कार्यक्रमके सहारेके बिना राष्ट्रकी दृष्टिसे सविनय अवज्ञाका कोई मूल्य नहीं है।

तुम्हारा,
बापू

श्री एल० कृष्णस्वामी भारती, एम० एल० ए०
एडवोकेट,
मदुरा, दक्षिण भारत

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९२६८) से। सौजन्य: एल० कृष्णस्वामी भारती

६३३. पत्र: अन्नदाशंकर चौधरीको

सेवाग्राम
५ अक्तूबर, १९४१

प्रिय अन्नदा,

इस मामलेमें तुम अपने सन्तोषके लिए कुछ करो, इसकी कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि वे पैसा भर चुके हैं।[1] मेरा करना वाजिब था, क्योंकि यदि उनसे गलती हुई होती तो वे टालमटोल करनेके दोषी बनते, और फिर मेरा व्यवहार उनके प्रति पहले-जैसा नहीं रह पाता। यदि तुम्हें यह बात न जँचे तो इस मामलेको आगे बढ़ाओ। तुम्हें सन्तोष दिये बिना मैं तुमपर कोई रोक लगाना नहीं चाहता।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. अन्नदाशंकर चौधरीने अपने २८ सितम्बरके पत्रमें गांधीजीसे अनुरोध किया था कि वे खादी प्रतिष्ठानके हिसाबकी, खासकर सतीशचन्द्र दासगुप्त द्वारा अ० भा० चरखा संघके पैसोंके उपयोगकी, जाँच करें।

६३४. पत्र : मगनलाल प्रा० मेहताको

५ अक्तूबर, १९४१

चि० मगन,

तेरा साफ-सुथरा पत्र मिला। तेरा आत्म-विश्वास सफल हो और तू पास हो जाये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२०) से। सौजन्य : मंजुला म० मेहता

६३५. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
५ अक्तूबर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। ठीक है, तुम नासिक में कुछ दिन रहकर फिर यहाँ आओ। मैं तो सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम अच्छे हो जाओ। एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत। मथुरादास बच जाये तो बड़ा अच्छा हो। मदालसा और बच्चा आनन्दमें है। मैं तो देखने नहीं गया। मेरा कलका पत्र मिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५९

६३६. पत्र : पोपटलाल चुडगरको

५ अक्तूबर, १९४१

भाई पोपटलाल,

सारी फाइलें देखते हुए तुम्हारे पत्रपर नजर पड़ी। तुम्हें उसकी प्राप्ति-सूचना भेजने का निशान उस पत्रपर नहीं है। मुझे कुछ धुंधली-सी याद है कि मैंने भाई किशोरलालसे प्राप्ति-सूचना लिखने को कहा था। लेकिन अगर प्राप्ति-सूचना तुम्हें न भेजी गई हो तो उसके आधारपर तुम यह अनुमान मत लगा बैठना कि तुम्हारे पत्रकी उपेक्षा की गई। मैंने पत्र पढ़ा था। उसमें दिये गये सुझावको अमलमें लाना फिलहाल सम्भव नहीं लगता।

बापूके आशीर्वाद

श्री पोपटलाल चुडगर
बैरिस्टर,
राजकोट, काठियावाड़

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०११८) से

६३७. पत्र : ख्वाजा खुर्शेद आलमको

५ अक्टूबर, १९४१

भाई ख्वाजा साहब,

आपका खत मिला। खादीकी दुकानमें बेचनेवाले बहुत कम दामसे काम करते हैं। इतने दामसे काम करनेवाले इस दरजेके मुसलमान बहुत कम मिलते है। यह लाचारीकी बात है। कोई अगर मिल जाते हैं वहां मुसलमान भी है। आपकी धमकी अच्छी नहीं लगती। यही सवाल आप अखबारमें भी पूछ सकते थे। सवाल अच्छा है। जवाब साफ है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३८. पत्र : अमृतकौरको

६ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र समयसे मिल गया है। एक साथ तुम्हें तीन पत्र क्यों मिले, यह मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह एक छोटा-सा गाँव है।

तुम्हें अपना कर्मफल तो भोगना ही है, सो भी प्रसन्नतापूर्वक। ऐसा लगता है कि ठण्ड इस साल जल्दी शुरू हो जायेगी। कुटियामें इतने परिवर्तन किये जा रहे हैं कि लौटकर आने पर तुम उसे पहचान भी न पाओगी।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

म[हादेव] १९ के पहले यहाँ नहीं आयेगा। इस समय वह मसूरीमें है।

[पुनः पुनश्च :]

राजा साहब अच्छे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

बा०

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७४०१ से भी

६३९. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

६ अक्तूबर, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

कनुभाई कलकत्तामें है। अगर तुम चाहो और आभाको पसन्द हो तो उसे कनुके साथ भेज सकते हो। इस बारेमें मैं तुम्हें पहले ही लिख चुका हूँ।[1] आशा है, तुम सब सकुशल होगे।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३२४) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. देखिए "पत्र : अमृतलाल चटर्जीको", पृ० ३७९।

६४०. पत्र: मार्गरेट जोन्सको

सेवाग्राम, वर्धा
६ अक्तूबर, १९४१

चि० कमला,

तुमने मुझे लम्बा पत्र लिखकर ठीक किया। मैं वह पत्र मेरीको भेज रहा हूँ। तुम परीक्षामें विशेष योग्यता-सहित उत्तीर्ण होगी, इसमें मुझे सन्देह नहीं था।[1] भगवान् करे तुम अपना पाठ्यक्रम इसी तरह पूरा करो। बेशक, जब इच्छा हो तब लिख सकती हो।[2]

बापू

[अंग्रेजीसे]
बापू – कन्वर्सेशन्स एण्ड कॉरेस्पॉण्डेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९७

६४१. पत्र: चन्दन शं० कालेलकरको

६ अक्तूबर, १९४१

चि० चन्दन,

तेरा पत्र मिला। तुम्हारा यह सम्बन्ध देश और तुम दोनोंके लिए कल्याणकारी सिद्ध हो।[3]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२६६) से

१. मार्गरेट जोन्स प्रसूति-विद्याकी पहली परीक्षामें सर्वप्रथम आई थीं।

२. एफ० मेरी बारके अनुसार, मार्गरेट जोन्सने गांधीजीसे पूछा था कि डायरी रोज न लिखकर जिस दिन कोई विशेष प्रसंग हो उसी दिन लिखी जाये तो कैसा रहेगा।

३. चन्दनका विवाह सतीश उर्फ शंकर कालेलकरसे हुआ था।

६४२. पत्र : चक्रैयाको

६ अक्टूबर, १९४१

चि० चक्रैया,

तुझे चकरी आई यह तो दुखकी बात है। मुझे लगता है कि उसका कारण तेरे मगजका बोज था। इसलिये तूने सब लिखा वह ठीक हि हुआ। लेकिन उसमें दुःखका कुछ कारण नहिं था।

पक्षपातकी बात सही है। उसमें दोष और किसीका नहिं है। सिर्फ बा का और मेरा है। बा मेरा-तेराको छोड़ नहिं सकती और न मैं बा को छोड़ सकता हूं। इसलिये आश्रमकी प्रगति रुक गयी है। लेकिन बा में और गुण बहूत है उसे मैं तो भूल नहिं सकता हूं। मेरी-तेरी काटना बहूत मुश्किल है। लेकिन जो परिवर्तन बा के जीवनमें हुआ है यह छोटी बात नहिं है। बा की पवित्रता कहांसे आई, उसकी सादगी, धैर्य वगैरह उच्च कोटिके गुण हैं। इसलिए बा का पक्षपात सहून करने योग्य है। बा के पक्षपातमें जहर नहिं है।

कृष्णचन्द्रको और शकरीबहनको तो तूने अन्याय हि किया है। कृष्णचन्द्र अपने लिये कुछ नहिं करता है। उसने तो घर छोड़ा। शिक्षा छोड़ी। और आश्रममें मेहनत करता है। उसने अगर ५ आनाका लोभ किया तो अपने लिये नहिं। वह किसीका पक्षपात नहिं करेगा। लेकिन डरके मारे कोई उसके पास कुछ करा लेवे वह दूसरी बात है। ऐसे हि शकरीबहनका। शकरीबहनको मैं कामसे मुक्त करूं तो वह तो बैठ जायगी। और उसे अच्छा लगेगा। उसकी प्रकृति तो ऐसी ही है। तुझे समजना चाहिये कि आश्रममें हम सब अपूर्ण है, तो भी अच्छे होने का प्रयत्न करते हैं। तेरा कर्त्तव्य यह है—तू अपने दोषोंको देख, दूसरोंके दोषोंके प्रति उदार हो ले। यह नियम हम सबके लिये है। मेरे मेजपर वानरकी त्रिमूर्ति देखी है न? उसने कान मूंदा है, आंख बंद है, मूंह बंद है। अर्थ यह है कि कानसे किसीका बुरा न सुन, न आंखसे देख, न ज़बानसे बोल। मेरी आशा है कि इतनेसे सन्तोष होगा। वार-बार पत्रको पढ़ना। तबीयत जल्दी अच्छी करना।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९११२) से। सी० डब्ल्यू० ९१८० से भी; सौजन्य : चक्रैया

६४३. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

७ अक्तूबर, १९४१

प्रिय सी० आर०,

प्रकाशम्के[1] तारसे पता चला कि तुम, वह और गोपाल रेड्डी रिहा हो गये हो।[2] मैंने तुम्हारे भाईको[3] कल ही लिखा है। यह पत्र मिलनेके पहले ही तुम उनसे मिल चुके होगे। उनके बारेमें यह कहना बिलकुल ठीक होगा कि विपत्ति अकेली नहीं आई है। आशा है, तुम्हारी ही तरह वे भी दुर्भाग्य और सौभाग्यको एक ही समझेंगे।

बापू

श्री च० राजगोपालाचारी
बजलुल्ला रोड
त्यागराजनगर
मद्रास

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९००) से; सौजन्य: सी० आर० नरसिंहम्। जी० एन० २०८१ से भी

६४४. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको

७ अक्तूबर, १९४१

चि० अन्नपूर्णा,

तेरा पत्र मिला। तू अधीर मत हो। बिस्तरमें पड़ी-पड़ी भी तू बहुत सेवा कर सकती है, कर ही रही है।

अब तो तुझे अनसूया-जैसी सखी मिल गई। वेडछी वगैरहको अच्छे पत्र ही लिखना। याद रख, तुझे वहाँसे ठीक होकर ही लौटना है।

विजयाबहन, वसुमतीबहन, पन्नालालभाई सब आज आ गये। और लोग भी आनेवाले हैं। अपना यहाँ इसी तरह चलता है।

१. टी० प्रकाशम्
२. श्री राजगोपालाचारी ६ अक्तूबर, १९४१ को रिहा हुए थे।
३. उनके दो पुत्रोंकी कुछ ही दिन पहले मृत्यु हुई थी।

कु० चं० के पत्रमें तूने 'अमृत' लिखा है। 'जामफल' को उर्दूमें 'अमरूद' कहते हैं। और भी भूलें थी लेकिन याद नही रही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४३२) से

६४५. पत्र : अमृतकौरको

७ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

आज मुझे अखिल भारतीय चरखा संघकी बैठकमें भाग लेना है[1] और इसी कारण यह पत्र डाक आनेसे पहले लिख रहा हूँ।

आशा है, तुम पहलेसे अच्छी होगी। स्टोक्सने[2] एक पेटी अच्छे सेब भेजे हैं। सेब बढ़िया है, लेकिन कुछ-एक रास्तेमें क्षतिग्रस्त हो गये है। विजया, वसुमती और पन्नालाल आज ही आये है। अन्य लोग भी आ रहे हैं और बहुतोंने आनेकी अनुमति माँगी है। आश्रम दिनों-दिन छोटा पड़ता जा रहा है। क्या तुम छोटी हो सकती हो? खैर, आश्रम तो हो ही रहा है।

सरदार १९ के पहले नहीं आनेवाले है।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय गुरुवारको आ रही है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९३) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७४०२ से भी

६४६. भाषण : अ० भा० चरखा संघकी सभामें

वर्धा

७ अक्तूबर, १९४१

आज दो-तीन मूल प्रश्नोंके बारेमें मुझे कुछ कहना है। पं० जवाहरलालका पत्र आप लोगोंने 'खादी-जगत्' में पढ़ा होगा। जवाहरलालकी भाषा हमेशा तेज होती है। लेकिन मैं समझता हूँ, यह अच्छा पत्र है। उसमें जो बात कही गई है उसपर हमें ध्यान देना चाहिए। उनके दिलमें असन्तोष है। वे पूछते हैं कि हम क्यों ज्यादा काम नही कर पाये। उन्हें लगता है कि हमने पूरा विचार नही किया। मैं बिलकुल

१. देखिए अगला शीर्षक।

२. सैम्युअल स्टोक्स

ऐसा तो नहीं कहूँगा। समय-समयपर हम विचार तो करते रहे हैं, आज भी करते रहते हैं। मगर इतना तो मैं भी मानता हूँ कि जितनी हमारी साधना होनी चाहिए थी, जितनी तपस्या करनी चाहिए थी, हम नहीं कर पाये। यही बात जवाहरलाल ने कही है। उनका तो नाम लेते ही जागृति और प्रेरणाकी याद आती है। पहले भी जवाहरलाल खादीकी उपयोगिता तो मानते थे। लेकिन वहाँ जेलमें वे उसे अधिक तीव्र रूपसे महसूस करने लगे हैं। उनके पत्रपर हमें जरूर विचार करना चाहिए।

जगह-जगहसे जो खबरें आ रही हैं उनसे पता चलता है कि खादीकी माँग बहुत बढ़ गई है। इतनी माँग है कि हम उसे पूरा नहीं कर सकते। चरखेकी भी माँग इतनी है कि हम उसे पहुँच नहीं पाते। हम क्या करें? कई जगह पहले सैंकड़ोंका काम था। अब वहाँ हजारोंतक बढ़ गया है। आपने सुना होगा, राँची (बिहार) में, जहाँ पिछली जयन्तीपर खादी बिक्री सिर्फ ६ सौ रुपयेकी थी, वहाँ इस साल दस हजार रुपये तक बढ़ गई। मैं तो कहता हूँ कि हम जितनी खादी बना सकते हैं, बनाते जावें। खादी बनाने में हमें डरना ही नहीं चाहिए कि वह कैसे बिकेगी। यह तो हमारी जबानसे निकलना ही नहीं चाहिए कि खादी बिकती नहीं। एक दिक्कत आ सकती है कि खादी ज्यादा पैदा करने के लिए हमारे पास पूँजी कम पड़े। अगर ऐसा हो तो उसे प्राप्त करने की कोशिश होनी चाहिए।

अब हमें अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि हमारे कामका ढंग क्या हो। एक आदमी लिखता है कि हमारे पास सूत बहुत हो गया है। उसे कैसे बुनवायें? हममें यह शक्ति होनी चाहिए कि हम इस तरहके सूतको बुनवा दे सकें या उस सूतको लेकर बदलेमें खादी दे सकें। जितना सूत आवे वह सब हम ले सकें और उसके बदलेमें जैसी और जितनी खादी दे सकें, दे दें।

दूसरे, हममें वह शक्ति भी आनी चाहिए कि हमारा सूत इतना अच्छा हो कि उसे मामूली बुनकर बुन सकें। कहा जाता है कि हम मिलके सूतके बराबर पक्का सूत नहीं कात सकते। एक हदतक यह बात सच है। लेकिन इससे मुझे सन्तोष नहीं है। हो सकता है कि हमारा सूत पूरी तौरसे मिलके सूतकी बराबरी न कर सके। फिर भी उस सूतसे हमारे सूतका इतना बड़ा अन्तर नहीं होना चाहिए। वह अन्तर दिन-दिन घटता जाना चाहिए। आजके हमारे सूतमें सुधारके लिए काफी गुंजाइश है। इसमें जितनी तरक्की होनी चाहिए थी उतनी नहीं हुई। अभी हमें बहुत काम करना है। खोज-बीन करके हमें लोगोंको बतलाना है कि अच्छा मजबूत सूत कैसे पैदा हो सकता है। इस विषयमें शोध करने की आवश्यकता है। इस ओर हमने काफी ध्यान नहीं दिया है। हम बहुत शिथिल रहे हैं।

हमको अपने कामका विकेन्द्रीकरण करना चाहिए। सूत जहाँ पैदा होता हो वहीं वह बुना जाना चाहिए। मध्यम वर्गके लोगोंने चरखा कातना शुरू किया तो इतना काम हो गया। इसी तरह अब अगर वे बुनाईका काम भी हाथमें ले लेवें तो बुनकरोंको हम जल्दी साथमें ला सकते हैं और आगे ले जा सकते हैं। इसकी भी हमें कोशिश करनी चाहिए।

चरखेकी माँग हर जगह बढ़ रही है। इससे भी पता चलता है कि लोग कातने की ओर झुक रहे हैं। मैंने तो यह फैसला ही कर लिया है कि हम जगह-जगह चरखे बाहरसे कभी नहीं भेज सकते, वे तो वहीं बनने चाहिए। मेरा कुछ ऐसा खयाल हो रहा है कि यह समस्या धनुष-तकुवा ही हल कर सकता है। वह हर जगह बनाया जा सकता है। यरवडा चरखेका अपना स्थान है और वह रहेगा। मगर वह हर जगह नही बनाया जा सकता। तकली हम करोड़ोंको दे सकें तो अच्छा ही है। लेकिन उसे चलाने के लिए विशेष काल, श्रम और एकाग्रताकी जरूरत पड़ती है। तकलीके द्वारा हम काफी सूत शायद तैयार भी न कर सकें। धनुष-तकुवेका ऐसा नही है कि उसपर चरखेके बराबर सूत काता जा सकता है। उसे चलाना आसान है और बनाना भी आसान। बगैर बढ़ईके भी वह बनाया जा सकता है। उसका तकुआ बनाने में कुछ दिक्कत आ सकती है मगर ज्यादा नहीं। क्योंकि तकुवेका टेढ़ापन कुछ हदतक धनुष-तकुवेमें निभ जाता है। एक दिन में करोड़ोंकी तादाद में धनुष-तकुवे हम बना सकते हैं। पहले-पहल लोगोंको इसकी ओर लाने में मुझे दिक्कत तो जरूर आयेगी, जैसी कि खादी और चरखेकी तरफ लाने में आई। मगर वह जल्दी ही दूर हो जायेगी। वस्त्र-स्वावलम्बी खादीका काम खूब फैलाना है। वह धनुष-तकुवेके द्वारा ही हो सकता है।

मैं इस बातसे सहमत नही हो सकता कि चन्द कारखानोंमें चरखे बनें और वहाँसे सब तरफ भेजे जायें। यदि इस प्रकार आपने चरखेका केन्द्रीकरण किया तो इसका खातमा ही हो जायेगा। चरखेकी सब चीजे जहाँ हम कातते हैं वहींपर बननी चाहिए। इसकी सम्भावना देखकर ही मैंने कहा है कि धनुष-तकुवा घर-घर चले। जबतक हमने सम्पूर्णतया इस चीजकी छान-बीन नही की है, तबतक हमें सिर्फ बुद्धिसे बहस न करनी चाहिए। बहस करने का अधिकार तो उसीको हो सकता है जिसने लगातार एक महीनेतक प्रतिदिन ९ घंटे धनुष-तकुवे पर काता हो। वह कह सकता है। इसलिए आप लोगोंसे कहता हूँ कि धनुष-तकुवेके बारेमें सोचिए। केवल मेरी कल्पना है इसलिए ही नही। आपका अनुभव अगर उल्टा हो तो मेरे कहने से इसे न मानिए। मैंने कत्तिनोंको आठ आने मजदूरी देने की बात कही थी, लेकिन तीन आनेसे आगे न बढ़ सके। अगर वही अनुभव यहाँ भी हो तो मैं क्या कर सकता हूँ? यह शोध और प्रयोगका विषय है।

उसी तरह सूतके बारेमें भी सोचो। जो भी सूत हमारे पास आ जाये उसका कपड़ा बना देने की ताकत पैदा करने की बात सोचो। स्वावलम्बनका सूत तो हमें जरूर लेना चाहिए। उसके जो दाम हम ठहरायें वह उन लोगोंको मंजूर करने चाहिए—चाहे पैसेके रूपमें या खादीके रूपमें, लेकिन हमें इनकार नही करना चाहिए। अगर हम सूत बुनवाने का इन्तजाम नही कर सकते तो जवाहरलालकी भाषामें कहना होगा कि "हमारी बुद्धि कुंठित हो गई है। विचार-शक्ति चली गई है।" यह तो हार मानने की बात है। हमें हारना नही है।

अगर हम बुनकरोंको नही अपनायेंगे तो भी काम नहीं चलेगा। लेकिन केवल उनके भरोसे हम आगे नही बढ़ सकते। आज वे मिलका सूत इस्तेमाल करते हैं।

इसको हमें बदलना है। उनको हाथका सूत देना है। मेरा तो खयाल है कि यह लड़ाई लम्बी चलेगी। बाहरसे कपड़ा नहीं आ सकेगा। कपड़ेके दाम भी बढ़ जायेंगे। सिर्फ हिन्दुस्तानकी ही मिलें यहाँके लिए कपड़ा बनायेंगी। मगर एक समय ऐसा भी आ सकता है कि जब वे भी पूरा कपड़ा न दे सकें। इस प्रकार हिन्दुस्तानमें कपड़ा दुर्लभ हो जायेगा। चीनमें भी ऐसा मौका आया था। लेकिन चीनी लोग तो बड़े उद्यमी ठहरे। उन्होंने अपने तरीकेसे घर-घर चरखा चलाकर अपना प्रश्न हल किया। हमारा तरीका कुछ न्यारा होगा। मगर कोशिश तो उतनी ही या उससे भी अधिक ही करनी पड़ेगी। आगे चलकर लोग हमसे कपड़े माँगेंगे और हम विवश होकर कहेंगे कि हमारे पास कपड़े नहीं हैं तो वह हमारे लिए शर्मकी बात होगी।

कपासके लिए भी हमें सोचना होगा। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि खादीकी दृष्टिसे जिस तरह हमें कपास पैदा करनी चाहिए अगर उस तरह करें तो हम विदेशी बाजारसे स्वतन्त्र हो जाते हैं। यदि मिलोंकी दृष्टिसे कपास पैदा करेंगे तो ऐसा नहीं हो सकता। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि मिलोंके लिए और खादीके लिए कपास पैदा करने का शास्त्र परस्पर-विरोधी है। मिलोंकी सहूलियत इसमें है कि चंद स्थानोंमें एकत्रित रूपमें कपास पैदा हो। उनकी यह कोशिश रहेगी कि बिखरे स्थानोंमें कपास पैदा होती हो तो धीरे-धीरे परिस्थिति बदलकर उसे एक स्थानमें पैदा किया जाये। लेकिन खादीके लिए यह जरूरी है कि हर देहातमें कपास पैदा हो। किसी देहातको अपनी कपासकी आवश्यकताके लिए दूसरे देहातपर निर्भर न रहना-पड़े। कपास एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाना खादीको नहीं पोसायेगा। हमें शीघ्रातिशीघ्र यह सोचने की जरूरत है कि हिन्दुस्तानके हरएक देहातमें कपास कैसे उपजाई जा सके।

एक और बात विचारके लिए मेरे पास आई है। हमारे जो खादी भण्डार हैं उनमें कई छोटे-छोटे भण्डार भी हैं। सवाल यह है कि किफायतकी दृष्टिसे उन भण्डारोंका काम एक-एक आदमी ही क्यों न चलाये? इस सिलसिलेमें यह सोचना होगा कि भण्डार कुछ परिमित समयके लिए ही खुले रहें या जितने अधिकसे-अधिक रह सकते हैं, रहें।

अगर हम खादी द्वारा सम्पूर्ण जीवन बनाना चाहते हैं तो हमें अपने भण्डारोंके लिए भी नियम बनाने होंगे। शहरोंके लिए और देहातोंके लिए अलग-अलग नियम होंगे। शहरोंके लिए मैं समझता हूँ कि हम अंग्रेज दुकानदारोंका अनुकरण करें। वे अपनी सुविधाके अनुसार दुकानें खोलते हैं। रविवारको बन्द रखते हैं। ग्राहकोंकी परवाह नहीं करते। धीरे-धीरे ग्राहकोंको आदत पड़ जाती है। हम भी तो समाजमें नई आदतें डालना चाहते हैं। इसीलिए हमको भी अपनी नीतिके अनुसार नियम बनाकर दुकानका समय निश्चित कर लेना चाहिए। देहातोंके लिए भी इसी दृष्टिसे विचार करना चाहिए। दक्षिण आफ्रिकामें हजारों बीघोंके लिए एक दुकान होती है। लोग खच्चरकी गाड़ियोंमें बैठ-बैठकर वहाँ सामान लेने आते हैं। कभी दुकानदार नहीं मिलता, क्योंकि दुकानमें एक ही आदमी होता है। लेकिन लोगोंको उसकी भी आदत हो जाती है। हमारे लिए भी यह जरूरी नहीं है कि हम अपने भण्डार दिन-भर खुले रखें। परन्तु यह चर्चाका विषय है।

इस प्रकार हमें इन सब बातोंका तफसीलवार विचार करना होगा। क्योंकि हम खादीको एक सम्पूर्ण जीवन बनाना चाहते हैं। हमारा सम्बन्ध कारीगरों, कत्तिनों और बुनकरोंसे है। उत्पादनके क्षेत्रमें हमारा आदर्श यह है कि सबको समान वेतन मिलना चाहिए। आजतक तो हमने कत्तिनोंसे बेगार कराई। इस तरह मजदूरोंसे ज्यादासे-ज्यादा परिश्रम लेकर उन्हें कमसे-कम वेतन देने की नीति कौटिल्यके अर्थ-शास्त्रमें से निकली है। अब हमें नई नीतिका प्रवर्तन करना चाहिए। हम कत्तिनोंको भी बुनकरोंके-जितना ही वेतन देंगे। रुई पैदा करनेवाले को भी बरकत होनी चाहिए। और इतना सब होने पर भी खरीददारपर कम बोझ पड़ना चाहिए। इस प्रकार हम एक समाजवादी समाजका निर्माण करना चाहते हैं। जो समाजवाद हिन्दुस्तानको हजम हो सकेगा वह इसी प्रकारका होगा। हाँ, यह गरीबोंका समाजवाद होगा, लेकिन मालदार गरीबोंका। इस प्रकारके सम्पूर्ण समाजवादी जीवनका विकास करना खादीका आदर्श है।

सारांश यह कि खादीकी दृष्टिसे हमें कपासकी खेतीसे लेकर खादीकी बिक्री तक सभी बातोंका विचार करना है। इस प्रकार जब हम एक स्वयं-पूर्ण समाजवादी समाजका निर्माण करेंगे तब हम विदेशी बाजारोंपर निर्भर नहीं रहेंगे। एक स्वयं-पूर्ण स्वावलम्बी किसानके-जैसा हमारा समाज होगा। ऐसे किसानके लिए उसका खेत ही उसका भण्डार है। जो फलता है वह खाता है। किसी साल फसल न हुई तो भूखा रह जाता है। न किसीसे माँगता है, न किसीको लूटता है।

बस, इतनी ही बातें मुझे कहनी थीं। हमें बुनाईकी तरफ खास ध्यान देना होगा। मैं हमेशा कहता आया हूँ कि जिस तरह हमने धुनने पर जोर दिया है उसी तरह हम बुनकर बनने पर भी जोर दें।

खादी-जगत्, अक्तूबर, १९४१

६४७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
८ अक्तूबर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मैं समझ गया। . . .[1] से तो मिलना बहुत जरूरी है। मैं उनके पीछे अवश्य पड़ूँगा। मैं तुम्हें मूलाभाईके मामलेमें बिलकुल नहीं घसीटना चाहता। उनके बारेमें जो होगा वह करूँगा।

राजाजी अभी नहीं आ सकते। उनके भाईके दो जवान, अच्छे पढ़े-लिखे लड़के अभी-अभी गुजर गये। उनके यहाँ और भी दो-तीन आदमियोंने बिस्तर पकड़ लिया है। इसलिए पहले तो वे बंगलौर जायेंगे। वहाँ कुछ दिन रह आयेंगे। तुम्हें भी उन्होंने समाचार तो जरूर दिया होगा। मैं भी चाहता हूँ कि तुम्हें यहाँके दो चक्कर

१. साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।

न लगाने पड़ें। इसलिए भले ही तब आना जब राजाजी वगैरह आयें। सत्यमूर्ति तो १० तारीखको आ ही रहे हैं। कमलादेवी [चट्टोपाध्याय] कल आयेंगी। प्रकाशम्[1] जरूर आयेंगे। आसफ अली जवाहरलाल और मौलानासे मिलकर आयेंगे, इसलिए अच्छा जमघट हो जायेगा। मैं सब व्यवस्था कर लूँगा।

तुम्हारा कर्त्तव्य तो स्वस्थ हो जाना है।

इन दिनों तो आश्रमपर लोगोंने धावा बोल दिया है। लोगोंकी माँग आती ही रहती है। मैं अधिकतर सबसे इनकार करता हूँ। जगह भी कहाँ है? नई इमारतें बनती ही रहती हैं, फिर भी आश्रम भरा रहता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २६०

६४८. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
९ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

मैं फिर मौनके समय लिखने के नये नियमका अनुसरण कर रहा हूँ।

तो तुम्हारी खाँसी बनी हुई है। बेचारे शम्मी! मुझे पूरा विश्वास है कि खाँसीका कारण आहारकी कोई गड़बड़ी है। चिकनाई, ज्यादा स्टार्च, खट्टे फल, भारी भोजन, पशु अथवा वनस्पतिसे प्राप्त होनेवाला अधिक मात्रामें प्रोटीन, दाल, थोड़ा-सा भी मसाला, सामान्य बदहजमी — मेरी मान्यताके अनुसार यही सब उसके कारण हैं। मेंकल तो शरीरके एक अंग-मात्रका इलाज करते हैं, पूरे शरीरका नहीं। जबतक तुम्हारा पाचन-यन्त्र ठीक नहीं हो जाता, उस इलाजसे रोगसे स्थायी मुक्ति नहीं हो सकती।

इस महीने मैं कहीं जानेवाला नहीं हूँ। लगभग सभी दिन कार्यक्रमोंसे भरे हैं। अगर राजाजी २० तारीखको आ जाते हैं तो बातचीतका दौर चार-पाँच दिन चलेगा।

कुटियामें काफी और व्ययसाध्य विस्तार किया गया है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

कमलादेवी आ गई हैं। सत्यमूर्ति कल आयेंगे। अमरावतीके दंगे शर्मनाक थे। बियाणीजी[2] रिहा हो गये हैं। वे कल मुझसे मिलने आ रहे हैं।

१. टी० प्रकाशम्
२. बृजलाल बियाणी, विदर्भ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

तुम अपने जितने भी पुराने कपड़े दे सको, मीराको चाहिए। यह तो जानती ही हो कि किस प्रयोजनके लिए। इतने दिनोंसे यह बात बार-बार भूल जाता था। अगर तुम्हारा आना अभी बहुत दिनोंतक अनिश्चित हो तो इधर आते-जाते किसी आदमीके साथ भेज देना।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९४) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७४०३ से भी

६४९. पत्र : पी० पी० एम० टी० पोन्नूसामी नाडारको

९ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पोन्नूसामी,

तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई। चक्रैयाकी तुमने जो खूब देखभाल की उसके बारेमें उसने मुझे सब-कुछ लिखा था।[1] परमात्मा तुम्हें सुखी रखे। ईश्वरकी कृपा ही थी कि तुम और तुम्हारा साथी यात्रामें उसके साथ थे।

तुम्हारा,
बापू

पी० पी० एम० टी० पोन्नूसामी
मार्फत—श्री पी० पी० एम० थंगैया नाडार, व्यापारी
तूतीकोरिन, द० भारत

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९६१) से। सौजन्य : टी० पी० शिवनन्दम्

६५०. पत्र : अमृतकौरको

१० अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

यह भी नये नियमके मुताबिक लिख रहा हूँ। तुम्हारा छोटा-सा पत्र उल्लास-कारी है। ईश्वर करे कि यह सुधार इसी तरह बराबर जारी रहे। सब सोच रहे हैं कि क्या तुम आओगी भी। मैं यही कहता रहता हूँ कि तुम आओगी, यद्यपि मेरे मनमें कुछ अनिश्चितता पैदा हो गई।[2]

१. देखिए पृ० ४३१।
२. शेष पत्र हिन्दीमें है।

कमलादेवी आज हि जाती है। अपनी मांको मिलकर चंद दिनोंके लिये आयेगी। दा० दास दो-तीन दिनमें कलकत्ता जायेंगे, थोड़े हि दिनोंके लिये। सत्यमूर्ति आज आये हैं। बँगलेपर ठहरे हुए हैं।

हवा तो यहां अच्छी है। दोपहरको कुछ गरमी-सी रहती है। बाकी ठीक है।

बापुके आशीर्वाद

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२५३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८८५ से भी

६५१. पत्र: सैयद महमूदको

दुबारा नहीं पढ़ा

१० अक्तूबर, १९४१

प्रिय महमूद,

राजेन्द्र बाबूके नाम तुम्हारा पत्र पढ़ा।

एकताके विषयमें मैं तुम्हारी बातोंका हृदयसे अनुमोदन करता हूँ। लेकिन जरा कम्बलोंके बारेमें पैदा हुई गलतफहमीकी तो कल्पना करो। क्या तुमने मेरी टिप्पणी[1] पढ़ी? यदि मैं अनाजका व्यापारी होऊँ तो क्या मुझे फौजके लिए सरकार के हाथों गेहूँ या अगर दवाफरोश होऊँ तो कुनैन बेचने से इनकार कर देना चाहिए? मान लो मैंने इनकार कर दिया और किसी अन्य व्यक्तिने वह चीज मुझसे खरीद कर सरकारके हाथों बेच दी तो मैं उत्तरदायित्वसे मुक्त कैसे हो जाऊँगा? युद्ध-प्रयत्न कोई मामूली चीज नहीं है। यदि तुम यह बुनियादी बात अभी नहीं समझ रहे हो, तो जब गोला-बारूद बनाने के लिए मेरी व्यक्तिगत सेवाएँ या मेरी निजी मेहनत जबरन् हासिल करने की कोशिश की जायेगी तब तुम समझ जाओगे। तब यदि मैंने वैसा करने से इनकार करने का साहस दिखाया तो यह बुनियादी फर्क तुम्हारी समझमें आ जायेगा। तुम्हें खूब चिन्तन करके इसे समझने की कोशिश करनी चाहिए, और या तो जबतक मैं तुम्हें कायल न कर दूँ या तुम मुझे कायल न कर दो, तबतक तुम्हें चुप नहीं बैठना चाहिए। सिन्धके बारेमें मौलानासे मिलकर उन्हें अपनी बात समझाओ। इस सम्बन्धमें मैं पूरी तरह तुम्हारे साथ हूँ। तुम स्वस्थ तो हो न?

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०७५) से

1. देखिए पृ० ३६७-६८।

६५२. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको

१० अक्तूबर, १९४१

चि० आनन्द[1],

तुम्हारी कल्पना तुम्हारी शत्रु है। तुमने ऐसा तो कुछ नहीं किया जिससे मैं नाराज होऊँ। फिर तुम्हें यह सोचनेका क्या अधिकार था कि मैं तुमसे नाराज हूँ? कमसे-कम इतना तो करो ही कि बिना प्रमाणके कोई धारणा न बना लो। मैं तो मौकेपर था ही, सो तुम मुझसे पूछ सकते थे। फिर तो मैं जो-कुछ बताता उससे तुम्हें हँसी आये बिना न रहती। अब "आगेसे ऐसा मत करना।"

तुम्हारी बहनकी तसवीर देना गँवारपन लगेगा। लेकिन अगर इससे पिताजीको खुशी हो तो तुम गँवारपन भी कर सकते हो।

मेरी राय उन्हें बता देना।

सप्रेम,

बापू

श्री आनन्द हिंगोरानी
मार्फत–पोस्ट मास्टर
इलाहाबाद, सं० प्रा०

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

६५३. पत्र : रघुवीर सहायको

सेवाग्राम, वरास्ता वर्धा (म० प्रा०)
१० अक्तूबर, १९४१

प्रिय रघुवीर सहाय,

तुम्हारे खूब विस्तृत और जानकारी-भरे पत्रके लिए धन्यवाद। जो बातें मुझे विभिन्न पत्र-लेखकोंके जरिये मालूम हुई थी, अपने विस्तृत पत्रमें तुमने उनकी पुष्टि की है। मैं स्थितिपर नजर रख रहा हूँ। आशा है, तुम सकुशल होगे।

तुम्हारा,
बापू

श्री रघुवीर सहाय
बदायूँ, सं० प्रा०

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२०६) से

१. यह देवनागरी लिपिमें है।

६५४. पत्र : हरिकृष्ण भाणजीको

१० अक्तूबर, १९४१

भाई ह० भा०,

आपका पत्र मिला। आप दिसम्बरमें अवश्य आकर मुझसे मिल जाइए। इस बीच आपको रचनात्मक कार्यमें दिलचस्पी लेनी चाहिए। कातने, पींजने और सूतकी अन्य क्रियाओंका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। हरिजन-सेवा करनी चाहिए। मुस्लिम, ईसाई और पारसीकी सेवा करनी चाहिए। आप यदि यह सब करेंगे तभी सच्चे सेवक कहला सकेंगे और तभी सविनय अवज्ञाके योग्य बनेंगे। इसके लिए सच पूछिए तो मेरे पास आनेकी जरूरत नही है।

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५५. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
१० अक्तूबर, १९४१

भाई वल्लभभाई,

यह पत्र पढ़ना और रास्ता सुझाना।

सत्यमूर्ति आज आ गये हैं। वे कल अपना मामला सुनायेंगे।

आशा है, तुम्हारा ठीक चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

बियाणी आ गये हैं। अमरावतीमें कहर टूट पड़ा।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २६१

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

सत्याग्रहियोंके लिए निर्देश[1]

१७ जून, १९४१

१. रिहा हुए सत्याग्रहीको, जितनी जल्दी हो सके, फिरसे सत्याग्रह करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि किसी कारण वह ऐसा करने में असमर्थ हो तो उसे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष अथवा प्रधान अधिकारीकी मार्फत महात्मा गांधीसे छूट पाने की अर्जी देनी चाहिए और छूट क्यों दी जाये, इसके कारण बताने चाहिए।

२. जिस दिन किसी सम्भावित सत्याग्रहीका नाम स्वीकृतिके लिए महात्मा गांधीके पास भेजा जाये, उसी दिनसे उसे अपना निजी कारोबार बन्द कर देना चाहिए और रचनात्मक कार्यक्रमके निम्नलिखित तेरह सूत्रोंमें से किसी एक या अनेक को कार्यान्वित करने के लिए पूरे मनसे लग जाना चाहिए :

(क) हिन्दू-मुस्लिम या साम्प्रदायिक एकता।
(ख) अस्पृश्यता-निवारण।
(ग) नशाबन्दी।
(घ) खादी।
(ङ) अन्य ग्रामोद्योग।
(च) देहातोंमें सफाई और स्वच्छता।
(छ) नई या बुनियादी तालीम।
(ज) प्रौढ़ शिक्षा।
(झ) स्त्रियोंका उत्थान।
(ञ) सफाई और स्वास्थ्यकी शिक्षा।
(ट) राष्ट्रभाषा-प्रचार।
(ठ) अपनी मातृभाषाके लिए प्रेम पैदा करना।
(ड) आर्थिक समानताके लिए कार्य।

३. प्रत्येक सम्भावित सत्याग्रहीसे अपेक्षा की जाती है कि वह एक डायरी रखेगा, जिसमें वह दिन-भरमें किये गये अपने कार्यका विवरण लिखेगा, और यह डायरी हर पंद्रहवें दिन सम्बन्धित प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीको पेश की जायेगी। सत्याग्रह करने की अनुमति केवल उन्हीं कार्यकर्त्ताओंको दी जायेगी जो अपने दैनिक कार्यसे अपनी योग्यता सिद्ध करेंगे।

१. देखिए पृ० ९८।

४. सत्याग्रहियोंकी सूचियाँ पास करने पर लगाये गये नये प्रतिबन्ध संघर्षके हितमें आवश्यक माने गये हैं, क्योंकि भविष्यमें इसके और बढ़ने और उत्तरोत्तर कठिन होते जाने की सम्भावना है। अतः जो नये सत्याग्रही आयें वे ऐसे होने चाहिए जो नई कसौटीपर खरे उतर सकें। कार्यालयमें इस आशयकी शिकायतें आई हैं कि नाम पास करने में अनुचित विलम्ब किया जाता है। तथापि, अपना नाम देने-वालोंको विलम्बके कारण अधीर नहीं होना चाहिए। उन्हें बीचका समय रचनात्मक कार्यक्रम चलाने में लगाना चाहिए।

पुरानी शर्तोंपर अपना नाम दर्ज करानेवाले किसी सत्याग्रहीको यदि नई शर्तें स्वीकार करना सम्भव न लगे, तो वह अपना नाम वापस लेने को स्वतन्त्र है और इस तरह नाम वापस लेना कोई बदनामीकी बात नहीं समझी जायेगी। वह देशकी जो भी अन्य सेवा कर सकता हो, करता रह सकता है। वह पहलेकी तरह कांग्रेस का सदस्य बना रहेगा।

५. नाम दर्ज करा चुकनेवाले सत्याग्रही स्थानीय निकायोंके लिए चुनाव नहीं लड़ सकते। जिन लोगोंने सत्याग्रहीके रूपमें नाम दर्ज कराने से पहले ऐसे चुनावोंके लिए उम्मीदवारीके पर्चे दाखिल कर दिये हैं, उन्हें या तो उम्मीदवारीसे अथवा सत्याग्रहसे अपना नाम वापस लेना होगा। सत्याग्रहीके रूपमें वे दोनों स्थानोंपर एकसाथ नहीं रह सकते।

६. रिहा हुआ कोई भी सत्याग्रही, जो किसी स्थानीय निकायका सदस्य है, महात्मा गांधीसे विशेष छूट पाये बिना उस निकायकी बैठकमें भाग नहीं ले सकता। यदि वह भाग लेगा तो उसका नाम सत्याग्रहियोंकी सूचीसे निकाल दिया जायेगा।

७. अपने जिलेका दौरा कर रहे ऐसे सत्याग्रही जिनकी गिरफ्तारी नहीं हुई है और जिनके नाम मंजूर कर लिये गये हैं, स्थानीय निकायोंकी बैठकमें भाग नहीं ले सकते।

८. वर्षाके दिनोंमें सत्याग्रही, आवश्यक होने पर, अपने गाँवको छोड़ अन्य किसी गाँवमें या ग्राम-समूहमें जम सकता है और सत्याग्रह व रचनात्मक कार्य जारी रख सकता है।

९. जो सत्याग्रही गिरफ्तार नहीं हुए हैं उन्हें अपने जिलोंका दौरा करते हुए अथवा दिल्लीकी ओर कूच करते हुए, अपने कार्यकी पाक्षिक रिपोर्ट प्रान्तीय कार्यालयको भेजनी चाहिए। उधर, प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियाँ उनके कार्यकी समेकित रिपोर्ट पाक्षिक या मासिक रूपसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके कार्यालयको भेजेंगी।

१०. इस तरहकी शिकायतें आई हैं कि कुछ सत्याग्रही असंयत भाषाका प्रयोग करते हैं। सत्याग्रहियोंको जानना चाहिए कि निन्दा और अपशब्दोंका प्रयोग, शब्द और भाव दोनोंकी दृष्टिसे, सत्याग्रहके विरुद्ध है और इसलिए इससे हमेशा बचना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

द हिस्ट्री ऑफ द इंडियन नेशनल कांग्रेस, जिल्द २, पृ० २७१-७२

परिशिष्ट २

क० मा० मुंशीका पत्र[1]

नैनीताल
२६ मई, १९४१

प्रिय बापू,

भाषाके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। लेकिन मेरे विचारोंने चूँकि इस विषयमें अंग्रेजीमें ही स्वरूप ग्रहण किया है, अतः उन्हें इसी माध्यमसे व्यक्त करना अच्छा होगा। कल सुबहके समाचारपत्रोंमें जब मैंने श्री भोगीलाल लालाके नाम आपका पत्र पढ़ा तभीसे मेरे मनमें भारी उथल-पुथल मची है। उस पत्रमें से मैं दो छोटे-छोटे अंश उद्धृत कर रहा हूँ:

> जो (कांग्रेसी) लोग (आत्म-रक्षाके लिए) हिंसक प्रतिरोधके पक्षमें है, उन्हें चाहिए कि वे कांग्रेससे निकल जायें और जैसा ठीक समझें वैसा आचरण करें और दूसरोंका वैसा ही मार्ग-दर्शन करे।
>
> कांग्रेसीको ऐसे किसी भी अखाड़ेसे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सम्बन्ध नही रखना चाहिए जहाँ हिंसक प्रतिरोधका प्रशिक्षण दिया जाता हो।

क्षमा करें, मैं स्वयको इन आदेशोंको मानने के लिए राजी नही कर सकता। जबसे ढाका, अहमदाबाद, बम्बई तथा अन्य स्थानोमें पाकिस्तान क्रिया-रूपमें सामने आया है, यह स्पष्ट हो गया है कि इस तरहके दंगे अगले कुछ वर्षों तक हमारे जीवनका अंग बने रहेंगे। यदि युद्ध भारतकी सीमाओंतक पहुँच जाता है अथवा ब्रिटेनका व्यवस्था बनाये रखनेवाला तंत्र ढीला पड जाता है, और यदि भीतरी या बाहरी शक्तियाँ संगठित हिंसाके जरिये जबरदस्ती भारतका विभाजन करने की कोशिश करती है, तो शायद इस प्रकारके दंगे अधिकाधिक संख्यामें और अधिक उग्र रूपमें होगे। यदि गुण्डागर्दीके कारण जन-जीवन, घर, मन्दिर और औरतोंकी इज्जतके लिए खतरा पैदा हो जाता है, तो मेरी दृष्टिमें आत्म-रक्षाके लिए संगठित प्रतिरोध हमारा परम और अनिवार्य कर्त्तव्य होगा, फिर चाहे वह प्रतिरोध किसी भी रूपमें क्यों न हो। क्या आप अखाड़ोंको उन्ही व्यायामशालाओंमें मानते हैं जहाँ हिंसक प्रतिरोधका प्रशिक्षण दिया जाता है? मैं आपको बता दूँ कि पिछले पन्द्रह वर्षोंसे अधिक समय से मेरा इस सूबेमें अखाड़ोंके आन्दोलनसे प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों तरहका सम्बन्ध रहा है। अखाड़ोंको व्यवस्थित ढंगसे चलाने के लिए जो दो सम्मेलन आयोजित किये गये — पहला बम्बईमें और दूसरा पूनामें — उनकी मैंने अध्यक्षता की थी। कई अखाड़ोंके साथ मेरे अब भी अनौपचारिक सम्बन्ध है। मै इन्हें अपनी जातिको आत्म-रक्षाकी कला सिखाने का एक आवश्यक माध्यम मानता हूँ। पिछले कई वर्षोंमें गुण्डागर्दीका मुकाबला करने के लिए हममें कुछ आत्मविश्वास जाग्रत करने में

1. देखिए पृ० ८१-८३, १०२ और १२५।

इन अखाड़ोंका बहुत बड़ा योग रहा है। कलसे बराबर बहुत कोशिश करते रहने के बावजूद, मैं खुदको यह विश्वास नही करा पाया हूँ कि मैंने पन्द्रह दिन पूर्व अपने जो विचार २२ मई, १९४१ के 'सोशल रिफॉर्मर' में छपे अपने एक लेखमें व्यक्त किये थे, उनमें संशोधन जरूरी है। मै उस लेखकी एक नकल आपको भेज रहा हूँ, ताकि जरूरत पड़ने पर सन्दर्भके लिए आप तुरन्त उसे काममें ला सकें।

१९३० में आपके सम्पर्कमें आने के बादसे ही आप मेरे लिए केवल एक राजनीतिक नेता नही, बल्कि उससे बहुत अधिक रहे है। आप हमारे पूरे परिवारके लिए पिता-तुल्य रहे हैं। आज मैं जिस थोड़ी-बहुत आध्यात्मिकताका दावा कर सकता हूँ, उसके लिए पिछले दस वर्षोमें आप एक प्रकाश-स्तम्भकी तरह मेरा पथ आलोकित करते रहे हैं। इसीलिए मुझे यह स्वीकार करने में पीड़ा होती है कि इस अन्तर्द्वन्द्वसे उबरने के लिए मेरा रास्ता खोजना निरर्थक रहा। बेशक, मैं मौन रह सकता हूँ या जो-कुछ आप कहते है उसे चुपचाप स्वीकार कर सकता हूँ, या कांग्रेस के साथ अपना सम्बन्ध और आपका विश्वास — जिनमें से दोनों मेरे जीवनकी बहुमूल्य निधियाँ है — गँवाने के भयसे आपके ही विचारों को प्रतिध्वनित करता रह सकता हूँ, या फिर हाथ-पर-हाथ धरे बैठा रह सकता हूँ। लेकिन मेरे मनमें कोई चीज ऐसा करने के खिलाफ विद्रोह करती है। मेरे लिए आप सत्यके प्रतिरूप हैं, और यदि मैं इस तरह मनमें शंका रखते हुए आपका अनुसरण करने का ढोंग रचता हूँ, तो मैं अपना आत्मसम्मान तथा ईश्वरसे प्रार्थना करने का अपना अधिकार खो बैठूंगा। मैं यह वचन नही दे सकता कि सभी सम्भव उपायों द्वारा हिंसासे अपनी रक्षा करने की खातिर मै न तो संगठित प्रतिरोध करूँगा, न उसका प्रचार या संगठन करूँगा और न उसके साथ अपनी सहानुभूति ही रखूंगा। मै नही चाहता कि मैं अपने प्रति अथवा अपने देशके प्रति, जिसकी अखण्डता आज खतरेमें है, बेईमान बनूं। साथ ही मै इस धर्म-संकटमें स्वयको आपकी प्रेरणा और मार्ग-दर्शनसे भी वंचित रखना नही चाहता हूँ। कृपया बताइए कि मुझे क्या करना चाहिए।

मेरी पत्नी २८ तारीखको नैनीतालसे रवाना होगी, और उसने आपको लिखा भी है। मैं फिर कौसानी जा रहा हूँ। यहाँसे मैं ९ जूनको रवाना होकर ११ को बम्बई पहुँचूंगा। क्या मेरा १२ या १३ तारीखको आपसे सेवाग्राममें मिलना आपके लिए सुविधाजनक होगा? मेरी आँखोंमें अभी भी तकलीफ है, अन्यथा मैं काफी स्वस्थ हूँ। मैं व मेरी पत्नी, दोनोंकी ओरसे आपको सादर प्रणाम।

आपका,
क० मा० मुंशी

[अंग्रेजीसे]
पिल्ग्रिमेज टु फ्रीडम, पृ० ४०९-४१०; **बॉम्बे क्रॉनिकल**, २७-६-१९४१ भी

परिशिष्ट ३

एलिनर रैथबोनको रवीन्द्रनाथ ठाकुरका उत्तर[1]

शान्तिनिकेतन
४ जून, १९४१

कुमारी रैथबोनने भारतीयोके नाम जो खुला पत्र लिखा है उससे मुझे गहरा दु:ख हुआ है। कुमारी रैथबोन कौन है, मै नही जानता। पर मैं यह मान लेता हूँ कि वह औसत "सदाशयी अंग्रेज" की मानसिकताका प्रतिनिधित्व करती है। उनका पत्र खास तौरसे जवाहरलालको लक्ष्य करके लिखा गया है और मुझे इसमें शक नही कि स्वतन्त्रता-सग्रामके उस महान योद्धाकी जबान यदि कुमारी रैथबोनके देशवासियो द्वारा जेलके सीखचोके पीछे बन्द न कर दी गई होती, तो वह उनके इस बिन-माँगे उपदेशका ठीक-ठीक और करारा जवाब देते। वह क्योंकि मजबूरन चुप है, इसलिए मेरे लिए, बीमार होते हुए भी, विरोधकी आवाज उठाना जरूरी हो जाता है।

इन महिलाने हमारे विवेकको इतनी अविवेकपूर्ण बल्कि धृष्ट चुनौती देकर अपने देशवासियोके ध्येयको नुकसान ही पहुँचाया है। इनकी नैतिक भावनाको हमारी इस कृतघ्नतासे आघात पहुँचा है कि "अंग्रेजी चिन्तनके सोतेसे भरपूर रसपान" करने के बाद भी हममें अपने निर्धन देशके हितोंके लिए कुछ चिन्तन बचा रह गया है। अंग्रेजी चिन्तनने, जहाँतक कि वह पाश्चात्य प्रबुद्धताकी सर्वोत्तम परम्पराओका प्रतिनिधि है, निश्चय ही हमें बहुत-कुछ सिखाया है। परन्तु, इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहूँगा कि हमारे जो देशवासी उससे लाभान्वित हुए है वे ब्रिटिश सरकार की हमें कुशिक्षित करने की कोशिशोंके बावजूद हुए हैं। पाश्चात्य ज्ञानसे हमारा परिचय किसी अन्य यूरोपीय भाषा द्वारा भी हो सकता था। संसारके अन्य सभी लोगो को क्या प्रबुद्धताके लिए अंग्रेजोंकी प्रतीक्षा करनी पड़ी है?

हमारे तथाकथित अंग्रेज मित्रोंकी यह मान्यता है कि यदि उन्होंने हमें "शिक्षित" न किया होता तो हम अभीतक अंधे युगमें ही रह रहे होते। पर यह उनका मात्र धृष्टतापूर्ण और झूठा आत्मसन्तोष है। भारतमें शिक्षाके जो सरकारी ब्रिटिश स्रोत हैं उनसे स्कूलोंमें हमारे बच्चोंको अंग्रेजी चिन्तनका सर्वोत्तम अश नही, बल्कि कचरा ही मिला है, जिसके कारण वे स्वयं अपनी संस्कृतिके पौष्टिक आहारसे वंचित रह गये हैं।

यह मान भी लें कि "प्रबुद्धता" के लिए हमारे पास केवल अंग्रेजी भाषा ही एक माध्यम बचा है, तो भी "उसके सोतेसे भरपूर रसपान" का कुल परिणाम यह हुआ कि १९३१ में, ब्रिटिश शासनके दो सौ वर्ष बाद भी, हमारी आबादीका लगभग एक प्रतिशत भाग ही अंग्रेजीका अक्षर-ज्ञान रखता था — जब कि सोवियत संघमें १९३२ में, सोवियत शासनके केवल पन्द्रह वर्ष बाद ही, ९८ प्रतिशत बच्चे शिक्षित

[1] देखिए पृ० ११८।

हो चुके थे। (ये आँकड़े एक अंग्रेजी प्रकाशन 'द स्टेट्समैन्स इअर बुक' से लिये गये हैं, जिसमें रूसके पक्षमें कोई गलती होना सम्भव ही नही है।)

परन्तु तथाकथित संस्कृतिसे भी अधिक आवश्यक है, अस्तित्वकी बिलकुल प्राथमिक जरूरतें, जिनके ऊपर ही ज्ञानका ऊपरी ढाँचा खड़ा हो सकता है। दो सौ से भी अधिक सालतक हमारे राष्ट्रके कोषको अपनी मुट्ठीमें कसकर बन्द रखनेवाले और उसके साधनोंका शोषण करनेवाले अंग्रेजोंने हमारे गरीब लोगोंके लिए आखिर क्या किया है?

अपने चारों ओर नजर डालने पर मुझे अन्नके लिए बिलखते भूखे नर-कंकाल नजर आते हैं। गाँवोंमें मैंने औरतोंको कुछ बूँद पीनेके पानीके लिए धरतीमें गढ़े खोदते देखा है, क्योंकि भारतीय गाँवोंमें कुएँ स्कूलोंसे भी ज्यादा दुर्लभ हैं। मुझे मालूम है कि आज खुद इंग्लैण्डकी आबादीके आगे भुखमरीका खतरा है और मुझे उससे सहानुभूति है। लेकिन जब मैं देखता हूँ कि ब्रिटिश नौसेनाकी पूरी शक्ति किस तरह खाद्यान्नसे भरे जहाजोंको इंग्लैण्डके तटतक पहुँचाने में जुटी है और जब यह याद करता हूँ कि अपने लोगोंको मैंने भूखसे दम तोड़ते देखा है और उनके लिए पासके जिलेसे एक गाड़ी चावल तक नही लाया गया, तो अंग्रेजोंका जो रवैया अपने देशमें है और जो भारतमें है उनकी पारस्परिक विषमता देखे बिना मैं नहीं रह सकता। तब अंग्रेजोंका हमें क्या इसलिए कृतज्ञ होना चाहिए कि वे अगर हमें भोजन नहीं दे सके तो कमसे-कम यहाँ कानून और व्यवस्था तो बनाये रख ही सके हैं? अपने चारों ओर नजर डालने पर मुझे देश-भरमें दंगे-फसाद होते दिखाई दे रहे हैं। बीसियों जानें चली जाती हैं, हमारी सम्पत्ति लुटती है, औरतोंकी बेइज्जती होती है, पर ब्रिटेनकी शक्तिशाली भुजाओंमें कोई हरकत नही आती। बस समुद्र-पारसे अंग्रेजोंकी यह भर्त्सना-भरी आवाज आती है कि हम अपना घर ठीक रखने के काबिल नहीं हैं।

इतिहासमें इस तरहके उदाहरणोंकी कमी नहीं है कि पूर्णतया सशस्त्र योद्धा तक ऊँचे दर्जेकी सैन्य शक्तिके सामने पीछे हट गये हैं, और इस युद्धमें ऐसे संयोग उपस्थित हुए है जब ब्रिटेन, फ्रांस और यूनानके सबसे बहादुर सैनिकोंको भी यूरोपमें लड़ाईके मोर्चेसे हटना पड़ा है, क्योंकि अधिक ऊँचे दर्जेके शस्त्रास्त्रोंसे वे पराभूत हो गये। लेकिन हमारे गरीब, निहत्थे और असहाय किसान, जिनपर अपने रोते-बिलखते बच्चोंका भी भार होता है, जब अपने घरोंको हथियारबन्द गुण्डोंसे बचा न सकने पर वहाँसे भाग खड़े होते हैं, तो अंग्रेज अधिकारी हमारी कायरतापर शायद तिरस्कारपूर्वक मुस्कराते हैं।

आज इंग्लैण्डका हर नागरिक अपने घर-बारकी दुश्मनसे रक्षा करने के लिए हथियार रखता है। लेकिन भारतमें लाठी चलाना सीखने तक पर राजाज्ञा द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया गया। हमारे लोगोंको जान-बूझकर निःशस्त्र और पुंसत्वहीन किया गया है, ताकि वे बराबर दब्बू बने रहें और अपने हथियारबन्द मालिकोंके रहमपर जिन्दा रहें। अंग्रेज नाजियोंसे सिर्फ इसलिए घृणा करते हैं कि उन्होंने विश्वपर उनके प्रभुत्वको चुनौती दी है और कुमारी रैथबोन हमसे यह अपेक्षा रखती है कि हम, गुलामोंकी तरह, उनके लोगोंके हाथ इसलिए चूमें कि उन्होंने हमारे हाथोंमें हथकड़ियाँ डाल दी

हैं। कोई सरकार कैसी है, इसकी परख उसके प्रवक्ताओंके दावोंसे नहीं, बल्कि जनता की खुशहालीमें उसके वास्तविक और प्रभावी योगदानसे होनी चाहिए।

अंग्रेज जो हमारे लिए अवांछनीय हैं और हमारे दिलोंमें अपने लिए कोई जगह नही बना सके, इसका कारण उनका विदेशी होना उतना नही है जितना कि यह तथ्य है कि उन्होने हमारे कल्याणका दायित्व लेने का दिखावा करते हुए उस महान् दायित्वके साथ विश्वासघात किया है, और अपने देशके कुछ पूँजीपतियोंकी थैलियाँ भरने के लिए भारतके करोड़ो लोगोंकी खुशी कुर्बान की है। मेरा खयाल था कि शिष्ट अंग्रेज इन अपकारोंपर कमसे-कम खामोश रहेगा और हमारी अकर्मण्यताके लिए हमारा आभार मानेगा। पर जब वह चोटके बाद अपमान भी करने लगता है और जलेपर नमक छिड़कने लगता है, तब तो शिष्टताकी सारी मर्यादा नष्ट हो जाती है।

[अंग्रेजीसे]
इंडियन एनुअल रजिस्टर, जिल्द २, पृ० २०२-३

परिशिष्ट ४

बातचीत: क० मा० मुंशी तथा अन्य लोगोंके साथ[1]

१२ जून, १९४१
(सुबह ९ से ११ बजे तक)

मुंशी: (क) युद्ध भारतकी सीमाओ तक पहुँच रहा है, और तब आन्तरिक व्यवस्थातन्त्र कमजोर पड़ जायेगा।

(ख) पाकिस्तानका सक्रिय रूप सामने है और पूर्वनियोजित दंगोंके रूपमें कुछ समय तक इसी तरह रहेगा।

(ग) पाकिस्तान हमारी लाशोंपर ही स्वीकार किया जा सकता है।

(घ) भारतकी स्वतन्त्रता और क्षेत्रीय अखण्डताके प्रश्न सैद्धान्तिक है। वास्तविक प्रश्न तो यह है कि गड़बड़ीके आगामी सालोंमें क्या हममें अपने घरों और जान-मालकी घरेलू दंगोंसे रक्षा करने की पर्याप्त शक्ति होगी।

(ङ) बहुत ही थोड़े कांग्रेसी आत्म-बलिदानके कार्यक्रमपर चल सकते हैं। इससे कांग्रेसमें केवल मिथ्याचार फैलेगा अथवा अन्य तत्त्व अधिक शक्तिशाली हो जायेंगे।

(च) यदि कांग्रेसी इस तरह कोई हिस्सा नही ले सकते, तो वे क्या करे? आज की सबसे तीव्र समस्यामें कोई भी कारगर भूमिका अदा करना उन्हें छोड़ देना होगा।

1. देखिए पृ० १२५।

गांधीजी ने आम स्थितिके बारेमें चर्चा की।

(दोपहर १२ बजे)

गांधीजी: (क) मुझे सरकारके साथ कोई समझौता होने की आशा नहीं है।

(ख) जिन्ना समझौता करेंगे, इसकी सम्भावना नहीं है, और दंगे बढ़ते ही जायेंगे।

(ग) आज कांग्रेसका जिस प्रकारका विधान है, उसके रहते दंगोंमें उसका कोई स्थान नहीं हो सकता। साथ ही यदि कांग्रेस दंगोंकी स्थितिसे नहीं निपटेगी, तो वह समाप्त हो जायेगी।

(घ) यदि मैं, चाहे थोड़े-से ही आदमियोंके साथ, आजके रास्तेपर चलता हूँ, तो इससे यह हो सकता है कि जन-साधारण, मौजूदा तरीकोंसे थक जाने पर— और ऐसी स्थितिकी कल्पना की जा सकती है—समस्याके समाधानके लिए मेरी खोज करे। हर हालतमें हम अपने पीछे ऐसी परम्परा छोड़ जायेंगे जो भविष्यमें देशके लिए सहायक होगी।

(ङ) हिंसात्मक आत्म-रक्षा अभियान संगठित करने के किसी भी प्रयाससे सरकारको कांग्रेसपर चोट करने का मौका मिल जायेगा। यह एक अखिल भारतीय समस्या है और उसे नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता।

मुंशी: मैं आपसे अलग होना नहीं चाहता। लेकिन आप मुझे बतायें कि मुझे अपनी सीमाओं और इस परिस्थितिको देखते हुए क्या करना चाहिए।

गांधीजी: जहाँतक कांग्रेसका सवाल है, कुछ लोगोंको स्वतन्त्र रूपसे कार्य करने के लिए कांग्रेससे बाहर हो जाना चाहिए। दंगोंमें कुछ करना इस संगठनके लिए खतरनाक होगा, क्योंकि उससे सरकारको इसे नष्ट करने का मौका मिल जायेगा।

(दोपहर बाद ३ से ५ बजे तक)

राजेन्द्र बाबू तथा मथुरा बाबूने बिहारकी स्थितिका ब्योरा दिया।

राजेन्द्र बाबू: (क) बिहारमें मेरा प्रभाव खत्म होता जा रहा है।

(ख) साफ बात यह है कि मुसलमान आक्रामक हैं।

(ग) हिन्दू भी उतने ही आक्रामक हैं और अपनेको संगठित कर रहे हैं।

(घ) हिन्दू महासभाका असर बढ़ता जा रहा है।

(ङ) शान्ति-सेनाकी बात कांग्रेसियोंके गले नहीं उतरती। उसे माननेवाले बहुत थोड़े लोग मिलेंगे।

गांधीजी: मैं मानता हूँ कि शान्ति-सेनाका विचार कांग्रेसियोंको आकर्षित नहीं करेगा। महादेवको भी अहमदाबादमें अबतक अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं मिली है।

श्री गोपीचन्द भार्गवने पंजाबकी स्थितिका विवरण दिया।

राजेन्द्र बाबू: मेरे खयालसे ये प्रारम्भिक मुठभेड़ें हैं और यह देखने के लिए हैं कि मुसलमान समाज उनसे कहाँतक प्रभावित होता है। यह लड़ाई सम्भवतः शीघ्र ही पूरी ताकतके साथ शुरू हो जायेगी।

मुंशी : यह गृहयुद्ध है। कांग्रेसको इसमें कारगर भूमिका अदा करनी चाहिए।

राजेन्द्र बाबू : मुसलमानोंके अत्याचारोंकी निन्दा करने के लिए एक भी मुसलमान नेता सामने नही आ रहा है और न ही वह यह कहने में शामिल होगा कि हमें अपनी कुर्बानी देनी चाहिए।

१३ जून, १९४१
(सुबह ९-३० से ११ बजे तक)

गांधीजी : (क) कांग्रेस एक संस्थाकी हैसियतसे हिंसात्मक आत्म-रक्षा अभियान संगठित नही कर सकती।

(ख) साथ ही, कांग्रेसके लिए यह आवश्यक हो सकता है कि वह उन लोगोंकी कोशिशोंको बढ़ावा दे जो अन्त:करणसे यह मानते हैं कि यह 'लड़ाई' किसी अन्य तरीकेसे रोकी जानी चाहिए।

(ग) वह हमेशा इस बातपर जोर दे सकता है कि ताकतका प्रयोग आत्म-रक्षाके लिए अथवा शालीन ढंगसे किया जाये। उदाहरणके लिए, देवालयों, औरतों और बच्चोंको किसी भी हालतमें हाथ न लगाया जाये।

तब डॉ० गोपीचन्दने पंजाबकी स्थिति बताई।

पंजाबके उत्तरी हिस्सेमें मुख्यत: मुसलमान, मध्यमें सिख और पूर्वमें हिन्दू रहते है। इसलिए उनमें मुश्किलसे ही कोई समानता है। लेकिन असली झगड़ा तो खेतिहर और गैर-खेतिहर लोगोंके बीच है। मुसलमानोंके रवैयेके बारेमे चर्चा हुई।

(दोपहर ढाई बजे)

अहिंसात्मक प्रतिरक्षाके सिद्धान्तमें, जहाँतक कि (क) अन्तर्राष्ट्रीय मामलों और (ख) घरेलू विवादोंका सम्बन्ध है, संशोधन करने के बारेमें कांग्रेसी मुसलमान नेताओंकी प्रतिक्रियापर चर्चा हुई।

गांधीजी : मौलानाने यह मान लिया है कि (क) में तो हिंसात्मक प्रतिरक्षा आवश्यक है, लेकिन (ख) में उन्हें वह मंजूर नही है।

डॉ० गोपीचन्द भार्गव : आसफ अलीका कहना था कि अहिंसात्मक आत्म-रक्षाके बारेमें भोगीलालको लिखे गांधीजी के पत्रमें[1] कांग्रेस-सिद्धान्तकी सही व्याख्या नही थी। कांग्रेस-सिद्धान्तका सम्बन्ध तो केवल स्वराज्य-आन्दोलनसे है, आन्तरिक मामलोंसे नही।

गांधीजी : लेकिन आन्तरिक मामलोंमें हिंसात्मक प्रतिरक्षाके प्रयोगके खिलाफ उन्होंने मौलानाका पक्ष लिया था।

मुंशी : वे नहीं चाहते कि कांग्रेसी हिन्दू हिंसात्मक तरीकेसे आत्मरक्षा करें; और वे मुसलमानोंको हिंसात्मक आक्रमणसे नही रोक सकते। इसका नतीजा यह होगा कि हिन्दू विभाजित हो जायेंगे और गृह-युद्धमें मुसलमानोंका विरोध नही कर सकेंगे।

१. देखिए पृ० ८१-८३।

राजेन्द्र बाबू : जो मुसलमान कांग्रेसी इस समय जेलसे बाहर हैं उनसे सलाह-मशविरा किया जा सकता है।

गाधीजी : यह जरूरी नही है। खानसाहब शुद्ध अहिंसाके पक्षमें हैं, मौलाना भी इसके पक्षमें हैं।

बम्बईकी स्थितिपर विचार किया गया।

गांधीजी : मैंने पूरे सवालपर विचार किया है। मुंशीके लिए यह रास्ता है:

(क) यदि वे जी-जानसे अपनेको शान्ति-सेनाके कार्यमें झोंक सकें, तो वे उसे भली-भाँति क्रियाशील बना सकेंगे।

(ख) यदि वे ऐसा नही कर सकते, तो वे कुछ महीनेके लिए हिमालय या अन्य किसी स्थानपर जा सकते है, और स्थितिपर निगरानी रखते हुए यह पता लगा सकते हैं कि उनका मन किस दिशामें कार्य कर रहा है और वे पहला मार्ग अपना सकते हैं या नही।

(ग) यदि वे इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि पहला मार्ग असम्भव है, तो उन्हें कांग्रेस छोड़ देनी चाहिए और हिन्दुओंको हिंसात्मक आत्म-रक्षाके लिए संगठित करना चाहिए। तुम चाहे जो मार्ग अपनाओ, हमारे व्यक्तिगत सम्बन्ध वैसे ही रहेंगे और मै तुम्हारे बारेमें अब-जैसी ही दिलचस्पी लेता रहूँगा।

मुंशी : आप जानते ही हैं कि आपके साथ मेरा कितना लगाव है, अत: मै आपसे अलग होना नही चाहता। अपनी पत्नीके साथ मैं इन विकल्पोंपर विचार करूँगा और अपना फैसला आपको बताऊँगा। लेकिन एक चीज निश्चित है कि आप जैसा कहते हैं मै उस तरह कर्म-विरत नही हो सकता। मै वर्षोसे सार्वजनिक जीवनमें हूँ। ईश्वरकी यही इच्छा थी कि इस घड़ीमें, जबकि मैं अपने देश, समाज और संस्कृतिको खतरेमें महसूस कर रहा हूँ, मैं जेलसे बाहर रहूँ। अतः यदि अब मैं कर्त्तव्यसे पीछे हटता हूँ तो अपनेको कभी माफ नही कर सकूँगा। (यहाँ मैं रो पड़ा।)

उसका सवाल ही पैदा नही होता। फिर भी यदि आप सोचते है कि कांग्रेस अथवा देशके हितके लिए मेरा सार्वजनिक जीवनसे अलग हो जाना जरूरी है तो मैं इसके लिए राजी हूँ कि :

(क) वापस जेल चला जाऊँ; या

(ख) सब-कुछ छोड़कर केवल अपने धन्धेमें लग जाऊँ।

गांधीजी : मै नही चाहता कि तुम जेल जाओ या सब-कुछ छोड़ केवल वकालत करने लगो।

मुशी : तब तो जहाँतक पहले मार्गका सवाल है, मेरी समूची आत्मा इस विचारका विरोध करती है। यदि मै उसे स्वीकार करता हूँ, तो मुझे उसमें पूरी तरह लग जाना चाहिए और सबसे पहले अपने-आपको प्रस्तुत करना चाहिए। मेरा खयाल है कि मै वैसा नही कर सकता, क्योंकि (क) मुझमें उतनी आत्मिक शक्ति नही है; और (ख) मैं जानता हूँ कि वैसा करना व्यर्थ होगा और ढोंगी बनकर मै वह काम हाथमें नहीं लूँगा। मेरी अन्तर्प्रेरणा कहती है कि मेरा देश और मेरी संस्कृति खतरेमें है। उनके लिए मैं जितना भी कर सकता हूँ, संघर्ष करना चाहता

हूँ, हालाँकि मैं यह जानता हूँ कि वह बहुत अधिक नहीं होगा, क्योंकि कोई कारगर कार्य करने के लिए मेरे पास न तो स्वास्थ्य है और न योग्यता ही है। लेकिन पहले मार्गके लिए आवश्यक आत्मिक शक्ति अर्जित करने के लिए मैं संघर्ष करता रहूँगा।

(ग) बम्बईके कांग्रेसियोंको अब भी यह विश्वास है कि गांधीजी कोई चमत्कार करेंगे और कांग्रेस सत्तामें आ जायेगी, इसलिए उन्हें अपने निहित स्वार्थ बरकरार रखने चाहिए।

(घ) शायद ही कोई व्यक्ति अपनी कुर्बानी देनेवाला मिलेगा।

(ङ) कई कांग्रेसियोंने उन नये संगठनोंकी सहायता की है और अब भी कर रहे हैं जो हिंसात्मक तरीकेसे अपने क्षेत्रोंकी रक्षा करते हैं।

(च) मुसलमानोंके पास अपनी मसजिदें और अपना संगठन है। दंगोंमें शुरूके कुछ दिन हिन्दू नुकसानमें रहते है।

(छ) बम्बईमें शान्ति-सेना सफल नहीं होगी, क्योंकि वह एक औद्योगिक नगर है, जहाँ एक ऐसा अपराधी वर्ग रहता है जिसे किसीकी भी जान लेने में कोई आपत्ति नहीं होगी।

गांधीजी : तुम्हारी स्वतन्त्रता खुद कारगर हो सकती है।

कृपलानी : इस दशामें यह आवश्यक है कि कुछ कांग्रेसी बाहर निकलकर वह कार्य करें जो यह संस्था नहीं कर सकती।

गांधीजी : यदि मुंशी पहला मार्ग नहीं अपना सकते, तो यह कांग्रेसके हितमें होगा कि वे कांग्रेससे बाहर चले जायें और उन्हे जैसा करने की प्रेरणा मिले वैसा करें। मैं उनकी स्थिति स्पष्ट करने के लिए एक वक्तव्य[1] जारी कर दूँगा। उन्हें अपने कांग्रेसी मित्रोंके साथ भी विचार-विमर्श करना चाहिए और यह मालूम करना चाहिए कि कांग्रेससे बाहर जाने में और प्रतिरक्षा अभियान संगठित करने में वे उनका साथ देंगे या नहीं।

डॉ० गोपीचन्द भार्गवने भोगीलालके पत्रका वह अंश पढ़कर सुनाया जिसमें स्थानीय विकल्प सुझाया गया था।

गांधीजी का झुकाव इस विचारकी ओर था कि बम्बईके कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओंको इस बातपर सोच-विचार करना चाहिए कि वे हिंसात्मक तरीकेसे आत्म-रक्षा करने का अधिकार चाहते है अथवा नहीं। राजेन्द्र बाबूने बताया कि इससे कांग्रेसकी एकता नष्ट हो जायेगी।

मुंशी इस बातसे सहमत थे और यह विचार त्याग दिया गया।

गांधीजी (मुंशीसे) : तुम बम्बई जाओ और अपने मित्रों आदिसे मिलकर लौट आओ। तब हम अन्तिम रूपसे कोई निर्णय करेंगे।

मुंशी : यह एक नया विचार है। कांग्रेससे बाहर जाना इतना आसान नहीं है। इस मामलेमें मुझे अपनी पत्नीके साथ विचार-विमर्श करना होगा।

१. देखिए पृ० १२५-२७।

गांधीजी : मैंने उससे कह दिया है कि तुम जो भी काम करो, उसमें वह तुम्हारी मदद करे।

मुंशी : लेकिन उसे शायद मेरी अपेक्षा आपके साथ रहना अधिक पसन्द हो।

गांधीजी : मैं जानता हूँ, वह तुम्हारे ही साथ रहेगी।

[अंग्रेजीसे]

पिल्ग्रिमेज टु फ्रीडम, पृ० ४११-१५

परिशिष्ट ५

क० मा० मुंशीका वक्तव्य[1]

मुझे महात्मा गांधी तथा कई मित्रोंके साथ देशकी वर्त्तमान स्थितिपर विस्तार-पूर्वक चर्चा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पूरा विचार करने के बाद मुझे लगता है कि देश-हितका यह तकाजा है कि आत्म-रक्षाके सवालपर मेरे जो विचार हैं उनके रहते मुझे अब और कांग्रेसका सदस्य नहीं रहना चाहिए। कोई अन्य मार्ग अपनाना न तो मेरे लिए सम्मानजनक होगा और न उससे देश अथवा कांग्रेसके प्रति न्याय होगा।

मेरे स्वास्थ्यकी दशा इस समय अनिश्चित और गिरी हुई होने के कारण, गांधीजी मेरे सत्याग्रह करने की बातपर विचार करने को तैयार नही हैं। और अपने में आवश्यक आत्मिक शक्ति न होने के कारण, मैं बम्बईमें शान्ति-सेनाका कार्य करने की सोच नहीं सकता था। साथ ही अपनी आँखोंके समक्ष खेली जा रही इस रक्त की होलीको रोकने मे मदद न देकर अन्य किसी कार्यमें लगना मेरे लिए कर्त्तव्य-विमुखता ही होगी। मैं समझता हूँ कि यदि मैं आज ईश्वरकी अनुकम्पासे प्रदत्त प्रकाशमें अपने कर्त्तव्य-पथका अनुगमन नहीं करता, तो भारतके सामने जो अन्धकारमय दिन आनेवाले हैं उनमें मैं देशके लिए किसी भी कामका न रह जाऊँगा।

गांधीजी तथा अनेक कांग्रेसी नेताओंके साथ मेरा जिस तरहका व्यक्तिगत सम्बन्ध है, उसके कारण मेरे लिए यह निर्णय कठिन हो जाता है। परन्तु, जो गांधीजी की दृष्टिमें कांग्रेसकी आस्थाका मुख्य सूत्र है, यदि मैं उसीपर मनमें शंका रखते हुए कांग्रेसमें रहा तो मैं उनके विश्वासके योग्य नहीं रहूँगा। मुझे एकमात्र सन्तोष इस बातका है कि गांधीजी ने सदाकी तरह अपनी उदारता दिखाते हुए, एक ऐसा निर्णय लेने में मेरी मदद की है जो तात्कालिक कर्त्तव्यके सम्बन्धमें मेरे अपने दृष्टिकोणके अनुरूप है।

[अंग्रेजीसे]

पिल्ग्रिमेज टु फ्रीडम, पृ० ४१६-१७

1. देखिए पृ० १२६-२७

परिशिष्ट ६

"श्री गांधीकी स्वीकारोक्ति"[1]

श्री गांधीने एक अमेरिकी समाचार-एजेन्सीके साथ अपनी भेंट-वार्त्तामें एक स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण स्वीकारोक्ति की है। जब उनसे यह पूछा गया कि उनके जो अनुयायी इस समय जेलमें हैं उनमें से कितने उनके इस विश्वासको हृदयसे मानते हैं कि हिंसा कभी भी ठीक नहीं हो सकती, तो उन्होंने उत्तर दिया कि "मैं यह कहने पर आपत्ति नहीं करूँगा कि ज्यादातर लोग केवल नीतिके तौरपर अहिंसक हैं। यह मेरे आन्दोलनका सबसे कमजोर अंग है . . .।" श्री गांधीके सविनय अवज्ञा आन्दोलनके निष्पक्ष प्रेक्षकोंको तो शुरूसे ही ऐसा सन्देह था, और हाल में ही उनके इस सन्देहकी पुष्टि श्री मुंशी और डॉ० सत्यपाल[2]-जैसे लोगोंके गांधीजी के समुदाय से अलग हो जाने से हो गई है। श्री गांधीने अब स्वयं सार्वजनिक रूपसे, और पहली बार, यह मान लिया है कि अहिंसाके नारेका राजनीतिक तौरपर अनुचित लाभ उठाया जा रहा है। फलितार्थमें, उन्होने यह भी मान लिया है कि इस प्रकारसे अनुचित लाभ उठाना उन्हें नापसन्द है और वस्तुतः इससे उनका आन्दोलन कमजोर होता है।

शुरूमें जब आन्दोलन छेड़ा गया था, तो व्यापक रूपसे यह विश्वास किया जाता था कि जो लोग श्री गांधीकी अहिंसाकी व्याख्यासे पूर्णतया सहमत हैं, केवल वे ही स्वयंको जेल जाने के लिए पेश करेंगे। फिर भी, जैसा कि अब हम जानते हैं, ज्यादातरने अपने नाम अहिंसामें अपने विश्वासके कारण नहीं, बल्कि "केवल नीतिके तौरपर" पेश किये। उनमें से कुछने पार्टी-संगठनमें निष्ठाकी भावनावश, और दूसरोंने सन्दिग्ध प्रयोजनोंकी सिद्धिके लिए ऐसा किया। यह असंगति पैदा होने देने में सबसे ज्यादा दोष श्री गांधीका ही है और वे उससे बच नहीं सकते। सत्याग्रहियोंके नाम मंजूर करने के लिए व्यक्तिगत रूपसे वे ही जिम्मेदार हैं। और यह मानना भी तर्कसगत होगा कि कमसे-कम कुछ मामलोमें तो उन्होने ऐसे नामोंकी स्वीकृति दे दी जिनके बारेमें उन्हें मालूम था कि वे उनकी निर्धारित शर्तोंको पूरा नहीं करते। यदि श्री गांधीका आन्दोलन ऐसे लोगोकी जेलमें मौजूदगीके कारण, जो "केवल नीतिके तौरपर" जेल गये है, कमजोर पड़ गया है, तो श्री गांधीने यह सिद्ध कर दिया है कि वे स्वयं ही अपने सबसे बड़े शत्रु हैं। या तो उन्होंने सत्याग्रहके अपने नियमोंकी व्याख्यामें ढील की है, अथवा जिन लोगोंके नाम पेश किये गये उनमें से ज्यादातरने उन्हें धोखा दिया है। इनमें से कौन-सी बात सही है, यह तो श्री गांधी ही ठीक बता सकते है।

[अंग्रेजीसे]

टाइम्स ऑफ इंडिया, २९-७-१९४१

१. देखिए पृ० २१९।

२. जिन्होंने १४ जुलाई, १९४१ को कांग्रेस दलसे त्यागपत्र दे दिया था।

सामग्रीके साधन-सूत्र

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद।

नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली : गांधी-साहित्य और गांधीजी से सम्बन्धित कागज-पत्रोका केन्द्रीय संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

विश्वभारती पुस्तकालय, शान्तिनिकेतन।

साबरमती संग्रहालय, अहमदाबाद : गांधीजी से सम्बन्धित पुस्तकों और कागजातका पुस्तकालय तथा अभिलेखागार।

'कल्कि' : मद्राससे प्रकाशित तमिल साप्ताहिक।

'खादी-जगत्' : कृष्णदास गांधी द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक। इसका प्रथम अंक २५ जुलाई, १९४१ को प्रकाशित हुआ था।

'गुजरात समाचार' : अहमदाबादसे प्रकाशित गुजराती दैनिक।

'टाइम्स ऑफ इंडिया' : बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' : बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'सर्वोदय' : गांधी सेवा संघके तत्त्वावधानमें प्रकाशित तथा काका कालेलकर और दादा धर्माधिकारी द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक।

'हिन्दू' : मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

उड़ीसा सरकार।

तमिलनाडु सरकार।

प्यारेलाल पेपर्स : नई दिल्लीमें श्री प्यारेलालके पास सुरक्षित कागजात।

बम्बई सरकार।

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी : स्वराज्य आश्रम, बारडोलीमें सुरक्षित।

मैसूर सरकार।

'एन एथीस्ट विद गांधी' (अंग्रेजी) : जी० रामचन्द्रराव, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९५१।

'(ए) डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस' (अंग्रेजी) : रिचर्ड बी० ग्रेग, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४१।

'दीनबन्धुको श्रद्धांजलियाँ' : सम्पादक : प्रभुदयाल विद्यार्थी; प्रकाशक : पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय और पटना (बिहार), १९४१।

'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद' : सम्पादक : काकासाहब कालेलकर, जमनालाल बजाज ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

पिल्ग्रिमेज टु फ्रीडम' (अंग्रेजी) : क० मा० मुंशी; प्रकाशक : भारतीय विद्या-भवन, बम्बई, १९६७।
'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस' (अंग्रेजी) : किशोरलाल घ० मशरूवाला, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४१।
'बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने' (गुजराती) : सम्पादिका : मणिबहेन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।
'बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने' (गुजराती) : सम्पादिका : मणिबहेन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५२।
'बापुनी प्रसादी' (गुजराती) : मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९४८।
'बापू — कंवर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पॉण्डेंस विद महात्मा गांधी' (अंग्रेजी) : एफ० मेरी बार, इन्टरनेशनल बुक हाउस लि०, बम्बई, १९४९।
'बापू : मैंने क्या देखा, क्या समझा ?' : रामनारायण चौधरी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५४।
'बापूकी छायामें' : बलवन्तसिंह, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९४७।
'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष' : हीरालाल शर्मा, ईश्वरशरण आश्रम मुद्रणालय, प्रयाग, १९५७।
'बिल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया . एस० श्रीनिवास अय्यंगार' (अंग्रेजी) : के० आर० आर० शास्त्री, प्रकाशन विभाग, सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, १९७२।
'मध्य प्रदेश और गांधीजी' : सूचना और प्रकाशन निदेशालय, मध्य प्रदेश, भोपाल, १९६९।
'महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी', जिल्द ६ (अंग्रेजी) : डी० जी० तेंदुलकर, विट्ठलभाई के० झवेरी और डी० जी० तेंदुलकर, बम्बई, १९५३।
'(द) हिस्ट्री ऑफ द इंडियन नेशनल कांग्रेस', जिल्द २ (अंग्रेजी) : डॉ० पट्टाभि सीतारामय्या, पद्मा पब्लिकेशन्स लि०, बम्बई, १९४७।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१६ अप्रैल, १९४१ – १० अक्तूबर, १९४१)

१६ अप्रैल: गांधीजी सेवाग्राममें रहे।

१८ अप्रैल : अहमदाबादमें साम्प्रदायिक दंगे शुरू।

१९ अप्रैल : गांधीजी ने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' को वक्तव्य दिया।

२५ अप्रैल : एल० एस० एमरीके भाषणके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

२७ अप्रैल : तीन दिनका उपवास तोड़ा।

१ मई : 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के सम्पादकको पत्र लिखा।

२ मई : जे० पी० त्रिवेदीकी शवयात्रामें शामिल हुए।

४ मई : साम्प्रदायिक दंगोंके दौरान अपने कर्त्तव्यका पालन करने के लिए कांग्रेसजनोंसे अपील की।

७ मई : बिहारमें हिन्दू-मुस्लिम दंगोंके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

१५ मई : 'खादी-जगत्' के विषयमें लेख लिखा।

१९ मई : श्रीनिवास अय्यंगारका निधन।

१८ मईसे २१ मई : गांधीजी ने मृदुला साराभाई और गुलजारीलाल नन्दासे बातचीत की।

२२ मई : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको भेंट दी।

२३ मई : वर्धामें राष्ट्रीय युवक प्रशिक्षण शिविरमें भाषण दिया।

९ जून : समाचारपत्रोंको दिये वक्तव्यमें बिहारमें मुस्लिम परिवारकी हत्याकी भर्त्सना की।

१२ जून : क० मा० मुंशी, राजेन्द्रप्रसाद और गोपीचन्द भार्गवके साथ बातचीत की।

१३ जून : बातचीत जारी रही।

१५ जून : समाचारपत्रोंको दिये वक्तव्यमें गांधीजी ने बताया कि क० मा० मुंशीको कांग्रेससे इस्तीफा देने की सलाह उन्होंने क्यों दी।

६ जुलाई : समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

१२ जुलाई : अब्दुल गफ्फार खांके साथ बातचीत की।

२२ जुलाई : सरकारी विज्ञप्तिके सम्बन्धमें 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको भेंट दी।

२३ जुलाई : ए० एस० एन० मूर्ति को भेंट दी।

३१ जुलाई : 'टाइम्स ऑफ इंडिया' को पत्र लिखा।

१ अगस्त : वर्धामें खादी विद्यालयका उद्घाटन किया।

४ अगस्त : समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

५ अगस्त : समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

७ अगस्त : रवीन्द्रनाथ ठाकुर दिवंगत हो गये।
रवीन्द्रनाथ ठाकुरको गांधीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

१२ अगस्त : रवीन्द्रनाथ ठाकुरके श्राद्ध-दिवसपर समाचारपत्रोंको वक्तव्य जारी किया।

२४ अगस्त : 'ए डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस' के लिए प्रस्तावना लिखी।
भारत-बर्मा आव्रजन समझौतेके सम्बन्धमें समाचारपत्रोको वक्तव्य दिया।

२९ अगस्त : अ० भा० ग्रामोद्योग संघकी बैठकमें शामिल हुए।

३० अगस्त : 'सर्वोदय' में रवीन्द्रनाथ ठाकुरको श्रद्धांजलि अर्पित की।

३१ अगस्त : 'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस' के लिए प्रस्तावना लिखी।

१ सितम्बर : फूलचन्द कस्तूरचन्द शाहकी मृत्युपर तार द्वारा सम्वेदना-सन्देश भेजा।

५ सितम्बर : हरि विष्णु कामथको भेंट दी।

११ सितम्बर : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको भेंट दी।

१४ सितम्बर : अल्लाबख्श, आर० के० सिधवा और बर्माके शिष्टमण्डलसे भेंट की।

१६ सितम्बर : अल्लाबख्श और आर० के० सिधवासे भेंट की।

१८ सितम्बर : विक्रम संवत्के अनुसार गांधीजी का जन्म-दिवस मनाया गया।
गांधीजी ने सेवाग्राममें भाषण दिया और कताईमें शामिल हुए।
अहमदाबादकी जनताके नाम सन्देश भेजा।

२४ सितम्बर : समाचारपत्रोंको दिये वक्तव्यमें अप्रमाणित खादी-विक्रेताओंके विरुद्ध जनताको सावधान किया।

३० सितम्बर : नालवाड़ीमें गोसेवा संघकी सभामें भाषण दिया।

१ अक्तूबर : देशी राज्योंकी जनताको सन्देश भेजा।

२ अक्तूबर : गांधीजी का जन्म-दिवस मनाया गया। गांधीजी ने सभामें भाषण दिया।

७ अक्तूबर : अ० भा० चरखा संघकी बैठककी अध्यक्षता की।

१० अक्तूबर : सेवाग्राममें।

शीर्षक-सांकेतिका

विविध

सांकेतिका

आ

इ

ई

उ

ऊ

ऋ

ए

ओ

क

ख

ग

घ

च

छ

द

ध

न

प

म

य

र

ल

व

श

स

ह